है। यह धर्म बहुत ही थोड़े लोगोंके मनमें आशाकी किरणका सचार करता है। यह जीवन और मरण दोनोंको अन्धकारग्रस्त बनाता है और बनाता है मानवताके भविष्यको भयपूर्ण। यह एक ऐसा धर्म है कि मैं जन्मभर इसे नष्ट करनेके लिये जो मुझसे बन पड़ेगा करता रहूँगा। इसके स्थानमें मैं चाहता हूँ मानवता, मैं चाहता हूँ अच्छी मैत्री, मैं चाहता हूँ मानसिक स्वतन्त्रता, स्वतन्त्र वाणी, प्रतिभाके आविष्कार, विज्ञानके तजर्बे—कला, संगीत और काव्यका धर्म—अच्छे घरों, अच्छे कपड़ों और अच्छे वेतनका धर्म, अर्थात् इस लोकका धर्म।

धर्मोंकी मृत्यु तथा जन्म

हमें यह न भूलना चाहिए कि संसार प्रगतिशील है, संसार निरन्तर परिवर्तनशील है—मृत्यु और उसके बाद जन्म। निरन्तर मृत्यु और निरन्तर जन्म। पुरातनकी इस समाधिपर सदासे यौवन और आनन्दका जन्म होता आया है; और जब भी एक पुरातन धर्म मरता है, एक नया श्रेष्ठ धर्म जन्म ग्रहण करता है। जब भी हमें पता लगता है कि किसीका कोई कथन मिथ्या है, तो एक सत्य उसका स्थान लेनेके लिए आगे बढ़ता है। हमें मिथ्यात्वके विनाशसे भयभीत होनेकी आवश्यकता नहीं। जितना ही मिथ्याका विनाश होगा, उतना ही सत्यका प्रकाश होगा।

एक समय था जब ज्योतिषी आकाशके नक्षत्रोंमें आदमियों और जातियोंके भाग्य पढ़ा करते थे। उनका स्थान संसारमे नहीं रहा। अब उनकी जगह गणितज्ञ ज्योतिषियोंने ले ली है।

एक समय था जब बूढ़ा कीमियागर किसी न किसी धातुमे सोना बनानेके रहस्यकी खोजमें भटकता रहता था। अब उसके लिये जगह ही नहीं रही। उसका स्थान रसायनशास्त्रीने ले लिया है। यद्यपि वह धातुओंको सोना नहीं बना सकता, किन्तु उसने ऐसी चीजोंका पता लगाया है जो सारी पृथ्वीको धनसे ढँक दें।

एक समय था जब भविष्यवक्ताओंके पौ-बारह थे। उनके बाद पादरी-पुरोहित आये। अब पादरी-पुरोहितोंको भी विदा होना चाहिए,

धर्मोपदेशकको विदा होना चाहिये, उसका स्थान ग्रहण करना चाहिये अध्यापकको—प्रकृतिके वास्तविक व्याख्याताको। हमे अब पराप्रकृतिसे कोई काम नहीं, हम अब चमत्कारों और असंभव घटनाओंसे ऊब गये।

एक समय था जब भविष्यवक्ता प्रकृतिकी पुस्तकको पढनेका झूठा बहाना बनाता था। उसका स्थान दार्शनिकने ले लिया है जो कार्य-कारणके नियमानुसार तर्क करता है। भविष्यवक्ता विदा हुआ, दार्शनिक विद्यमान् है।

एक समय था जब आदमी आकाशसे सहायताकी आशा लगाये बैठा रहता था और जब वह बहरे आकाशसे प्रार्थनाएँ करता रहता था। एक समय था जब सभी कुछ पराप्रकृतिपर निर्भर था। ईसाइयतका वह युग अब विदा हो रहा है। अब हम प्रकृतिपर निर्भर करते हैं, प्राचीन मिथ्या विश्वासोंके विश्वासीपर नहीं किन्तु नई बातोंके आविष्कारकपर। अब हम पक्की नींवपर अपना भवन बनाने लगे हैं। हमारी प्रगतिके साथ साथ पराप्रकृतिकी हत्या होती जा रही है। संसारके बुद्धिप्रधान नेता पराप्रकृतिके अस्तित्वको अस्वीकार करते है। वे मिथ्या विश्वासोकी नींव ही हिला दे रहे हैं।

परस्परका धर्म

पराप्राकृतिक धर्मके लिये अब इस संसारमें कोई जगह नहीं रहेगी। अब उसका स्थान तर्क ग्रहण करेगा। 'अज्ञात'की पूजाको जगह परस्पर प्रेम और एक दूसरेकी सहायताका धर्म स्थापित होगा। मिथ्या विश्वास विनष्ट होगा, विज्ञान रहेगा। साम्प्रदायिकता आसानीसे नहीं मरती। आदमीकी बुद्धिका अभी पूरा पूरा विकास नहीं हुआ है। शारीरिक रोगोंकी भॉति मानसिक रोग भी होते हें—दिमागकी महामारियॉ और प्लेग।

जब भी नवीनका प्रादुर्भाव होता है, पुरातन विद्रोह करता है और वह अपने स्थानके लिये तब तक लड़ता रहता है जब तक उसमें कुछ भी दम बाकी रहता है। मिथ्या विश्वास और विज्ञानमें इस समय वही संघर्ष चालू है जो किसी समय घोड़ागाडी और रेलगाड़ीमे चालू था। लेकिन 'रथ'के दिन अब नहीं रहे। कोई समय था जब 'रथ'की अपनी शान थी, लेकिन अब वह नहीं रही। इसी प्रकार हम देखते हैं कि केवल दर्शनके भिन्न भिन्न संप्रदायो और मतोंमे ही संघर्ष नहीं है, किन्तु चिकित्सा-शास्त्रतकमे है।

याद रखिये, यथार्थ सत्यके अतिरिक्त सब कुछ मरणशील है। यही प्रकृतिका नियम है। शब्द मरते हैं। हर भाषाकी अपनी श्मशान-भूमि होती है। प्रायः हर समय कोई न कोई शब्द मरता है और उसकी समाधिपर लिखा जाता है—'अप्रयोज्य'। नये शब्द निरन्तर पैदा हो रहे हैं। हर शब्द एक पालनेमें जन्म ग्रहण करता है। विचार और उच्चारणका पाणि-ग्रहण शब्द-शिशुको जन्म देता है। एक समय आता है जब शब्द बूढ़ा हो जाता है, जब उसके मुँहपर झुर्रियाँ पड़ जातीं हैं, जब वह अपना सामर्थ्य गवाँ बैठता है और जब उसका एकमात्र स्थान होता है कबरमें। यही चिकित्सा-शास्त्रमें भी होता आया है। मेरी तरह तुम भी यह याद कर सकते हो कि जब पुराने चिकित्सक और रक्त निकालनेवाले जर्राहोंकी प्रधानता रही है। जब भी किसी आदमीको किसी तरहकी कोई शिकायत होती वे उसका खून निकालनेका ही काम करते थे। अब यह कल्पना करना कठिन है कि कुछ ही वर्ष पहले एक जर्राहके आक्रमणसे बचनेके लिये आदमीकी काठीका कितना मजबूत होना आवश्यक था। जब यह जर्राही गलत सिद्ध हो गई, उसके बाद भी सैकड़ों और हजारों चिकित्सक इधर उधर भटकते रहे हैं और उन्हें इस बातका बड़ा खेद रहा है कि ऐसे श्रद्धालु रोगियोंका अभाव हो गया जो उन्हें अपने शरीर-पर तजर्बे करने देते हैं।

इसी प्रकार ये सम्प्रदाय—ये मत और ये धर्म—आसानीसे मरनेवाले नहीं हैं। और वे कर भी क्या सकते हैं? पुराने कलाकारोंके चित्रोंकी तरह उन्हें केवल इसलिये सुरक्षित रखा गया है क्योंकि उनपर पैसा खर्च हो चुका है। जरा कल्पना कीजिये कि मिथ्या विश्वासके प्रचार-कार्यमें कितनी पूँजी लगी हुई है। उन पाठशालाओंकी कल्पना कीजिये जो मात्र अनुपयोगी ज्ञानके प्रचारार्थ स्थापित की गई हैं। उन विद्यालयोंकी कल्पना कीजिये जहाँ विद्यार्थियोंको यह शिक्षा दी जाती है कि 'विचार करना' खतरनाक है और उन्हे श्रद्धा करनेके अतिरिक्त किसी भी दूसरे कार्यमें दिमागको काममें नहीं लाना चाहिये। जरा उस महान् धनराशिकी कल्पना कीजिये जो इन मन्दिरों, मस्जिदो और गिर्जोंकी रचनापर खर्च हुई है। जरा उन हजारों लाखों आदमियोंका विचार कीजिये जिनकी जीविका आदमियोंके अज्ञानपर ही निर्भर करती है। जरा उन लोगोंका

विचार कीजिये जो लोगोंके अन्ध-विश्वास और श्रद्धाके बलपर ही धनी बनते और मोटाते हैं। क्या आप समझते हैं कि ये सब लोग विना संघर्ष किये मरनेवाले हैं? बेचारे क्या करें? उन पंडित–पादरी–पुरोहितोंके साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति है जिनको शिक्षाद्वारा बुद्धिविहीन बना दिया गया है और अब जिन्हें श्रद्धाशून्य संसारके बीच जानेपर मजबूर होना पड़ रहा है। बेचारेकी कहीं कोई प्रार्थना सुनी नहीं जाती; आकाश उसकी सहायताके लिये हाथ आगे नहीं बढ़ाता और उसका धर्मोपदेश सुननेवाले ही उसकी आलोच्चना करने लग गये हैं। बेचारा गरीब क्या करे? यदि वह एकाएक बदलता है तो फिर कहींका नहीं रहता। यदि वह अपने वास्तविक विचारोंका प्रचार करना आरम्भ करता है तो उसे त्यागपत्र देकर चले जानेको कहा जाता है। इतना सब होनेपर भी यदि धर्मोपदेशक और उसके श्रोतागण इकट्ठे बैठें और सपूर्णरूपसे ईमानदारीकी बात करना चाहें, तो सब स्वीकार करेंगे कि न तो उनका विश्वास ही कुछ विशेष है और न ज्ञान ही।

थोड़ी ही देर पहले दो देवियाँ रातको एक तमाशा देखकर बड़ी देरसे घर लौट रही थी। उनमेंसे एक बोली—“मैं एक ऐसी बात बताना चाहती हूँ, जिसे सुनकर तुम्हें अत्यन्त अचम्भा होगा। मैं हाथ जोड़ती हूँ, यह बात किसी औरसे न करना।”

“क्या है वह बात?” दूसरी बोली।

“मैं बाइबलमें विश्वास नहीं करती!”

“मैं भी तो नहीं करती!”

मैंने बहुत बार सोचा है कि यह कितना अच्छा होगा यदि सभी पंडित, पादरी, पुरोहित एक जगह इकट्ठे होकर कह सकें—“आओ, हम पूरी ईमानदारीके साथ जो कुछ हम सचमुच मानते हैं, वह एक दूसरेको बतायें।”

एक कथा है कि एक बार एक होटलमें लगभग बीस आदमी एक साथ ठहरे थे। उनमेंसे एक खड़ा हुआ और अपने हाथ पीछे करके बोला—“आओ, हम एक दूसरेको अपने वास्तविक नाम बतायें।”

यदि सब पंडित, पादरी, पुरोहित और उनके भक्त अपने वास्तविक विचार

कहने लगे तो वे देखेंगे कि वे उतने ही भले या बुरे हैं, जितना मैं हूँ और वे वैसे ही कुछ भी विश्वास नहीं करते हैं जैसे कि मैं।

धार्मिक कट्टरता आसानीसे नहीं मरती। इसके पक्षपाती इससे यह परिणाम भी निकालते हैं कि यह इलहामी है।

यहूदी धर्म भी आसानीसे नहीं मरता। यह ईसाइयतसे हजारों वर्ष अधिक जिया है।

मुहम्मदका धर्म आसानीसे नहीं मरता।
बुद्धका धर्म आसानीसे नहीं मरता।
यह सभी धर्म आसानीसे क्यों नहीं मरते ?
क्योंकि बुद्धिमें विकास धीरे धीरे होता है।

मुझे प्रोटैस्टेण्टके कानमें कह लेने दो—कैथोलिक धर्म आसानीसे नहीं मरता। इससे क्या सिद्ध होता है? इससे यही सिद्ध होता है कि लोग अज्ञानी हैं और पादरी ठग हैं।

मुझे कैथोलिकके कानमें कह लेने दो—प्रोटैस्टैण्ट धर्म आसानीसे नहीं मरता। इससे क्या सिद्ध होता है? इससे यही सिद्ध होता है कि लोग मिथ्या विश्वासी हैं और धर्मोपदेशक मूर्ख।

मैं आप सबको बता दूँ—नास्तिकता मर नहीं रही है। यह वृद्धि पर है। यह प्रति दिन अधिकाधिक होती जा रही है। इससे क्या सिद्ध होता है? इससे सिद्ध होता है कि लोग अधिकाधिक शिक्षित हो रहे हैं। वे प्रगति कर रहे हैं। बुद्धि स्वतंत्र हो रही है। संसार सभ्य बन रहा है।

पादरी-पुरोहित जानते हैं कि मैं जानता हूँ कि वे जानते हैं कि वे नहीं जानते।

मिथ्या विश्वासकी जड़ें कैसे हिलीं ?

क्रॉसके अनुयायियोंके हाथोंसे मुहम्मदने यूरोपके सुन्दरतम हिस्सोंको छीन लिया। यह ज्ञात था कि वह वंचक था और एक इस बातने ईसाई-संसारमें नास्तिकता और अविश्वासका बीजारोपण कर दिया। ईसाइयोंने नास्तिकोंके

हाथसे ईसाकी खाली कब्रको छुड़ानेका प्रयत्न किया। यह ग्यारहवीं शतीमें आरम्भ हुआ और तेरहवीं शतीकी समाप्तिपर समाप्त। सारा यूरोप लगभग वीरान हो गया। खेत बंजर हो गये। गाँव उजड़ गये। जातियाँ दरिद्र हो गईं। हर ऋणी आदमीको उसके ऋणसे मुक्त घोषित कर दिया गया, यदि वह अपनी छातीपर क्रॉस लटकाकर क्रॉसके सैनिकोंमे भर्ती होनेके लिये तैयार हो गया। उसने चाहे कितना ही बड़ेसे बड़ा अपराध किया हो उसे जेलसे मुक्त कर दिया गया, यदि वह क्रॉसके सैनिकोंमें भर्ती होनेके लिये तैयार हो गया। उनका विश्वास था कि ईश्वर उन्हें विजयी बनायेगा। १२९१ तक वह उस क़ब्रपर अधिकार करनेका प्रयत्न करते रहे। अन्तमे ईसाके सैनिकोंको बुरी तरह मुँहकी खानी पड़ी। उन्हें पीछे भागना पड़ा। इस एक बातने ईसाइयतके संसारमें अविश्वासका बीजारोपण कर दिया। तुम जानते हो कि उन दिनों लोग सत्यासत्यका निर्णय करनेके लिये युद्धको ही एकमात्र साधन समझते थे। उनका ख्याल था कि ईश्वर सदा सत्य-पक्ष ग्रहण करता है। ईसा और मुहम्मदके बीच युद्ध हो चुका था। मुहम्मद विजयी हुआ था। क्या ईश्वर उस समय ससारका शासक था? क्या वह उस समय मुहम्मदके धर्मका ही प्रचार चाहता था?

कलाका विनाश

आप जानते हैं कि जब ईसाइयतके हाथमें अधिकार आया तो उसने प्रायः हर मूर्तिको जिसपर इसका अज्ञानी हाथ पड़ा तोड़-फोड़ डाला। इसने प्रत्येक चित्रको या तो कुरूप बना दिया, या मिटा दिया। इसने प्रत्येक सुन्दर इमारतको नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, इसने ग्रीक और लातीनी दोनों प्रकारकी पाण्डुलिपियोंको नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, इसने तमाम इतिहास, तमाम कविता और तमाम दर्शन-शास्त्रको नष्ट कर डाला; इसने मशाल होकर हर पुस्तकालयको राख बना डाला। परिणाम यह हुआ कि मानवता अन्धकारपूर्ण रात्रिसे ढँक गई।

लेकिन कुछ ऐसा हुआ कि जैसे तैसे चन्द पाण्डुलिपियाँ मजहबी जोशकी आगमें जल कर राख होनेसे बच गईं। यही पाण्डुलिपियाँ उस वृक्षका बीज बनी जिसका फल हमारी आधुनिक सभ्यता है। कुछ मूर्तियाँ जमीनमे गाड़ दी

गई थीं। उन सुन्दर रूपोंको उस जमीनमेंसे निकाला गया, जिसने उन्हें सुरक्षित रखा था।

यह इसीका परिणाम है कि आजका सभ्य संसार कलासे परिपूर्ण है, दीवारें चित्रोंसे सुसज्जित हैं, और मूर्तियाँ रखनेके ताक मूर्तियोंसे सुशोभित हैं। कुछ पाण्डुलिपियाँ खोज निकाली गई और उन्हें नये सिरेसे पढा गया। पुरानी भाषायें सीखीं गईं और साहित्यने नया जन्म लिया। भावनाने नया प्रकाश देखा। मजहबने मानसिक विकासके प्रत्येक प्रयत्नका विरोध किया। यह सब होनेपर भी सामान्य विनाशसे बचा ली गई कुछ चीजोंने, कुछ कविताओंने, प्राचीन चिन्तकोंकी कुछ कृतियोंने, पत्थरकी कुछ मूर्तियोंने, एक नई सभ्यताको जन्म दिया जो निश्चयात्मक रूपसे मिथ्या विश्वासकी जड़ हिला देनेवाली थी।

अमरीकाकी खोज

ईसाई मजहबको दूसरी बड़ी चोट किस बातसे लगी? अमरीकाकी खोजसे। पवित्र प्रेतको, जिसने बाइबल लिखनेकी प्रेरणा की, इस महान् द्वीपकी कुछ जानकारी न थी, उसे पश्चिमी गोलार्धका कभी ख्याल भी नहीं आया था। बाइबलमें आधे संसारका उल्लेख ही नहीं है। 'पवित्र आत्मा' को इस बातका ज्ञान नहीं था कि पृथ्वी गोल है। उसे इस बातका स्वप्न भी नहीं था कि पृथ्वी गोल है। यद्यपि उसने स्वयं उसकी रचना की थी तो भी उसका विश्वास था कि यह चपटी है। किन्तु अन्तमें यह पता लग गया कि पृथ्वी गोल है। मैगेलन समस्त पृथ्वीका चक्कर काट आया। १५१९ में उस वीर आत्माने अपनी यात्रा आरम्भ की। पादरी, पुरोहित बोले—'मित्र, पृथ्वी चपटी है, मत जाओ, कहीं तुम किनारेके आगे न गिर पड़ो!' मैगेलनका उत्तर था:—'मैंने चन्द्रमामें पृथ्वीकी छाया देखी है और मेरे लिये ईसाई मजहबकी अपेक्षा यह छाया अधिक विश्वसनीय है।' जहाज पृथ्वीके गिर्द घूम आया। समस्त पृथ्वीका चक्कर काट लिया गया। विज्ञानने पृथ्वीके ऊपर और नीचे अपना हाथ फेर कर देखा। कहाँ था वह स्वर्ग और कहाँ था वह नरक! स्वर्ग और नरक सदाके लिये विलीन हो गये। अब यदि कहीं उनके लिये जगह है तो केवल मिथ्या विश्वासियोंके मजहबमें।

कोपरनिकस और केपलर

अब महान् आदमियोंका युग आया। १४७३ में कोपरनिकस पैदा हुआ। १५४३ में उसका महान् ग्रन्थ (Revolutions of the Heavenly Bodies) लिखा गया। १६४३ मे ईसाई मजहबने उसे निन्दनीय ठहराया। क्या आप कह सकते हैं कि ईसाई मजहबने कब तक कोपरनिकसके विरुद्ध युद्ध जारी रक्खा? कोपरनिकसकी मृत्युके दो सौ अठत्तर वर्ष बाद तक भी ईसाई मजहबका यही आग्रह था कि बाइबलमें ज्योतिषका जो उल्लेख है वही सच है और कोपरनिकसकी पद्धति झूठ। १६०९ मे केपलर पैदा हुआ। आप केपलरके नियमोंके आविष्कारको विज्ञानका जन्म-दिन कह सकते हैं। इस आदमीने हमारे हाथमें आकाशकी चाभी दी और उस अनन्त पुस्तकको हमारे सामने खोलकर रख दिया।

मेरे पास समय नही है कि मैं गैलीलियोकी, ल्यूनार्दो द विन्सीकी, ब्रूनोकी और दूसरे सैकड़ों महान् पुरुषोंकी चर्चा कर सकूँ जिन्होने संसारके मानसिक विकासमें वृद्धि की।

विशेष कृपा

दूसरी चीज जिसने ईसाई मजहबपर कड़ी चोट की, वह थी सांख्यिकी। हमने हिसाब लगाकर देखा कि हम मानव-जीवनकी सामान्य आयु बता सकते हैं। मानव-जीवन यों ही किसीकी अनन्त इच्छाके अधीन नहीं है; यह परिस्थितियोंपर, नियमोंपर और खास तरहकी घटनाओंपर निर्भर करता है; और यह परिस्थितियाँ, नियम तथा घटनायें दीर्घ काल तक न्यूनाधिक समान ही रहती हैं। हम देखते हैं कि भगवानकी विशेष कृपामे विश्वास रखनेवाला आदमी इन्स्योरेन्स कम्पनीमें अपना जीवन इन्श्योर कराता है। उसे ईश्वर, आत्मा आदि सबमें मिलाकर उतना विश्वास नहीं है जितना इन कम्पनियोंमेसे किसी एकमें है। हमने साख्यिकीसे पता लगा लिया कि सामान्य तौर पर ठीक इतनी तरहके अपराध किये जाते हैं; ठीक इतने अपराध एक तरहके और ठीक इतने दूसरी तरहके; ठीक इतनी आत्महत्यायें, पानीमें डूब मरनेसे ठीक इतनी मौते, इतने आदमी अपनेसे बड़ी औरतोंसे शादी करते हैं; एक खास तरहके इतने हत्यारे; गल्तियोंकी ठीक इतनी संख्या; और आज रात मैं यह कहने जा रहा हूँ कि साख्यिकीने विशेष कृपाके सिद्धान्तको एकदम धराशायी कर दिया।

अभी उस दिन एक आदमी मुझे विशेष कृपाकी एक बात बता रहा था। कुछ ही वर्ष पहले वह जहाजसे कहीं जानेवाला था, किन्तु कारणवश वह नहीं गया। वह जहाज अपने सभी यात्रियोंके साथ पानीमें डूब गया। उसका कहना था कि वह भगवानकी 'विशेष कृपासे' से बच गया। ज़रा इस प्रकारके सिद्धान्तकी अनन्त अहंमन्यताकी कल्पना तो करो। एक आदमी है जो उस जहाजपर नहीं जाता जिसपर पाँच सौ दूसरे यात्री चढते हैं। वे सब समुद्रतलमें विलीन हो जाते हैं। यह एक तुच्छ अकेला प्राणी किसी कारण उस जहाजसे नहीं गया और सोचता है कि अनन्त परमात्माने इस निकम्मे तुच्छ आदमीकी तो रक्षा की और शेष सबको विनाशके मुँहमें जाने दिया! यह 'विशेष कृपा' है! यह विशेष कृपा इतने अपराध क्यों होने देती है? यदि हम सबके सिरपर परमात्माका हाथ है, तो अपनी स्त्रियोंको पीटनेवाले सुरक्षित क्यों रहते हैं? स्त्रियाँ और बच्चे अरक्षित क्यों रहते हैं? पागलोंकी देख-भाल कौन करता है? ईश्वर किसीको पागल होने ही क्यों देता है? ईसाई मजहब विशेष कृपाकी बातको नही छोड सकता। यदि कोई ऐसी चीज़ नहीं है, तो प्रार्थना, पूजा, गिर्जे और पादरी पुरोहित सब बेकार हैं।

आप जानते हैं कि हमारे यहाँ एक रिवाज है कि हम प्रतिवर्ष धन्यवादका एक घोषणा-पत्र प्रकाशित करते हैं। हम ईश्वरसे कहते हैं—"यद्यपि तूने तमाम दूसरे देशोंको पीड़ित किया है, यद्यपि तूने अन्य सभी देशोंके लिये युद्ध, विनाश और अकाल भेजा है, तो भी हम तेरी इतनी अच्छी सन्तान रहे हैं कि तू हमपर दयालु रहा है। हमें विश्वास है कि भविष्यमें भी ऐसा ही होगा।" समय अच्छा बीता हो अथवा बुरा, इसका कुछ असर नहीं पड़ता। धन्यवादके घोषणा-पत्रका उक्त रूप निश्चित है। मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले इलाके गवर्नरने इस प्रकारका घोषणा-पत्र प्रकाशित किया। उसने लिखा कि राज्यमें कैसी सुख-समृद्धि रही है और लोग कितने कृतज्ञ हैं! उसी राज्यमे एक तरुण रहता था। उसने एक दूसरा घोषणा-पत्र प्रकाशित कराया ताकि सरकारी घोषणा-पत्रसे कहीं ईश्वर भ्रममे न पड जाय! उसका कहना था कि राज्य खुश-हाल नहीं रहा है,

खेती एक प्रकारसे हुई ही नहीं, और राज्यका लगभग हर खेत गिरवी रख देना पड़ा है। उसकी माँग थी कि यदि ईश्वरको उसके कथनमें विश्वास नहीं है तो वह अपने किसी विश्वसनीय दूतको भेजे ताकि वह स्वयं देखकर ईश्वरको सच्ची सच्ची रिपोर्ट दे सके।

चार्ल्स डारविन

उन्नीसवीं शताब्दि डारविनकी शताब्दि कहलायेगी। जिन महानतम आदमियोंने कभी भूमण्डलको स्पर्श किया है, डारविन उनमेंसे एक था। सारे साम्प्रदायिक शिक्षकोंने मिलकर जीवन-घटनाओंको जितना समझाया है, डारविनने उससे कहीं अधिक जीवन-घटनाओंकी व्याख्या की है।

एक ओर चार्ल्स डारविनका नाम लिखिये और दूसरी ओर पृथ्वीके सभी सांप्रदायिक या मजहबी शिक्षकोंका। अकेले इस एक नामसे संसारको इतना प्रकाश मिला है, जितना उन सभी दूसरे लोगोंसे नहीं। डारविनके 'विकास' के सिद्धान्तने उसके 'जीवन संघर्षमें योग्यतमके विजयी' होनेके सिद्धान्तने, उसके नाना प्रकारके प्राणियोंकी उत्पत्तिके सिद्धान्तने हर विचारशील आदमीके मस्तिष्कमेंसे कट्टर ईसाइयतके अन्तिम अवशेषोंको समाप्त कर दिया। उसने न केवल यह कहा ही किन्तु सिद्ध भी कर दिया कि इलहामी पुरुषोंको इस संसारकी कुछ जानकारी न थी, उन्हें आदमीके आरम्भका कुछ पता न था, वह भूगर्भशास्त्रके बारेमें, गणित ज्योतिषके बारेमें, और प्रकृतिके बारेमें कुछ न जानते थे। और बाइबल एक ऐसा ग्रन्थ है जिसकी रचना भयप्रेरित अज्ञानके हाथों हुई है। जरा उन आदमियोंका विचार कीजिये जो चार्ल्स डारविनके सिद्धान्तका प्रतिवाद करनेका प्रयत्न करते थे। कोई भी आदमी अपनेको इतना अज्ञानी नहीं मानता था कि डारविनका खंडन न कर सके और वह जितना ही अधिक अज्ञानी होता उतनी ही प्रसन्नतापूर्वक इस कार्यके लिए तैयार हो जाता। ईसाई संसारने डारविनका उपहास किया, मजाक उड़ाया और उससे घृणा की, तो भी जब उसका शरीरांत हुआ तो इंग्लैण्डको इस बातका अभिमान था कि उसने डारविनकी मिट्टीको अपने श्रेष्ठतम, और महत्तर पुत्रोंके आसपास जगह दी। चार्ल्स डारविनने विद्वानोंके संसारको जीत लिया। उसके सिद्धान्त आज वास्तविक घटनाएँ बने हुए हैं।

चार्ल्स डारविनने कट्टर ईसाइयतके आधारको नष्ट कर दिया। जिन बातोंको हम जानते हैं कि वे न कभी घटित हुईं और न हो सकती थीं, उनमें श्रद्धाके अतिरिक्त और कुछ बच नहीं गया है। मजहब और विज्ञान परस्पर शत्रु हैं। एक मिथ्या विश्वास है, दूसरा वास्तविक घटना है। एकका आधार असत्य है, दूसरेका सचाई। एक भय और श्रद्धाका परिणाम है, दूसरा खोज और तर्कका।

धार्मिक मतमतान्तर

मैं कट्टर धर्मकी काफी चर्चा करता रहा हूँ। अनेक बार अपने व्याख्यानके अन्तमें मेरी कुछ भले धार्मिक आदमियोंसे भेंट हुई है और उन्होंने मुझे कहा है :—

"तुम उस तरह नहीं कहते जिस तरह हम ठीक ठीक विश्वास करते हैं।"

"मैं उस तरह कहता हूँ जिस तरह तुम्हारे धर्म-ग्रन्थोंमें लिखा है।"

"ओ, लेकिन अब हम उनकी बहुत परवाह नहीं करते।"

"तो तुम उनमें परिवर्तन क्यों नही कर डालते?"

"हम अपनेमे जैसा है, समझे हुए हैं, और संभव है यदि हम उनमे कोई परिवर्तन करना चाहें तो कदाचित् हम एकमत न हो सके।"

ऐसा लगता है कि धार्मिक मत इन दिनों बड़ी ही सुरक्षित अवस्थामे हैं। लोगोंमें एक तरहकी भीतरी मान्यता व्याप्त है कि वे उनमें विश्वास नहीं करते, उसके इधर उधरसे रास्ता काटकर निकला जा सकता है, उनकी पंक्तियोंके भीतर झाँककर नया अर्थ निकाला जा सकता है; और यदि लोग नया मत बनाना चाहें तो वे आपसमें सहमत न हो सकेंगे और वे सार्वजनिक रूपमें तो नहीं किन्तु निजी तौरपर जो चाहे सो कहते रह सकते हैं। जब भी किसी धर्मका कोई उपदेशक किसी धार्मिक सम्प्रदायका प्रतिनिधि होते हुए भी उसकी मान्यताके विरुद्ध प्रचार करता है, तो मुझे यह ठीक जँचता है कि उसे न्यायसे दण्डित किया जाय। मैं मानता हूँ कि हर उस पादरीको दंड मिलना ही चाहिए जो उस सिद्धान्तका प्रचार नहीं करता जिसे वह मानता है। मेरी उस प्रेस-बिटेरियन धर्मोपदेशकसे कुछ भी सहानुभूति नहीं है

जो प्रेस-बिटेरियन धर्मासनसे नास्तिकताका प्रचार करता है और प्रेस-बिटेरियनका रुपया लेता है। जब वह अपने विचारोंमें परिवर्तन करे तो उसे एक आदमीकी तरह धर्मासनसे उतर आना चाहिए और कहना चाहिए—"मैं तुम्हारे सिद्धान्तोंमे विश्वास नहीं रखता, और मैं उनका प्रचार नहीं करूँगा। तुम्हें कोई दूसरा किरायेका टट्टू रख लेना चाहिए।"

नवीनतम मत

लेकिन मैं देखता हूँ कि मैंने मतोंकी ठीक ठीक व्याख्या की है। एक दिन मेरे हाथमें एक नया मत आया। मैंने उसे पढा और मैं अब आपका ध्यान उस मतकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आप देखें कि क्या इस ईसाई संप्रदायने कुछ भी उन्नति की है? क्या इस संप्रदायके लिए विज्ञान-रूपी सूर्यका उदय व्यर्थ ही नहीं हुआ है? क्या ये लोग अब भी मानसिक अन्धकारकी ही संतान नही है? क्या ये लोग अब भी यह आवश्यक समझते हैं कि ऐसी बातोंमे विश्वास किया जाय जो हर तरहसे समझके परे हैं? अब हम देखें कि उनका मत क्या है? मैं इसे पढ़ना आरंभ करता हूँ—

"स्वर्ग और पृथ्वी तथा तमाम दृश्य और अदृश्य चीजोंके निर्माता सर्वशक्तिमान् पिता एक परमात्मामें विश्वास करो।"

उसका कहना है कि वह एक परमात्मा है, उसीने सृष्टिकी रचना की है और वही इसपर शासन करता है। मैं फिर वही पुराना प्रश्न पूछता हूँ,—उसने किस चीजसे इस सृष्टिकी रचना की? यदि अनन्त कालसे प्रकृति विद्यमान् नही थी तो इसी परमात्माने उसकी रचना की होगी। उसने इसे किससे बनाया? उसने इसकी निर्मितिमें किस सामग्रीका उपयोग किया? उस समय तक इस ईश्वरके अतिरिक्त विश्वमें और कुछ न था। अनन्त कालसे खाली बैठा हुआ परमात्मा क्या करता रहा? उसने कुछ नहीं बनाया, वह किसी वस्तुको अस्तित्वमें नहीं लाया, उसके मनमें कोई विचार ही उत्पन्न नहीं हुआ, क्योकि जब तक विचारको उत्तेजन देनेवाली कोई वस्तु न हो तब तक कोई विचार पैदा हो ही नही सकता। तो फिर वह क्या करता रहा? इस मतवाले हमे इसका कुछ भी जवाब क्यों नहीं देते हैं? वे इस अनन्त अस्तित्वके बारेमे कैसे जानते हैं?

और यदि वह अनन्त है तो वह उनकी समझके भीतर कैसे आता है ? जिस चीजके बारेमें तुम जानते हो कि तुम समझते नहीं और कभी समझ भी नहीं सकते, उसमें विश्वास करनेसे क्या फायदा है ?

एक दूसरे ईसाई मतमें ईश्वरकी परिभाषा यूँ की गई है :—

" जीवित, सच्चा और सदा बना रहनेवाला परमात्मा एक ही है जिसका न कोई शरीर है, न कोई दूसरे अंग हैं और न उनमें किसी तरहकी उत्तेजना है। "

जरा इसपर विचार तो करो! न शरीर, न अंग और न उत्तेजना! मेरा खयाल है कि कोई आदमी शून्यकी इससे अच्छी परिभाषा नहीं कर सकता। यह सब होनेपर भी यह उत्तेजनारहित ईश्वर प्रतिदिन दुष्टोंपर क्रोध करता है, ईर्षालु है और जिसकी क्रोधाग्नि अन्तिम नरक तक पहुँचती है। यह रागरहित ईश्वर सारी मानव-जातिसे प्रेम करता है और उत्तेजनारहित ईश्वर मानव-जातिके अधिकांशको रसातल पहुँचाता है। ईश्वरकी यह परिभाषा एक ऐसी वस्तुका वर्णन है जिसकी किसीको कोई कल्पना नहीं।

ईश्वर शासकके रूपमें

उनके मतमें यह भी है—

" हम विश्वास करते हैं कि संसारके शासनमें सभी बातें और सभी घटनायें ईश्वरकी उस कुदरतके अधीन हैं जिससे वह अपनी तमाम इच्छायें पूरी करता है। "

क्या ईश्वर संसारका शासक है? क्या जातियोंका इतिहास इस बातका समर्थन करता है? यदि तुम पूर्ण रूपसे ईमानदार हो और भयभीत नहीं हो, तो तुम्हें संसारके इतिहासमें इस बातका क्या प्रमाण मिलता है कि यह विश्व किसी सर्वज्ञ और दयालु परमात्माद्वारा शासित है?

रूसकी तुम क्या व्याख्या करते हो? साइबेरियाका तुम्हारे पास क्या जवाब है? तुम इस बातका क्या उत्तर देते हो कि गुलाम अपने मालिकोंके कोड़ोंके अधीन युगोंतक पीसते रहे और उन्हें उसका कोई पुरस्कार नहीं मिला? तुम्हारे पास इस बातका क्या जवाब है कि माताओंके बच्चे उन हाथोंसे छीन

लिये गये जो सहायताके लिए परमात्माके सामने फैले हुए थे ? आखिर तुम इसकी क्या व्याख्या करते हो ? तुम्हारे पास शहीदोंके अस्तित्वका क्या उत्तर है ? तुम इसका क्या जवाब देते हो कि यह परमात्मा लोगोको आगमें जलने देता है ? सदैव न्याय होता है ? क्या निरपराधी सदैव अदंडित रहते हैं ? क्या भले लोग सदैव सफल होते हैं ? क्या ईमानदार आदमियोंको हमेशा खानेको मिलता है ? या क्या दयावान् कभी नंगे नहीं घूमते ? तुम्हारे पास इस बातका क्या उत्तर है कि संसार दुःख दर्द और आसुओंसे भरा है ? तुम्हारे पास इस बातका क्या उत्तर है कि भूकंप आदमियोंको निगल गये ? ज्वालामुखी पर्वतों और तूफानोंने उन्हें पृथ्वीसे मिटा दिया ? यदि हम सबके ऊपर किसी सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् और दयालु परमात्माका शासन है, तो क्या इन अकालो, महामारियों और प्लेगोंकी आसानीसे व्याख्या हो सकती है ?

मैं नहीं कहता कि कोई नहीं है। मैं नही जानता हूँ। जैसा मैं पहले कह चुका हूँ यह पृथ्वी ही वह ग्रह है जिसपर मैं कभी पैदा हुआ। मैं इस पृथ्वीके एक ग्रामीण जिलेमें रहता हूँ और इन चीजोंके बारेमें उतना नहीं जानता जितना कि ये पादरी पुरोहित जाननेका दावा करते हैं। किन्तु यदि दूसरे लोकके बारेमें भी इन लोगोंका ज्ञान वैसा ही है जैसा इस लोकके बारेमे, तो वह इस योग्य नही कि उसकी चर्चा की जा सके।

वे उक्त बातोका क्या उत्तर देते हैं ? वे कहते हैं कि ईश्वर यह बाते केवल होने देता है। यदि मैं एक गुंडेके पास खड़ा होऊँ और वह एक बच्चेका सिर फोड रहा हो और मैं उसे रोकनेकी पूरा सामर्थ्य रखते हुए भी वैसा होने दूँ, तो तुम मुझे क्या कहोगे ? तुम सच सच यही कहोगे कि मैं हत्यारे जितना ही खराब हूँ। क्या ईश्वर इन सब बातोंको रोक सकता है ? यदि वह रोक सकता है और नहीं रोकता है, तो वह दुष्ट है, वह परमात्मा नहीं है। लेकिन वे कहते हैं कि वह हमे करने देता है। किसलिए ? ताकि हम कर्ममें स्वतंत्र रहे। किसलिए ? मैं समझता हूँ ताकि ईश्वर यह जान सके कि कौन भला है और कौन बुरा ? क्या वह यह बात उस समय नहीं जानता था जिस समय उसने हमे बनाया ? क्या वह यह ठीक ठीक नहीं समझता था कि वह क्या बनाने जा रहा है ? ऐसे आदमियोंको क्यों बनाया जिन्हें वह जानता था कि अपराधी बनेंगे ? यदि मैं एक मशीन

बनाऊँ, जो बाजारोंमें चले फिरे और आदमियोंकी जान ले, तो तुम मुझे फाँसीपर लटका दोगे। यदि परमात्माने एक ऐसे आदमीकी रचना की है जिसके बारेमें वह जानता था कि वह हत्या करेगा, तो परमात्मा हत्याका दोषी है। यदि परमात्माने जान बूझकर एक ऐसे आदमीकी रचना की है जो अपनी स्त्रीको पीटनेवाला है, जो अपने बच्चोंको भूखों मारनेवाला है, तो मेरा निवेदन है कि उस दुष्टको अस्तित्वमें लानेके कारण परमात्मा ही सब दोषोंके लिए जिम्मेदार है। यह सब होनेपर भी हमें जातियोंके इतिहासमें परमात्माकी कुदरत देखनेको कहा जाता है।

मैंने जो थोड़ा बहुत पढा है, उससे मैं यही जान सका हूँ। यदि कभी आदमीको सहायता मिली है तो वह आदमीसे मिली है, यदि कभी गुलामीकी बेड़ियाँ टूटी हैं तो उन्हें आदमीने तोड़ा है। मानवताके शासनमें यदि कभी कोई खराब बात हुई है तो यह कठिन नहीं है कि उसके दोषी आदमियोंका पता लगाया जा सके और उनपर उसकी जिम्मेदारी डाली जा सके। तुम्हें आकाशकी ओर देखनेकी जरूरत नहीं। तुम्हें न देवताओंकी प्रशंसा करनेकी जरूरत है और न निंदा। तुम उक्त बातोंका सतोषजनक कारण यहीं इसी पृथ्वीपर खोज सकते हो।

परमात्माका प्रेम

इस मतमें मुझे दूसरी बात क्या मिलती है?—

"हम विश्वास करते हैं कि आदमी भगवानका रूप है, और कि वह उसे जाने, प्रेम करे, उसकी आज्ञाका पालन करे और सदैव उसमे आनन्दित रहे।"

मैं नहीं मानता कि कभी किसीने परमात्मासे प्रेम किया है। क्योंकि किसीने कभी उसके बारेमें कुछ जाना ही नहीं। हम एक दूसरेसे प्रेम करते हैं। हम किसी ऐसी ही चीजसे प्रेम करते हैं जिसे हम जानते हैं। हम ऐसी ही वस्तुको प्यार करते हैं जो हमें अपने अनुभवसे अच्छी, महान् और सुन्दर प्रतीत होती है। हमारे लिए यह किसी तरह संभव नहीं कि हम 'अज्ञात'से प्रेम कर सकते हैं, क्यों कि सत्यसे मानवकी प्रसन्नतामें वृद्धि होती है। हम न्यायसे प्रेम कर सकते हैं, क्योंकि इससे मानवका आनन्द सुरक्षित रहता है। हम दयासे प्रेम कर सकते हैं। हम हर सद्गुणसे जिससे हम परिचित हैं अथवा जिसकी

हम रचना कर सकते हैं, प्रेम कर सकते हैं; किन्तु हम किसी 'अनन्त अज्ञात'से प्रेम नहीं कर सकते। और हम किसी भी ऐसी चीजका रूप कैसे हो सकते है जिसका न कोई शरीर है, न दूसरे अंग हैं और न उनमें किसी तरहकी उत्तेजना है ?

सत्य और प्रेमका राज्य

इस मतमें मुझे निम्नलिखित बात भी पढ़नेको मिलती है—

"हम विश्वास करते हैं कि ईसा मसीह सत्य और प्रेम, न्याय और शातिका ईश्वरी राज्य स्थापित करनेके लिए आया।"

संभव है, ईसा मसीहका यही उद्देश्य रहा हो। मैं इससे इन्कार नहीं करता, किन्तु परिणाम क्या हुआ ? ईसाई संसार शेष सारे संसारकी अपेक्षा युद्धका अधिक कारण हुआ। मृत्युके अनेक यन्त्रोंके आविष्कार ईसाइयोंने ही किये हैं। आदमीका जीवन हर लेनेवाली और जातियोको जीतकर गुलाम बनानेवाली सारी मशीनें ईसाइयोंके दिमागकी ही उपज हैं। तो भी उनका कहना है कि वह संसारमे शान्ति लेकर आया। बाइबलका कथन सर्वथा विपरीत है;—"मैं शान्ति नहीं लाया, किन्तु तलवार लाया हूँ।" और तलवार लाई गई। यूरोपमें आज ईसाई जातियाँ क्या कर रही हैं ? क्या एक भी ऐसी ईसाई जाति है जो दूसरीका विश्वास कर सके ? ऐसे कितने करोड़ ईसाई होंगे जिनके तनपर क्षमाकी वर्दी हो और हाथमें प्रेमकी बन्दूक ?

स्पेन देशका एक वृद्ध पुरुष मृत्यु-शय्यापर था। उसने पादरीको बुला भेजा। पादरी बोला—"तुम्हे मरनेसे पहले अपने शत्रुओंको क्षमा कर देना होगा।"

"मेरा कोई शत्रु नहीं है।"

"क्या कोई शत्रु नहीं ?"

"मैंने अपने अन्तिम शत्रुको तीन महीने हुए, जानसे मार डाला।"

इस समय कितने ईसाई हैं जो अपने ईसाई बंधुओंका विनाश करनेके लिए सन्नद्ध हैं ? योरपमे कौन लोग युद्धका विरोध कर रहे हैं ? क्या मजहबी लोग ? नहीं, वे ही लोग जो शांतिके मजहबमें विश्वास नहीं करते है।

धर्मके युद्ध

इस धर्मका पृथ्वीकी जातियोंपर क्या प्रभाव पड़ा है ? यह जातियाँ किस बातके लिए लड़ती रही हैं ? योरपकी तीस-साला लड़ाई किस बातके लिए हुई है ? हॉलैंडका युद्ध किस लिए हुआ ? इंग्लैण्डने स्कॉटलैण्डका क्यों सत्या-नाश किया ? आप इन सब झगड़ोंके मूलमें कोई न कोई धार्मिक प्रश्न देखेंगे। ईसाई पादरी जिस तरह ईसाके धर्मका उपदेश देते हैं वही युद्ध, रक्तपात, घृणा और सारी अनुदारताका कारण है। और क्यों ? क्योंकि उनका कहना है कि मुक्ति विश्वासपर निर्भर करती है। वे यह नहीं कहते कि यदि तुम सद्व्यवहार करो, तो तुम वहाँ पहुँच सकोगे। वे यह नहीं कहते कि यदि तुम अपना कर्जा अदा कर दो, यदि तुम अपनी स्त्री और बच्चोंसे प्रेम करो, यदि तुम अपने मित्रों, अपने पड़ोसियों, और अपने देशके प्रति अपना कर्तव्य करो, तो तुम वहाँ पहुँच सकोगे। इस सबसे तुम्हारा कुछ भला न होगा। तुम्हे एक खास चीजमें विश्वास करना होगा। चाहे तुम कितने ही खराब हो, तुम तुरन्त क्षमा कर दिये जा सकते हो—और चाहे तुम कितने ही अच्छे हो यदि तुम उस बातमे विश्वास नही करते जिसे तुम समझ नहीं सकते तो तुम्हें रसातल जाना ही होगा।

आज दिन उसकी क्या शिक्षा है ? लगभग हर हत्यारा स्वर्ग जाता है। फाँसी और परमात्मामे केवल एक ही कदमका अंतर है। आज ईसाई धर्मकी यही शिक्षा है।

मै समझता हूँ कि एक कानून बनना चाहिए; जिसके अनुसार किसी हत्यारेकेको थोडी भी धार्मिक सात्वना देना निषिद्ध हो।

सच्चाई यह है कि ईसाइयतने मित्र नहीं बनाये; शत्रु ही बनाये हैं। यह शातिका धर्म नहीं है, जैसा प्रचार किया जाता है। यह युद्धका धर्म है। जिस आदमीको ईश्वर रसातल भेजनेवाला है उसकी हत्या करनेमें किसी भी ईसाईको संकोच क्यो हो ? एक ईसाई किसी भी नास्तिकपर दया क्यों करे जब कि वह जानता है कि ईश्वर भी उसपर दया नहीं करेगा ? यह सब होनेपर भी इस मतमें कहा जाता है कि हम अन्तमें सारी पृथ्वीपर ईसाके साम्राज्यके स्थापित होनेमें विश्वास करते हैं !

आप लोग क्या कर रहे हैं ? क्या आप लोग अपनी आजकी गतिविधिको बहुत महत्त्व देते हैं ? प्रतिवर्ष कितने आदमी पैदा होते होंगे ? लगभग ५ करोड़। वर्षमें तुम कितने आदमियोको ईसाई बनाते होगे ? शायद ५ या ६ हजार। मै समझता हूँ कि मैने अंदाजा कुछ अधिक लगाया है। क्या कट्टर ईसाइयत वृद्धिपर है ? नहीं। दस वर्ष पहले कट्टर ईसाइयतमे जितने नास्तिक थे, उनकी संख्या अब सौगुनी बढ़ गई है। एक चीनीको ईसाई बनाये कितना समय हो गया ? यह अच्छा धर्म है कि ईसाई पादरियोंको तो बाइबलों और ट्रैक्टोंके साथ चीन भेजता है लेकिन यदि कोई चीनी यहाँ आता है तो उसकी दुर्गति की जाती है। किसी समझदार भारतीयको ईसाई बनाये तुम्हे कितना समय हो गया ? मै समझता हूँ कि जबसे पहले ईसाई पादरीने उस भूमिपर पैर रखा, तबसे एक भी बुद्धिमान् हिन्दू ईसाई नहीं बना। मेरी समझमे आज तक एक भी बुद्धिमान् चीनी ईसाई नहीं बना। इनकी अपनी रिपोर्टोंके अतिरिक्त और कहीं हमे उनका कुछ पता नही चलता। वे मरणोन्मुख गरीब बूढ़ी औरतोंसे पैसा ठग लेते है, यह दिखलाने या बतलानेके लिए कि एक सामान्य चीनी बाइबलके लिए कितना उत्सुक है !

अभी इस शातिके साम्राज्यकी स्थापनामें कितनी देर है ? शाति और सद्व्यवहारकी स्थापनामें किसीको विरोध नहीं। हर भला आदमी उस दिनकी प्रतीक्षामें हैं, जब युद्ध बंद हो जायगा। हम सब उस दिनकी प्रतीक्षामें है जब आदमी अपनेपर काबू पा लेगा, जब उसके राग द्वेष उसकी बुद्धिके अधीन हो जायेंगे। लेकिन वह दिन आदमीकी 'संपूर्ण मुक्ति' और 'अनन्त प्रतिकार' के सिद्धान्तके प्रचारसे समीप आनेवाला नहीं। विश्वासद्वारा मुक्तिका प्रचार करनेसे वह सूर्य शीघ्र उदय होनेवाला नहीं है। उस उषापर चमकनेवाला सितारा विज्ञान है, मिथ्या विश्वास नहीं—तर्क है, धर्म नहीं।

क्या मुर्दे फिर जी उठेंगे ?

क्या कोई भी विचारशील आदमी मुर्दोंके पुनर्जीवित होनेके सिद्धान्तमें विश्वास कर सकता है ? एक आदमी है जिसका वजन है दो सौ पाउण्ड। वह बीमार पड़ता है और एक सौ बीस पाउण्डका होकर मरता है।

पुनर्जीवनके दिन उसका वजन कितना होगा ? एक आदमखोर आदमी दूसरे आदमीको खा लेता है। हम जानते हैं कि जिन कणोंको हम खाते हैं वे हमारे शरीरका अंश बन जाते हैं। यदि आदमखोर आदमीने उस पादरीको खा लिया है और उसके शरीरके कणोंको अपने शरीरका हिस्सा बना लिया है और तब वह मर गया है, तो पुनर्जीवनके प्रातःकाल वे कण किसके शरीरके माने जायेंगे ? क्या वह मिशनरी कुर्क किये हुए मालको वापिस लेने जैसी कोई कारवाई कर सकता है ? यदि ' हाँ ' तो वह आदमखोर आदमी उसके लिए क्या करेगा ?

जहाँतक तर्कका संबंध है यह सिद्ध हो चुका है कि प्रकृतिमें न कुछ उत्पन्न होता है और न नष्ट। यह बार बार सिद्ध किया जा चुका है कि हमारे शरीरमे जो लाखों कण हैं वह दूसरी चीजोंमे रह चुके हैं, वह घासों और जंगलोंके हिस्से रहे हैं; वह फूलोंमें खिले हैं और नाना प्रकारकी धातुओंमें रहे हैं। दूसरे शब्दोंमें हममें ऐसे कण हैं जो दूसरे लाखों प्राणियोंमे रहे हैं और जब हम मरते हैं तो ये कण पृथ्वीमें जा मिलते हैं। तब घास और वृक्षोंके रूपमें प्रकट होते हैं और तब फिर पशुओंद्वारा खाये जाते हैं। यह सब होनेपर भी प्रोफेसरों तथा कालिजोंके सभापतियोंसे बनी हुई मजहबी कौंसिलके लोग उन्नीसवी शताब्दीमे गंभीरतापूर्वक कहते हैं कि वे मुर्दोंके फिर जी उठनेकी बातमें अक्षरशः विश्वास करते हैं। ऐसी बातें आदमीके भविष्यके संबंधमें निराश करनेके लिए पर्याप्त हैं। ऐसा लगने लगता है कि कहीं बेहूदगी अमर तो नहीं है। ये प्रोफेसर ज्ञानमें कम नहीं है। उनमेसे एक भी ऐसा अनपढ नहीं है कि यह सब न समझता हो।

अन्तिम निर्णयका दिन

“हम अन्तिम निर्णायक दिनमे विश्वास करते हैं जिसका परिणाम अनन्त जीवन और अनन्त जीवन होगा।”

अन्तिम निर्णयके दिन हम सब वहाँ होंगे। हजारों, लाखो, करोड़ों, अरबो, खरबो, नीलों और शंखों जितने भी मरे हैं वे सब वहाँ होंगे। किताबें खोल-खोलकर हरेकको बारी बारी बुलाया जायगा। भेड़ें और बकरियाँ पृथक् पृथक्

कर दी जायेगी, जब कि विश्वासी लोग अभिमानपूर्वक दाहिनी ओर चलेंगे। जो त्राण पायेंगे, वे बिना एक भी आँसूके, उन सब लोगोसे जो उन्हें प्यार करते रहे हैं और जिन्हें वे प्यार करते रहे हैं, छुट्टी ले लेंगे। लगभग सारी मानव जाति अनन्त दंडकी अधिकारिणी होगी और थोड़ेसे भाग्यशाली अनन्त जीवनके! यह है वह आशाका संदेश जो जीवनके अंधकारको दूर करता है!

जब पादरी पुरोहित इस प्रकार पकड़मे आ जाते हैं तो वे शब्दोंके दूसरे दूसरे अर्थ करना आरंभ करते हैं। वे कहते हैं कि संसार सात दिनोंमें नहीं, किन्तु सात युगोमे बना।

अपने इस मतमें वे कहते हैं कि भगवान्का दिन पवित्र होता है—हर सातवॉ दिन। थोडी देरके लिए मान लो कि तुम उत्तर ध्रुवके पास रहते हो, जहॉ तीन महीनेका दिन होता है, तो तुम किस दिनको पवित्र दिन मानोगे? यदि तुम उत्तर ध्रुवतक जा पहुँचो, तो तुम रविवारसे एकदम अपना पीछा छुडा सकते हो। तुम पृथ्वीके चक्कर काटनेकी गतिसे भी शीघ्रतर दूसरी ओर पहुॅच जा सकते हो। यदि हम किसी ऐसी चीजका आविष्कार कर लें जो एक घण्टेमे एक हजार मील तय कर सके तो हम पृथ्वीके चारो ओर रविवारको कहीं भी टिकने न दे। क्या किसी समय-विभागके पवित्र होनेसे बढकर भी कोई बेहूदा बात हो सकती है? इस प्रकार तो तुम शून्यको भी सदाचारी कह सकते हो। अब हमें कहा जाता है कि बाइबल कोई वैज्ञानिक पुस्तक तो है नही और यूॅ भी हम ईश्वरद्वारा चार हजार वर्ष पूर्व कही गई बातोपर निर्भर नही रह सकते, और फिर ईश्वर कोई हमारी तरह तो है नहीं; इसलिये हमे उसकी बाते बिना समझे तथा बिना प्रमाणके ही मान लेनी चाहिये।

लोग पूछते हैं, यदि हमसे बाइबल छीन ली गई, तो हम क्या करेंगे? हमारा काम उस इलहामके बगैर कैसे चलेगा जिसे कोई नहीं समझता? यदि हमारे पास झगडनेके लिये बाइबल नहीं रहेगी, तो हम क्या करेंगे? हमारा काम बिना नरकके कैसे चलेगा? हम अपने शत्रुओंका क्या करेंगे?

हम उन लोगोंका क्या करेंगे, जिनसे हमारा प्रेम तो है किन्तु जिन्हें हम पसन्द नहीं करते ?

बिना बाइबलके सभ्यता नहीं

वे कहते हैं, यदि बाइबल न होती तो कहीं कोई सभ्यता न होती। यहूदियोंके पास बाइबल थी, रोमन लोगोंके पास बाइबल न थी। अधिक बड़ा और अधिक शानदार शासन किनका था ? हम ईमानदार बनें। इन दोनों जातियोंमेंसे, किस जातिने महत्तम कवियों, महत्तम सैनिकों, महत्तम व्याख्याताओं, महत्तम नीतिज्ञों और महत्तम शिल्पियोंको जन्म दिया ? रोमके पास बाइबल न थी। ईश्वरको रोमन साम्राज्यकी कोई चिन्ता न थी। उसने उन लोगोंको यूँ ही अपने आप स्वयं ऊपर उठने दिया। ईश्वरको हर समय यहूदी लोगोंकी ही चिन्ता थी। यह सब होने पर भी रोमवालोंने संसारको जीत लिया। उन्होंने ईश्वरके 'चुने हुए लोगों' को भी नहीं छोड़ा। जिन लोगोंके पास बाइबल नहीं थी, उन्होंने बाइबलवालोंको हरा दिया। बाइबलवाले यहूदी लोगोंका क्या हुआ ? उनके पूजागृह उजाड़ दिये गये, और उनका नगर ले लिया गया। जब तक यहूदियोंको उनके ईश्वरने नहीं छोड़ दिया तब तक वे वैभवशाली नहीं बनें। तुर्कीलोग अपनी विजयोंका श्रेय कुरानको देते हैं। कुराननें उन्हे बाइबलके विश्वासियोंपर विजय दिलाई। हर जातिके पादरी पुरोहितोंने अपनी जातिके वैभवका श्रेय अपने धर्मको ही दिया है।

यह कहना कि जिसने रोगियोंका रोग दूर किया, लॅगड़ोको चलने योग्य बनाया, अंधोंको आँखें दीं, मुर्दोंको जिन्दा किया, भूत-प्रेतोंको मार भगाया, हवाओं और लहरोंपर अधिकार किया, शून्यमेंसे भोजन पैदा किया और प्रकृतिकी सभी शक्तियोंको अपने अधीन बनाया, ऐसा आदमी ऐसे लोगोंके द्वारा, सूलीपर चढा दिया गया जो उसकी इन अतिमानवीय शक्तियोंसे परीचित थे, एकदम बेसिर-पैरकी बात है। यदि उसे सार्वजनिक तौरपर फॉसी मिली, तो ईसाके ये करिश्मे निजी तौरपर हुए होंगे। यदि ये करिश्में सार्वजनिक तौरपर हुए होते तो ईसाको फॉसी दी ही न जाती। इन करिश्मोंको छोड़ दो और ईसाका अतिमानवीय चरित्र नष्ट हो जाता है। वह वही रह जाता

है, जो कुछ वास्तवमें था—एक आदमी। इन आश्चर्यकर बातोंको छोड़ दो, तो ईसाकी सभी शिक्षायें बुद्धिके परेकी वस्तु नहीं रह जाती। उस समय उनका मूल उतना ही रह जाता है जितना कि उनमे तर्क है, जितना कि उनमें सत्य है।

तब मानवताके दूसरे उपदेशकोमेंसे ईसा अपना उचित स्थान प्राप्त कर लेता है। उसका जीवन तर्कसंगत और प्रशंसनीय हो जाता है। हम एक आदमीको देखते हैं जिसे अत्याचारसे घृणा थी, जो मिथ्या विश्वास और ढोंगकी निंदा करता था, जिसने अपने समयके निर्दय मजहबी सांप्रदायिकोपर आक्रमण किया, जिसने ईर्षालु पादरियोको अपना विरोधी बनाया और जिसने अपने सत्यके प्रति ईमानदार बने रहनेके लिए सच्चे वीरकी तरह मृत्युको गले लगाया।

विश्वासकी आवश्यकता

क्या विश्वास गवाहीपर निर्भर करता है? मैं समझता हूँ कि कुछ हालतोंमें यह किसी मात्रा तक अवश्य निर्भर करता है। अन्यथा यह कैसे होता है कि सारा न्यायमण्डल तमाम गवाही सुनता है, दोनों पक्षकी बातें सुनता है, न्यायाधीशका दोषारोपण सुनता है, कानूनी-पक्ष सुनता है और तब भी वे शपथपूर्वक अपना अपना मत देते हैं—छः वादीके पक्षमे और छः प्रतिवादीके पक्षमें। सभी आदमियोंपर गवाहीका समान प्रभाव नहीं पड़ता। क्यों? हमारे दिमाग एकसे नहीं हैं, हमारी समझ समान नहीं है, हमारा अनुभव समान नहीं है। यह सब होनेपर भी मुझे मेरे विश्वासोंके लिये दोषी ठहराया जाता है। मुझे पवित्र ईश्वर, पवित्र ईसा मसीह और पवित्र आत्माके एक ही साथ एक होने और तीन भी होनेमे विश्वास करना चाहिये। एक बार एकको तीन मान लिया जाय, तो एकका तीन गुणा भी एक ही होगा। यदि मै इस गणितके गोरखधन्धेको स्वीकार न कर सकूँ, तो मुझे अनन्त काल तक रसातलमें रहना होगा! ईसाइयतका यही सबसे अधिक विषैला अंश है कि मुक्ति विश्वासपर निर्भर करती है। यही सबसे अधिक अभिशप्त हिस्सा है और यदि ईसाइयतके इस हिस्सेको तिलाञ्जलि नहीं दी जाती, तो मिथ्या-विश्वासके अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रह जाता।

आदमी अपने विश्वासको अपने काबूमे भी नहीं रख सकता। यदि मुझे

कोई ख़ास प्रमाण मिलता है तो मैं किसी खास बातमे विश्वास कर सकता हूँ। यदि मुझे वह प्रमाण नहीं मिलता, तो यह सम्भव है कि मैं उस बातपर कभी विश्वास न करूँ। यदि वह बात मेरे दिमागके अनुकूल हो तो मैं उसमें विश्वास कर सकता हूँ, यदि अनुकूल न हो तो मैं अविश्वास कर सकता हूँ। और मैं आखिर किस चीज़के सहारे चलूँ? प्रकृतिसे मुझे इतना ही प्रकाश तो मिला है। और यदि कोई ईश्वर है तो उसने भी मुझे जीवन नामक अन्धकार और रात्रिमें अपना रास्ता टटोलनेके लिये यही एक वस्तु दी है। मैं इस सम्बन्धमे किसी सुनी-सुनाई बातपर विश्वास नहीं करता। मुझे किसी दूसरे आदमीके कथनको अन्धे होकर स्वीकार करनेकी जरूरत नहीं और न किसी पुस्तकके सामने घुटने टेकनेकी जरूरत है। मैं अपने दिमागके मन्दिरमे ईश्वरसे परामर्श करता हूँ अर्थात् अपने तर्कसे। 'देव-वाणी' मेरे कानमे कुछ कहती है। मै उस 'देव-वाणी' की आज्ञा मानता हूँ। मुझे किसकी आज्ञा माननी चाहिये? क्या मैं किसी दूसरे आदमीके कथनपर विश्वास करूँ, उसके विचारोंपर नहीं? किन्तु जो वह कहता है कि किसी ईश्वरने उसे कहा है?

यदि मैं किसी ईश्वरको देखूँ तो मै उसे पहचान न सकूँगा। मैंने पहले भी कहा है और फिर दोहराता हूँ कि मेरा दिमाग मेरे बावजूद सोचता है, इस लिये मुझे मेरे विचारोंके लिये दोषी नहीं ठहराया जा सकता। मैं अपने हृदयकी धड़कनपर क़ाबू नहीं पा सकता। अपनी नसोंमें बहनेवाली रक्तकी धाराको मै रोक नहीं सकता। और तब भी मुझे मेरे विश्वासोके लिये दोषी ठहराया जाता है! तो ईश्वर मुझे प्रमाण क्यों नहीं देता? लोग कहते हैं कि उसने प्रमाण दिया है। कहाँ? एक इल्हामी पुस्तकमें। किन्तु मै उनकी तरह इसका अर्थ नहीं करता। क्या मुझे अपनी समझका तिरस्कार करना चाहिये? उनका कहना है—"यदि तुम अपनी बुद्धिकी बातको अस्वीकार नहीं करते तो तुम्हें मरते समय इसके लिये दुखी होना होगा।" क्या मुझे इस बातके लिये दुखी होना होगा कि मैंने एक ढोंगीका जीवन व्यतीत नहीं किया? क्या मुझे इस बातके लिये दुखी होना होगा कि मैंने अपने आपको झूठमूठ ईसाई नहीं कहा? क्या मेरा ईमानदार होना मेरी मृत्युकी

घड़ियोंको कण्टकाकीर्ण बनायेगा ? क्या ईश्वर मुझे ईमानदारीके अपराधके लिये अवश्य दण्डित करेगा ?

वे कहते हैं कि ईश्वर मुझे कहता है कि 'अपने शत्रुओको क्षमा कर दो।' मै कहता हूँ, कि मैं उन्हें क्षमा करता हूँ, किन्तु वह कहता है —'मैं तो अपने शत्रुओंको रसातल भेजूँगा।' ईश्वरके लिये परस्परविरोधी आचरण शोभा नही देता। यदि वह चाहता है कि मै अपने शत्रुओंको क्षमा करूँ, तो उसे अपने शत्रुओंको क्षमा करना चाहिये। मुझसे अपने ऐसे शत्रुओको क्षमा कर देनेकी आशा की जाती है जो मुझे हानि पहुँचा सकते हैं, पर मै ईश्वरसे केवल ऐसे शत्रुओको क्षमा करनेको कहता हूँ जो उसे किसी तरहकी हानि नहीं पहुँचा सकते। उसे कमसे कम उतना उदार तो होना ही चाहिये, जितना उदार वह मुझे देखना चाहता है। और मैं किसी ईश्वरसे तब तक क्षमा-याचना करनेके लिये तैयार नहीं हूँ, जब तक मै अपने शत्रुओको क्षमा करनेकी तैयारी न करूँ, जब तक मै उन्हे क्षमा न कर डालूँ। मैं इतना ही चाहता हूँ कि इस ईश्वरको अपने 'सिद्धान्त' के अनुसार कार्य करना चाहिये। मैं 'विश्वास' के धर्ममें विश्वास नहीं करता, किन्तु दयाके धर्ममे, सत्कर्मोंके धर्ममें करता हूँ। आदमीको अपने विश्वासके लिये उत्तर-दायी माननेका विचार ही मज़हबी असहनशीलता और अत्याचारका मूल कारण है।

मै मानवताके धर्ममे विश्वास करता हूँ। ईश्वरसे प्रेम करनेसे कहीं अच्छा है कि आदमी अपने मानव बन्धुओंसे प्रेम करे। हम अपने मानव-बन्धुओंकी सहायता कर सकते हैं। हम ईश्वरकी कुछ सहायता नहीं कर सकते। जो हम नही कर सकते उसका झूठा बहाना करते रहनेकी अपेक्षा यह कहीं अच्छा है कि जो कुछ हम कर सकते है करे।

सदाचारका कोई रग नहीं है और न दया, न्याय तथा प्रेमका कोई आकार-विशेष।

अनन्त दण्ड

अब मैं इस मतके अन्तिम सिद्धान्तको लेता हूँ, अनन्त दण्डके सिद्धान्तको। मेरा निश्चय है कि मै कभी कोई ऐसा व्याख्यान न दूँगा, जिसमें मै अनन्त दण्डके सिद्धान्तका खण्डन न करूँ। उक्त मतका यह सिद्धान्त ऐसा है कि इसके लिये अफरीकाके जगलोंमें रहनेवाला नीचतम असभ्य प्राणी भी

अपमान अनुभव करेगा। जो आदमी इस उन्नीसवीं शतीमें भी अनन्त दण्ड अथवा अनन्त पीड़ाके सिद्धान्तका प्रचार करता है, उसका जीवन ही व्यर्थ है। जरा उस सिद्धान्तका विचार करो! अनन्तकालीन दण्ड!

इस संसारमें हम कभी पूर्ण रूपसे सभ्य नहीं कहला सकते, जब तक पृथ्वीपर 'फाँसी' के तख्तोंकी छाया विद्यमान है। हम तब तक कभी सम्पूर्ण सभ्य नहीं हो सकते जब तक पृथ्वीपर ऐसे जेल-खाने हैं, जिनकी चार-दीवारीके भीतर आदमी क़ैद है। जब तक हम सभी अपराधोंसे मुक्त नहीं हो जाते, हम सभ्य कहला ही नहीं सकते। यह सब होने पर भी इस ईसाई मतके अनुसार ईश्वरका एक अनन्त जेलखाना होना चाहिये और स्वयं उसे उसका जेलर। उसे अपने कैदियोंको निरन्तर जेलमे रखना होगा। क्या उनका सुधार करनेके लिये? नहीं। निरुद्देश्य दण्ड देनेके उद्देश्यसे। और यह दण्ड क्यों? क्योकि जिस समय वे इस पृथ्वीपर थे, बेचारे किसी चीज़में विश्वास न कर सके थे। जिनका जन्म अज्ञानमें हुआ, जो दरिद्रतामे पले, जो लोभ-लालचके फंदोंमें जकड़े थे, जिन्हे 'श्रम' और 'अभाव' ने कुरूप बना दिया था—ऐसे लोगोंको अनन्त युगों तक जिम्मेदार ठहराया गया। कोई आदमी इससे भयानक कल्पना नहीं कर सकता। कोई आदमी इससे बढकर बेहूदा बात नहीं सोच सकता। इस सिद्धान्तकी उत्पत्ति अज्ञान-रूपी भूमि और भय-रूपी वर्षामेंसे हुई।

जो रसातलमें भेजे गये

हमे कहा जाता है कि ईश्वर संसारको इतना प्यार करता है कि वह लगभग हर किसीको रसातलमें भेजेगा। यदि यह कट्टर धर्म सच्चा हो, तो संसारमें जो महानतम् और श्रेष्ठतम् महापुरुष हुए हैं वे आज ईश्वरके हाथों कष्ट पा रहे होंगे। धर्म-वालोंको इसकी कुछ चिन्ता नहीं। वे सदाकी तरहसे मौज-मेला मनानेमें मस्त हैं। यदि यह सिद्धान्त सत्य हो, तो बैंजामिन फ्रेंकलिन, जो दुनियाके श्रेष्ठ और बुद्धिमान् आदमियोंमेंसे एक था, जिसने हमें एक स्वतन्त्र सरकार देनेके लिये इतना कुछ किया, इस समय ईश्वरके अत्याचारोंसे पीड़ित होगा। यदि धर्मोपदेशक लोग ईमानदार हो तो उन्हे अपने श्रोताओंसे कहना चाहिये, देखो, बैजामिन फ्रैंकलिन नरकमे है, कोई

उसका अनुकरण करनेका साहस न करे। सभी पादरी-पुरोहितोंमें यह बात कहनेका साहस होना चाहिये। जो बात मनमें हो, वही बोलो। या तो अपने मतका साथ दो, या उसे बदल दो। मै आपके मनपर इस बातको अंकित करना चाहता हूँ, क्यो कि मैं इस दुनियामेसे नरककी आग बुझा देना चाहता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि आप यह बात जान लें कि इस मतके अनुसार जिन लोगोंने इस महान् शानदार सरकारकी स्थापना की, वे सभी आज नरकमे हैं। जो आदमी क्रान्ति-युद्धमे लडे और जिन्होने ब्रिटेनके हाथोसे यह प्रायद्वीप छीना, वे सब ईश्वरकी अनन्त क्रोधाग्निके शिकार हैं। धर्मोपदेशकोमें इस बातके कहनेका साहस होना चाहिये। गृह-युद्धमें देशकी सेवा करनेवाले हजारो वीर, जेलोमें भूखो मरनेवाले सैंकड़ो वीर—सभी ईश्वरके जेल-खानोंमें हैं। यदि इस मतका उक्त सिद्धान्त सत्य है तो महान्तम वीर, महान्तम कवि, महान्तम वैज्ञानिक और वे सभी लोग जिन्होने इस संसारको सुन्दर बनानेका प्रयत्न किया, रसातल गये है।

हमबोल्ट, जिसने प्रकाश दिया, जिसने मानवताके दिमागी धनमे वृद्धि की; गेटे, शिलर और लेसिंग, जिन्होने एक प्रकारसे जर्मन-भाषाको जन्म ही दिया, सब ही रसातल गये। लापलेस, जिसने आकाशको एक खुली पुस्तककी तरह पढा, वह भी नरकमें है। मानव-प्रेमका कवि राबर्ट-बर्न भी वहीं है। डिकंसने करुणाका पाठ पढाया। ईश्वर उससे भी बदला ले रहा है। हमारे अपने राल्फ वाल्डो एमर्सनको सुननेके ईसाई पादरियोको हजारो अवसर मिले थे; तो भी उसने किसीकी दयाके भरोसे 'मुक्ति' के सिद्धान्तको नहीं अपनाया। उसने अपने मानव-बंधुओको अपने श्रेष्ठतम ऊँचेसे ऊँचे विचार दिये। यह सब होने पर भी वह आज दिन नरकमे है।

लॉग-फैलो, जिसने हजारो घरोंको स्वच्छ बनाया, जो अपने मानव बन्धु-ओंसे प्यार करता था, जिसने गुलामोकी स्वतन्त्रताके लिये भरसक प्रयत्न किया, जिसने आदमीकी प्रसन्नतामे वृद्धि करनेकी भरसक कोशिश की, वह भी नरकमे है। आदमीके अधिकारका (Rights of man) लेखक थामस-पेन, जिसने पृथ्वीके दोनो गोलार्धोंमे मानव-जातिकी स्वतन्त्रताके लिये अपने आपको खपा दिया, जो प्रजातन्त्रके संस्थापकोमेसे एक था, वह भी

आज नरकमें है। 'पोजिटिव-फिलासफी' का लेखक आगस्ट कामटे, जो अपने मानव-बन्धुओंको इतना अधिक प्यार करता था कि उसने 'मानवता' को ही 'ईश्वर' के दर्जेपर पहुँचा दिया, जिसने अश्रु-मुख हो अपने महान् काव्यकी रचना की; वह भी आज नरकमें है।

वाल्टेअर, जिसने फ्रांससे यातनाका मूलोच्छेद किया: जिसने किसी भी दूसरे जीवित अथवा मृत आदमीकी अपेक्षा मानव-स्वतन्त्रताके लिये अधिक कार्य किया; जो मिथ्या विश्वासोंकी हत्या करनेवाला था—वह भी शेष सब लोगोंके साथ नरकमे है।

ज्यूरदनो ब्रूनो—लम्बी अन्धकारपूर्ण रात्रिके बाद सुबहका प्रथम सितारा: बेनेडिक्ट स्पिनोज़ा—सृष्टि और ईश्वरको एक ही माननेवाला, दार्शनिक, पवित्र और उदाराशय, डिडेरोट,—विश्वकोषनिर्माता, जिसने तमाम ज्ञानको एक छोटी-सी गागरमे कैद करनेका प्रयत्न किया ताकि वह एक किसान और एक राजकुमारको ज्ञानके एक ही दिमागी-स्तरपर खड़ा कर दे, जो समस्त पृथ्वीपर ज्ञानका बीजारोपण करना चाहता था: जो मानवताके लिये काम करना चाहता था—वह भी नरकमे ही है।

स्काटलेण्डका दार्शनिक डेविड ह्यूम, भी वहीं है। सगीताचार्य्य बीथोविन भी वहीं है। सुर-तालका शेक्सपीयर वेगनर भी वहीं है। उन सबके कारण आज नरकमे स्वर्गकी अपेक्षा कहीं अच्छी संगीत-लहरियोंका साम्राज्य है।

शैले भी, जिसकी आत्मा कोयलकी भाँति आकाशगामिनी थी, वहीं है। शेक्सपीयर जिसने मानवताको उठानेके लिये सभी जीवित अथवा मृत पादरी-पुरोहितोंकी अपेक्षा अधिक कार्य किया, जो मानव-जातिके महानतम व्यक्तियोंमे था,—वह भी वहीं है।

लेकिन, जिन्होंने जेलोंकी स्थापना की: जिन्होने बेड़ियाँ बनाई, जिन्होने यंत्रणाके आयुधोंका आविष्कार किया; जिन्होंने आदमियोंके चमड़ेको चीर-फाड़ डाला, जला डाला; जिन्होने बच्चोंको चुराया, जिन्होंने पति-पत्नियोंको बेचा; जिन्होंने हजारों वर्ष तक चिताकी आगको प्रज्वलित रखा—वे सब स्वर्गमें हैं। मैं उस स्वर्गकी मंगल-कामना करता हूँ।

कुछ ही समय पूर्व, पृथ्वीके शासक परमात्माने प्रातःकालके ताराओंकी छायामें ' ओहियो ' में बाढ़ ला दी। एक घर नीचे आ रहा था। उसकी छतपर एक मानव दिखाई दिया—एक स्त्री—एक माता। लोगोंने उसे बचाना चाहा। वह बोली—" नहीं, मैं जहाँ हूँ वही रहूँगी। इस घरमें मेरे तीन मृत बच्चे हैं। मैं उन्हें छोडकर नहीं जा सकती। " क्या असीम प्रेम है! निराशा और मृत्युसे भी कहीं अधिक गहरा। यह सब होनेपर भी ईसाई मत कहता है कि यदि वह स्त्री, यदि वह माँ, कहीं उनके मतमे विश्वास करनेवाली न हुई, तो ईश्वर उसकी आत्माको अनन्त नरककी आगमे झोंक देगा।

इस ईसाई-धर्मके विरुद्ध मेरी सबसे बड़ी आपत्ति इसका अनन्त-यातनाका सिद्धान्त है। मैं इसकी असीम हृदयहीनताके कारण इसे अस्वीकार करता हूँ। गत युद्धमे अनेक ईसाई, जो यह मानते थे कि यदि वे मारे जायेंगे तो स्वर्ग जायेंगे, कुछ दूसरे लोगोंको रुपया देकर अपनी बजाय लड़नेके लिये भेजते थे। बेचारोंको यदि घरपर रहना मिले, तो वे नरकमें जानेको तैयार थे। आप देखते हैं कि वे अपनी मान्यताओंमे ईमानदार नहीं हैं। वे यह कल्पना नहीं कर सकते कि वे कितनी भयानक झूठका प्रतिपादन करते हैं। आज रात मै आप सबसे हाथ जोड कर प्रार्थना करता हूँ कि किसी ऐसे गिर्जेके निर्माणके लिये, जिसमें इस झूठका प्रचार होता है, एक डालर न दे, किसी पादरीको जिसके मुँहमे यह झूठ भरा हो, धर्मप्रचारार्थ विदेश भेजनेके लिए एक कौड़ी न दे।

दूसरी आपत्ति

कट्टर धर्मके विरुद्ध मेरी दूसरी आपत्ति यह है कि यह मानवीय-प्रेमको नष्ट करता है। इसका कहना है कि परलोकमे स्वर्ग बनानेके लिए इस संसारसे प्रेम करना आवश्यक नही।

स्त्री नहीं, बच्चे नहीं, भाई नही, बहन नहीं,—मानवी हृदयका कोई स्नेह-संबंध नही—जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो तुम देवताओंमे रहोगे। मैं नहीं जानता कि मुझे देवता अच्छे लगेगे या नहीं। मै यह भी नही जानता कि मै किसी ऐसे स्वर्गमे जानेकी अपेक्षा जो मुझसे प्रेम करते रहे हैं और जिन्हे मै जानता हूँ, उनके साथ रहना अधिक पसंद करूँगा। मैं अपने प्रेम-

भाजनोंको छोड़कर किसी स्वर्गकी कल्पना नहीं कर सकता। अपने पिताको छोड़ो, अपनी माताको छोड़ो, अपनी स्त्रीको छोड़ो, अपने बच्चोंको छोड़ो, हर चीज़को छोड़ो, और ईसामसीहके पीछे चलो! मैं नहीं चलूँगा। मैं अपने हृदयकी श्रेष्ठतम् भावनाओंको किसी स्वार्थपूर्ण भयकी वेदीपर बलि न होने दूँगा।

मानवीय प्रेमको समाप्त कर दो, तो शेष क्या रहता है? परलोकमें ही क्या रहेगा, और यहाँ क्या बचेगा? क्या मानवीय प्रेमके बजाय गार्हस्थ्यकी कल्पना की जा सकती है? कलाकी की जा सकती है? आनन्दकी की जा सकती है? मानवीय प्रेम ही हर घरका निर्माता है। मानवीय प्रेम ही समस्त सौन्दर्यका रचयिता है। प्रेम ही प्रत्येक चित्रको चित्रित करता है और करता है प्रत्येक मूर्तिका निर्माण। प्रेम ही हर चूल्हेको प्रज्वलित रखता है। मानवीय प्रेमके विना स्वर्ग क्या होगा? यह सब होनेपर भी हमें ऐसे ही स्वर्गका लालच दिया जाता है, जहाँ न स्त्री हो, न माँ हो और न बच्चे हों। और तुम्हें आशा है कि किसी देवताकी संगति प्रसन्न रखेगी। ऐसा धर्म निंदनीय है। ईसाइयत मानवीय प्रेमको शून्य समझती है, तो भी—

जीवनके काले बादलोंपर प्रेम ही एकमात्र इन्द्रधनुष्य है। यही प्रातः सायं चमकनेवाला सितारा है। यह बच्चेके झूलनेपर चमकता है और शब्दविहीन समाधिपर भी अपना तेज फैला देता है। यह कलाकी जननी है। यह कवि, देशभक्त और दार्शनिकको प्रेरणा देता है। यह प्रत्येक हृदयका प्रकाश है। इसीने सबसे पहले अमरत्वका स्वप्न देखा। इसने संसारको स्वर-तालसे भर दिया, क्योंकि प्रेमकी भाषाका ही दूसरा नाम संगीत है। प्रेम ही वह जादूगर है जो निकम्मी चीज़ोंको आनन्द प्रदान करता है। यह उस अद्भुत पुष्प—हृदय—की सुगंध है, जिसके बिना हमारा दर्जा पशुओंसे भी गया-बीता हो जाता है, किन्तु जिसके होनेसे पृथ्वी स्वर्ग बन जाती है और हम सब देवता।

यह स्वर्ग क्या शानदार संसार होगा! उस संसारमे कही कोई सुधार नहीं, थोड़ा-सा भी नहीं।

जब तुम वहाँ पहुँचो, ईश्वर तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता। वह जिसने तुम्हारी आत्माको पैदा किया है, आत्माके लिए उतना कुछ भी नहीं कर सकता जितना कि एक सामान्य ईसाई पादरी। आत्मा स्वर्ग जाती है।

जहाँ सत्संगति ही सत्सगति है, कोई बुरा उदाहरण नहीं। ईश्वर, उसका पुत्र और पवित्र आत्मा, सभी वहॉ हैं, फिर भी वह उस गरीब अभागेको रसातल भेजनेके अतिरिक्त और कुछ नही कर सकते।

मै जो कहता हूँ वह इतना ही है—न कोई ऐसा संसार है और न हो ही सकता है जहॉ हर आदमीको सुकर्म करनेका अनन्त अवसर न हो।

- ईसाई धर्मके प्रति मेरी यही आपत्ति है। यदि इस पृथ्वीका प्रेम स्वर्गका प्रेम नहीं है, जिन्हें हम यहॉ प्यार करते हैं, वे यदि हमसे वहाँ पृथक् कर दिये जायेंगे, तो मैं अनन्त निद्रा चाहता हूँ। मुझे अकेला रहने दो। यदि कब्र फटनेके समय मुझे उन चेहरोंका दर्शन नहीं होगा जो मेरे जीवनको प्रकाशित करते रहे हैं, तो मुझे सोने दो। इस अनन्त दण्डके सिद्धान्तके सच्चा होनेसे मै यह कहीं अधिक अच्छा समझता हूँ कि हमारी सभ्यताका यह भवन टूट-फूटकर गिर जाय और धूल बनकर अदृश्यमे विलीन हो जाय।

मैं समझता हूँ कि ईश्वरसे प्रेम करनेकी अपेक्षा अपने बच्चोमे प्रेम करना हजार दर्जे अच्छा है, क्यों कि तुम उनकी कुछ सहायता कर सकते हो। मै समझता हूँ कि ईश्वरका काम तुम्हारी मददके बिना चल सकता है। यह निश्चित है कि हम किसी ऐसेकी कुछ मदद नहीं कर सकते, जिसका न शरीर है, न अंग है और न उनमें किसी तरहकी उत्तेजना है।

मैं क्या मानता हूँ?

मैं परिवारके धर्ममे विश्वास करता हूँ। जिस परिवारमे सदाचारके साथ प्रेम है, वह संसारका सुन्दरतम फूल है। और मै कहता हूँ कि परमात्मा किसी ऐसे आदमीको जिसने इस लोकमें किसी परिवारको सुखी बनाया हो, दूसरे लोकमें रसातल नहीं भेज सकता। ईश्वर किसी दयालु हृदयके साथ निर्दयताका व्यवहार नहीं कर सकता। ईश्वर किसी ऐसे आदमीको आगमे नहीं झुलसा सकता जिसने यहॉ किसी नंगेको वस्त्र पहनायें हो। ईश्वर किसी ऐसे आदमीको, जिसने अपने मानव-बन्धुओकी दशा सुधारनेके लिये कुछ किया हो, अनन्त यातना नहीं दे सकता। यदि वह दे सकता है, तो मै स्वर्गमे ऐसे ईश्वरकी संगति करनेकी अपेक्षा नरक जाना अधिक पसन्द करूँगा।

अमरत्व

वे कहते हैं कि दूसरी भयानक बात जो मैं करता हूँ वह यह है कि मैं अमरत्वकी आशा छीनता हूँ। न मैं छीनता हूँ, न छीनना चाहता हूँ और न छीन सकता हूँ। मानवीय प्रेमने ही सर्व प्रथम अमरत्वका स्वप्न देखा; इतना होनेपर भी ईसाइयत अमरत्वमेंसे मानवीय प्रेमको निकाल बाहर करना चाहती है। हम प्रेम करते हैं, इसीलिये हम (भविष्यमे भी) जीवित रहना चाहते हैं। हमारा प्रेम-पात्र मरता है, हम उससे फिर मिलना चाहते हैं और मानवीय हृदयके इस प्रेममेंसे ही अमरत्वकी आशाका महान् पौधा उग आया है।

मै मानवीय आशाकी सबसे मद्धम किरणको भी नष्ट न होने दूँगा; किन्तु मैं यह स्वीकार नही करता कि हमे अपना अमरत्वका ख्याल बाइबलसे मिला है। यह मूसासे बहुत पहलेसे चला आया है। यह तमाम मिस्रमें व्याप्त है, तमाम भारतमे है। जहाँ भी आदमी रहा है, उसने दूसरे संसारकी कल्पना की है, जहाँ वह इस संसारके बिछुडोंसे मिल सके।

हम अमरत्वके इस विश्वासका इतिहास उन समाधियोंमें और उन मन्दिरोंमें देखते हैं जिनका निर्माण रोनेवालोंने किया, आशावानोंने किया। अपने मृतोंकी मिट्टीपर उन्होंने दूसरे जीवनके चिह्न बनाये।

हम नहीं जानते। हम दुःख-दर्दपूर्ण भावी जीवनका चित्र नहीं खींचते। हम अपने मृतकोंको अपनी माता प्रकृतिकी गोदमे विश्राम करने देते हैं।

यदि ईसा वास्तवमे ईश्वर था, तो उसने साफ साफ यह क्यो नहीं बताया कि कोई दूसरा जीवन है? उसने इसके बारेमें हमे कुछ भी क्यों नहीं बताया? वह ससारको अन्धकार और सन्देहके मुँहमे छोड़ कर स्वयं चुपचाप मृत्युके मुँहमें क्यो चला गया? क्यों? क्योंकि वह एक आदमी था और वह नहीं जानता था। हम नही जानते। हम नहीं कह सकते कि मृत्यु कोई एक बड़ी दीवार है अथवा कोई एक बड़ा दरवाजा, दिनका आरम्भ है अथवा अवसान, जीवनका सूर्योदय है अथवा सूर्यास्त; अथवा यह वह अनन्त जीवन है जो हर किसीको शान्ति और प्रेम प्रदान करता है।

माता पिताको सलाह

जो माता पिता बाइबलको इलहामी ग्रंथ नहीं मानते उन्हें अपने बच्चोंको यह शिक्षा नहीं देनी चाहिए कि बाइबल इलहामी ग्रथ है। उन्हें एकदम ईमानदार होना चाहिए। ढोंग कोई गुण नहीं है और वास्तविक घटनाओंका जो मूल्य है, वह मिथ्या कथनोंका कभी हो नहीं सकता।

एक बुद्धिवादीका यह कर्तव्य है कि वह अपने बच्चेके दिमागको मिथ्या विश्वासके परिणामस्वरूप बिगड़ने न दे। वह जिस प्रकार बच्चेके शरीरकी रक्षा करता है उसी प्रकार उसे मिथ्या विश्वासके आक्रमणसे उसके दिमागकी भी रक्षा करनी चाहिये। रविवारके धार्मिक स्कूलोंमें बच्चोंको सिखाया जाता है कि विश्वास करना कर्तव्य है, उसके लिये कोई प्रमाण नहीं चाहिये, श्रद्धाका वास्तविकतासे सम्बन्ध नहीं और धर्म तर्कसे ऊपर है। उन्हें सिखाया जाता है कि वे अपनी स्वाभाविक बुद्धिका प्रयोग न करें, जो कुछ वे वास्तवमें सोचते हैं उसे मुँहसे न निकालें, मनमें किसी संदेहको जगह न दें, हैरान करनेवाले प्रश्न न पूछें, प्रत्युत जो कुछ अध्यापकगण कहें उसे अक्षरशः सत्य मानें। इस प्रकार बच्चोंके दिमागपर आक्रमण किया जाता है, उन्हें बिगाड़ा जाता है और उनपर विजय प्राप्त की जाती है। क्या कोई भी शिक्षित आदमी अपने बच्चेको किसी ऐसे स्कूलमें भेजेगा जिसमें गुरुत्वाकर्षणके संबंधमें न्यूटनके कथनको ही अस्वीकार किया गया हो, जिसमें गैलीलियोके बताये हुए वस्तुओंके जमीनपर गिरनेके सिद्धान्तका मजाक उड़ाया गया हो, जिसमें कैपलरके तीन सिद्धान्तोंको कुबुद्धिका परिणाम समझा जाता हो और जिसमें पृथ्वीका सूर्यके गिर्द घूमना एकदम बेहूदा बात मानी जाती हो?

तो फिर एक बुद्धिमान् आदमी अपने बच्चेको बाइबलका भूगर्भशास्त्र और ज्योतिषशास्त्र क्यों सीखने दे ? बच्चोंको यही शिक्षा मिलनी चाहिए कि वे सत्यकी खोज करें, ईमानदार बनें, दयावान् बनें, उदार बनें, करुणापूर्ण बनें, और न्यायी बनें। उन्हें सिखाना चाहिये कि वे स्वतंत्रतासे प्रेम करें और अपने आदर्शके अनुसार जियें।

एक अविश्वासी जो प्रकृतिकी एकरूपतामें, कार्य-कारणकी अटूट शृंखलामें, विश्वास करता है, अपने बच्चेके दिलमें यह बातें क्यों बैठने दे कि करिश्में हुए हैं, आदमी सशरीर स्वर्ग गये हैं, आगने कपड़े और आदमियोंको जलानेसे इंकार कर दिया है, लोहा पानीपर तैरने लगा है, चंद्रमा और पृथ्वीकी गति रुक गई है; और पृथ्वीकी तो गति रुकी ही नहीं बल्कि वह दूसरी ओर मुड़ गई है ?

विचारवान् मनुष्य यदि जानता है कि ये करिश्में कभी नहीं हुए, तो वह अपने बच्चोंके दिमागमें किसीको भी ये मूर्खतापूर्ण और असंभव बाते क्यों ठूसने दे ? वह अपने मेमनोंको मिथ्या विश्वासके भेड़ियों और विषैले सर्पोंकी देख-रेखमें क्यों रहने दे ? बच्चोंको केवल वही बातें सिखाई जानी चाहिए जिनकी किसीको ठोस जानकारी हो। कल्पनाओंको वास्तविक घटनाओंका दर्जा नहीं दिया जाना चाहिए। यदि एक ईसाई कुस्तुन्तुनियामें रहे तो वह अपने बच्चोंको किसी मसजिदमें यह सीखनेके लिए नहीं भेजेगा कि मुहम्मद खुदाका पैगम्बर है और कुरान एक इलहामी किताब है। ऐसा क्यों ? क्यों कि वह मुहम्मद और कुरानमे विश्वास नहीं करता। यह पर्याप्त कारण है। इसी प्रकार न्यूयार्कमें रहनेवाले अज्ञेयवादीको चाहिए कि वह बच्चोंको यह बात नहीं सीखने दे कि बाइबल एक इलहामी किताब है। मैं अज्ञेयवादी शब्दका प्रयोग करता हूँ, क्योंकि मै इसे अनीश्वरवादी शब्दसे अच्छा समझता हूँ। वास्तवमें न कोई यह जानता है कि ईश्वर है और न कोई यही जानता है कि ईश्वर नहीं है। मुझे तो यही लगता है कि ईश्वरके अस्तित्वका कोई प्रमाण नहीं और इस बातका भी कि यह संसार किसी अनन्त बुद्धि और शक्तिद्वारा शासित होता है। लेकिन मैं जाननेका दावा नहीं करता। जो बात मैं जोर देकर कहना चाहता हूँ वह यही है कि बच्चोंके दिमागमे विष न घोला जाय, उनके

साथ उचित और ईमानदारीका व्यवहार किया जाय; उनपर कोई बात बाहरसे लादनेकी अपेक्षा उन्हें अन्दरसे विकसित होने दिया जाय; और उन्हें तर्क करना, विचार करना, खोज करना, अपनी इंद्रियों तथा अपने दिमागोंको काममें लाना सिखाया जाय, न कि विश्वास करना। बुद्धिवादियोंको मैं यही सलाह दूँगा कि वे अपने बच्चोंको रविवारके दिन भरनेवाले कट्टरपन्थी स्कूलोंमें न जाने दें, कट्टरपन्थी गिरजोंमें न जाने दें और कट्टरपन्थी वेदियोंके विषसे बचाये रखें।

अपने बच्चोंको जो वास्तविक बातें आप जानते हैं केवल उन्हींकी शिक्षा दें। यदि आप नहीं जानते तो वैसा कह दें। आप जितने अज्ञानी हैं उतने ही ईमानदार भी बने रहें। आप उनके दिमागका ऐसा विकास करनेके लिए जो कुछ कर सकें करें, जिससे उनका जीवन उपयोगी और सुखी हो जाय।

उन्हें शिक्षा दें कि संसार प्राकृतिक है, उन्हें पूर्ण ईमानदार बने रहनेकी शिक्षा दें, उन्हें ऐसी जगह न भेजें जहाँ दिमागी बीमारीका खतरा हो—आत्माके कोढ़का।

अपने बच्चोंको समझदार बनानेके लिए जो कुछ भी हम कर सकते हैं, करें।

काल्पनिक कथायें और करिश्में

१

सुख-प्राप्ति ही जीवनका सच्चा उद्देश्य है। बुद्धिका काम है कि वह यह पता लगाये कि आदमी कैसे सुखी रहता है और बुद्धिमान् आदमीका काम है कि उसी रास्तेपर चले। सुखका मतलब केवल खाना-पीना मौज उड़ाना आदि इन्द्रिय-सुख ही नहीं किन्तु उच्चतम और श्रेष्ठतम कल्याण है। ऋणमुक्त होनेसे, अपना कर्तव्य पूरा करनेसे, कोई उदारतापूर्ण कार्य करनेसे, अपने आदर्शके प्रति सच्चा रहनेसे, तथा प्रकृति, कला और आदमीके आचरणमें जो सौन्दर्य है उसका बोध होनेसे प्राप्त होनेवाला सुख, कविता और संगीतसे पैदा होनेवाला सुख, कविता और संगीतका सुख, श्रेष्ठतम इच्छाओंकी पूर्तिसे पैदा होनेवाला सुख ही सुख है।

जीवनमें जो कुछ भी उचित और बुद्धिमत्तापूर्ण है—सुख उसीका परिणाम है।

लेकिन बहुतसे लोग हैं जो प्रसन्न होनेकी इच्छाको बड़ी ही नीचे स्तरकी आकांक्षा मानते हैं। ये लोग अपने आपको आध्यात्मिक कहते हैं, ये इन्द्रिय-सुखकी भी तनिक चिन्ता न करनेका ढोंग रचते हैं। वे उस संसारसे—उस जीवनसे घृणा करते हैं। वे इस लोकमें प्रसन्नता नहीं चाहते, दूसरे लोकमें चाहते हैं। यहाँ सुख पतनोन्मुख बनाता है, परलोकमें सुख आदमीको पवित्रता प्रदान करता है और ऊँचा उड़ाता है!

आध्यात्मिक लोग पैगम्बर, ऋषि, मुनि, साधु, महात्मा, पादरी, पण्डित, पुरोहित कहलाते रहे हैं। वे बड़े ही निष्ठावान् और बड़े ही अनुपयोगी सिद्ध

हुए हैं। वे खेती नहीं करते। वे कुछ भी पैदा नहीं करते। वे दूसरोंकी कमाई-पर जीते हैं। वे 'पवित्र' और 'परावलम्बी' एक साथ होते हैं। यदि दूसरे लोग इनकी बजाय काम करें, तो ये उनके लिए 'प्रार्थना' करेंगे। वे दावा करते हैं कि उन्हें ईश्वरने लोगोंको शिक्षित करने और उनपर शासन करनेके लिये चुना है। वे विनम्र और अभिमानी साथ साथ हैं। वे सहनशील हैं और साथ साथ बदला लेनेकी भावनासे भी भरे हैं।

वे स्वतन्त्रता, खोज और विज्ञानके शत्रु रहे हैं, हैं और रहेंगे। वे परा-प्राकृतिक, करिश्मों तथा बेहूदा बातोंमें विश्वास करते हैं। उन्होंने संसारको घृणा, पक्षपात और भयसे भर दिया है। अपने मतकी रक्षामें उन्होंने कोई अपराध और कोई अत्याचार बाकी नहीं उठा रखा है।

वे अपनी स्त्री तथा बच्चोंसे प्यार करनेवालोंको, घर बनानेवालोंको, जंगल काटनेवालोंको, समुद्रमें नौकायें चलानेवालोंको, जमीन जोतने-वालोंको, मूर्तियाँ बनानेवालोंको और चित्र चित्रित करनेवालोको, तथा दुनियामें प्रेम और कलाकी वृद्धि करनेवालोंको सांसारिक और इन्द्रियोंका दास कहकर घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं।

उन्होंने विचारकों, कवियों, नाटककारों, अभिनेताओं, व्याख्याताओं, कार्यकर्ताओं, और संसार जीतनेवालोंकी निन्दा की है और उन्हे बदनाम किया है।

उनके लिये यह लोक परलोककी ड्योढी-मात्र है, एक प्रकारका स्कूल, एक प्रकारकी पाठशाला। उनका आग्रह है कि लोग इस जीवनको दूसरे जीवनकी तैयारीमें खर्च करें, और जो लोग इन आध्यात्मिक मार्ग-प्रदर्शकों—इन गड़-रियोंका—पालन पोषण करेंगे तथा उनकी आज्ञाका पालन करेंगे, वे अनन्त-सुखके स्वामी होंगे; और शेष सबको अनन्त-यातनायें भोगनी पड़ेंगी!

ये आध्यात्मिक लोग सदा ही श्रमसे घृणा करनेवाले रहे हैं। इन्होंने संसारके धनमें किसी प्रकारकी वृद्धि नहीं की। ये सदा 'दान' खाकर जीते रहे हैं—दूसरोंकी पसीनेकी कमाई। ये सदासे सरल, भोले-भाले सुखों और भोले-भाले मानवीय प्रेमके शत्रु रहे हैं।

इन आध्यात्मिक लोगोने कुछ साहित्य पैदा किया है। इनकी लिखी हुई किताबे पवित्र कहलाती हैं। हमारी पवित्र किताब बाइबल कहलाती है। हिन्दुओंके पास वेद हैं, और वैसे ही बहुत-से दूसरे ग्रन्थ। पारसियोंके पास ज़िन्दावस्ता, मिसरियोके पास 'मरे हुओंका ग्रन्थ,' मुसलमानोंके पास क़ुरान।

इन ग्रन्थोमें अधिकतर अज्ञेयकी चर्चा है। वे देवताओ और आकाशके प्राणियोंका वर्णन करते हैं। वे संसारकी उत्पत्ति, आदमीको उत्पत्ति और परलोककी बाते करते हैं। उनमें कुछ भी कामका नहीं। लाखों-करोड़ों आदमियोंने इन अज्ञानपूर्ण वेहूदा पुस्तकोंके अध्ययनमें अपने जीवन बरबाद कर दिये हैं।

प्रत्येक देशके आध्यात्मिक लोगोंका यह दावा रहा है कि इन ग्रन्थोंके रचयिता ऋषिगण हुए हैं। वास्तवमें ये ईश्वर-वचन हैं। जो भी स्त्री-पुरुष इस बातसे इंकार करेगा वह मृत्युके बाद अनन्त काल तक यातनायें भोगेगा।

यह सब होनेपर भी सांसारिक लोगोंने, सामान्य लोगोंने, शरारती लोगोंने, इन आध्यात्मिक लोगोकी अपेक्षा कहीं अधिक ऊँचा और श्रेष्ठ साहित्य उत्पन्न किया है।

आध्यात्मिक लोगोंने भय और विश्वाससे—परलोकमें दण्डके भय और पुरस्कारकी आशासे—संसारको सभ्य बनानेका प्रयत्न किया है। उन्होंने लोगो-को अपने मानव-बन्धुओंसे घृणा करनेकी शिक्षा दी है। सभी युगोंमे उन्होंने पशु-बलका आश्रय लिया है, सभी समयोंमें उन्होंने ठगीसे काम लिया है। उन्होंने दावा किया है कि वे देवताओंको प्रभावित कर सकते हैं; उनकी प्रार्थनाओंसे वर्षा होती है, सूर्य उदय होता है और खेती होती है। उनके शापोंसे अकाल और महामारी आ जाती है; और उनके आशिर्वाद संसारको समृद्ध कर दे सकते हैं। उनके मिथ्या-कथनोंसे जिस भीतिका सर्जन हुआ, वही उनकी जीविकाका आधार रही है। विषैली बेलकी तरह वे परिश्रमके पेड़पर फले फूले हैं। उन्होंने सदा दानकी महिमा गाई है, किन्तु कभी किसीको दान दिया नहीं। उन्होंने सदा क्षमा कर देनेकी बात की है, किन्तु कभी किसीको क्षमा किया नहीं।

जब भी कभी इन आध्यात्मिक लोगोंके हाथमें शक्ति आई, कला मर गई, विद्याका दम निकल गया, विज्ञानको घृणाकी दृष्टिसे देखा गया, स्वतन्त्रता नष्ट कर दी गई, विचारकोंको जेलमें डाल दिया गया, समझदार और ईमानदार आदमी अछूत बना दिये गये और वीर पुरुष मार डाले गये।

आध्यात्मिक लोग सदासे मानव-जातिके शत्रु रहे हैं, हैं, और रहेंगे।

जीवनके जितने भी सुखोंका हम आज उपभोग कर रहे हैं, वे सब—हर प्रकारकी प्रगति; विज्ञान और कला; दीर्घ-जीवी होनेके साधन; रोगोंको नष्ट करनेका सामर्थ्य; वेदनाको घटानेकी शक्ति; घर, छत और भोजन; ऊँचेसे ऊँचा संगीत; जीवनको श्रेष्ठ बनानेवाली अद्‌भुत मशीनें—वे सभी सांसारिक लोगोंकी देन हैं। इनके लिये हम उन्हींके ऋणी हैं। केवल वे ही मानव-जातिका उपकार करनेवाले हैं।

२

यह सब सही होने पर भी, ये सभी धर्म, ये सभी पवित्र ग्रन्थ, ये सभी पादरी-पुरोहित प्रकृतिके नियमानुसार पैदा हुए हैं। असभ्यताकी गुफाओं और गारोंमेंसे सभ्यताके महलों तक पहुँचनेमें आदमीको आवश्यक रास्ते और सड़कें पार करनी पड़ी हैं। हर कदमके पीछे उसका पर्याप्त कारण रहा है। संसारके इतिहासमें कभी कोई भी बात आकस्मिक नहीं हुई है। बाहरसे कभी कोई किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं हुआ है, कभी कोई करिश्मा नहीं हुआ। हर बात प्रकृतिके द्वारा और उसके नियमानुसार उत्पन्न हुई है।

हमें ढोंगी और अत्याचारीको दोषी ठहरानेकी आवश्यकता नहीं। वे लोग जिस तरह सोचने और कार्य करनेके लिये बाध्य थे, उसी तरह उन्होंने कार्य किया।

सभी युगोंमें आदमीने अपनी और अपने आस-पासकी व्याख्या करनेकी कोशिश की है। उसने अपनी ओरसे कसर नहीं छोड़ी। उसे आश्चर्य होता था कि यह पानी क्यों बहता है, पेड़ क्यों उगते हैं, हवामें बादल क्यों तैरते हैं, तारे क्यों चमकते हैं तथा आकाशपर चन्द्रमा और सूर्य क्यों घूमते हैं? वह जन्म-मरणके रहस्यको, अन्धकार और स्वप्नोंके रहस्यको, समझना चाहता

था। ये समुद्र, ये ज्वालामुखी पर्वत, यह बिजली और उसकी कड़क, ये भूकम्प—सभी उसे भयसे भर देते थे। समस्त जीवन-विकास और गतिके ही पीछे नहीं उसने निर्जीव पदार्थोंके पीछे भी एक देवताकी कल्पना की, एक प्राणी की—जो प्रेम और घृणाकी भावनाओंसे शासित होता है। उसके लिये कार्य और उसका कारण देवता बन गये—परा प्राकृतिक प्राणी।

अतीतकी सभी काल्पनिक कथाओं और किंवदन्तियोंमें हमें उन महान् और कोमल आत्माओंके अश्रुसिक्त दार्शनिक विचार, स्वप्न और प्रयत्न दिखाई देते हैं, जिन्होंने जीवन और मृत्युके रहस्यको खोज निकालनेकी कोशिश की; जिन्होंने 'कहाँ' और 'किधर' के प्रश्नोंका उत्तर देनेका प्रयास किया; जिन्होंने टूटे फूटे शीशेको एक ऐसा दर्पण बनानेका व्यर्थ प्रयत्न किया जिसमें वह प्रकृतिकी सम्पूर्ण और सही छाया देख सकें।—इन काल्पनिक कथाओंको आशा और भयने तथा आँसुओं और मुस्कराहटने पैदा किया है। जन्मके उषः-कालसे लेकर मृत्युकी अन्धकारपूर्ण रात्रि तक जीवनमें जो भी आनन्द और दुख भोगना पड़ता है, ये काल्पनिक-कथायें उस सबसे संग्रथित और रंजित हैं। उन्होंने नक्षत्रों तकको राग-द्वेष पूर्ण बना दिया और आकाशके देवताओं तकके सिर पृथ्वी-पुत्रोंकी दुर्बलतायें मढ दीं।

ये काल्पनिक कथायें यद्यपि वास्तविक घटनायें नहीं हैं तो भी इनमें विचारोंकी सुन्दरता और सचाई है और इन्होंने युगों तक नाना प्रकारसे हृदय और विचारोंको समृद्ध बनाया है।

३

अधिक सम्भव यही है कि मानवका पहला धर्म सूर्य-पूजाका धर्म रहा होगा। कोई भी दूसरी चीज़ इससे अधिक स्वाभाविक नहीं हो सकती थी। प्रकाश ही जीवन था, उष्णता थी और प्रेम था। सूर्य ही संसारका चूल्हा था। सूर्य ही सर्वद्रष्टा था, और आकाश स्थित पिता। * अन्धकार मृत्युका दूसरा नाम था और रात्रिकी छायामें निराशा और भयके सर्प रेंगते थे।

सूर्य देवता एक बड़ा योद्धा था, रातके शत्रुओंसे लड़नेवाला। अग्निदेवता

* तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय (उपनिषद्)

उसीका एक रूप था। दोनों अरणियाँ जिनके रगड़नेसे आग पैदा होती थी अग्निदेवताके प्रतीक थे। कहा जाता है कि अग्निदेवता अपने माता-पिताका भक्षण कर जाता था, अर्थात् उन दो लकड़ियोंका जो उसे जन्म देती थीं।

लगभग सभी धर्म सूर्य-पूजामेंसे पैदा हुए हैं। आजकल जो पादरी-पुरोहित पूजा करते हैं वे अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं। यह सूर्य-पूजाका ही एक अवशेष है। जब लोग सूर्यके सम्मुख बैठकर उसकी पूजा करते थे तो उन्हे अपनी आँखें बन्द करनी होती थीं। बादमें यह प्रकट करनेके लिये कि वे मूर्तियोंके तेजके सामने भी अपनी आँखें खुली नहीं रख सकते, लोगोंने अपनी आँखें बन्द करनी आरम्भ कर दीं।

हमारे आजके धर्ममें कुछ भी मौलिक नहीं है। इसके सभी सिद्धान्त, सभी प्रतीक और सभी संस्कार उन पुराने धर्मोंके अवशेष हैं जिन्हे लुप्त हुए बहुत समय बीत गया।

४

हमें याद रखना चाहिये कि काल्पनिक कथाओं और करिश्मोंमें बड़ा अन्तर है। किसी वास्तविक घटनापर कल्पनाका मुलम्मा चढानेसे भी काल्पनिक कथा बन जाती है। किन्तु करिश्मा तो अघटित घटनाका ही दूसरा नाम है; एकदम जाली सिक्का। काल्पनिक कथा और करिश्मेंमे वही भेद है जो उपन्यास और असत्यमें, जो काव्य और झूठी गवाहीमे। करिश्में या तो सुदूर अतीतमें हुए अथवा सुदूर भविष्यमें होंगे। इन दो समुद्रोंके बीच जो बालूकी छोटी-सी रेखा है, जिसे वर्तमान कहते हैं, उसीमे सहज बुद्धिके लिये जगह है, प्राकृतिकके लिये।

यदि तुम किसी आदमीको कहो कि दो हजार वर्ष हुए मरे हुए जी उठे थे, तो वह सम्भवतः यही कहेगा; 'हाँ, मैं जानता हूँ।' यदि तुम कहो कि अबसे एक लाख वर्ष बाद तमाम मुर्दे जी उठेंगे तो भी शायद वह यही कहे; 'सम्भवतः वे जी उठेंगे'। किन्तु यदि तुम कहो कि तुमने उस दिन देखा है कि एक मुर्दा जी उठा है, तो वह बहुत करके तुमसे उस पागलखानेका नाम पूछेगा जहाँसे तुम भाग आये हो!

हमारी बाइबल करिश्मोसे भरी पड़ी है, तब भी उनमें कभी विश्वास पैदा नहीं होता।

ईसा मसीहके साथ जिन करिश्मोका सम्बन्ध जोड़ा जाता है उनका कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। उन करिश्मोंने किसी आदमीके दिलमें विश्वास पैदा नहीं किया। जिन मुर्दोको उसने जिलाया, जिनका कोढ दूर किया, जिन्हे आँखें दी, उनमेंसे कोई भी ईसाका अनुयायी नहीं बना। जब ईसापर मुकदमा चलाया गया तो उनमेंसे कोई भी हाजिर नहीं हुआ। किसी एकने भी आकर उसकी करिश्मे करनेकी शक्तिकी गवाही नहीं दी।

इस सबकी एक ही सही व्याख्या है कि करिश्मे कभी हुए ही नहीं। इन कहानियोकी रचना बादकी शताब्दियोंमे हुई। इन कहानियोको उन लोगोकी कल्पनाओंने जन्म दिया, जो उस समय तक पैदा भी नहीं हुए थे जब ईसाको मरे अनेक पीढियाँ गुजर चुकीं थी।

उन दिनों संसार अज्ञान और भयसे भरा था। करिश्मे प्रति दिनकी बात थी। लोगोका परा-प्रकृतिमें विश्वास था। देवतागण लगातार संसारके मामलोंमे दखल देते रहते थे। सत्यके अतिरिक्त और सब कुछ बताया जाता था, वास्तविक घटनाके अतिरिक्त प्रत्येक बातमें विश्वास किया जाता था। जो घटनायें कभी घटीं ही नही उनके परिस्थितिजन्य विवरणका नाम इतिहास था। भूत-प्रेत उतने ही अधिक थे जितने सन्त-महात्मा। मरे आदमियोंकी हड्डियोंसे जीवितोंकी चिकित्सा की जाती थी। श्मशानगृह अस्पताल थे और मुर्दे चिकित्सक। सन्त जन जादू टोना करते थे। पवित्रात्मायें स्वप्नमें देवताओंसे वार्तालाप करती थीं और प्रार्थनाओसे घटनाओके क्रम बदले जाते थे। अन्धविश्वासी लोग आश्चर्य-जनक करिश्मोंकी माँग करते और पादरी पुरोहित उनकी इस माँगकी पूर्ति। आकाश मृत्यु और विपत्तिके चिह्नोंसे भरा था और अन्धकारमें आदमियोको कुपथगामी बनानेवाले प्रेतात्माओंकी कमी न थी।

हमारे पूर्वज समझते थे कि प्रत्येक वस्तु आदमीके लिए बनी है और जितने भी देवता तथा दैत्य हैं उन सबका काम इसी संसारकी ओर ध्यान

देना है। लोगोंके विश्वास था कि वे इन्हीं सबके हाथके खिलौनें हैं; उनके शिकार अथवा दया-भाजन। उनका यह भी विश्वास था कि सृष्टिका रचयिता ईश्वर यज्ञों तथा प्रार्थनाओंसे प्रभावित किया जा सकता है।

ससारकी यही सबसे बड़ी गल्ती रही है। जितने मन्दिर बनें सब बेकार, जितनी वेदियाँ बनीं सब व्यर्थ। जितने यज्ञ हुए सब निष्प्रयोजन। जितनी प्रार्थनायें की गईं सब निष्फल। न कभी किसी देवताने हस्तक्षेप किया, न कभी कोई प्रार्थना सुनी गई और न कभी आकाशसे किसी प्रकारकी सहायता मिली। न कोई चीज आदमीके लिये पैदा की गई; और न कोई घटना आदमीसे सम्बन्धित होकर घटी। यदि एक भी मानव जीता न हो, यदि सब अपनी कब्रमे हों, तो भी सूर्य चमकता ही रहेगा। पृथ्वी अपने पथपर दौड़ती ही रहेगी, गुलाबके फूल वायुको सुगन्धित करते ही रहेंगे, अंगूरकी बेलें अपने पत्तों और मृतकोंको ढकतीं ही रहेंगीं; बदलनेवाली ऋतुएँ आती और जाती ही रहेंगी, समय अपनी वार्षिक कविताको दोहराता ही रहेगा; जब कि वायु, लहरे और आग—अथवा परिश्रम करनेवाले पुराने शिल्पी—विनाश और निर्माणका कार्य करते ही रहेगे और मृत्युकी धूलिमें बार बार जीवनका स्पन्दन उठता ही रहेगा।

५

कुछ ही साल गुजरे, चन्द आदमियोंने सोचना आरंभ किया, खोज करना आरंभ किया, तर्क करना आरभ किया। उन्होने मजहबी दन्तकथाओं और अतीतके करिश्मोंमें अविश्वास करना आरभ किया। उन्होंने जो कुछ वास्तवमें होता था, उसकी ओर ध्यान देना शुरू किया। उन्होने देखा कि चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण निश्चित समयोंपर होते हैं और उनका होना पहलेसे बताया जा सकता है। उन्हे इस बातका निश्चय हो गया कि इन ग्रहणोंको आदमियोंके आचरणसे कुछ लेना देना नहीं। गैलीलियो, कौपर-निकस, और केपलरने बाइबलके ज्योतिषको नष्ट कर दिया और यह दिखला दिया कि संसारकी उत्पत्तिकी 'इलहामी' कहानी कभी सच्ची नही हो सकती और साथ ही यह भी कि मजहबी लोग उतने ही अज्ञानी थे, जितने कि वे बेईमान थे।

उन्हें पता लग गया कि काल्पनिक कथाओंके गढ़नेवाले गलतीपर थे; सूर्य और दूसरे नक्षत्र पृथ्वीके गिर्द नहीं घूमते थे; पृथ्वी चपटी नहीं थी और देववादियोंका तथाकथित दर्शन ऊल-जलूल और मूर्खतापूर्ण था।

तारागणोंने मिथ्या विश्वासके मतोंके विरुद्ध साक्षी दी।

ईसाई मजहबने वास्तवमें होनेवाली बातोंको अस्वीकार किया और गणित-ज्योतिषियोंको यंत्रणायें दीं। सोलहवीं शताब्दीमें कैथालिक संप्रदायने गियोर्दनो ब्रूनोके विरुद्ध यह इलजाम लगाया कि वह इस संसारके अतिरिक्त और भी दूसरे संसारके होनेकी बात कहता है। उसपर मुकदमा चलाया गया, सजा दी गई और सात वर्षतक उसे जेलमें डाले रखा गया। उसे कहा गया कि यदि वह पश्चात्ताप करे तो उसे छोड़ दिया जायगा। अनीश्वरवादी दार्शनिक ब्रूनोने सत्य बातसे इनकार करके अपनी आत्माको कलंकित नहीं करना चाहा। वे पादरी, जो अपने शत्रुओंसे प्रेम करनेकी बात कहते थे, उसे वधस्थलपर ले गये। उसे ऐसे कपड़े पहनाये गये जिनपर यमराजके दूतोंके चित्र बने थे—वे दूत जो शीघ्र ही उसकी आत्माको दबोच लेनेवाले थे। उसे एक खूँटेसे जकड़ दिया गया। तब पादरियोंने—ईसामसीहके चरण-चिह्नोंपर चलनेवालोंने—चितामें आग लगा दी और इस प्रकार एक महान् शहीदको जलाकर राख बना दिया।

और तब भी ईश्वरके इटैलियन एजेण्ट तेरहवें लुईने कुछ ही वर्ष हुए इस वीरोंके वीर ब्रूनोकी कायर कहकर निंदा की।

ईसाई सम्प्रदायने उसकी हत्या की और पोपने उसकी स्मृतिको कलंकित किया। आग और असत्य—मजहबके पास यही दो बड़े अस्त्र हैं।

कुछ ही समय पहले चन्द आदमियोंने चट्टानोंकी, मिट्टीकी, पर्वतोंकी, द्वीपोंकी और समुद्रोंकी परीक्षा की। उन्होंने नदियोंद्वारा निर्मित दूनों और चट्टानोंको देखा। ज्वालामुखी पर्वतोंसे निकलकर मिट्टी बनी पर्वत-सामग्रीके नाना स्तरोंको देखा; धातु और कोयलेके बेहिसाब ढेरोंको देखा। अतीतकी हिमचट्टानोंके कार्योंको देखा। चट्टानोंकी टूट-फूट और वनस्पतिकी उत्पत्ति और ह्राससे बनानेवाली मिट्टीको देखा और जिन युगोंमेंसे होकर पृथ्वी गुजरी

है, उनके असंख्य प्रमाणोंको देखा। भूमिगर्भवेत्ताओने समुद्रकी लहरों और आगकी ज्वालाओंद्वारा लिखे गये तथा चट्टानोंके निर्माणद्वारा, पर्वत-शृंखलाओं-द्वारा, ज्वालामुखी पर्वतोंद्वारा, नदियोंद्वारा, द्वीपोंद्वारा, तथा महाद्वीपोंद्वारा समर्थित संसारके इतिहासको पढ़ा।

वाइबलका भूवृत्त-ज्ञान, इलहामी संप्रदायका भूवृत्त-ज्ञान, तथा 'स्वतः प्रमाण' पोपका भूवृत्त-ज्ञान संपूर्ण रूपसे झूठा तथा मूर्खतापूर्ण सिद्ध हुआ। पृथ्वी मिथ्या-विश्वासके मतोंके विरुद्ध एक गवाह बन गई।

तब भाप और बिजलीके आविष्कारोंको लेकर वाट और गैलवनी आये। इसी समय असंख्य आविष्कारकोंने सारे संसारका काम चलानेवाली अद्भुत मशीनोंको पैदा किया। खोजने अन्धविश्वासका स्थान ले लिया। आदमी झोपड़ों और चीथड़ोंसे असंतुष्ट हो उठा। वह आराम और जीवनके सुखोंकी इच्छा करने लगा। दिमागी क्षितिज विशाल बना। नवीन सत्योंका पता लगा; पुराने विचार एक ओर फेंक दिये गये; दिमाग विशाल बना; हृदय सभ्य बना, और विज्ञानने जन्म लिया। हमबोल्ट, लाप्लास और दूसरे सैकड़ों चिन्तकोंने प्राकृतिक घटनाओंकी व्याख्या की, प्राचीन गलतियोंकी ओर ध्यान आकर्षित किया और इस प्रकार मानवके ज्ञानमें वृद्धि की। डारविन और हैकलने संसारको अपने आविष्कारोंसे परिचित कराया। आदमी वास्तवमें विचार करने लगे, काल्पनिक कथायें मद्धम पड़ने लगीं, करिश्में तुच्छ प्रतीत होने लगे, और इस प्रकार देववाद नामका महान् भवन एक धड़ाकेके साथ जमीन-पर आ रहा।

विज्ञान काल्पनिक कथाओं और करिश्मोंके सत्यको अस्वीकार करता है, और उसका कहना है कि करिश्मोंको किसी भी तरह प्रमाणित नहीं किया जा सकता। वह परा-प्रकृतिके अस्तित्वको अस्वीकार करता है। विज्ञान प्रकृतिकी अपरिवर्तनशील प्रकृतिको स्वीकार करता है। विज्ञानका आग्रह है कि वर्तमान अतीतकी संतान है और अतीतको किसी भी तरह बदला नहीं जा सकता; और प्रकृति सदा समरस रहती है।

रसायन-शास्त्रज्ञोंने पता लगाया है कि एक खास तरहके परमाणु एक दूसरी तरहके परमाणुओंसे—एक निश्चित संख्यामें, न कम न अधिक, हमेशा उतने

ही—मिलते हैं। रसायन-शास्त्रमें अचानक कहीं कुछ नहीं; वाहरसे किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं।

विज्ञानवेत्ता जानते हैं कि धातुओंकी अणु-शक्ति सदैव एक-सी वनी रहती है, प्रत्येक धातु अपनी प्रकृतिके प्रति सच्ची रहती है, और उसके कण समान शक्तिके साथ ही एक दूसरेसे चिपटे रहते हैं। वैज्ञानिकोंने शक्तिके निरंतर अस्तित्वको सिद्ध कर दिया है, और इस वातको भी कि यह निरंतर क्रियाशील है, अपरिवर्तनीय है तथा किसी भी तरह नष्ट नहीं की जा सकती।

इन महान् सत्योंने संसारके विचारमें क्रांति ला दी है।

प्रत्येक कला, प्रत्येक कार्य, सभी तरहके अध्ययन, सभी तरहके तजर्वे—प्रकृतिकी समरसता और शक्तिकी निरंतर विद्यमानता और उसके अविनाशी होनेके विश्वासपर निर्भर करते हैं।

कार्य-कारणकी अनन्त शृंखलामेंसे एक कड़ी तोड़ दो, और प्रकृतिका स्वामी सामने आ खड़ा होगा। यही टूटी हुई कड़ी ईश्वरका सिंहासन वन जायगी।

प्रकृतिकी एकरूपता परा प्रकृतिको अस्वीकार करती है और इस वातको सिद्ध करती है कि वाहरसे कहीं कोई हस्तक्षेप नहीं है। देवताओंके लिए कहीं किसी प्रकारकी कोई जगह नहीं रह जाती। प्रार्थनायें वायुकी व्यर्थकी हलचल रह जाती हैं और धार्मिक रीति रिवाज़ निरर्थक क्रिया-कलाप मात्र।

लकड़ीके देवताकी पूजा करनेवाला नग्न हब्शी धार्मिक चेतनाके ठीक उसी स्तरपर है जिस स्तरपर कुमारी मेरीकी मूर्तिके सामने घुटने टेकनेवाला पोप।

दुष्टात्माओंसे अपनी रक्षा करनेके लिये वृक्षोंकी जड़े और छाल ढोनेवाला गरीब अफरीकावासी और जो 'पवित्र पानी' से अभिषिक्त होता है—दोनों, धार्मिक चिंतनके एक ही स्तरपर हैं।

ईसाइयतके सभी मत तथा गैर ईसाइयोंके सभी धर्म समान रूपसे ऊल-जलूल हैं। गिरजाघर, मंदिर, मसजिद सभीका एक ही आधार है। उनके निर्माता प्रकृतिकी एकरूपतामें विश्वास नहीं करते। सभी पादरियोंका

एक ही काम है कि वह एक तथाकथित असीम अस्तित्वको घटनाओंके क्रममें परिवर्तन लानेके लिए प्रेरित करें। वे अविचारणीयमें विश्वास करते है और असंभवके लिये प्रार्थना करते हैं।

विज्ञान बताता है कि न कभी कोई उत्पत्ति हुई और न कोई विनाश संभव है। वह अनन्त उत्पत्ति तथा विनाश दोनोंको अस्वीकार करता है। एक अनन्त व्यक्ति तो एक अनन्त असंभावना है। दिमाग किसी भी तरह किसी भी ऐसे व्यक्तित्वकी कल्पना कर ही नहीं सकता। तो भी सभी धर्म इस ×अचिंत्य, इस अकल्पनीयके अस्तित्वपर आधारित हैं और इन धर्मोंके पादरी पुरोहित इस अचिन्त्य, इस अकल्पनीयकी योजनाओ तथा इच्छाओंसे पूर्णरूपसे परिचित होनेका दावा करते हैं।

विज्ञान बताता है कि जो है वह सदासे रहा है और हर कार्यके पीछे उसका पर्याप्त और आवश्यक कारण है। विश्वमे कहीं कोई बात अचानक नही होती, कहीं कोई बाहरी हस्तक्षेप नही होता और शक्ति अनन्त है।

विज्ञान ही मनुष्यका भाग्य-विधाता है, सच्चे करिश्मों तथा अद्भुत बातोंको संभव बनानेवाला। विज्ञानने गुलामोंको मुक्ति दी है और उनके मालिकोंको भी मुक्त किया है। विज्ञानने आदमीको अपने मानव बंधुओंको जजीरोंमे जकडनेकी शिक्षा नहीं दी। उसने उन्हे प्रकृतिकी शक्तियोंको कैद करना सिखाया, उन शक्तियोंको जिनके पास कोड़ोंके निशान पड़नेके लिए हाथ-पैर नहीं हैं, जिनके पास टूटनेके लिए दिल नहीं हैं, जो कभी थकना नहीं जानतीं और जो कभी ऑसू नहीं बहातीं।

विज्ञान महान् चिकित्सक है। उसके स्पर्शने लोगोंको ऑखे दी है। उसने लॅगडोंको चलने योग्य बनाया है। उसने बहिरोंको कान दिये हैं। उसने गूंगोंको बोलना सिखाया है। उसके स्पर्शसे कुम्हलाये हुए चेहरोंपर स्वास्थ्यका गुलाबी रग छा गया है।

विज्ञान रोगोंको नष्ट करनेवाला, सुखी गृहोंका निर्माता तथा जीवन और प्रेमका संरक्षक है। विज्ञान प्रत्येक गुणका मित्र और प्रत्येक दुर्गुणका शत्रु है।

× अचिन्त्यं अजं निर्विकल्पस्वरूपं।

विज्ञानने नैतिकताको सच्चा आधार दिया है। कृतज्ञता तथा कर्तव्य-बुद्धिका मूल बताया है और इस बातको सिद्ध करके दिखा दिया है कि सच्चा सुख ही मानवका एकमात्र उद्देश्य है। विज्ञानने मिथ्या-विश्वासके भूतको मार भगाया है और इलहामी पुस्तकोंकी प्रामाणिकताको नष्ट कर दिया है। विज्ञानने चट्टानोंके अमिट अक्षरोंको पढ़ा है और उसकी अद्भुत तराजूपर परमाणुसे लेकर बड़े बड़े ग्रहोंतक सभी तुले हैं।

विज्ञानने ही एकमात्र सच्चे धर्मकी स्थापना की है। विज्ञान ही संसारका एकमात्र संरक्षक है।

६

युगोंसे धर्मकी परीक्षा हो रही है। असंख्य शताब्दियोंसे आदमी आकाशकी ओर देखता रहा है। ईश्वरके हृदयकी कठोरता कम करनेके लिए माताओंने अपने बच्चोंका बलिदान कर दिया; किन्तु ईश्वरने न सुना, न देखा और न किसी प्रकारकी सहायता की। नंगे हब्शियोंको जंगली जानवर निगल गये, साँपोंने काट खाया और बर्फ़ने गला डाला। उन्होंने सहायताके लिए प्रार्थना की; किन्तु उनका भगवान् बहिरा था। उन्होंने मंदिर बनवाये, पुजारी रखे, और उनका पालन-पोषण किया; किन्तु तो भी ज्वालामुखी पर्वत तबाही लाये और अकाल नहीं रुके। ईश्वरके लिये लाखों आदमियोंने अपने मानव बंधुओंकी हत्या की, किन्तु ईश्वर चुप रहा। लाखों शहीदोंने ईश्वरके नामपर अपनी जान दे दी, लेकिन ईश्वर अंधा बना रहा। उसे न आगकी लपटें दिखाई दीं, और न वेड़ियाँ, उसने न प्रार्थनाय सुनीं और न चीत्कार। हजारों पादरी पुरोहितोंने ईश्वरका नाम लेकर अपने मानव-बन्धुओंको नाना प्रकारके कष्ट दिये। ईश्वर अंधा और बहिरा बना रहा। उसे यह मंजूर था कि उसके शत्रु उसके मित्रोंको पीड़ा पहुँचायें।

इस सारे समयमें देववादियोंका यह दावा रहा है कि उनका ईश्वर संसारका शासन करता रहा है; वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है और पृथ्वीकी सभी शक्तियाँ उसके नियंत्रणमें है। इस सारे समयमें ईसाई संप्रदाय प्रगतिका शत्रु रहा है। यह सारे चिकित्सा-शास्त्रको घृणाकी दृष्टिसे देखता

रहा है। लोगोंको प्रार्थनाओं, टोटकों तथा धर्मके अवशेषोंपर निर्भर रहनेकी शिक्षा देता रहा है। इसने गणित-ज्योतिषियों और भूगर्भवेत्ताओंपर अत्याचार किये हैं, नास्तिक अनीश्वरवादी तथा मानवताके शत्रु कहकर उनकी निन्दा की है। इस सारे समयमे ईसाई मतने आदमीकी शक्तियोको उलटे रास्ते चलाया है, और जब यह अपनी शक्तिकी पराकाष्ठापर पहुँच गया, तब संसारमे गहरा अंधकार छा गया।

सभी जातियोंमे और सभी युगोमे धर्म असफल हुआ है। देवताओंने कभी किसी तरहका हस्तक्षेप नहीं किया। प्रकृतिने विना किसी प्रकारके ममत्वके चीज़ोको उत्पन्न किया और बिना किसी प्रकारकी घृणाके उन्हें नष्ट कर डाला। उसने जंगलके पत्तोंसे अधिक आदमीकी चिंता नहीं की, दीमककी बाँबियोंसे अधिक जातियोंकी चिन्ता नहीं की, और न चिन्ता की पुण्य और पापकी, जीवन और मरणकी तथा दुःख और सुखकी। आदमी-को अपनी बुद्धिद्वारा अपनी रक्षा करनी चाहिये। उसे किसी दूसरे लोकसे कोई सहायता नहीं मिलती। धर्मने हमेशा यह दावा किया है और वह आज भी करता है कि वही एकमात्र सुधारक शक्ति है; वही आदमियोंको ईमानदार, सदाचारी और दयालु बनाता है; और वही हिंसा तथा युद्धको रोकता है। इसके प्रभावके विना मानव-जाति पुनः बर्बर हो जायगी।

कोई भी बात इन दावोंके ऊल-जलूलपनेसे बढ नहीं सकती।

यदि हम मानवताकी दशा सुधारना चाहते हैं, यदि हम भले पुरुषों और स्त्रियोंको देखना चाहते है, तो हमें लोगोंके दिमागको विकसित करना चाहिये, हमें विचार करने और खोज करनेकी प्रवृत्तिको उत्साहित करना चाहिये। हमे संसारको यह विश्वास दिलाना चाहिये कि अन्ध-विश्वास एक दुर्गुण है; और प्रमाणके विरुद्ध अथवा विना प्रमाणके किसी चीज़पर विश्वास करना कोई सद्गुण नहीं है। वास्तविक ईमानदार आदमी अपने प्रति सच्चा होता है। हमे संसारको बुद्धिके प्रकाशसे भर देना चाहिये। हमें दिमागी साहसको उत्साहित करना चाहिये। हमें बच्चोंको शिक्षित बनाना चाहिये, उन्हे अज्ञान और अपराधसे मुक्त करना चाहिये। विद्यालय ही वास्तविक मंदिर हैं और अध्यापक-गण ही सच्चे पुरोहित।

फोटोग्राफीके द्वारा सारा संसार महान् मूर्तियोंसे, महान् चित्रोंसे, कलाकी विजयोंसे—परिचित हो सकता है। इस तरह दिमागमें विशालता आती है, महानुभूतिमें तीव्रता पैदा होती है, सौन्दर्यकी परख करनेकी शक्ति बढती है, रुचि स्वच्छ होती है और चरित्र निर्मल होता है।

सभीको महान् उपन्यास पढ़ने चाहिये। सभीको औपन्यासिक ससारके, द्वारा आदर्श संसारसे परिचित होना चाहिये। कल्पना शक्तिको विकसित, शिक्षित और शक्तिशाली होना चाहिये। मिथ्या विश्वास कला और साहित्यके पतनका कारण हुआ है। उसने हमे परोंवाले राक्षस दिये, स्वर्ग नरकके दृश्य दिये, देवताओं और दैत्योंके चित्र दिये और कलाके नामपर असम्भव मूर्तियों तथा ऊल-जलूल चित्रोंका निर्माण किया। उसने हमें पागलोंके स्वप्न दिये, धर्मके पगले महात्माओंकी जीवनियाँ दी, करिश्मोंके विवरण दिये और मुर्दोंकी हड्डियोंसे जीवितोंके ठीक होनेकी कहानियाँ दीं और यह सब पवित्र साहित्य कहलाया।

धर्मने सिखाया है कि जो विश्वासी हैं, जो माला जपते हैं, जो प्रार्थनायें करते हैं और जो अपना समय और पैसा धार्मिक-ग्रन्थोंके प्रचारके लिये खर्च करते हैं, वे ही लोग भले हैं; शेष सब अनन्त पीड़ाकी चौड़ी-सड़कपर बढ़े चले जा रहे हैं। देववादियोंने इस संसारके सुखोंकी धानकी फूसी और गन्दे चीथड़ोंसे उपमा दी और इस बातकी घोषणा की कि आदमीके पापोंके कारण सारा संसार अभिशप्त है।

लेकिन सच्चे कवि और सच्चे कलाकार इस संसारसे—इस जीवनसे—चिपटे रहे। उन्होंने केवल विद्यमान् वस्तुओंको चित्रित किया। उन्होंने दिमागके विचारोंको, हृदयकी भावनाओंको, पुरुषों और स्त्रियोंके दुःखों, सुखों, आशाओं तथा निराशाओंको व्यक्त किया। उन्हे चारों ओर शक्ति और सौन्दर्य्य दिखाई दिया। उन्हें अपने देवता यहीं इसी पृथ्वीपर मिले। कविता और कला इसी भूमिकी चीजें हैं। वे मानवीय हैं।

हममें अब इतनी कल्पना शक्ति है कि हम अपने आपको दूसरोंकी जगह रखकर देख सकें। जो लोग नरकमें विश्वास करते हैं उनमे उसी तरह कल्पना-

शक्ति नहीं होती जैसे हत्यारोमे । हत्यारेमें इतनी कल्पना नहीं होती कि वह अपने मृतकको देख सके। उसे उसकी ऑखे नहीं दिखाई देतीं । उसे उसकी विधवाके वे हाथ नही दिखाई देते जो लाशसे चिपटे हैं और वह होठ भी नहीं जो लाशसे लगा है । उसे बच्चोका विलाप नहीं सुनाई देता। उसे चिताकी आग नहीं दिखाई देती ।

हम दिमागको विकसित करे, हृदयको सभ्य बनायें और कल्पना शक्तिको पर लगने दे ।

७

यदि हम काल्पनिक कथाओ और करिश्मोको छोड दे, यदि परा-प्राकृतिकका त्याग कर दे, तो फिर संसारको सभ्य कैसे बना सकते हैं ?

क्या असत्यमे सुधार करनेका सामर्थ्य है ? क्या मिथ्या विश्वास सद्गुणोकी माता है ? क्या असंभव और ऊल-जलूल बातोमें किसीकी रक्षा करनेकी शक्ति है ? क्या बुद्धि मरनेवालोके साथ ही समाप्त हो गई ? क्या सभ्य लोगोको भी हब्शियोके धर्मको स्वीकार करना चाहिए ?

यदि हम ससारका सुधार करना चाहते है, तो हमें सत्यपर, वास्तविक घटनाओंपर और तर्कपर निर्भर रहना चाहिये। हमें आदमियोको सिखाना चाहिये कि यदि वे भले हैं तो अपने लिये और यदि बुरे है तो अपने लिये। दूसरे उनके लिये अच्छे अथवा बुरे नहीं हो सकते। न उन्हे दूसरोके अपराधोके लिए दोषी ठहराया जा सकता है और न उन्हे दूसरोके गुणोंका श्रेय दिया जा सकता है। हमे 'दूसरोके पापोका प्रायश्चित्त' नामक सिद्धान्तको ठुकरा देना चाहिए। क्योकि यह ऊल-जलूल और अनैतिक है। हम आदमके पापोके लिये दोषी नहीं और ईसाके गुण हमको दिये नही जा सकते। निरपराधियोंके कण्ठ, अपराधियोके अपराधका प्रायश्चित्त क्यो करे ?

एक कार्य अच्छा, बुरा, अथवा न अच्छा न बुरा, अपने परिणामोंके अनुसार होता है। कार्य और उसके स्वाभाविक परिणामके बीच कोई चीज नहीं आ सकती। एक शासक किसी अपराधीको क्षमा कर सकता है,

किन्तु अपराधके स्वाभाविक परिणाम होकर ही रहेंगे। एक ईश्वर भले ही क्षमा कर दे, लेकिन क्षमा किये गये कर्मका फल तब भी वही होगा। हमें संसारको बताना चाहिए कि बुरे कर्मोंके परिणामसे बचा नहीं जा सकता। वे अदृश्य पुलिस हैं, वे अदृश्य परिशोध लेनेवाले हैं। वे कोई रिश्वत नहीं लेते, कोई प्रार्थना नहीं सुनते, और उन्हें कोई चालाकी ठग नहीं सकती। हमें देवताओंकी नहीं बल्कि स्वयं अपनी और उन लोगोंकी, क्षमा चाहिये जिन्हें हमसे हानि पहुँची है। बिना पछतावेके भी यदि अपनी गलतीका मार्जन हो, तो वह बिना मार्जनके पछतावेसे कहीं अच्छा है।

हम किसी ऐसे ईश्वरको नहीं जानते जो पुरस्कार देता हो, दण्ड देता हो, अथवा क्षमा करता हो।

हमें अपने मानव बंधुओंको सिखाना चाहिये कि आदर अंदरसे पैदा होता है, कहीं बाहरसे नहीं। सम्मान अर्जन किया जाना चाहिये। यह कोई दान नहीं है। कोई अनन्त शक्तिशाली परमात्मा भी किसी भिखमंगेकी हथेलीपर सम्मानरूपी हीरा रखकर उसे धनी नहीं बना सकता।

उन्हें यह भी सिखायें कि सुख अच्छे कर्मोंकी कली है, फूल है और फल है। यह किसी देवताका प्रसाद नहीं है। आदमीको उसे कमाना चाहिये; उसका अधिकारी बनना चाहिये।

इस ससारमें ऐसा कोई जादू नहीं, ऐसी कोई हस्थ-फेरी नहीं जिससे अच्छे कर्मोंका फल बुरा और बुरे कर्मोंका अच्छा हो सके।

आदमियोंको सिखाओ कि वे किसी परलोकके लिये इस लोकका बलिदान न करें; बल्कि अपना ध्यान इस लोककी समस्याओंको हल करनेमें लगाये। लोगोंको बताओ कि देव-वाद निराधार है, यह अज्ञान और भयका पुत्र है। इसने आदमियोंके दिलोंको कठोर बना दिया है और उनकी कल्पनाओंको गन्दा।

देव-वाद इस संसारके लिये नहीं है। यह वास्तविक धर्मका कोई हिस्सा नहीं है। उसे अच्छाई या बुराईसे कुछ लेना देना नहीं है। धर्म देवताओंकी पूजामें नही है, किन्तु मानवके कल्याणकी, मानवताकी

सुख-वृद्धि करनेमे है। कोई आदमी नहीं जानता कि कहीं कोई ईश्वर है अथवा नहीं, और हमारे अथवा किसी दूसरी जातिके ईश्वरके बारेमें जो कुछ भी कहा गया हैं वह सब निराधार है, बिना विचारका शब्द, बिना वर्षाका बादल है।

हमे चाहिए कि हम धर्ममेसे देव-वादको निकाल बाहर करे।

धार्मिक सगठन और राज्यका परस्पर कुछ सबंध नहीं रहना चाहिये। पादरी-पुरोहितोका कहना है कि वे ईश्वरद्वारा चुने गये हैं और उनकी शक्ति उन्हे ईश्वरसे ही प्राप्त है। राजा ईश्वरकी इच्छाके अनुसार सिहासनपर बैठते हैं। ये तमाम कथन एकदम बिना सिर-पैरके हैं। तो भी लाखो करोड़ो आदमी इन बातोंमें विश्वास करते हैं और इन्हे स्वीकार करते हैं। देववादको सरकारमेंसे निकाल बाहर करो, और राजाओको अपने सिहासन छोड़ देने होगे। सभी लोगोको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सरकारोंको उनकी शक्ति शासितोंकी अनुमतिसे मिलती है, और सभी सरकारी पदाधिकारी जनताके नौकर हैं। देव-वादको सरकारमेंसे निकाल बाहर करो कि इलहामी पुस्तकों और मिथ्या-विश्वासपूर्ण मठोंके बारेमें लोग अपने विचार स्वतंत्रता-पूर्वक प्रकट करने लग जायेंगे और पादरी-पुरोहित हमारे समयका अधिकाश व्यर्थ नष्ट न कर सकेंगे।

देववादको शिक्षामेंसे निकाल बाहर करो। किसी विद्यालयमे कोई ऐसी बात नही सिखाई जानी चाहिये जिसे कोई नहीं समझता। इस ससार और इस जीवनके बारेमे जानने लायक बहुत बाते हैं। हर बच्चेको विचार करना सिखाना चाहिये, और यह भी कि विचार न करना खतरनाक है। बच्चोंको मिथ्या-विश्वासकी बेहूदगियाँ और अत्याचार नहीं सिखाने चाहिए। किसी धार्मिक संप्रदायका किसी भी सार्वजनिक स्कूलपर कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। एक दूसरेसे घृणा करनेवाले और परस्पर लड़नेवाले धार्मिक संप्रदायोके हाथमे जनताका पैसा नहीं जाना चाहिये। सार्वजनिक स्कूलको एकदम लौकिक होना चाहिए। वहाँ केवल उपयोगी बातोकी शिक्षा दी जानी चाहिये। हमारे बहुतसे विद्यालय धार्मिक सगठनोंके अधीन है। वहाँके सभापति और अध्यापक धर्म-ग्रंथोंके पंडित हैं। परिणामस्वरूप जो भी यथार्थ बात किसी

भी मत विशेषके विरुद्ध पडती है उसे या तो दवा दिया जाता है या अस्वीकार किया जाता है। केवल वे ही अध्यापकगण जो स्वभावसे मूर्ख हैं अथवा वेईमान हैं, अपनी जगह बनाये रख सकते हैं। जो सत्य वोलते हैं, जो यथार्थ ज्ञान सिखाते हैं उन्हे त्यागपत्र देनेको कहा जाता है।

प्रत्येक विद्यालयमे सत्य आदृत अतिथि होना चाहिये। प्रत्येक अध्यापकको खोज करनेवाला होना चाहिये और प्रत्येक विद्यार्थीको जिज्ञासु। देववाद और मानसिक वेईमानी दोनोंका गठवंधन हैं। वच्चोंके अध्यापकको समझदार और सपूर्ण रूपसे ईमानदार होना चाहिये।

आओ, हम देववादको शिक्षामेसे निकाल वाहर करें।

धार्मिक प्रवृत्तिके लोग लौकिक स्कूलोंकी ईश्वर-विहीन कहकर निंदा करते हैं। उन्हे वैसा होना ही चाहिये। सभी विज्ञान लौकिक हैं और ईश्वरविहीन। देववादका विज्ञानसे वही संवंध है, जो जादू-टोनेका रसायन शास्त्रसे। यह वस्तु कुछ ऐसी है कि जिसकी शिक्षा दी ही नहीं जा सकती। क्यों कि यह जानी ही नहीं जा सकती। इसका कहीं कुछ यथार्थ आधार नहीं है। यह न तो दिमागमें किसी चित्रको उत्पन्न करता है और न किसी मानसिक चित्रसे मेल ही खाता है। यह केवल अज्ञेय ही नहीं है, किन्तु इसके वारेमे विचार भी नहीं हो सकता। सैकड़ों और हजारों वर्षोंसे आदमी देववादके वारेमें चर्चा करते रहे हैं, शास्त्रार्थ करते रहे हैं, और झगड़ते रहे हैं। पर कहीं कुछ भी तो प्रगति नहीं हुई। धार्मिक वर्दी पहननेवाला पुरोहित अभी वहींतक पहुँचा है, जहॅसे हब्शीने चलना आरभ किया था।

हम जानते हैं कि देववादने हमेशा शत्रुताको जन्म दिया है और आगे भी शत्रुताको जन्म देता रहेगा। यह परिवारोंमें घृणाके बीज वोता है, यह स्वार्थी है, अत्याचारी है, वदला लेनेकी भावनासे भरा है और ईर्षालु है। इसके अनुसार स्वर्गमे जा सकनेवाले थोड़े हैं और नरकमे जानेवाले वहुत। अव हम जानते हैं कि दिमागी साहस कोई गुण नहीं है। हमें ढोंग और पक्षपातको पुरस्कृत करना छोडना चाहिए। हमे विचारकों, खोजियों, प्रकाशदाताओ और संसारको सभ्य वनानेवालोको त्रास देना छोडना चाहिए।

८

क्या अज्ञात जीवन और मृत्युके रहस्य, मनकी सीमाओंसे परेका संसार, मिथ्या-विश्वासके लिए सदैव सामग्री उपस्थित करता रहेगा ? क्या विज्ञानकी सेनाओके सामने देवता और दैत्य नष्ट हो जायेंगे या पीछे हटकर ज्ञातके क्षितिजसे परे कहीं न कहीं लटकते रहेंगे ? क्या अंधकार सदैवके लिये परा-प्राकृतिकको जन्म देता रहेगा ?

कुछ ही समय पहले पादरी लोग किसानोंसे कहते थे कि नया येरुसलम, दिव्य नगर, पातालोंके ठीक ऊपर है। उनका कहना था कि इसकी दीवारें और शिखर आदमीकी दृष्टिसे परे हैं। दूरवीनका आविष्कार हुआ, तारागणोके शून्यमे देखनेवालोंको कहीं कोई नगर नहीं दिखाई दिया। उन्होंने पादरियोसे पूछा—"तुम्हारा नया येरुसलम कहाँ है ?" पादरियोंने बड़े आनन्द और विश्वासके साथ उत्तर दिया—"जहाँतक तुम देख सकते हो, ठीक उससे आगे है !"

एक समय था जब यह विश्वास किया जाता था कि आदमियोंकी एक ऐसी नस्ल है जिनके कधे उनके सिरोंसे ऊँचे होते हैं। सुदूर देशोंसे लौटनेवाले यात्रियोंसे इन अद्भुत लोगोके बारेमे पूछा गया। सभीका उत्तर था कि उन्होने उन्हे नहीं देखा। दैत्योंमें विश्वास करनेवालोंका कहना था, "ओह, ऐसे लोग जिनके सिर उनके कंधोंसे नीचे होते है, उस प्रदेशमे रहते हैं, जहाँ तुम नहीं गये।" इस प्रकार जबतक सारे संसारका ज्ञान नहीं हो गया, दैत्य बने रहे और फलते फूलते रहे। हम सारे विश्वको नहीं जान सकते, हम असीम प्रदेशमें हर जगह नहीं जा सकते, और इसलिये इस असीम आकाशमें देवताओ और दैत्योंके लिये तथा स्वर्गों और नरकोंके लिये कहीं न कहीं स्थान बना ही रहेगा। इसलिए यह सभव है कि मिथ्या विश्वास तब तक लँगड़ाता चलता रह सकता है जब तक कि संसार इतना बुद्धिमान् नहीं हो जाता कि वह ज्ञातके आधारपर निर्माण कर सके, अपनी कल्पना-शक्तिको संभवकी सीमामें बद्ध रख सके, और जब तक परा-प्राकृतिक अपने आपको सिद्ध नहीं कर देता तब तक प्राकृतिकमे ही विश्वास करता रहे।

हब्शी लोग जिस दुनियामे रहते थे, उस दुनियाके बारेमें कुछ भी जाननेमे पहले देवताओं तथा स्वर्ग और नरकके बारेमें सब कुछ जानते थे। वे आकाशमे विचरनेवाले प्रेतोंसे सुपरिचित थे। वे मानव-जातिके आरंभ और अंतके बारेमें सब कुछ जानते थे। जिन समस्याओको दार्शनिक लोग बुद्धिसे परेकी चीज मानते हैं, वे उनके बारेमें सुनिश्चित थे। वे फलित-ज्योतिष जानते थे किन्तु गणित-ज्योतिष नहीं। जादू-टोनोंके बारेमें जानते थे, किन्तु रसायन-शास्त्रके बारेमे कुछ नही। वे केवल उन्हीं बातोंके विषयमें बुद्धिमान् थे जिनके बारेमे कुछ नहीं जाना जा सकता।

सभ्यताके विकासकी आरंभिक अवस्थामें सभी लोग एक ही तरह सोचते थे। आजके ईसाई उन्हींका अनुकरण करते हैं। वे लोग ससारके बारेमे एक प्रकारसे कुछ भी नहीं जानते थे और समझते थे कि आदमीके उपयोगके लिए ही स्पष्ट रूपसे संसार की रचना की गई है। वे नहीं जानते थे कि पृथ्वीके बड़े बड़े प्रदेश सदा हिमाच्छादित रहते हैं, और अधिकांश देशोंकी परिस्थिति मानव-जीवनके अनुकूल नही है। वे मानवके उन असंख्य शत्रुओंसे अपरिचित थे जो अदृश्य रूपमे जल, भोजन तथा वायुमे रहते हैं। थोडी बहुत भलाईके पीछे उन्हें देवता दिखाई देते और बुराईके पीछे दैत्य। उन्हे देवताओंका कृपा-भाजन बनना सबसे बड़ी बात मालूम होती थी, क्यों कि वे ही दैत्योंसे उनकी रक्षा कर सकते थे। जो इन देवताओंकी पूजा करते, बलिदान चढाते और पुजारियोंकी आज्ञा मानते, वे उस जातिके वफ़ादार सदस्य माने जाते, और जो पूजा करनेसे इकार करते, वे शत्रु और जातिद्रोही घोषित किये जाते। आत्म-रक्षाके लिये, देवताओंके, अभिशापसे बचनेके लिये, देवताओंमें विश्वास रखनेवाले लोग देवताओंके अविश्वासियोंको या तो देशनिकाला दे देते या उन्हें नष्ट ही कर डालते।

जैसा उनका विश्वास था, उसके अनुसार उनका आचरण सर्वथा स्वाभाविक था। न केवल रोग और मृत्युसे, न केवल महामारी और अकालसे ही वे अपनी रक्षा करना चाहते थे किन्तु वे परलोकमें अपनी संतानकी आत्माओंको भी अनन्त यातनासे सुरक्षित रखना चाहते थे। उनके देवता असभ्य थे, वे केवल खुशामद और पूजा ही नहीं चाहते थे, किन्तु मत विशेषका आग्रह भी। जब तक ईसाई अनन्त दंडके सिद्धान्तमे विश्वास करते हैं, तब तक खोज करनेवालोंके तथा तर्कको ही प्रमाण माननेवालोंके शत्रु रहेंगे।

विज्ञान सदासे विनम्र, विचारपूर्ण तथा सत्यका पक्षपाती रहा है, है, और रहेगा। इसका केवल एक ही उद्देश्य है : सत्यका पता लगाना। इसमे न कहीं कोई पक्षपात है न घृणा। यह बुद्धिका राज्य है, यहॉ उत्तेजनासे कुछ भी इधर उधर नहीं हो सकता। यह किसी ईश्वरको प्रसन्न करने, स्वर्गप्राप्ति अथवा नरकसे बचनेका प्रयत्न नहीं है। यह इस संसारके लिए है। आदमीके उपयोगके लिए यह संपूर्ण रूपसे खुला है। यह कुछ छिपाता नहीं, किन्तु प्रकट करता है। यह रहस्यका शत्रु है। यह आदमीसे अपनी सभी इद्रियोका उपयोग करनेके लिए कहता है और इसपर जोर देता है। यह पवित्र अथवा इलहामी होनेका झूठा दावा नहीं करता। यह खोज, आलोचना और इनकार तक को निमत्रण देता है। यह हर तरहसे परखनेकी बात कहता है। इसके अनुसार कोई भी नास्तिक अथवा अविश्वासी नहीं होता। जो लोग अजानमे अथवा जान-बूझकर सत्यसे इनकार करते हैं, उन्हे जेलमे डालनेकी बात यह नहीं करता। सत्यके ज्ञानमेसे जो सुख उत्पन्न होता है वही इसकी ओरसे दिया जा सकनेवाला एकमात्र पुरस्कार है, और सुधारमेसे पैदा होनेवाला दुःख ही एकमात्र दंड। ससारको समझदार बनाकर उसका सुधार करना ही इसका प्रयत्न है।

दूसरी ओर देववाद सदासे अज्ञानी, अभिमानी और अत्याचारी रहा है और रहेगा। जब ईसाइयतके हाथमे ताक़त थी, उस समय ढोंगके सिरपर मुकुट था और ईमानदारी कैद थी। देववादने सदासे निकृष्टतम लोगोको स्वर्ग भेजा है, और श्रेष्ठतम लोंगोको नरक।

अन्तिम न्यायके दिनका एक दृश्य देखिये—

ईसामसीह अपने सिहासनपर विराजमान है। उसका मंत्री उसके पास बैठा है। एक आत्माका आगमन होता है। आगे जो कुछ घटता है वह इस प्रकार है :—

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"तोरक्यूमद।"

"क्या तुम ईसाई थे?"

"हाँ, मै ईसाई था।"

" क्या तुमने औरोंको ईसाई बनानेका प्रयत्न किया ? "

" मैंने उन्हे प्रेरणासे, प्रचारसे, प्रार्थनासे और जोर–जबर्दस्तीसे भी ईसाई बनानेका प्रयत्न किया। "

" तुमने क्या क्या किया ? "

" मैंने नास्तिकोंको जेलमें डाला, बेड़ियोंमें जकड़ा, उनकी जबानें चीर डालीं, ऑखें निकाल लीं, हड्डियॉ चूर चूर कीं, पैरोंको भून डाला, और फिर भी वे नहीं माने तो उन्हे जीवित जला दिया। "

" क्या तुमने यह सब मेरी शानके लिये किया ? "

" हॉ, सब कुछ आपके लिये। मैं कुछको बचाना चाहता था, मैं छोटे बच्चों और दुर्बल दिमागवालोंकी रक्षा करना चाहता था। "

" क्या तुम बाइबलमे विश्वास रखते थे, करिश्मोंको मानते थे ? "

" हॉ, मै यह सब मानता था. मेरी बुद्धि श्रद्धाकी गुलाम थी। "

" बहुत अच्छा किया। नेक और वफादार नौकर, इसे मेरे स्वामीके दिव्य-लोकमे पहुँचा दो। "

एक दूसरा आत्मा उठ खड़ा होता है।

" तुम्हारा क्या नाम है ? "

" ग्युर्दनो ब्रूनो "

" क्या तुम ईसाई थे ? "

" एक समय था, किन्तु अब बहुत वर्षोंसे मै एक दार्शनिक हूँ, सत्य अन्वेषक। "

" क्या तुमने अपने भाइयोंके धर्म-परिवर्तनका प्रयत्न किया ? "

" मैंने उन्हे ईसाई बनानेका तो नहीं, किन्तु तर्क-धर्मके अनुयायी बनानेका प्रयत्न किया, मैंने उन्हें अज्ञान और मिथ्या विश्वासकी गुलामीसे मुक्त करनेका प्रयत्न किया। मैंने संसारको यथासामर्थ्य सभ्य बनानेका प्रयत्न किया, लोगोंको सहनशील और दयालु बनानेका, पादरियोंके दिलोको नरम करनेका, और ससारसे यातनाका मूलोच्छेद कर देनेका, यत्न किया। मैंने अपने ईमानदाराना विचारोंको प्रकट किया, और तर्कके प्रकाशमें चलनेका प्रयत्न किया। "

" क्या तुम्हारा बाइबलमे विश्वास था ? क्या तुम करिश्मोको मानते थे ? "

" नहीं, मैं विश्वास नहीं करता था। मै यह नहीं मानता कि ईश्वरने कभी इस ससारमें जन्म ग्रहण किया, अथवा ईश्वरने कभी बढ़ईका काम सीखा। इस प्रकारकी बातोंमें न विश्वास कर सकता था और न कभी किया। किन्तु जितनी भी कर सकता था मैने उतनी भलाई करनेकी कोशिश की। मैने अज्ञानियोके अज्ञानको दूर किया, दुखियोंको सान्त्वना दी, निर्दोष व्यक्तियोका पक्ष ग्रहण किया, अपनी गरीबीको ही गरीबोंमे बाँटा, और अपने मानव बंधुओके सुखमे वृद्धि करनेके लिये जो कुछ मुझसे हो सकता था, किया। "

ईसा मसीहका चेहरा काला पड गया। गुस्सेसे उसकी भवे तन गई। अपना हाथ ऊपर उठाकर वह चिल्ला उठा—दूर भागो यहाँसे और उस अनन्त आगमे जल मरो जो कि शैतान और उसके गणोके लिये बनी है।

यही ईश्वरकी करुणा है—दयालु ईसा मसीहकी दया।

देववाद ईश्वरको एक दैत्य, एक अत्याचारी, एक हब्शीका रूप दे देता है। वह आदमीको गुलाम बना देता है। वह आज्ञाकारी, विनम्र तथा भयभीतको स्वर्गका लालच देता है और आत्मनिर्भर लोगोंको नारकी यातनाओकी धमकी देता है।

यह तर्ककी निन्दा करता है, आशा और भयके सामने झुकता है। यह अपने आलोचकोंके तर्कोके उत्तर नही देता, बल्कि असत्य और झूठी निन्दाका रास्ता अपनाता है। यह प्रगति करनेके अयोग्य है।

परा-प्राकृतिक और प्राकृतिक सघर्षमे देवताओं और आदमियोके बीचकी लडाईमे हम मध्य रात्रिमेसे गुजर चुके हैं। सभ्यताकी शक्तियाँ और जिन यथार्थ बातों और सत्योका आविष्कार हो चुका है वे, सभी विज्ञानके पक्षमें हैं। हमें न काल्पनिक कथाओंकी आवश्यकता है, न करिश्मोंकी, न देवताओंकी और न दैत्योंकी।

९

पीढी दर पीढी काल्पनिक कथाओंकी शिक्षा दी जाती रही है और करिश्मोमे विश्वास रहा है। हर माता एक धर्मप्रचारिका रही है और अपने

बच्चेको बड़े ही स्नेहपूर्ण ढंगसे धर्मके असत्य सिखाती रही है। माताके दूधमें ही मिथ्या-विश्वासका विष रहा है। वह ईमानदार थी और प्रेमकी मूर्ति थी। उसका चरित्र, उसकी भलाई, उसकी मुसकराहट और उसके चुंबन उसके द्वारा सिखाये गये मिथ्या-विश्वासोंमे घुलमिलकर एक हो गये। पिता, मित्र और पुरोहितने माताका साथ दिया, और इस प्रकार शिक्षित बच्चे अपनी संतानके शिक्षक बन गये। इसी क्रमसे ये मत आजतक जीवित रखे गये हैं।

बचपनको रोमांच, रहस्य और विशालता अच्छी लगती है। यह एक ऐसे संसारमे रहता है जहाँ किसी कार्यके लिये कारणकी आवश्यकता नहीं। जहाँ परी हाथ हिलाती है और राजकुमार प्रकट हो जाता है। जहॉ इच्छामात्रसे वाछित वस्तु पैदा होती है और मंत्र-तंत्र जो चाहे कर सकता है। व्यक्ति जातिका जीवन जीता है, और जातिने अपनी बाल्यावस्थामे जो कुछ किया उससे बच्चा आनन्दित होता है।

गलतियों और वास्तविक घटनाओंमे वही सबध मालूम देता है जो धान और जंगली घासमें। गलतियॉ अपनी चिन्ता आप कर लेती हैं, जब कि वास्तविक घटनाओंकी पूरी सावधानीसे रक्षा करनी होती है। असत्य जंगली घासकी तरह अपने आप ही बढ़ता है। जंगली घासको योग्य भूमि अथवा वर्षाकी कुछ परवाह नहीं होती। इतना ही नहीं कि जंगली घास किसी तरहकी कोई सहायता नहीं चाहती, बल्कि नष्ट करनेके लगभग सभी प्रयत्नोंके बावजूद भी उगती है। बच्चोंके मनमे, मिथ्या-विश्वास, काल्पनिक कथायें और करिश्में एक प्रकारका स्वाभाविक घर बना लेते हैं, और बहुत-सी हालतोंमें हमेशाके लिये। जवानीमे भुला दिये जानेपर अथवा इनकार कर दिये जानेपर भी वे बुढापेमे फिर प्रकट हो जाते हैं और अंत समय तक पीछा नहीं छोड़ते।

धार्मिक असत्योंके दीर्घायु होनेका एक हदतक यही कारण है। पादरी-पुरोहित हाथोंको जोड़कर और ऑखोंको आकाशकी ओर उठाकर हर चितकसे पूछते हैं कि वह इतना निर्दयी कैसे हो गया कि अपनी मॉके धर्मपर आक्रमण कर सका? पादरी समझते हैं कि इस प्रश्नका किसीके पास कोई उत्तर नहीं।

आश्चर्य है कि वे यही प्रश्न हिन्दुओं और चीनियोके बारेमे क्यों नहीं पूछते ? उनसे ये लोग अपनी माताओंके धर्मको उसी प्रकार छोड़ देनेकी आशा करते हैं जिस प्रकार ईसा और उसके शिष्योंने अपनी माताओके धर्मको छोड़ दिया था। यहूदियो और अन्य धर्मावलंबियोंके लिये यह ठीक है कि अपनी माताओंके धर्मको छोड़ दें; किन्तु दार्शनिको और चिंतकोंके लिए नही।

प्राकृतिक घटनाओंकी जॉच पड़ताल की गई और कहीं किसी परा-प्रकृतिका पता नहीं लगा। काल्पनिक कथाये, कल्पना-लोकसे अन्तर्धान हो गईं। उनमें जो काव्यका अंश था वही शेष बच रहा। अब हम एक प्राकृतिक संसारमें जी रहे हैं।

हमारे पूर्वजोमेसे कुछने धर्मकी स्वतंत्रताकी माँग की थी। हम एक कदम आगे बढना चाहते हैं:—हम स्वतत्रताके धर्मकी मॉग करते हैं।

हे स्वतंत्रते! एकमात्र तू ही मेरी आराधनाकी देवी है। एकमात्र तू ही ऐसी देवी है जिसे झुके हुए घुटनोंसे घृणा है। तेरे खुले मंदिरमे—जहॉ न दीवारे हैं और न छत; जहॉ तारे जगमगाते हैं और सूर्य चमकते हैं—तेरे पुजारी सीधे तनकर खड़े हो सकते हैं। वे न झुकते हैं, न रेगते हैं और न जमीनपर अपना माथा ही टेकते हैं। उनके ओठोंने कभी जमीनकी मिट्टीका स्पर्श नही किया। हे स्वतंत्रते! तेरी वेदीपर न माताये अपने बच्चोका बलिदान करती हैं और न आदमी अपने अधिकारोका। तू आदमीसे केवल वे ही चीज़े मॉगती है जिन्हें हर भला आदमी घृणाकी दृष्टिसे देखता है—चाबुक, बेडी, और कारागारकी चाबियॉ। तेरे यहॉ न कोई पोप है, न पादरी-पुरोहित, जो तेरे और मानव-बंधुओंके बीच आकर खड़ा हो सके। तुझे न मूर्खतापूर्ण बाह्य क्रिया-कलापोंकी परवाह है और न स्वार्थ-पूर्ण प्रार्थनाओकी। तेरे पवित्र मंदिरपर तर्ककी न बुझनेवाली बत्ती जल रही है। एक दिन आयेगा, जब उसका पवित्र प्रकाश सारे संसारको प्रकाशित कर देगा।

एक गृहस्थका प्रवचन

महिलाओ और भद्र पुरुषों, मैं आज कुछ ऐसे विषयोंके बारेमे दो चार शब्द कहना चाहता हूँ जो हन सबको प्रिय हैं, और जिनमे हर आदमीकी रुचि होनी चाहिये। संभव है इनमें किसी पुरुषकी रुचि न हो तो उसकी स्त्रीकी होगी, उसके बच्चोंकी हो सकती है। मैं चाहूँगा कि यह संसार ऐसा बन जाय कि जब कोई आदमी मरने लगे तो उसको यह अनुताप न हो कि वह अपनी स्त्री और बच्चोंको दुनियाके लोगोंके लोभ, ईर्षा और निर्दयताका शिकार बननेके लिए छोड़े जा रहा है। जिस शासनमें सबसे अधिक परिश्रम करनेवाले, सबसे कम पाते हैं, वह शासन ही सदोष है। जब ईमानदार लोगोंको चीथड़े पहनने पड़ते हैं और गुंडे अच्छेसे अच्छे कपड़े पहने घूमते हैं, जब कोमल प्रकृतिके दयावान् लोग रोटीके सूखे टुकड़े खाकर जीते हैं और दुष्ट दावते उड़ाते हैं, तब यह सब कुछ पाप है। मै कुछ बहुत नहीं कर सकता, तो जो दुखी है, उससे कमसे कम सहानुभूति तो रख सकता हूँ। एक बात है जो हमे आरम्भमें ही याद रखनी चाहिये और यदि मैं आज रात आप सबको वही एक बात सिखा सकूँ—यदि आप उसे पहलेसे न जानते हों—तो मे अपने आजके कथनको असाधारण रूपसे सफल मानूँगा।

मै चाहता हूँ, आप यह बात याद रखे कि हर आदमी वही कुछ होता है जो उसे होना चाहिये। मै चाहता हूँ कि आप उस पुरानी स्वतंत्र नैतिक कर्तृत्ववाली वेहूदा बातसे अपने दिमागको मुक्त कर ले। तब आप देखेंगे कि आपके मन तमाम मानव जातिके लिये उदारताकी भावनासे भर जायेंगे। जब आप जानेंगे कि लोग जिस प्रकार अपने कदकी ऊँचाईके लिये उत्तरदायी नहीं हैं, जिस प्रकार अपने स्वप्नोंके लिये उत्तरदायी नही है, उसी प्रकार अपने कार्योंके लिए भी उत्तरदायी नहीं हैं। यदि आप अन्तमे यह समझ जायँगे कि हर कार्यका अपना पर्याप्त कारण होता है, तो मुझे विश्वास है कि

आपके मनमें अपने प्रति और सारी मानवताके प्रति वही उदारताकी भावना भर जायगी।

धन कोई पाप नहीं है; निर्धनता कोई पुण्य भी नहीं है। इसमे सदेह नहीं है कि सदाचारी आदमी प्रायः निर्धन रहे हैं। मानव-जीवनके लिये आदमी-का सुख ही सबसे बड़ा आदर्श है। अपनेको और दूसरोको सुखी बनानेवाला आदमी ही वास्तविक बुद्धिमान् है।

मैं जन्मसे ही आत्म-त्यागकी बात सुनता रहा हूँ। इससे बढ़कर बुद्धू-पनकी कभी कोई बात नहीं हुई। कोई भी आदमी जो भला काम करता है निःस्वार्थ भावसे नहीं करता। भला काम करना बुद्धिकी कली है, फूल है और फल है। उच्चतम स्वार्थ और संपूर्ण औदार्यसे प्रेरित होकर ही भला कार्य किया जाना चाहिये। कोई भी आदमी कभी आत्मत्यागी नहीं होता, जब तक कि वह कोई गलती न करे। अपनी हानि करना आत्मत्यागी होना है। जो दूसरेके साथ न्याय नहीं करता वह अपने भी न्यायका अधिकारी नहीं। ऐसे पौधे रोपना जिनमें सदैव आनन्दके फल लगते रहे, आत्मत्यागी होना नहीं है। मात्र परोपकारके लिये ही भला काम करना एक बेहूदी कल्पना है। तुम यदि कोई भला काम करना चाहते हो, तो न केवल दूसरोके लिये किन्तु अपने लिये भी; क्योकि कोई भी संपूर्ण सभ्य आदमी कभी पूर्ण सुखी नहीं रह सकता, जब तक दुनियामे एक भी आदमी दुखी है।

हम एक कदम आगे बढे। बर्बरताके युगमे यदि कोई आदमी इस संसारमें बुद्धिमानीपूर्वक रहता था तो वह दूसरे लोकमें पुरस्कृत होता था। लोगोंको दूसरे लोकमें पुरस्कृत होनेका विश्वास दिलाया जाता था। यदि उनमे इतना आत्म-त्याग हो कि वे सदाचारी बने रह सके, यदि वे चोरी और हत्या करनेसे बचे रहें; यदि वे यहाँ काम-भोगके जीवनमें लिप्त न हो, तो उन्हे पर-लोकमें इस आत्मत्यागका बदला मिलेगा। मेरे सोचनेका तरीका एकदम विपरीत है। जो उचित है वह, आत्मत्यागकी भावनासे न करो, किन्तु इसलिये करो कि तुम अपनेको प्रेम करते हो और दूसरोको प्रेम करते हो। उदार बनो, क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है। न्यायी बनो, क्योंकि कोई दूसरी बात आत्महत्या है। जो आदमी कोई गलत काम करता है वह अपनेको प्लेगका रोगी बनाता है, और जब वह अपनी खेती काटेगा तो उसे

पता लगेगा कि जिस समय उसने अपना धर्म निभाया उस समय वह आत्म-त्यागसे काम नहीं ले रहा था।

यदि तुम स्वय प्रसन्न रहना चाहते हो, और यदि तुम वास्तवमें सभ्य हो, तो यह चाहोगे कि दूसरे भी सुखी रहें। हर आदमीको अपनी योग्यताके अनुसार मानवताके सुखमे वृद्धि करनी चाहिये, क्योंकि उससे स्वयं उसके सुखमें वृद्धि होती है। कोई भी आदमी तव तक वास्तवमें सुखी नहीं हो सकता जब तक कि अपने साथ रहनेवालेमें अपने जीवनके सुखको नहीं बाँटता।

वहुत-से लोग कल्पना करते हैं कि धनी स्वर्गमें रहते हैं, किन्तु उनका स्वर्ग एक मुलम्मा चढा हुआ प्रायः नरक ही है। न्यूयार्कमें ऐसा एक भी बुद्धिमान् आदमी नहीं होगा, जिसके पास पचास लाख डालर हों। क्यों? क्योंकि तब रुपया ही उसका मालिक वन जायगा। वह अपनी तिजोरीकी चावीमात्र हो जायगा। वह रुपया उसे दिन चढे उठायगा, उसके मित्रोंको उससे जुदा कर देगा; उसके दिलको डरसे भर देगा और उसका दिनका सुख और रातके मधुर स्वप्न छीन लेगा। वह रुपयेका मालिक नहीं बन सकता, रुपया उसका मालिक वन जाता है और तब अधिकाधिक कमाता जाता है। किस लिये? वह नहीं जानता। यह एक पागलपन वन जाता हैं। कोई भी आदमी एक महलमें एक कोठड़ीसे अधिक प्रसन्न नहीं रह सकता।

जो कुछ तुम्हें चाहिये उससे अधिककी इच्छा करना पागलपन है। हम एक आदमीकी, इस वड़े नगरमे रहनेवाले एक आदमीकी, कल्पना करे जिसके पास २० या ३० लाख कोट हों, ५० लाख या १ करोड़ टोपियाँ हों, जूतोंका एक वड़ा भारी भंडार हो और करोड़ नेकटाइयाँ हों और फिर कल्पना करे उस आदमीकी जो पानीमे, वरफ़में, सुवह चार बजे उठकर दिनभर एक कुत्तेकी तरह काम करता है ताकि उसे एक और नेकटाई मिल जाय। दो करोड़ या तीन करोड़का मालिक आज क्या ठीक यही नहीं करता है? वह अपने जीवनके तारतार करता रहता है ताकि कोई कह उठे—ओह! तुम कितने धनी हो! पर वह इस धनका क्या उपयोग कर सकता है? कुछ नहीं। क्या वह इसे खा सकता है? नहीं। मित्र बना सकता है? नहीं। खुशामद और असत्य खरीद सकता है? हाँ। अपने सभी गरीब संबंधियोंकी घृणाका पात्र बन सकता है? हाँ।

भगवानका अभिशाप

सारा संसार भयसे त्रस्त है। आत्माने अज्ञानकी शरण गही है। सहस्रो वर्ष तक बुद्धिरूपी समुद्रमे तर्कके हत्यारे लूट मार करते रहे हैं। पवित्र आत्माएँ तटसे सटे हुए दीप-स्तम्भकी ओर देखती रही हैं।

समुद्र दैत्योसे भरे थे और द्वीप परियोंसे, जनता एक तंग सडकके बीचसे हॉकी जा रही थी। पादरी पुरोहित आगे आगे झाड़ियोको पीटते चलते थे, मानों वे डाकुओंको डरा रहे हैं। बेचारे अनुयायियोको जब कहीं कोई लुटेरे न दिखाई दिए तो उन्होने अपने वीर नेताओंके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की।

झुंडके झुंड गिरते पडते लोगोने ऑखे फाड फाड कर उन गड़रियोंकी ओर देखा जिन्होंने उन्हें भयानक भेडियोंकी कथाएँ सुनाई। बडी प्रसन्नतापूर्वक उन्होने आत्म-सुरक्षाके बदलेमें अपने गरम कोट उन गडरियोको दे दिये। वे स्वयं वस्त्रविहीन हो गये और भयानक सर्दीमे ठिठुरते रहे। किन्तु उन्हें प्रसन्नता थी कि उनके रक्षक सुखी और गरम हैं।

इस सारे युगमें हल चलानेवालोको अपनी पसीनेकी कमाई प्रार्थना करनेवालोंको देनी पड़ी। धनीवर्ग इन पवित्र निकम्मोंको पोसता था। झोपड़ी मंदिरके लिए लुटती थी और ढोगीके दुशालेके लिए दरिद्र आदमीने अपनी चीथड़े तक दे डाले।

भय दिमागका कारागार है, और मिथ्या विश्वासरूपी खड्गसे ही ढोंग आत्माकी हत्या करता है। साहस स्वतंत्रता है। मैं विचारोंके पूर्ण स्वातंत्र्यका पक्षपाती हूँ। विचारके साम्राज्यमें हर कोई एक राजा है। हर किसीके तनपर अधिकारकी वर्दी है। मै मानसिक स्वतंत्रताके जनतंत्रका नागरिक हूँ और

केवल वे ही इस जनतंत्रके अच्छे नागरिक समझे जा सकते हैं जो तर्क और प्रेरणाका आश्रय लेते हैं। पशुबलका आश्रय लेनेवाले तो जनतन्त्रके द्रोही हैं, गद्दार हैं।

अब मैं आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि आप थोडी देरके लिए यह भूल जायें कि आप अमुक संप्रदाय अथवा अमुक धर्मके अनुयायी हैं। थोडी देरके लिए हम केवल इतनी ही बात याद रखें कि हम पुरुष और स्त्रियाँ हैं। आप मुझे यह कहनेकी आज्ञा दीजिए कि पुरुष और स्त्री ये मानवताको दी जा सकनेवाली ऊँचीसे ऊँची डिगरियाँ हैं।

आओ, यदि हो सके, तो हम अपने दिमागको भयसे सर्वथा मुक्त कर लें। यह कल्पना मत करो कि इस अनन्त विस्तारमें कोई ऐसा ईश्वर है जो यह नही चाहता कि प्रत्येक पुरुष और स्त्री अपने लिए स्वतंत्रतापूर्वक सोचे। यह कल्पना मत करो कि कोई ऐसा ईश्वर है, जो अपने बच्चोके हाथमें तर्करूपी मशाल दे और जब वे उसके प्रकाशमें आगे बढ़ने लगे तो उन्हे नरक भेज दे। हम साहससे काम लें।

पादरी-पुरोहितोने नास्तिकता नामक एक अपराधका आविष्कार किया है और ढोंगी-लोग हजारों वर्षसे इस अपराधकी ओटमें चैनकी बसी बजा रहे हैं। नास्तिकता केवल एक ही है और वह है अन्याय; पूजा भी एक ही है और वह है न्याय।

तुम्हे किसी ऐसे भगवान्से डरनेकी आवश्यकता नहीं जिसे तुम कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। सावधान रहो कि तुमसे तुम्हारे किसी मानव-बन्धुको हानि न पहुँचे। जिस अपराधको तुम कर ही नहीं सकते उसे करनेसे क्यो डरते हो? तुम उस अपराधसे बचनेका प्रयत्न करो जो शायद तुमसे हो सकता है। ईश्वरको कोई हानि न पहुँचा सकनेका कारण यह है कि अनन्तमे कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। तुम बिना किसीकी अवस्थामें परिवर्तन किये उसके सुखको बढा या घटा नहीं सकते। यदि ईश्वरमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता, तो तुम न उसकी कोई हानि कर सकते हो और न उसे कोई लाभ ही पहुँचा सकते हो।

एक यहूदी एक बार किसी भोजनालयमें भोजन करने गया। उसकी जबान ललचाई और उसने उस यहूदीके कानमे कहा—" थोड़ा-सा सूअरका मांस खाओ। " वह जानता था कि विश्वमे यदि कोई बात है कि जिससे खुदा सख्त नाराज होता है तो वह है किसी भले आदमीको सूअरका मांस खाते देख लेना। वह यह अच्छी तरह जानता था और यह भी जानता था कि खुदा हर छोटी-बड़ी बातपर हर समय निगाह रखता है। लेकिन उसकी भूख जीत गई, जैसा कि हम सबके साथ होता है, और उसने सूअरका मास खा लिया। वह जानता था कि यह पाप है और इसलिए लज्जाके मारे उसके गाल लाल हो गये। जिस समय उसने भोजन-गृहमे प्रवेश किया था, दिन बहुत ही अच्छा था और आकाश एकदम इतना स्वच्छ, जितना कि वह जूनके महीनेमें होता है। किन्तु जब वह भोजनगृहसे बाहर निकला, आकाशपर घनघोर बादल थे, बिजली चमक रही थी और उसकी कडकसे पृथ्वी कॉप रही थी। वह वापिस भोजनालयमें गया। उसका चेहरा दूध जैसा सफेद हो गया था। उसने उस भोजन-गृहके एक आदमीको बुलाया और कहा— " मेरे यार, क्या तुमने पहले कभी एक जरासे सूअरके मासके टुकड़ेके लिए इतना हो हल्ला सुना है ? "

जब तक हम ऐसे ईश्वरमे विश्वास करते रहेंगे और जब तक हम समझते रहेंगे कि आकाशके ऊपर किसी ऐसे अत्याचारीका निवास-स्थान है तब तक सभी पृथ्वी-पुत्र रेंगते रहेंगे और वे दिमागी कायर बने रहेंगे। हम सोचें और ईमानदारीसे अपने विचार प्रकट करें।

थोड़ी देरके लिये भी, यह मत समझो कि जो लोग मुझसे सहमत नही हे, मैं उन्हे बुरे आदमी मानता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ और प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ कि मानवताका एक बडा हिस्सा, एक विशाल एवं विराट् बहु-जन समुदाय पर्य्याप्त ईमानदार है। मेरा विश्वास है कि अधिकाश ईसाई अपने विश्वासोंका ही प्रचार करते हैं और अधिकांश पादरी संसारको बेहतर बनानेके लिये प्रयत्न-शील हैं। मैं उनकी अपेक्षा अच्छा होनेका दावा नही करता। यह केवल बुद्धिका प्रश्न है। यह प्रश्न सर्वप्रथम मानसिक-स्वतन्त्रताका प्रश्न है और उसके बाद एक ऐसा प्रश्न है, जिसका निर्णय मानवता-

की तर्ककी वेदिकापर ही हो सकता है । मैं उनकी अपेक्षा अच्छा होनेका दावा नहीं करता । शायद मै उनमेंसे बहुतोंकी अपेक्षा बुरा हूँ; किन्तु यह तो प्रश्न ही नहीं है । प्रश्न यह है कि बुरा-भला जैसा भी मैं हूँ, क्या मुझे सोचनेका अधिकार है ? दो कारणोंसे मै समझता हूँ; हाँ, मुझे अधिकार है ।

पहले तो मैं बिना सोचे रह नहीं सकता, दूसरे मै इसे पसन्द करता हूँ ।

सारा प्रश्न अधिकारका है । यदि मुझे अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार नहीं, तो फिर किसे है ?

"ओह" उनका कहना है, "हम तुम्हें सोचने देगे, हम तुम्हे जलायेगे नहीं ।"

"अच्छा, तुम मुझे क्यो नहीं जलाओगे ?"

"क्योंकि हम समझते हैं कि एक सज्जन आदमीका यह कर्तव्य है कि वह दूसरोंको सोचने और अपने विचार प्रकट करने दे ।"

"तब यदि तुम मुझे मेरे विचारोंके लिये दण्ड नहीं देते तो इसी लिये कि तुम समझते हो कि इससे तुम्हारी निन्दा होगी ?"

"हाँ ।"

"और तब भी तुम ऐसे परमात्माको पूजते हो जिसके बारेमें तुम्हारा कहना है कि वह मुझे अनन्त दण्ड देगा ?"

निःसदेह, अनन्त परमात्माको एक आदमी जितना न्यायी तो होना ही चाहिये । निश्चय ही, किसी परमात्माको यह अधिकार नहीं हो सकता कि वह अपने पुत्रोंको ईमानदार बननेके लिये दण्डित करे । उसे ढोंगियोंको स्वर्ग नहीं भेजना चाहिये और सच्चे आदमियोको अनन्त-पीड़ाका कष्ट नहीं देना चाहिये ।

दूसरा प्रश्न यह है कि यदि मैं सोच-विचार करता हूँ तो क्या मै परमात्माके दरबारमें अपराधी हूँ ? यदि परमात्मा यही चाहता था कि मै विचार न करूँ, तो उसने मुझे सोचनेकी शक्ति क्यो दी ? मेरा यह दृढ विश्वास है कि न केवल मुझे सोचनेका अधिकार ही नहीं है, बल्कि अपने ईमानदाराना विचारोंको

प्रकट करना भी मेरा कर्तव्य है। देवता-गण कुछ भी कहें, हमें अपने प्रति सच्चा होना चाहिये।

हमारे सम्मुख वह वस्तु है, वह पद्धति है, जिसे लोग ईसाई धर्म कहते हैं। हजारों लोग सोचते हैं कि मैं ऐसा बदमाश कैसे हो सकता हूँ कि मैं ईसाई धर्मपर आक्रमण करूँ?

इसमें कई अच्छी बातें भी हैं। मै कभी किसी ऐसी बातपर आक्रमण नहीं करता जिसके बारेमें मेरा विश्वास हो कि वह अच्छी है। मै कभी किसी ऐसी बातपर आक्रमण करनेसे नहीं डरता जिसके बारेमे मेरा विश्वास है कि वह बुरी है। मेरे सम्मुख वह वस्तु है, जिसे वे लोग ईसाई धर्म कहते हैं। मैं देखता हूँ कि जो जातियाँ जितनी ही अधिक मात्रामे धार्मिक रही हैं, वे उतनी ही अधिक मात्रामे उन धर्मोंके संस्थापकोंसे चिपटी रही हैं, अर्थात् उन्होंने बर्बरताकी ओर प्रगति की है। मै देखता हूँ कि यूरोपमें स्पेन, पुर्तगाल और इटली सबसे खराब हालतमे हैं। मै देखता हूँ कि जो जाति नास्तिकताके अधिकसे अधिक समीप है, वह सबसे अधिक सम्पन्न है, जैसे फ्रास।

इस लिये मैं कहता हूँ कि संपूर्ण मानसिक स्वातन्त्र्यमें किसी तरहका कोई खतरा नहीं। मैं अपनेमे ही देखता हूँ कि जो आदमी विचार करते हैं वे विचार न करनेवालो जितने अच्छे अवश्य हैं।

मैं कहता हूँ कि हमारे सामने वह चीज है, जिसे लोग ईसाई-धर्म कहते हैं। वे बताते हैं कि ईसाई-धर्मका आधार 'न्यू टेस्टामेंट' या 'नवीन-प्रवचन' है। 'नवीन-प्रवचन' किसने लिखा? मै नहीं जानता। कौन जानता है? कोई नहीं। हमें अनेक पाण्डु-लिपियाँ मिली हैं जिनमें नये-प्रवचनके कुछ हिस्से हैं। इनमेंसे अधिकाश पाण्डुलिपियोंमें पॉच या छः पुस्तिकायें नहीं हैं—। कुछमे कम है, कुछमें अधिक। इनमेसे कोई भी दो पाण्डुलिपियॉ ठीक एक जैसी नहीं हैं। वे सब यूनानी भाषामे लिखी हैं। जहाँ तक हम जानते हैं, ईसाके शिष्य केवल हिब्रू भाषा जानते थे। जहाँ तक हमारी जानकारी है, आजतक किसीने मूल हिब्रू पाण्डु-लिपि नहीं देखी। इसमे कोई सन्देह नहीं कि आपके नगरके पादरियोंने आपको यह

बातें हजारों बार कही होंगी और उन्हें एक बार फिर दोहरा देनेके लिये वे मेरे कृतज्ञ होंगे। ये हस्तलिखित ग्रन्थ बड़े यूनानी अक्षरोंमें लिखे हैं। १५५१ तक नया-प्रवचन परिच्छेदोंमे विभक्त न था। मूलमे पाण्डुलिपियो तथा कथानकोंमें किसीके हस्ताक्षर नहीं हैं। चिट्ठियाँ (Epistles) किसीके प्रति नहीं लिखी गई हैं, और उनपर एक ही आदमीके हस्ताक्षर हैं। तमाम पते, तमाम ऐसे चिह्न जो बताते हैं कि ये पत्र किसे लिखे गये और किस द्वारा लिखे गये प्रक्षित हैं, और जिस किसीने भी इस विषयका अध्ययन किया है वह इस बातसे सुपरिचित है।

यह भी माना गया है कि इन पाण्डुलिपियोका ठीक ठीक अनुवाद भी नहीं हुआ और आजकल एक परिषद् एक नया अनुवाद तैयार कर रही है। अब जब तक मै यह नया अनुवाद न देख लूँ तब तक मेरे लिये यह कह सकना कठिन है कि मै नये-प्रवचनको मानता हूँ अथवा नहीं।

तुम्हे एक बात और भी याद रखनी चाहिये। ईसाने नये-प्रवचनका एक भी शब्द नहीं लिखा—एक भी शब्द। एक कथा है कि एक बार ईसा झुका थाँ और उसने बालूपर कुछ लिखा था, किन्तु वह लेख सुरक्षित रखा नहीं गया। उसने कभी किसीको एक शब्द लिखनेको नहीं कहा। उसने कभी नहीं कहा—"मैथ्यू, इसे याद रखना। मार्क, इसे लिखना मत भूलो। ल्यूक, सावधानी रखो कि तुम्हारे कथानकमें यह बात अवश्य आ जाय। जान, उसे मत भूलो।" एक भी शब्द नहीं। मुझे सदैव यह लगता रहा है कि जो दूसरे संसारसे यहाँ आया और जो मानवताके लिये इतना महत्त्वपूर्ण सन्देश लाया, अपने हस्ताक्षरोंसे उसे प्रमाणित अवश्य कर देना चाहिये था। क्या यह आश्चर्य्यकी बात नहीं है कि ईसाने एक भी शब्द नहीं लिखा? क्या यह विचित्र बात नहीं है कि उसने अपना एक भी वचन सुरक्षित रखनेकी आज्ञा नहीं दी—वे वचन जिनपर संसारकी मुक्ति निर्भर रही है।

कुछ भी क्यो नहीं लिखा गया? मै तुम्हे बताता हूँ। मेरी समझके अनुसार वे लोग आशा करते थे कि संसार थोड़े ही समयमे समाप्त हो जायगा। उनका विश्वास था कि उसी पीढीके रहते संसार जन्म-पत्रीकी तरह गोल हो जायगा और पृथ्वी भयानक गर्मीसे पिघल जायगी। उनका विश्वास

था कि संसार नष्ट हो जायगा, फिर नया संसार बसेगा और तब संसारमें सन्त-पुरुषोंका राज्य होगा। उन्होंने यहाँ तक किया, जैसा हम आजकल चुनावके दिनोंमे करते हैं कि पहलेसे ही यह तय कर लिया कि कौन शिष्य किस पदपर रहेगा। यह प्रवचन जैसा इसका वर्तमान स्वरूप है, शिष्योंके मिट्टीमे मिल जानेके सैकड़ो वर्षबाद तक नहीं लिखा गया। बहुत-सी घटनायें मिथ्या-विश्वासकी जिह्वापर थी। वे विस्मृतिरूपी रद्दीकी टोकरीमें पडी थीं। शताब्दियो तक सिद्धान्त और कथायें इधरसे उधर उड़ती-फिरती रहीं और जब उन्हें लिखा गया तो कभी कभी लेखकने हाशियेपर अपने विचार लिखे और दूसरे लिपिकने उसे भी मूलमे शामिल कर दिया। और जब यह अधिकाशमें लिखा जा चुका और चर्चको कोई कठिनाई हुई और इस बातकी आवश्यकता हुई कि प्रवचनका कोई अनुच्छेद उसकी सहायता कर सकता है तो 'चर्च' की आशासे भी उसमे 'कुछ' मिला दिया गया। अब 'प्रवचन' मे कमसे कम एक सौ क्षेपकोको ढूँढ निकालनेसे सरल ससारमे दूसरा काम नहीं। और मैं आगे बढनेसे पहले कुछ ऐसे क्षेपक निकाल कर दिखाऊँगा।

लेकिन एक बात मै यहाँ निवेदन कर दूँ। आदमी ईसाके लिये मेरे मनमें अनन्त श्रद्धा है। जिस जगह यह आदमी मरा वह सचमुच पवित्र भूमि है। उस महान् और गम्भीर व्यक्तित्वकी मै अपने आँसुओंसे पूजा करता हूँ। वह अपने समयका सुधारक था। वह अपने समयका नास्तिक था। उसे ढोगि-योने मार डाला, उन ढोगियोने जो हर युगमें मानवकी स्वतन्त्रताको कुचलनेके लिये सब कुछ करते आये हैं। यदि मैं उसके समयमे होता, तो मैं उसका मित्र होता और यदि वह फिर इस संसारमे आये तो उसे मुझसे बढकर मित्र न मिलेगा।

यह है आदमी ईसाके लिये। परन्तु जिस ईसाको ईसाइयतने जन्म दिया है उसके लिये मेरी भावना भिन्न है। यदि वास्तवमें परमात्मा था तो वह जानता था कि मृत्यु कोई चीज़ नही है। वह जानता था कि जिसे हम मृत्यु कहते हैं वह तो अनन्त आनन्दके स्वर्णिम द्वारका उद्घाटन मात्र है। ऐसी मृत्युको गले लगानेमें जो वास्तवमें अनन्त जीवन थी कौन बहादुरी थी!

लेकिन जब एक आदमी, जब एक सोलह वर्षका गरीब लड़का, स्वर्गमें अपनी पताका ऊँची रखनेके लिये युद्ध-क्षेत्रमें प्रवेश करता है, जब वह इतना ही समझता है कि मृत्यु सर्वविनाशिनी है, जब वह समझता है कि उसपर अनन्त अन्धकार छा जानेवाला है, तो उसमें वस्तुतः वीरता है। उस आदमीके लिये जिसने तमसूके भीतरसे पुकार कर कहा, " हे परमात्मा ! तूने मुझे क्यों छोड दिया है ? " मेरे मनमें आदर है, प्रशंसा है और प्रेम है ! वास्तविक ईसाको ढँकनेवाले ईसाइयतके चिथड़ोंके पीछे मुझे एक सच्चा आदमी दिखाई देता है।

कुछ समय पहले मैंने यह निर्णय किया कि मैं पता लगाऊँ कि मुझे अपनेको बचानेके लिये क्या क्या करना चाहिये ? यदि मुझमें कोई आत्मा है तो मैं उसकी सुरक्षा चाहता हूँ। किसी भी मूल्यवान् वस्तुको गवाँना नहीं चाहता।

हजारों वर्ष तक संसार यह प्रश्न पूछता रहा है कि " हमें अपनेको बचानेके लिये क्या करना चाहिये ? "

दरिद्रतासे बचानेके लिए ? नहीं। अपराधसे बचानेके लिये ? नहीं। किन्तु हमे अपनेको बनानेवाले भगवान्के क्रोधसे बचानेके लिये क्या करना चाहिये ?

यदि परमात्माने हमें बनाया है तो वह हमे नष्ट नहीं करेगा। अनन्त-बुद्धि कभी कोई ऐसा काम नहीं करती जिसमे कुछ लाभ न हो। अनन्त शक्तिवाले परमात्माके सभी कामोंके अन्तमे कुछ लाभकी घोषणा होनी ही चाहिये। परमात्माको लाभ क्यों न हो ? परमात्मा किसी भी सामग्रीको व्यर्थ नष्ट क्यों करे ? वह लोगोंको रसातल भेजनेकी बजाय अपनी गलतियोंको सुधारता क्यों नहीं ? वेदिकाओंने झूलेनेमे झूलनेवाले बच्चों तकको नहीं बख्शा। अनन्त-दण्डके सिद्धान्तने ससारको हज़ार हज़ार आँसू रुलाया है। मै इस सिद्धान्तसे घृणा करता हूँ। मैं इसे माननेसे इनकार करता हूँ।

मैंने निर्णय किया कि मै पता लगाऊँ कि नवीन-प्रवचनके अनुसार अपनी आत्माको बचानेके लिये मुझे क्या करना चाहिये ? मैंने इसे पढ़ा।

मैंने मैथ्यु, मार्क, ल्यूक और जानके कथानकोंको पढा। मुझे पता लगा कि पादरी लोग स्वयं अपनी पुस्तकोंको नहीं समझते और उनकी इमारतका आधार पुस्तकोंके प्रक्षिप्त अंश हैं जो सर्वथा मिथ्या हैं। मै तुम्हे बताऊँगा कि मैं ऐसा क्यों सोचता हूँ।

१—मैथ्युका कथानक

पादरियोके अनुसार, पहला कथानक मैथ्युका लिखा हुआ है। वास्तविक बात यह है कि उसने कभी इसका एक शब्द भी नहीं लिखा—इसे देखा नहीं, इसके बारेमें सुना नहीं, और सम्भवतः आगे भी नहीं सुनेगा। लेकिन इस व्याख्यानके मतलबके लिये मै स्वीकार कर लेता हूँ कि उसने इसे लिखा। म मान लेता हूँ कि वह तीन वर्ष तक ईसाके साथ रहा। वह उसका दिन-रातका साथी था। वह उसके कष्टो और सफलताओमे हिस्सेदार था। उसने एकान्त झील और ऊजड पहाडियोंमें, खुदाके घर और बाज़ारमे कहे गये शब्दोंको सुना। वह उसका दिल पहचानता था और उसके विचारों तथा उद्देश्योंसे सुपरिचित था।

अब हम देखे कि अपने बचावके लिये मैथ्यु हमे क्या करनेको कहता है और मै यह मान कर चलता हूँ कि यदि यह सत्य है तो मैथ्युका कथन उतना ही प्रामाणिक है जितना संसारके किसी भी बड़ेसे बड़े पादरीका।

पहली चीज़ जो बचावके विषयमे मैथ्युमें मिलती है, वह उसके पाँचवे परिच्छेदमें है जो सामान्यतया 'पर्वतके उपदेश' नामसे ज्ञात है। वह इस प्रकार है:—

"अत्यन्त विनम्र लोग भाग्यवान् हैं, क्यो कि स्वर्गका साम्राज्य उन्हींका है।" बहुत अच्छा। "दया करनेवाले भाग्यवान् हैं, क्यो कि उनपर दया की जायगी।" बहुत अच्छा। चाहे वे किसी सम्प्रदाय-विशेषके हो चाहे न हो। चाहे वे बाइबलमें विश्वास करे चाहे न करे।

"हृदयके पवित्र लोग भाग्यवान् हैं, क्यो कि वे ईश्वरको देख सकेगे। शान्ति करानेवाले लोग भाग्यवान् हैं, क्यों कि वे ईश्वरके पुत्र कहलायेंगे। धर्मके लिये कष्ट सहन करनेवाले लोग भाग्यवान् हैं, क्यो कि स्वर्गका राज्य उन्हींका है।" बहुत अच्छा।

इसी प्रवचनमें कहा गया है—" यह मत सोचो कि मैं धर्म-नियमों अथवा पैगम्बरोंको मिटाने आया हूँ। मैं नष्ट करने नहीं आया, मैं तो पूर्ति करने आया हूँ। " और आगे उस असाधारण भाषाका उपयोग है, जो आज भी वैसी ही लागू है जैसी कि उस समय थी—" मैं तुम्हें कहता हूँ कि यदि तुम्हारा सदाचार धर्मोपदेष्टाओंके सदाचारसे बढ़कर नहीं होगा तो तुम किसी भी तरह स्वर्गके साम्राज्यमे प्रवेश न पा सकोगे।" बहुत अच्छा।

छठे परिच्छेदका निम्नलिखित अंश 'भगवानकी प्रार्थना' के ठीक बादमें है—

" यदि तू आदमियोंके अपराधोंको क्षमा करेगा, तो तेरा स्वर्गीय पिता भी तेरे अपराधोको क्षमा करेगा; यदि तू आदमियोंके अपराध क्षमा नहीं करेगा, तो तेरा स्वर्गीय पिता भी तेरे अपराध क्षमा नहीं करेगा।"

मै यह शर्त स्वीकार करता हूँ। एक प्रस्ताव है, मैं मानता हूँ। यदि तुम अपने विरुद्ध किये गये आदमियोंके अपराधोंको क्षमा करते हो, तो ईश्वर अपने विरुद्ध किये गये तुम्हारे अपराधोको क्षमा करेगा। मैं यह शर्त स्वीकार करता हूँ। मै कभी किसी ईश्वरसे यह आशा नहीं करूँगा कि वह मुझसे उससे अच्छा बरताव करे जैसा मै अपने मानव-बन्धुके साथ करता हूँ। इसमें बात साफ साफ है। सीधा-सादा लेन-देन है। यदि तुम दूसरोंको क्षमा करोगे तो ईश्वर तुम्हे क्षमा करेगा। इसमें यह कहीं नहीं कहा गया कि तुम्हे पुरातन-प्रवचनमे विश्वास करना चाहिये, तुम्हे दीक्षित होना चाहिये, तुम्हे चर्चमे जाना चाहिये, तुम्हे माला फेरनी चाहिये, या प्रार्थना करनी चाहिये, या तुम्हे साधु अथवा साध्वी बन जाना चाहिये, और तुम्हे धार्मिक प्रवचन सुनाने या सुनने चाहिये और तुम्हे गिरजे बनाना चाहिये अथवा उन्हे भरना चाहिये। एक भी शब्द न खानेके बारेमे है और न व्रत रखनेके बारेमें, न अविश्वास करनेके बारेमे हैं और न विश्वास करनेके बारेमें। निर्देश इसमें केवल इतना ही है कि यदि तुम दूसरोंको क्षमा करोगे तो ईश्वर तुम्हे क्षमा कर देगा। यह होना ही चाहिये। कोई भी भगवान् एक क्षमा-शील आदमीको रसातल नहीं भेज सकता। थोड़ी देरके लिये मान लो कि ईश्वर एक क्षमाशील आदमीको अनन्त आगमें झोंक देता

है और वह आदमी इतना भला और इतना महान् है कि वह ईश्वरको क्षमा कर देता है तो उस समय ईश्वरकी क्या दशा होगी ?

लेकिन एक बात मुझे एकदम स्पष्ट कर देनी चाहिये—पूर्ण-रूपसे स्पष्ट। उदाहरणके लिये मुझे प्रैसब्रिटेरियनिज्मसे घृणा है, किन्तु मैं सैकड़ो बहुत अच्छे प्रैसब्रिटेरियन लोगोको जानता हूँ। मेरी बातको समझिए। मुझे मैथाडिज्म-से घृणा है, किन्तु मै सैकडो भले मैथॉडिस्टोको जानता हूँ। मुझे कैथालिसिज्म-से घृणा है, किन्तु कैथालिक लोगोसे प्रेम है। मुझे पागलपनसे घृणा है, किन्तु पागलोसे नहीं।

मै आदमियोके विरुद्ध नहीं लड़ता। मेरी व्यक्तियोसे लड़ाई नहीं है। मेरी लड़ाई कुछ सिद्धान्तोसे है जिन्हे मै गलत समझता हूँ। लेकिन मै साथ ही हर आदमीको वही अधिकार देता हूँ जो मै अपने लिये चाहता हूँ।

अगली बात जो मुझे मिलती है, वह सातवे परिच्छेदके दूसरे अनुच्छेदमे—

"जिस तरहसे तुम दूसरोकी समालोचना करोगे, उसी तरहसे तुम्हारी समालोचना होगी; जिस तरहसे तुम दूसरोकी नाप-तोल करोगे, उसी तरहसे तुम्हारी नाप-तोल होगी।" बहुत अच्छा। यह मेरे प्रतिकूल नहीं है।

और मैथ्युके बारहवें परिच्छेदमें हैं—"जो भी कोई मेरे स्वर्गीय पिताकी इच्छाको पूर्ण करेगा, वही मेरा भाई, बहन और माँ है। क्योकि मानव-पुत्र अपने पिताकी शानमे देवताओंके साथ आयेगा और हर किसीको पुरस्कृत करेगा उसके...अनुसार।" क्या सम्प्रदायके अनुसार ? नहीं। उसकी मान्यताके अनुसार ? नही। वह हर आदमीको उसके कर्मोके अनुसार पुरस्कृत करेगा।" बहुत अच्छा। मैं इस सिद्धान्तको स्वीकार करता हूँ।

और अठारहवे परिच्छेदमें हैं:—

और ईसाने एक छोटे बच्चेको अपने पास बुलाया और (लोगोके) बीचमे खड़ा किया और कहा :—"मै तुम्हे निश्चयसे कहता हूँ कि यदि तुम अपने आपमे परिवर्तन लाकर छोटे बच्चे नहीं बन जाते, तो कभी भी स्वर्गके साम्राज्यमे प्रवेश नहीं पा सकते।" मुझे इसमें कुछ आश्चर्य

नहीं है कि यदि धर्मध्वजियोसे घिरे हुए ईसाने इस प्रकार प्रेमपूर्वक बच्चोंकी ओर ध्यान दिया।

उन्नीसवे परिच्छेदमे है :—

" और देखो, कोई आया, और उसने कहा : अच्छे स्वामी, मै क्या अच्छी बात करू कि मुझे अनन्त जीवन मिले ? और उसने उसे कहा : ' तू मुझे अच्छा क्यों कहता है ? ईश्वरके अतिरिक्त और कोई अच्छा नहीं। किन्तु यदि तू अनन्त जीवनमे प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओंका पालन कर। ' उसने उससे पूछा :—" कौन-सी ? "

अब यह एक सीधा प्रश्न है। ईश्वरका एक बच्चा ईश्वरसे पूछ रहा है कि अनन्त जीवनकी प्राप्तिके लिये उसे क्या करना चाहिये ? और ईश्वरने उससे कहाः—" (सदाचारकी) आज्ञाओको मानो। " और बचेने ईश्वरसे पूछा.—" कौन-सी ? " अब यदि सर्वशक्तिवान् ईश्वरको कभी कोई ऐसा अवसर मिला है जब वह एक जिज्ञासुको इस विषयमें आवश्यक जानकारी दे सके तो इससे अच्छा अवसर नहीं मिल सकता था। उसने उससे पूछा·—" कौन-सी ? " ईसाने कहाः—' तुम्हे हत्या नहीं करनी होगी; तुम्हें व्यभिचार नहीं करना होगा, तुम्हें चोरी नहीं करनी होगी, तुम्हे झूठी गवाही नहीं देनी होगी, माता-पिताका सम्मान करना होगा; और तुम्हे अपने पडौसीको अपने जैसा प्रेम करना होगा। "

उसने यह नहीं कहा कि तुम्हे मुझमे विश्वास करना चाहिए, क्योंकि अकेला मै ही परमात्माका पुत्र हूँ। उसने यह नहीं कहा कि तुम्हे फिर पैदा होना होगा। उसने यह नहीं कहा कि तुम्हे बाइबलमे विश्वास करना चाहिये। उसने यह नही कहा कि तुम्हें रविवारके दिनको पवित्र मानना चाहिये। उसने केवल इतना ही कहाः—" तुम्हे हत्या नहीं करनी होगी, तुम्हे व्यभिचार नही करना होगा, तुम्हे चोरी नहीं करनी होगी, तुम्हे झूठी गवाही नहीं देनी होगी, माता-पिताका सम्मान करना होगा; और अपने पडौसीको अपने जैसा समझना होगा। " और तब उस तरुणने, जो मै समझता हूँ गलतीपर था, उससे कहाः—" मै इन सब बातोका पालन करता आ रहा हूँ। "

अब चर्चको क्या अधिकार है कि वह बचावकी बातोमे कुछ और बातें भी शामिल कर दे ? हम यह क्यो मानें कि ईसाने उस तरुणको सभी आवश्यक बातें नहीं बताई ? क्या यह सम्भव है कि उसने कोई महत्त्वपूर्ण बात केवल इस लिये छोड़ दी कि वह उसे गलत रास्तेपर डालना चाहता था ?

पुराने समयमे जब पादरियोंको पैसेकी तगी होने लगी तो उन्होने दरिद्रताका बखान करनेवाली कुछ पंक्तियॉ मिला दी । इस प्रकार उन्होने इस तरुणसे पुछवाया:—"अभी मुझमें क्या कमी है ?" और ईसाने उसे उत्तर दिया, "यदि तू पूर्णता प्राप्त करना चाहता है तो जो कुछ तेरे पास है उसे बेच दे और गरीबोंको दे दे। तुझे स्वर्गमे खज़ाने मिलेंगे।"

पादरी लोग सदासे पृथ्वीके वास्तविक धनके बदलेमे स्वर्गके खजाने देनेके लिए तैयार रहे हैं। और जब अगली पंक्तियॉ लिखी गई तब तो ईसाइयतका दिवाला ही निकल गया होगा।—"और मैं तुम्हें फिर कहता हूँ कि धनी आदमीके लिए ईश्वरके साम्राज्यमें प्रवेश करनेकी अपेक्षा एक ऊँटका सूईके सूराखमेंसे निकल जाना आसान है।" क्या तुमने कभी एक भी ऐसा धनी शिष्य जाना है जिसने इन पंक्तियोंके कारण अपने आपको निर्धन बना लिया हो ?

आगे कुछ और पक्तियॉ हैं जिन्हें मै प्रक्षिप्त मानता हूँ ! "जो कोई मेरे नामपर घर, अथवा भाई, अथवा बहिन, अथवा पिता, अथवा माता, अथवा स्त्री, अथवा बच्चे, अथवा जमीन छोड़ देगा उसे ये सब चीजें सौगुनी होकर मिलेगी और वह अनन्त जीवनका उत्तराधिकारी होगा।"

क्राइस्टने ऐसा कभी नही कहा, कभी नहीं कि "जो कोई अपने माता पिताको छोड देगा..."

जिस: तरुणने उससे पूछा कि मै अनन्त जीवनका उत्तराधिकारी कैसे बनूॅ, उसे उसने दूसरी बातोके साथ बताया—अपने माता पिताका सम्मान करो। और हम दूसरा पन्ना पलटते हैं तो वह कहता है—"यदि तुम अपने माता पिताको छोड़ दोगे तो तुम्हे अनन्त जीवन मिलेगा।" नही, यह नहीं

चलेगा। यदि तुम अपनी स्त्री, अपने छोटे बच्चे अथवा अपनी जमीन छोड़ दोगे—यहाँ घर और बहुत-सी दूसरी चीजोंको बीवी बच्चोंके साथ समान दर्जा दिया जा रहा है! जरा इसका विचार करो! मैं यह शर्त कभी नहीं स्वीकार कर सकता। किसी ईश्वरके वचनके भरोसे जिसे मैं प्यार करता हूँ उसे कभी नही छोड़ सकता।

ईश्वरसे प्रेम करनेकी बजाय कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है अपनी स्त्रीसे प्रेम करना। मैं तुम्हे कारण बताता हूँ। तुम ईश्वरकी मदद नहीं कर सकते, किंतु स्त्रीकी मदद कर सकते हो। उसके जीवनको सतत आनन्दकी सुगंधिसे भर सकते हो। ईसा मसीहसे प्रेम करनेकी अपेक्षा अपने बच्चोंसे प्रेम करना कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्यों? यदि वह ईश्वर है, तो तुम उसकी मदद नहीं कर सकते, किन्तु बच्चेके झूलनेके समयसे लेकर जब तक तुम उसके हाथोंमें मर न जाओ तब तक उसके हर कदमपर प्रसन्नताका एक छोटा फूल उगा सकते हो। आज मैं आपको बताऊँ कि एक मंदिर बनानेकी अपेक्षा एक घर बनाना अधिक महत्त्वपूर्ण है। तारोंके नीचे पवित्रतम मंदिर वह घर है जिसे प्रेमने बसाया है; और समस्त संसारमें पवित्रतम वेदिका घरका चूल्हा है जिसके इर्द गिर्द माता पिता और बालक इकट्ठे होते हैं।

एक समय था जब लोग इन भयानक पंक्तियोकी आज्ञा माननेमे विश्वास करते थे। एक समय था जब वे माता-पिता तथा स्त्री-बच्चोको वास्तवमे छोड़ कर चले गये। संत ऑगस्टाइनने भक्तोंको उपदेश दिया है—जगलकी ओर भागो। यदि तुम्हारी स्त्री तुम्हारे गलेमे हाथ डाले, तो उसके हाथ झटक दो। वह मारका फदा है। यदि तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे बच्चोंको तुम्हारे रास्तेमे लिटा दे, तो तुम उनके ऊपरसे चले जाओ। यदि तुम्हारे बच्चे तुम्हारे पीछा करके और अश्रुमुख होकर तुमसे प्रार्थना करे कि घर लौट चलो, तो उनकी बात न सुनो। यह भी मारका फंदा है। बियाबानमें भाग जाओ और अपनी आत्माको बचा लो।

क्या ऐसी आत्मा बचानेके लायक है? मैं जब तक जीता हूँ तब तक मैं उनका साथ देनेका इरादा रखता हूँ जिन्हे मै प्यार करता हूँ।

भगवानके अभिशापसे बचनेकी एक और शर्त है। यह पच्चीसवे पीरच्छेदमें है:—“ तब राजा अपनी दाईं ओर खड़े हुए लोगोको कहेगा, आओ, मेरे पिताके भाग्यवानो, अपने लिये संसारके आधारपर तैय्यार किये गये साम्राज्यका उत्तराधिकार सँभालो। जब मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना दिया; जब मै प्यासा था, तुमने मुझे पेय दिया; मै अपरिचित (मुसाफिर) था, तुमने मुझे (घरमें) अन्दर लिया; नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाये; बीमार था, तुम मुझे देखने आये; और जब मैं जेलमें था, तब भी तुम मेरे पास आये।” बहुत अच्छा।

मैं आज आपको कहता हूँ कि ईश्वर उस आदमीको कभी अनन्त-काल तक प्यासा नहीं रखेगा जो अपने पड़ौसीको ठण्डा पानी पिलाता है। ईश्वर उस आदमीको कभी अनन्त-काल तक नग्न रहनेका दुख नहीं देगा जिसने अपने मानव-बन्धुओको कपड़े पहनाये हैं।

एक जहाज डूब रहा है। एक वीर नाविक स्वयं एक ओर खड़ा हो जाता है और एक ऐसी स्त्रीको जिसे उसने कभी नहीं देखा नौकामे अपना स्थान लेने देता है। वह वहीं खडा रहता है—समुद्रकी तरह ही महान् और गम्भीर और वह समुद्रमे नीचे चला जाता है। क्या तुम मुझे यह बताना चाहते हो कि कोई ऐसा ईश्वर है जो अनन्त-जीवनके तटपर खड़ी हुई नौकामें उस आदमीको न चढने देगा? क्या तुम मुझे यह कहना चाहते हो कि ईश्वर दयालुके प्रति निर्दय और क्षमा-वान्के प्रति क्षमाहीन हो सकता है? मै इसे अस्वीकार करता हूँ और ईश्वरको बदनाम करनेवाले धर्म-ध्वजियोंसे उसके यशकी रक्षा करना चाहता हूँ।

भगवानके अभिशापसे सुरक्षित रहनेके सम्बन्धमें जो कुछ मैथ्युमें है, एक प्रकारसे मैंने वह सब पढ दिया है। जो कुछ वहाँ है, इतना ही है। किसी भी बातमे विश्वास करनेके सम्बन्धमें एक भी शब्द नहीं। यह कर्मका उपदेश है, दानका उपदेश है, आत्म-परित्यागका उपदेश है, और यदि केवल इन्हीं बातोंका उपदेश दिया जाता तो धर्मके नामपर रक्तकी एक भी बूँद न बहती।

२—मार्कका कथानक

अब हम देखें कि मार्कके मतमे आदमीको अपनी आत्माकी सुरक्षाके लिये क्या क्या करना आवश्यक था। चौथे परिच्छेदमें जब ईसाने समुद्रतटवासी जनताके लिये बोनेवालेकी उपमा कह सुनाई, तब उसके शिष्योंने अकेलेमे इस उपमाका अर्थ पूछा। ईसाने उत्तर दिया—

"तुम्हारे लिये भगवान्के साम्राज्यका रहस्य है, किन्तु जो बाह्य हैं, उन्हे ये सब बाते उपमाओंके द्वारा कही जाती हैं।"

"ताकि वे देखते हुए केवल देखते रहें, जानें नहीं, सुनते हुए केवल सुनते रहे, समझें नहीं। अन्यथा ऐसा न हो कि किसी समय वे दीक्षित हो जायँ और उनके पाप क्षमा हो जायँ।"

यह समझना थोडा कठिन है कि ईसा ऐसे लोगोको उपदेश ही क्यो देना चाहता था जिनको वह चाहता था कि उसका अर्थ ही न समझ सकें। यह भी स्पष्ट नहीं है कि उसे उनके दीक्षित होनेपर क्या आपत्ति थी। मै सोचता हूँ शायद यह कोई रहस्य है, जिसमें हमें विना समझे ही विश्वास कर लेना चाहिये।

उक्त अपवाद और एक और बातके अतिरिक्त जिसका उल्लेख मै करने जा रहा हूँ, शेष बातोमे मार्क और मैथ्युका प्रायः एक मत था। मार्क मानता है कि ईश्वर दयालुओके प्रति दयावान् होगा, मेहरबानोंके प्रति मेहरबान होगा, करुणार्द्रोंके प्रीत करुणार्द्र होगा और प्रेम करनेवालोको प्रेम करेगा; मार्क मैथ्युके धर्मको स्थापित करता है। किन्तु जब हम सोलहवें परिच्छेदके चौदहवें तथा पंद्रहवे अनुच्छेदपर आते हैं तब मामला बदल जाता है। यहाँ हमें एक ऐसा प्रक्षिप्त अंश मिलता है जिसे ढोगने ही बाइबलमे घुसेड़ा है, जो उन पादरियोकी जालसाज़ी है जो संसार-भरका अधिकार अपने ही रक्त-रंजित हाथोंमे चाहते हैं। मै तुम्हे यह पढकर सुनाता हूँ। यह बाइबलमें सबसे बदनाम अनुच्छेद है। ईसाने इसे कभी नही कहा। किसी ऐसे आदमीने, जो पागल नहीं था, कभी नहीं कहा—

" और उसने उन्हें (अर्थात् अपने शिष्योसे) कहा, " संसारमे जाओ और हर प्राणीको उपदेश दो। जो विश्वास करेगा और दीक्षा लेगा वह बच जायेगा, लेकिन जो विश्वास नहीं करेगा वह रसातल जायगा। "

उपर्युक्त पंक्तियॉ इसी लिये लिखी गई थीं कि भय ढोंगको दान दिया करे। अब मै आपको यह बताना चाहता हूँ कि यह प्रक्षिप्त है। कैसे? पहली बात तो यह है कि मैथ्युके कथानकमे विश्वासके सम्बन्धमे एक शब्द नही पाया जाता। दूसरी बात यह है कि मार्कके कथानकमे भी इन पंक्तियोके पूर्व कहीं एक भी शब्द विश्वासके बारेमे नहीं। और ये पंक्तियाँ कब कही बताई जाती हैं? मार्कके मतानुसार यह ईसाकी अन्तिम बातचीत है, उस समयके ठीक पहले, जब वर्णनके अनुसार, उन लोगोकी ऑखोंके सामने वे सदेह स्वर्ग चले गये। यदि संसारमे कभी कोई महत्त्वपूर्ण घटना घटी थी, तो वह यह थी। यदि कभी कोई ऐसी बातचीत हुई है जिसे लोग स्वाभाविक तौरपर याद रखे, तो वह ईश्वरके साथ अन्तिम बातचीत थी, जिसके बाद वह ऑखोके सामने आकाशमे उड़ गया और अनन्त सिहासनपर जा विराजमान हुआ। इस नवीन-प्रवचनमे हमे ईसा और उसके शिष्योके पॉच वर्णन मिलते हैं। मैथ्युने भी इसका वर्णन किया है, लेकिन तो भी मैथ्यु यह नहीं कहता—" जो विश्वास करेगा और दीक्षा लेगा वह बच जायगा, लेकिन जो विश्वास नही करेगा वह रसातल जायगा। " यदि ईसाने ये शब्द कहे, तो उसके मुँहसे निकलनेवाले अत्यधिक महत्त्वपूर्ण शब्द थे। मैथ्युने या तो उन्हे सुना नहीं, या विश्वास नहीं किया, अथवा वह भूल ही गया।

अब मै ल्यूकके कथानकको लेता हूँ। उसने भी इस अन्तिम बातचीतका वर्णन किया है। वह भी इस विषयमे एक शब्द नहीं कहता। ल्यूक यह ढोंग नहीं करता कि ईसाने यह कहा कि जो विश्वास नहीं करेगा वह रसातल जायगा। ल्यूकने निश्चयसे इसे नहीं सुना। शायद वह भूल गया। शायद उसने इसे लिखने योग्य नहीं समझा। अब यदि ईसाने कभी ऐसा कहा तो उसके कथनोमे यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अब मै जॉनके कथानकको देखता हूँ। उसमे अन्तिम बातचीतका

वर्णन है; किन्तु विश्वास अथवा अविश्वासके बारेमे और रसातल भेजनेके बारेमे एक शब्द भी नहीं। शायद जॉन सुन ही न रहा हो।

इस सबसे स्पष्ट होता है कि ये पक्तियॉ प्रक्षिप्त हैं। मेरे पास दूसरे कारण क्या हैं? इन पक्तियोमे विचारको जरा-सा भी स्थान नहीं है। क्यों? कोई भी आदमी अपने विश्वासको अपने काबूमे नहीं रख सकता। तुम पक्ष और विपक्षमे गवाही सुनते हो, तुम्हारा अन्दरवाला बताता है कि कौन-सा पक्ष ठीक है और कौन-सा गलत। तुम जैसा चाहो वैसा विश्वास नहीं कर सकते। तुम्हे वैसा ही विश्वास करना होगा जैसा तुम्हें करना चाहिये। वह ऐसा भी कह सकता था—"संसारमें जाओ और प्रचार करो। लाल बालोंवाला बचेगा और जिसके बाल लाल नहीं, वह रसातलको जाएगा।"

एक और भी कारण है। जिस आदमीने ये पक्तियाँ घुसेडी, मैं उसके प्रति बहुत कृतज्ञ हूँ। क्योंकि उसने दो और भी प्रक्षिप्त अंश दाखिल किये—दो और। सुनिये—

"जो विश्वास करेंगे, उनके ये चिह्न होंगे।"

"मेरा नाम लेकर वे भूत-प्रेतोको भगा सकेंगे; वे नई वाणी बोलेंगे; वे विषैले सॉपोको धारण करेंगे; और यदि वे कोई मरणान्तक विषैली चीज पी लेंगे, तो उससे उन्हे किसी तरहकी हानि नहीं होगी। वे रोगीका स्पर्श करेंगे और वह अच्छा हो जायगा।"

अपने किसी विश्वासीको लाओ और वह भूत-प्रेतोंको भगा कर दिखाये। मैं किसी बडे भूतको भगानेकी बात नहीं कहता। किसी छोटेसे छोटेको ही भगाकर दिखाये। वह सर्पोको धारण करे। "यदि वे कोई मरणान्तक विषैली चीज़ पी लेंगे तो इससे उन्हे किसी तरहकी हानि नहीं होगी।" मै विश्वासीको एक बूंद-भर मिला कर देता हूँ और यदि इससे उसे किसी तरहकी हानि नहीं हुई, तो मैं किसी चर्चमें शामिल हो जाऊँगा। ओह! लेकिन, उनका कहना है कि ये बाते ईसाके शिष्योके समयमे ही थीं! "सारे संसारमें जाओ और प्रचार करो। जो विश्वास करेगा और दीक्षित होगा, बच जायगा। विश्वास करनेवालोके ये चिह्न होंगे।"

कब तक? मै सोचता हूँ कि कमसे कम उस समय तक जब तक वे सारे

संसारमे चले जायॅ। निश्चयसे जब तक सारे संसारमे न पहुँचा जाय तब तक वे चिह्न रहने चाहिये। यह सब होनेपर भी यदि ईसाने सचमुच वह घोषणा की, तो वह यह जानता रहा होगा कि उस समय आधा संसार अज्ञात था और उसे मरे १४५२ वर्ष हो गये होंगे जब उसके शिष्योंको यह पता लगेगा कि कोई और भी महाद्वीप है। यदि पुराने-संसारके लिये यह आवश्यक था कि 'चिह्न' हो तो नये संसारके लिये भी चिह्नोकी अपेक्षा थी। चिह्नोकी अपेक्षा अविश्वासियोंको विश्वास दिलानेको थी। आज भी दुनियामे उतने ही अविश्वासी हें जितने कभी थे। आज भी चिह्नोंकी उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कभी थी। मै भी चाहूँगा कि कुछ चिह्न मेरे पास हो।

इस भयानक घोषणाने—"जो विश्वास करेगा और दीक्षित होगा बच जायगा; किन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह रसातलको जायगा।" इन पंक्तियोने—ससारको कष्ट और अपराधोसे भर दिया। इन पंक्तियोका प्रत्येक अक्षर तलवार और वेडी सिद्ध हुआ। इन पक्तियोका प्रत्येक शब्द कारागार और ज़ंजीर बना। इन पक्तियोके कारण शताब्दियों तक अत्याचारकी तलवार निरपराधियोंके रक्तसे भीगी रही। मै इन्हे अस्वीकार करता हूँ। ये निन्दनीय हैं। ईसाने इन्हे कभी नहीं कहा।

३—ल्यूकका कथानक

यह कहना पर्याप्त है कि अधिकाशमें ल्यूक मैथ्युसे सहमत है।

"जैसा तुम्हारा पिता (ईश्वर) करुणामय है, तुम भी करुणामय बनो।" बहुत अच्छा।

"दूसरोंकी आलोचना न करो, तुम्हारी आलोचना नहीं होगी। दूसरोकी निन्दा न करो, तुम्हारी निन्दा नहीं होगी। दूसरोंको क्षमा करो, तुम भी क्षमा किये जाओगे।" बहुत अच्छा।

"दो, और तुम्हें मिलेगा। अच्छे मापसे, दबाकर, हिलाकर और बाहर गिरता हुआ।" बहुत अच्छा। मुझे यह पसन्द है।

"जिस मापसे तुम दूसरोको देते हो उसीसे तुम्हे दिया जायगा।"

वह मुख्य बातोंमे मार्कसे सहमत है। और मैथ्युसे सहमत है। अन्तमे मैं उन्नीसवें परिच्छेदपर आता हूँ—

जैचियस् खड़ा हुआ और उसने भगवान्से कहा—स्वामी देखें, मैं अपनी आधी चीजें गरीबोंको दे रहा हूँ। और यदि मैंने किसी आदमी-पर कोई झूठा दोष लगाकर उससे कोई चीज़ ले ली है, तो मैं उसे चौगुनी देता हूँ। और ईसाने उससे कहा, आज इस घरमें मुक्तिने प्रवेश किया है।

यह बढ़िया सिद्धान्त है। उसने जैचियस्से यह नहीं पूछा कि वह क्या विश्वास करता है? उसने यह भी नहीं पूछा, क्या तुम बाहुबलमें विश्वास करते हो? क्या तुम पाँच बातें स्वीकार करते हो? क्या तुम कभी शिक्षित हुए हो? कभी अभिषिक्त हुए हो? कभी डुबकी लगाई है? मैं अपनी आधी चीज़ें गरीबोंको दे रहा हूँ और यदि मैंने किसी आदमीपर कोई झूठा दोष लगाकर उससे कोई चीज़ ले ली हो, तो मैं उसे चौगुनी देता हूँ। बहुत अच्छा।

मैं ल्यूकमें यह भी पढ़ता हूँ कि जिस समय ईसाको फाँसी दी जा रही थी, उस समय उसने अपने हत्यारोंको क्षमा कर दिया। यही ईसाकी क्षमाकी पराकाष्ठा कही जाती है। उसने उन आदमियोंको क्षमा कर दिया, जिन्होंने उसके हाथ और पैरोंमें मेखें ठोकीं, जिन्होंने उसकी पसलियोंमें भाला घोंप दिया। उसने उन सबको मुक्त हृदयसे क्षमा कर दिया। यह सब होने पर भी, उन्नीसवीं सदीकी कट्टरपंथी ईसाइयतका कहना है कि ईसा किसी भी सज्जनको अपने विचारोंके प्रकट करनेके कारण अनन्तकाल तक नरककी आगमें झोंक देगा! इतना अपर्य्याप्त है। ल्यूकमें उन दो चोरोंकी भी चर्चा है, जिन्हें उसी समय फाँसी दी गई थी। दूसरे कथानकोंमें भी उनकी चर्चा है। एकका कहना है कि दोनोंने ईसाको भला-बुरा कहा। दूसरेमें इसके बारेमें कुछ नहीं। ल्यूकमें लिखा है कि एक चोरने तो उसे गालियाँ दीं, लेकिन दूसरे चोरने उसकी ओर देखा और दया की। ईसाने उस चोरसे कहा—"आज तू स्वर्गमें मेरा साथी होगा।"

उसने ऐसा क्यों कहा? क्योंकि चोरने उसपर दया की। ईश्वर छोटेसे छोटे दयाके फूलको भी अपने पैरों तले नहीं कुचल सकता, जिससे मानव-हृदय सुगंधित होता है।

यह चोर कौन था ? यह किस सम्प्रदायका था ? मैं नहीं जानता। उसके चोर होनेकी बातसे इस प्रश्नपर कोई प्रकाश नहीं पडता। वह कौन था ? उसका क्या विश्वास था ? मैं नहीं जानता। क्या वह पुराने-प्रवचनमे विश्वास करता था ? चमत्कारोंमें विश्वास करता था ? मै नहीं जानता। क्या वह यह विश्वास करता था कि ईसा ईश्वर था ? मैं नहीं जानता। तो उसे यह वचन क्यों दिया गया कि वह स्वर्गमें ईसासे मिलेगा ? केवल इस लिये कि उसने फॉसीपर झूलनेवाली निरपराधितापर दया दिखाई थी।

ईश्वर किसी ऐसे आदमीको जो दूसरोपर दया दिखा सकता है, रसातल नहीं भेज सकता।

४—जॉनका कथानक

दूसरे कथानकोमे लिखा है कि ईश्वर दयालुओंके प्रति दया दिखायगा, क्षमावानोंके प्रति क्षमा दिखायगा, मेहरबानोके प्रति मेहरबान होगा, प्रेम करनेवालोको प्रेम करेगा, न्याय करनेवालोंके साथ न्याय करेगा और भलो-पर कृपा करेगा।

अब हम जॉनको लेते हैं। इसमे हमें दूसरा ही सिद्धान्त मिलता है। मुझे आप यह कहनेकी आज्ञा दीजिये कि जॉन दूसरोके बहुत बाद तक नहीं लिखा गया था। जॉन अधिकतया पादरियोकी रचना है।

ईसाने उत्तर दिया और कहा : "निश्चित रूपमे मै तुम्हे कहता हूँ कि जब तक आदमीका दुबारा जन्म नहीं होता, वह ईश्वरीय साम्राज्य-को नहीं देख सकता।"

उसने यह बात मैथ्यूसे क्यो नहीं कही ? उसने यह ल्यूकसे क्यों नहीं कही ? मार्कसे क्यों नहीं कही ? उन्होंने इसे कभी सुना नही, अथवा भूल गये अथवा विश्वास नहीं किया ?

"जो आदमी पानी और (प्रेत-) आत्मासे उत्पन्न हुआ है, एकमात्र वह ही ईश्वरके साम्राज्यमें प्रवेश पा सकता है।" क्यों ?

"जो माससे पैदा हुआ है, वह मास है, जो आत्मासे पैदा हुआ है वह आत्मा है। इस बातपर आश्चर्य्य मत करो जो मैने तुम्हे कहा है कि तुम्हें

फिर जन्म लेना होगा।" "जो मांससे पैदा हुआ है, वह मांस है, जो आत्मासे पैदा हुआ है, वह आत्मा है," और यह भी क्यों नहीं कहा कि जो पानीसे पैदा हुआ है, वह पानी है?

"इस बातपर आश्चर्य मत करो जो मैंने तुम्हें कहा कि 'तुम्हें फिर पैदा होना होगा।'" आगे कारण दिया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि जब तक मैंने इसे नहीं पढा मै कारण नहीं समझ सका। जब तुम सुनोगे तब तुम इसे ठीक उसी तरह समझोगे जैसे मैंने समझा है। कारण इस प्रकार है:— "जहाँ हवा चलती है, वहाँ वह सुनाई देती है। तुम आवाज सुनते हो किन्तु यह नहीं बता सकते कि वह कहाँ जाती है और कहाँसे आती है।" इस प्रकार मैं देखता हूँ कि जॉनमें वास्तविक अस्तित्वका विचार विद्यमान् है।

"जिस प्रकार मूसाने बियाबानमे साँपको उठाया उसी प्रकार मानव-पुत्र भी उठाया जाना चाहिये।

"जो कोई भी उसमें विश्वास करे उसका विनाश नहीं होना चाहिये, किन्तु उसे अनन्त जीवन मिलना चाहिये।

"ईश्वर संसारको इतना प्यार करता था कि उसने अपना एक मात्र पुत्र दे दिया। जो कोई उसमे विश्वास करेगा उसका विनाश नही होना चाहिये, किन्तु उसे अनन्त जीवन मिलना चाहिये।

"क्योंकि ईश्वरने अपने पुत्रको संसारमें इस लिये नहीं भेजा कि वह ससारको रसातल भेज दे किन्तु इस लिये भेजा कि वह उसके माध्यमसे बच जाय।

"जो उसमे विश्वास करता है वह रसातल नही जाता, किन्तु जो विश्वास नहीं करता उसे रसातल गया ही समझो। क्योंकि उसने ईश्वरके एक मात्र पुत्रमें विश्वास नहीं किया।

"जो (ईश्वरके) पुत्रमे विश्वास करता है वह अनन्त जीवनको प्राप्त करता है, और जो पुत्रमे विश्वास नहीं करता उसे जीवन-दर्शन नहीं होगा। उसपर भगवान्का अभिशाप पड़ेगा।

"निश्चित तौरपर, निश्चित तौरपर, मै तुम्हे कहता हूँ, जो मेरे वचनको सुनता है और जिसने मुझे भेजा है उसमें विश्वास करता है, उसके लिये अनन्त जीवन है। वह रसातल नहीं जायगा, वह मृत्युसे जीवनमें प्रवेश करेगा।

" निश्चित तौरपर मै तुम्हें कहता हूँ कि वह घडी आ रही है जब मृत लोग ईश्वर-पुत्रकी वाणी सुनेगे: और जो सुनेगे वे जी खडे होगे।

" जिसने मुझे भेजा है उसकी यह इच्छा है कि जो कोई ईश्वर-पुत्रको देखेगा और उसमे विश्वास करेगा वह अनन्त-जीवनको प्राप्त होगा; और मैं उसे अन्तिम दिन खडा कर दूँगा।

" तब ईसाने उन्हे कहा, निश्चित रूपमे, निश्चित रूपमे मै तुम्हें कहता हूँ कि बिना मानव-पुत्रका मास खाये और बिना उसका रक्त पिये तुममें जीवन नहीं आ सकता।

" जो कोई भी मेरा मास खायेगा और मेरा रक्त पियेगा वह अनन्त-जीवी होगा, और मैं उसे अन्तिम दिन खड़ा कर दूँगा।

" क्यो कि मेरा मांस निश्चय ही भोजन है, और मेरा रक्त निश्चय ही पेय है।

" जो मेरा मास खाता है और मेरा रक्त पीता है, वह मुझमे रहता है और मैं उसमें रहता हूँ।

" जैसे मुझे जीवित पिताने भेजा है और मै उसमे रहता हूँ; उसी प्रकार जो मुझे खायेगा वह मुझमे रहेगा।

" यह वह रोटी है जो स्वर्गसे आई है। यह वैसा भोजन-विशेष नहीं है, जिसे तुम्हारे पूर्वजोंने खाया और वे मृत हैं। जो इस रोटीको खायेगा वह सदा जीवित रहेगा।

" जो अपने जीवनसे प्रेम करता है वह इसे गँवायेगा और जो इस संसारमे अपने जीवनसे घृणा करता है, वह उसे अनन्त जीवनके लिये रखेगा।"

इस प्रकार मै देखता हूँ कि जॉनके अनुसार ईश्वरके अभिशापसे बचनेके लिये न केवल हमे ईसामे विश्वास ही करना पडेगा किन्तु हमे ईसाका मास भी खाना पड़ेगा और उसका रक्त भी पीना पड़ेगा। यदि यह सिद्धान्त सच्चा है, तो कैथॉलिक सम्प्रदाय ठीक है। किन्तु यह सच्चा नहीं। मै इसमें विश्वास नही करता। मै विश्वास नहीं करता कि विश्वमें कोई ऐसा ईश्वर है जो किसीको अपना विचार विश्वास प्रकट करनेके लिये रसातल भेज देगा।

लोग पूछते हैं— " थोड़ी देरके लिये मान लो कि यह सब सच हो और अन्तिम दिन तुम देखो कि यही सब सच था। तब तुम क्या करोगे ? " मैं एक आदमीकी तरह सीधा चलूँगा और स्वीकार करूँगा कि मैं गलती-पर था।

" और मान लो कि ईश्वर तुम्हें दण्ड देने जा रहा है। तब तुम क्या कहोगे ? " मैं उससे कहूँगा—" दूसरोंके साथ वैसा ही वर्ताव करो, जैसा कि तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें। "

मुझे सिखाया जाता है कि मुझे बुराईका बदला भलाईसे चुकाना चाहिये। मुझे सिखाया जाता है कि यदि कोई मेरे एक गालपर थप्पड़ मारे, तो मुझे दूसरा गाल उसके सामने कर देना चाहिये। मुझे सिखाया जाता है कि मुझे बुरा-ईको भलाईसे जीतना चाहिये। मुझे सिखाया जाता है कि मुझे अपने शत्रुओंसे प्रेम करना चाहिये। क्या उस ईश्वरके लिये जो मुझे कहता है कि मैं अपने शत्रुओंसे प्रेम करूँ यह कोई अच्छी बात होगी कि वह अपने शत्रुको रसातल भेजे ? नहीं, यह नहीं हो सकता।

जॉनके इस कथानकमें ये सब सिद्धान्त हैं—यह मुर्दोंके जी उठनेका सिद्धान्त, यह ईसामें विश्वास करना आवश्यक होनेका सिद्धान्त, यह मुक्तिके निष्ठानिर्भर होनेका सिद्धान्त। और कहीं ये नहीं हैं।

मैथ्यु, मार्क और ल्यूकको पढो और तुम मुझसे इस बातमें सहमत होगे कि पहलेके तीनों कथानकोंकी शिक्षा है कि यदि हम अपने मानव-बन्धुओंके प्रति दयावान् और क्षमावान् होंगे, तो ईश्वर भी हमारे प्रति दयावान् और क्षमावान् होगा। जॉनमें हमे सिखाया गया है कि दूसरा आदमी हमारे प्रति भला भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है; किन्तु स्वर्ग जानेका एक ही रास्ता है और वह यह कि हम ऐसी बातमे विश्वास करें जिसे हम जानते हैं कि वह वैसी नहीं है।

यह ईसामे विश्वास करनेका सिद्धान्त, यह उसका रक्त पीनेका सिद्धान्त और यह उसका मास खानेका सिद्धान्त सब बादके विचार हैं। ये धर्म-ध्वजियोंके कूट लेख हैं। कुछ वर्षोंमें लोग यह समझ लेंगे कि ये ईसाके वचन होनेके अयोग्य हैं।

५—कैथॉलिक

इन कथानकोंपर जिन्हें मैंने पढ़ा है ईसाइयतके सम्प्रदायोने अपने अपने महल खडे किये हैं। इन्हीं चीज़ोंपर, इन्हीं गलतियोपर, इन्हीं प्रक्षिप्त अंशोंपर उनके सिद्धान्त आश्रित हैं। जिस सम्प्रदायने, जहाँ तक मेरी जानकारी है, सर्व प्रथम अपना सिद्धान्त गढा, वह कैथॉलिक सम्प्रदाय है। यही सर्व प्रथम सम्प्रदाय है, जिसके हाथमें कुछ शक्ति आई। यही वह सम्प्रदाय है जिसने आज तक ये सब चमत्कार हमारे लिये सुरक्षित रखे हैं। यही वह सम्प्रदाय है जिसने हमारे लिये पाण्डु-लिपियोंको सुरक्षित रखा है। यही वह सम्प्रदाय है जिसे प्रोटैस्टैण्ट लोगोने इतिहासकी अँदालतमे अठारह सौ वर्ष पूर्व हुए चमत्कारोके साक्षीके रूपमे ला खडा किया।

यही एकमात्र सम्प्रदाय ऐसा है जो अनेक मृत सन्तोके माध्यमद्वारा स्वर्गसे निरन्तर सम्बन्ध बनाये हुए है। इस सम्प्रदायके ईश्वरका एक एजैण्ट पृथ्वीपर रहता है। वह एक आदमी है जो ईश्वरके स्थानपर खडा है। उस सम्प्रदायके हाथों कभी कोई गलती नही हो सकती। इस सम्प्रदायने अपनी शक्ति-भर अत्याचार किया है और आगे भी करेगा। स्पेनमे यह सम्प्रदाय सीधा खड़ा है और सरकश है। संयुक्त राज्यमे यह सम्प्रदाय रेंग कर चलता है। उद्देश्य दोनों देशोंमे एक ही है—मानसिक स्वतन्त्रताकी हत्या। इस सम्प्रदायकी शिक्षा है कि हम स्वय दुखी बनकर ईश्वरको प्रसन्न कर सकते हैं। ईश्वरकी दृष्टिमे अपने बच्चेको गोद खिलानेवाली मातासे एक 'साध्वी' श्रेष्ठतर है, पितासे 'पादरी-पुरोहित' श्रेष्ठतर है, प्रेमकी उस आगकी अपेक्षा जिसने संसारके सारे सौन्दर्यको जन्म दिया है 'अविवाहित' रहना अच्छा है। यह सम्प्रदाय सोलह या अठारह वर्षकी बच्चीको, जिसकी ऑखोंमें शबनम और प्रकाश है, जिसके सफेद गालोंमे स्वास्थ्यकी लाली है, कहता है—मृत्यु और रात्रिका बना हुआ बुर्का पहन लो, पत्थरोपर घुटने टेको और तुम ईश्वरको प्रसन्न करोगी।

मै कहता हूँ कि एक कानून होना चाहिये कि कोई लड़की इस प्रकार बुर्का पहन कर अपने आपको जीवनके आनन्द और सौन्दर्यसे वञ्चित न कर सके।

मै इसके विरुद्ध हूँ कि इन मकड़ीके जाले बुननेवाले पादरी-पुरोहितोको यह छूट मिली रहे कि वे संसार-भरकी सुन्दर लड़कियोंको उनमे फँसाते रहें। एक कानून होना चाहिए जिसके अनुसार ऐसे कमिश्नर नियुक्त हों जो वर्षमे दो बार ऐसी जगहोंपर जायँ और जो भी कोई 'मुक्त' होनेकी इच्छा व्यक्त करे, उसे 'मुक्त' कर दे। मै ईश्वरके नामपर पडे पड़े प्रायश्चित्त करते रहनेवालोको रखनेमे विश्वास नही करता। इसमें कोई सन्देह नही कि वे अपनेमे ईमानदार हैं। परन्तु प्रश्न यह नहीं है। ये अज्ञानपूर्ण मिथ्या विश्वास लाखो-करोड़ो लोगोके जीवनको पीड़ा, वेदना और आसुओसे भरे हुए हैं।

कुछ शताब्दियों तक विचार कर चुकनेके बाद इस सम्प्रदायने एक मत बनाया। वह मत ही इस कट्टर-मतका आधार है। मै आपको पढकर सुनाता हूँ—

"जो भी (भगवान्के अभिशापसे) बचना चाहे, सबसे पहले यह आवश्यक है कि वह कैथॉलिक मतको स्वीकार करे। जो उसे सम्पूर्ण रूपसे, असन्दिग्ध रूपसे अनुल्लघनीय नहीं स्वीकार करेगा, वह सर्वदाके लिये विनाशको प्राप्त होगा।" वह मत क्या है? "हम ईश्वरके तीन रूपोको एकमे और एकको तीन रूपोंमे पूजते हैं।"

आप यह जानते ही हैं कि यह कैसे किया जाता है। मेरे लिये इसकी व्याख्या करना आवश्यक नहीं। "बिना व्यक्तियोको गड़बडाये और बिना पदार्थका विभाजन किये।" बेचारे ईश्वरकी क्या दुरवस्था होगी यदि पदार्थका विभाजन कर दिया जाय?

"क्योंकि एक तो पिताका व्यक्तित्व है, दूसरा पुत्रका व्यक्तित्व है और तीसरा पवित्र आत्माका व्यक्तित्व है, किन्तु पिता, पुत्र और पवित्र आत्माका ईश्वरत्व एक है।" ईश्वरत्वके अर्थको आप समझते ही हैं।—"शानमे बराबर और वैभवमें समानरूपसे अनादि। जैसा पिता, वैसा पुत्र और वैसी ही पवित्र-आत्मा। पिता अनुत्पन्न, पुत्र अनुत्पन्न तथा पवित्र-आत्मा अनुत्पन्न। पिता अज्ञेय, पुत्र अज्ञेय तथा पवित्र-आत्मा अज्ञेय।" और यही कारण हैं कि हम उस पदार्थके बारेमें इतना जानते हैं। "पिता अनादि है, पुत्र अनादि है, पवित्र-आत्मा अनादि है, और तो भी तीन

अनादि नहीं हैं, अनादि एक ही है; जैसे न तीन अनुत्पन्न है, न तीन अज्ञेय है, केवल एक ही अनुत्पन्न है और एक ही अज्ञेय है।"

"इसी प्रकार पिता भी सर्व शक्तिमान् है, पुत्र भी सर्वशक्तिमान् है, पवित्र-आत्मा भी सर्वशक्तिमान् है। तो भी तीन सर्वशक्तिमान् नहीं है, केवल एक ही सर्वशक्तिमान् है। इस प्रकार पिता ईश्वर है, पुत्र ईश्वर है और पवित्र-आत्मा ईश्वर है, तो भी तीन ईश्वर नहीं हैं। इसी प्रकार पिता स्वामी है, पुत्र स्वामी है, पवित्र-आत्मा स्वामी है, तो भी तीन स्वामी नहीं है। जिस प्रकार ईसाई मत हमे हरएकको ईश्वर और स्वामी स्वीकार करनेके लिये मजबूर करता है, उसी प्रकार कैथॉलिक मत हमे यह नहीं कहने देता कि तीन ईश्वर हैं अथवा तीन स्वामी है। पिता किसीसे नहीं बना है, न निर्मित है और न उत्पन्न। पुत्र केवल पितासे है, न बनाया गया है, न निर्माण किया गया है, किन्तु उत्पन्न है। पवित्र-आत्मा पिता और पुत्रसे है, न बनाया गया है, न उत्पन्न है, किन्तु आगे बढा हुआ है।"

इस 'आगे बढ़ा हुआ' का अर्थ आप जानते है।

"इस प्रकार एक पिता है, तीन पिता नहीं।" ऐसा हो ही क्यो, कि तीन पिता हो और पुत्र एक ही हो! एक पुत्र, तीन पुत्र नहीं; एक पवित्र-आत्मा, तीन पवित्र-आत्माये नही; इस त्रिमूर्तिमें कोई आगे पीछे नही, कोई बड़ा छोटा नहीं, तीनो व्यक्तित्व एक दूसरेके साथ अनादि हैं, समान है। सभी बातोंमे एककी और एकमें तीनोकी पूजा होनी चाहिये। जो बचना चाहे उन्हे इस त्रिमूर्तिका विचार करना चाहिये और शाश्वत मुक्तिके लिये यह भी आवश्यक है कि ईसा मसीहके अवतारमे पूरा पूरा विश्वास किया जाय। अब इस सारे कथनका सार यह है:—हम विश्वास करे और स्वीकार करे कि ईश्वरका पुत्र हमारा भगवान् ईसा मसीह ईश्वर भी है और आदमी भी है। वह उसी पदार्थका बना है जिस पदार्थका ससारके अस्तित्वमे आनेके पहले उसका पिता ईश्वर रहा।

वह अपनी मॉसे भी कुछ समय पहलेसे था।

"और वह अपनी मॉके पदार्थका है, इस ससारमे उत्पन्न, सम्पूर्ण ईश्वर और सम्पूर्ण मनुष्य, और मानवी मांसमें बुद्धिवादी-आत्मा, ईश्वरत्वमे

अपने पिताके समान, किन्तु मानवीपनके कारण उससे कुछ कम: जो कि ईश्वर और मानव दोनों होनेके कारण दो नहीं है, किन्तु एक है। ईश्वरके देहधारी होनेके कारण एक नहीं, किन्तु मानवीपनको ईश्वरके दर्जेपर ले जानेके कारण एक है।"

आप देखते हैं कि यह इसके विपरीत प्रयत्नकी अपेक्षा बहुत कुछ आसान है।

"सम्पूर्ण रूपसे एक, पदार्थकी गड़बड़ीके कारण नहीं. किन्तु व्यक्तित्वकी एकताके कारण। जैसे बुद्धिवादी-आत्मा और मांस एक व्यक्ति है, उसी प्रकार ईश्वर और आदमी एक ईसा है—जिसने हमारी मुक्तिके लिये यातनायें सहीं, जो नरकमें उतरा, जो तीसरे दिन मृतकोंमेंसे पुन. उठ खड़ा हुआ, जो स्वर्गमें गया और जो ईश्वरके दाहिने हाथपर बैठा है, उस सर्व शक्तिमान्के जो जीवितो और मृतोंपर निर्णय देगा।"

भगवान्के शापसे बचनेके लिये इन सब बातोंमें विश्वास करना आवश्यक है। यह कितना बड़ा सौभाग्य है कि इन्हें समझना आवश्यक नहीं! इस अनन्त वेहूदगीके सामने मानवकी बुद्धिके घुटने टिकवानेके लिये हजारों और लाखों आदमियोने कष्ट भोगे हैं, लाखों आदमी जेल-खानों और आगमें जल-भुन मरे हैं; और यदि कैथॉलिक-मतकी बलि चढे हुए सभी लोगोंकी हड्डियाँ इकट्ठी की जायें, तो मिस्रके सभी पिरामिडोसे ऊँचा पर्वत खड़ा हो जाय, और उसके सामने पादरी तक रो पड़ें।

इस कैथॉलिक सम्प्रदायने यूरोपको गिर्जाघरों और जेलखानोसे भर दिया। लोगोंकी आत्माके गहने लूट लिये। कैथॉलिक-सम्प्रदायने अज्ञानताके आगे घुटने टेके थे। इस कैथॉलिक मतका राजसिंहासनके अत्याचारियोंके साथ भाई-चारा था। इन दो गीधो—राजसिंहासन और वेदिका—के बीच मानव-हृदयकी बोटी बोटी नोच ली गई।

यह कहना अनावश्यक है और मैं प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता हूँ कि मुझे हजारों अच्छे कैथॉलिक मिले हैं; किन्तु कैथॉलिक-मत मानव-स्वतन्त्रताके विरुद्ध है। कैथॉलिक मतके अनुसार मुक्तिका आधार आस्था है। कैथॉलिक मत आदमीको सिखाता है कि वह अपनी बुद्धिको पाँवतले रौंध डाले। इसी लिये कैथॉलिक मत ग़लत है।

हजारों ग्रन्थ लिखकर कॅथॉलिक मतके अपराधोका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनमें उन लोगोके नाम भी नहीं लिखे जा सकते जो कैथॉलिक मतके शिकार हुए हैं। तलवार और आग, हथकड़ी और बेड़ी, जेलखाना और चाबुक—इन्हीं सबसे उसने ससारको कैथॉलिक बनानेका प्रयत्न किया। दुर्बल रहनेपर भीख मॉगना, शक्ति हथिया लेने पर डाके डालना, भीख मॉगनेका मिट्टीका बर्तन अथवा तलवार, भिखमगा अथवा अत्याचारी !

६—एपिसकोपैलियन

दूसरा सम्प्रदाय जिसकी मै चर्चा करना चाहता हूॅ एपिसकोपैलियन है। वह स्वर्गीय हैनरी आठवेका स्थापित किया हुआ है। उसने महारानी कैथरीन और कैथॉलिक सम्प्रदायको एक साथ ही छोड़ दिया और रानी एनिबोलेन तथा एपिसकोपैलियन सम्प्रदायको एक साथ अपना लिया। इस सम्प्रदायमे यदि कुछ और धार्मिक क्रिया-कलाप होते तो यह कैथॉलिक होते, कुछ कम होते तो कुछ नही। हमारे अपने देशमे एपिसकोपैलियन सम्प्रदाय है। इसमे वह सभी कमियाँ हैं जो किसी गरीब रिश्तेदारमे होती हैं। यह अपने धनी सम्बन्धीको लेकर सदैव शेखी मारता रहता है। इँग्लैण्डमे सम्प्रदायका निर्णय भी क़ानूनद्वारा होता है, वैसे ही जैसे हम यहॉ नियम पास करते हैं। जब इॅग्लैण्डमें कोई महाशय मरते हैं तो आकाशकी शक्तिको पार्लमेटका विधान देखना पडता है ताकि वह निर्णय कर सके कि उन महाशयकी भगवान्के अभिशापसे रक्षा होनी चाहिये अथवा नहीं। यह कानूनी बारीकीका प्रश्न बन जाता है और कभी कभी एक आदमी बड़ी ही कानूनी बारीकीके हिसाबसे रसातलकी ओर धकेल दिया जाता है।

कुछ वर्ष हुए एक सज्जन जिनका नाम सीबैटी—सैमुअल सीबैटी था इङ्गलैण्ड भेजे गये ताकि वहॉसे ईसाके शिष्योंकी शिष्य-परम्पराको ला सके। इङ्गलैण्डके चर्चके बिशप-पादरियोंके लिये यह आवश्यक था कि वह उसके सिर-पर अपना हाथ रख दें। पर उन्होने इनकार कर दिया। पार्लमेटके विधानमें इसके लिये कोई गुंजायश नहीं थी। तब वह स्काटलैण्डके बिशप-पादरियोंके पास गया। यदि स्काटलैण्डके पादरियोंने भी इनकार कर दिया होता, तो

हमारे इस नये-संसारमे कभी कोई शिष्य-परम्परा न स्थापित हुई होती। आधी पृथ्वीपर ईश्वरके लिये कोई जगह न रहती। इस महाद्वीपमें सच्चे सम्प्रदायकी स्थापना ही न हो सकती। किन्तु स्काटलैण्डके पादरियोने उसके सिरपर अपना हाथ रखा। अब सन्त पालसे लेकर पिछले विशप-पादरी तककी हमारे यहाँ हाथों और सिरोकी अविच्छिन्न परम्परा विद्यमान है।

इस देशमें एपिसकोपैलियन सम्प्रदायके लोगोंने कुछ भलाई भी की है जिसके लिये मै उन्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ। दूसरोकी अपेक्षा औसत-दर्जे कम धार्मिक होनेके कारण इन लोगोने मानवताकी अधिक सेवा की है। इन लोगोने कुछ मानवी गुणोको सुरक्षित रखा है। इन लोगोने सगीतसे घृणा नहीं की, इन लोगोने चित्रकारीकी सर्वथा निन्दा नहीं की। कुछ लोग तो यहाँ तक आगे बढे कि उन्होंने कहा कि ताश खेलनेमे कोई हर्जा नही, ऐसे समय भगवान् या तो दूसरी ओर देखता है अथवा देखता ही नहीं! इन सब बातोंके लिये मै उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

जब मैं छोटा था तब दूसरे सम्प्रदाय नाचनेको पवित्र-आत्माके प्रति अपवित्रतम अपराध मानते थे। वे सिखाते थे कि जब चार लड़के सूखी घासके ढेरमें खेलने लगते हैं तो ईश्वर उनका सिर काटकर उन्हे रसातल भेज देनेके लिये अपनी तलवार तेज करने लगता है।

एपिसकोपल सम्प्रदाय बहुत कुछ कैथॉलिक सम्प्रदायकी ही तरह है, कुछ और वेहूदगियोंके साथ। एपिसकोपलियन लोगोंका कहना है कि दीक्षित हो जानेपर पापकी क्षमामें कुछ सरलता हो जाती है। वे लोग मानो ऐसा सोचते हैं कि दीक्षित होते ही वह एक दूकानके हिस्सेदार हो जाते हैं, जहाँसे वह लागत-मूल्यपर बुराई खरीद सकते हैं। यह सम्प्रदाय स्वतन्त्र लोगोंके लिये एकदम निकम्मा है। इसका शासन अत्याचार-पूर्ण, उपेक्षापूर्ण और निकम्मा है। विशप-पादरी लोग ऐसे बात करते हैं मानो उनके अधिकारमें जो आत्मायें हैं उनकी सारी जिम्मेदारी उनपर ही हो। वे एक तरहके कोट पहनते हैं जिनमें बटन एक ओर लगे होते हैं। इस सम्प्रदायके पादरियोके लिये सबसे बड़ा गुण यह है कि उनकी आवाज अच्छी होनी चाहिये। एपिसकोपैलियन लोगोंने आयरलैण्डके लोगोके साथ जो व्यवहार किया वह एक

अपराध था—तीनसौ वर्षो तक लगातार किया गया अपराध । इस सम्प्रदायने इङ्गलैण्डके प्योरिटन लोगों और स्काटलैण्डके प्रेसविटेरियन लोगोंपर अत्याचार किये । इंग्लैण्डमें वेदिका सदासे राजसिंहासनकी रानी रही है और इस रानीने सती स्त्रियोंको हमेशा घृणाकी दृष्टिसे देखा है ।

७—मैथाडिस्ट

लगभग डेढ सौ वर्ष पहले जान वैजले और जार्ज व्हिट्फील्ड नामके दो आदमियोने कहा:—" यदि हर कोई नरक जा रहा है, तो किसी न किसीको यह बात कहनी होगी । " एपिसकोपल पादरी बोल उठे:—" चुप रहो । अपने कपडे आप मत फाडो । " वैजली और व्हिटफिल्डका कहना था कि—" इस भयानक सत्यकी घोषणा होनी चाहिये, हर घरकी छतसे, हर अवसरपर; हर रास्तेसे, जब जब मौका मिले । " वे सच्चे ईमानदार आदमी थे, वे अपने सिद्धान्तोंमें विश्वास करते थे । और उनका कहना था—" यदि एक नरक है और अज्ञानकी चट्टानपर आत्माओंका जल-प्रपात गिरता रहता है तो किसीको कुछ अवश्य कहना चाहिये । " वे सही थे । किसी न किसीको अवश्य बोलना चाहिये, यदि यह बात सच्ची हो । वैजली बाइबलमे विश्वास करता था । उसे ईश्वरकी वास्तविक विद्यमानतामे विश्वास था । ईश्वर उसके लिये चमत्कार किया करता था—उसकी मीटिंग होने देनेके लिये वर्षाको कई कई दिन रोके रखता था, उसके घोडेके लॅगडेपनको अच्छा कर दिया करता था, और श्रीमान् वैजलीका सिर-दर्द दूर भगा दिया करता था ।

और यह वैजली शैतानकी वास्तविक विद्यमानतामें भी विश्वास करता था । उसका विश्वास था कि शैतान आदमियोके सिर आते हैं । जब शैतान लोगोके सिर आते, तो वह उनसे बातचीत किया करता था और शैतान उसे बताता था कि वह अब उस आदमीको छोड़कर दूसरे आदमीके सिर चढने जा रहा है । वह यह भी बताता था कि वह वहॉ निश्चित समयतक रहेगा । तब वैजली उस आदमीके पास पहुँचता और शैतान उसे ठीक समयपर मिल जाता । वह हर आदमीके अपने मैथाडिस्ट सम्प्रदायमे आनेको ईश्वर और शैतानके बीचका संघर्ष समझता जिसमे आदमीकी

आत्मापर अन्तमें ईश्वरका ही अधिकार हो जाता । वैजलीका मानवीय-स्वतन्त्रतामें विश्वास नहीं था । निस्सन्देह, वह ईमानदार था । वह उपनिवेशोंको स्वतन्त्र करनेके विरुद्ध था । वह ईमानदारीसे ऐसा मानता था । वैजलीने एक प्रवचन दिया जिसका शीर्षक था—"भूकम्प और उसका कारण ।" उसका तर्क था कि भूकम्पोंका कारण आदमीके पाप हैं और भूकम्पोंको रोकनेका एकमात्र उपाय यही है कि लोग ईसा मसीहमें विश्वास करें । निस्सन्देह, वह एक ईमानदार आदमी था ।

वैजली और व्हिट्फील्डका पहलेसे ही सब कुछ निश्चित होनेके सिद्धान्तपर मतभेद हो गया । वैजलीका आग्रह था कि ईश्वर हर किसीको नियंत्रित करता है । व्हिट्फील्डका कहना था कि जिनके बारेमें ईश्वर जानता है कि नहीं आयेंगे, वह उन्हें निमंत्रित नहीं करता । वैजलीका कहना था कि वह करता है । व्हिट्फील्डका कहना था—तो अच्छा, वह उनके सामने प्लेटें लाकर नहीं रखता । वैजलीका कहना था कि रखता है, ताकि जब वे नरकमें हों तो वह दिखा सके कि उनके लिए जगह रखी गई थी । जिस संप्रदायकी स्थापना इन लोगोंने की, वह अब भी सजीव है । शायद संसारमें किसी दूसरे संप्रदायने इतना कम पैसा लेकर इतना अधिक प्रचार नहीं किया जितना मैथाडिस्ट लोगोंने । व्हिट्फील्ड गुलामीकी प्रथामें विश्वास करता था और उसने गुलामोंके व्यापारका समर्थन किया था ।

कुछ समय पूर्व मैथाडिस्टोंकी एक सभा हुई थी । उसमे उन्होने जो संख्यायें दीं उनसे मालूम हुआ कि उनका विश्वास है कि उन्होंने एक वर्षमें १३ लाख आदमियोंको अपने मतका बनाया । उनका कहना है कि इसके लिए उनके पास २६ हजार उपदेशक हैं, २ लाख २६ हजार रविवारी स्कूलोंमे पढनेवाले विद्यार्थी हैं और लगभग १० करोड़ पौंडकी संपत्ति । संसारके इतिहासपर नजर डालनेसे मैं देखता हूँ कि लगभग ४ था ५ करोड़ आदमी हर साल पैदा होते हैं । यदि प्रतिवर्ष १३ लाख आदमियोंकी ही रक्षा हो सकी तो इस सिद्धान्तको मारे संसारकी रक्षा करनेमें कितने वर्ष लगेंगे ? ये अच्छे हैं, ईमानदार हैं: किन्तु बेचारे अज्ञ हैं ।

पुराने समयमें मामला बड़ा सीधा-साधा था । गिरजे अनाजकी कोठियों

जैसे थे। वे दो हिस्सोंमें विभक्त रहते—पुरुष एक ओर और स्त्रियाँ दूसरी ओर। थोड़ी बर्बरता रहती। तबसे हमने कुछ प्रगति की है। अब हम अनुभवसे यह बात जान चुके है कि किन्ही दो अपरिचित आदमियोके बीच बैठकर आदमी जितनी भक्तिसे ईश्वर-प्रार्थना कर सकता है, वैसी ही भक्तिसे वह अपनी किसी प्रियाके पास बैठकर भी।

एक और बात है जो मैथाडिस्ट लोगोको याद रखनी चाहिए, वह यह कि ऐपिसकोपेलियन लोग ही उनके सबसे बडे शत्रु हुए हैं और उन्हें याद रखना चाहिए कि स्वतंत्र-विचारकोने उनके साथ सदैव सद्व्यवहार किया है।

उत्तरके मैथाडिस्ट सम्प्रदायकी एक बात मुझे पसंद है, लेकिन मै जानता हूँ कि मैथाडिस्ट सिद्धान्तको इसका श्रेय नहीं दिया जा सकता। मै देखता हूँ कि दक्षिणका मैथाडिस्ट संप्रदाय स्वतंत्रताका उतना ही विरोधी है जितना कि उत्तरका। मैथाडिस्ट सम्प्रदाय स्वतंत्रताकी पक्षपाती है, इस प्रकार यह मैथाडिस्ट सिद्धान्त नहीं है जिसे स्वतंत्रता अथवा गुलामीका पक्षपाती कहा जासके। उनका मत दूसरोसे थोड़ा भिन्न है। वे यह नहीं मानते कि ईश्वर सब कुछ करता है। उनका विश्वास है कि ईश्वर अपने हिस्सेका कर्तव्य करता है और शेष काम तुम्हे करना चाहिए। स्वर्गारोहण साझे परिणामका प्रयत्न है। मैथाडिस्ट-संप्रदायका नवीन देशोंसे मेल बैठता है। सामान्य रूपसे इसके पादरी अशिक्षित होते हैं। ज्ञानकी जगह भी उनमें उत्साह ही रहता है। वे शोर-शराबेके बलपर लोगोंको अपने मतका बनाते हैं। बादकी शातिमें उनके बहुतसे अनुयायी खिसक जाते हैं। थोड़े समयमे अनेक कट्टरपंथियो और उन थोडेसे लोगोके बीचमें जिनकी सख्या बढ रही है, संघर्ष आरभ होगा। चद लोग निकाल बाहर किये जायेगे और सप्रदायपर उन्हीं लोगोका शासन चलेगा जो बिना समझे विश्वास करते हैं।

८—प्रेसबिटेरियन

दूसरा संप्रदाय प्रेसबिटेरियन है। जहाँतक मतकी बात है, यह सप्रदाय सबसे निकृष्ट है। इस संप्रदायका संस्थापक जॉन कॉल्विन था—एक हत्यारा। जॉन कॉल्विनके हाथमें जब जिनेवामे शक्ति आई तो उसने लोगोंपर अत्या-

चार आरंभ किया। वाल्तेयरने फ्रांससे मानव उत्पीडनका मूलोच्छेद किया। यदि ईसाई मजहब सत्य है तो जिस आदमीने मानव-उत्पीड़नका मूलोच्छेद किया उसे अब ईश्वर नरकमें यंत्रणा दे रहा है, और जिस आदमीने मानवोंको इतनी यंत्रणा दी वह अब स्वर्गमे एक श्रेष्ठ देवता बना बैठा है। ऐसा नहीं चल सकता।

जॉन नॉक्सने स्कॉटलैंडमें इस संप्रदायका आरंभ किया। प्रेसबिटेरियन मतके बारेमें यह बात सबसे विचित्र है कि जहॉ दरिद्र धरती होती है वहीं यह सबसे अधिक फलता फूलता है। मैंने उस दिन जॉन नॉक्स और जॉन कॉल्विनकी आपसकी बातचीतका वृत्तात पढा। कल्पना कीजिए, महामारी और अकालके बीच हुई बातचीतकी। कल्पना कीजिए एक ठूँठ और एक कुल्हाड़ीके बीच हुई बातचीतकी। जब मै उनकी बातचीत पढता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि जॉन नॉक्स और जॉन कॉल्विन एक दूसरेके लिए बने थे; और वे एक दूसरेसे ऐसे फिट बैठते थे जैसे किसी जंगली पशुका ऊपर और नीचेका जबडा। उनका विश्वास था कि प्रसन्नता एक अपराध है; वे हँसनेको नास्तिकता समझते थे, और उन्होंने हर मानवीय भावनाको नष्ट करनेके लिए और दिमागमे अनन्त मृत्युका असीम अंधकार भरनेके लिए जो कुछ किया जा सकता था, किया। उन्होने यह सिखाया कि क्योकि ईश्वरने हमें बनाया है; इसलिए उसे हमे रसातल भेजनेका अधिकार है। यही तो कारण है कि उसे हमे रसातल भेजनेका अधिकार नहीं। एक मुट्ठीभर मिट्टी है, अचेतन मिट्टी। ईश्वरको क्या अधिकार है कि वह उस अचेतन मिट्टीको मानवका रूप दे, जब कि वह जानता है कि मानव पाप करेगा; जब कि वह जानता है कि मानव अनन्त कष्ट भोगेगा? उसे अचेतन मिट्टी ही क्यो न रहने दिया जाय? एक अनन्त ईश्वरको मानवी पीडामे वृद्धि करनेका क्या अधिकार है? थोडी देरके लिए कल्पना करो कि मै जानता हूँ कि मै उस सामानको एक जीवित प्राणीका, एक मानवका रूप दे सकता हूँ और मैं जानता हूँ कि वह प्राणी अनन्त कालके लिए असीम यंत्रणा भोगेगा। यदि मैं वैसा करूँ तो मुझे एक शैतान मानना चाहिए। मैं उस प्राणीको अचेतन मिट्टीके रूपमें ही रहने दूँगा। और

तब कहा जाता है कि हम ऐसे सिद्धान्तमे विश्वास करे, अन्यथा हमे अनन्त काल तक नरकमे रहना होगा !

१८३९ मे इस संप्रदायके दो दल हो गये। दोनो अदालतके पास यह निर्णय करानेके लिए पहुँचे कि दोनोंमें सच्चा ईश्वरीय संप्रदाय कौन-सा है। न्यायाधीशका निर्णय था कि नवीन संप्रदाय ईश्वरीय संप्रदाय है। तब फिर एक दूसरा मुकदमा शुरू हुआ और इस बारके न्यायाधीशने निर्णय दिया कि पुराना संप्रदाय ही ईश्वरीय संप्रदाय है ! इस प्रकार इस मुकदमेका निर्णय हुआ।

उस दिन एक प्रेसबिटेरियन, जिसको बने अभी बहुत समय नहीं हुआ था, मेरे पास आया। उसने मुझे एक पुस्तिका दी और कहा कि मैं पूर्णतया प्रसन्न हूँ। मैने पूछा:—" क्या तुम समझते हो कि बहुत सारे लोग नरक जा रहे है ? "

" हाँ। '

" तब भी तुम पूर्णतया प्रसन्न हो ? "

वह कुछ न कह सका, चुप रहा।

" यदि वे सब लोग स्वर्ग जाये, तो क्या तुम अधिक प्रसन्न नहीं होगे ? "

" हाँ। "

" तो तुम पूर्णतया प्रसन्न नहीं हो ? "

वह कुछ न कह सका, चुप रहा।

" जब तुम स्वर्ग पहुँचोगे तब तुम पूर्णतया प्रसन्न होगे ? "

" हाँ। "

" अब जब हम केवल नरक ही जा रहे हैं तुम पूर्णतया प्रसन्न न हो; लेकिन जब हम नरकमें हों और तुम स्वर्गमें हो, तब तुम पूर्णतया प्रसन्न होगे ? जब तुम स्वर्गलोकके देवता बन जाओगे तब तुम उतने भले न रहोगे जितने भले कि अब हो ? "

" नहीं, नहीं, यह ठीक ऐसा ही नहीं है। "

" अच्छा, यदि तुम्हारी माँ नरकमें हो तो क्या तुम स्वर्गमें प्रसन्न रहोगे ? "

" मै समझता हूँ कि ईश्वर जानता है कि मॉके लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान कौन-सा होगा।"

उस समय मैने मनमे सोचा यदि मै स्त्री होता तो मै चाहता कि मेरे पॉच या छः ऐसे बच्चे हों।

स्वर्ग वहीं है जहॉ वे लोग है, जिन्हे हम प्यार करते हैं और जो हमे प्यार करते हैं। मै किसी ऐसे संसारमे जाना नहीं चाहता जहाँ उन लोगोंका और मेरा साथ न रहे जो मुझे यहाँ प्रेम करते हैं।

प्रेसबिटेरियन संप्रदायसे अधिक किसी दूसरे संप्रदायने संसारमे अंधकारका प्रसार नहीं किया। यह मत डरावना है, भयानक है, नारकीय है। प्रेसबिटे-रियन ईश्वर राक्षसोका राक्षस है। वह एक अनन्त हत्यारा है, जेलर है। वह रसातलमे गये हुए लोगोकी चीत्कारोका आनन्द लेगा, नरक प्रेसबिटेरियन ईश्वरका त्योहार है।

९—बाइबली-संप्रदाय

मेरे पास बैपटिस्टोके बारेमें कुछ कहनेके लिए समय नहीं है। इनके बारेमे जर्मी टेलरका कहना था कि इनकी जड़ खोदना उतना ही आवश्यक है जितना पृथ्वीपर किसी भी दूसरी महामारी अथवा बेहूदा बातकी। वह बैपटिस्टोसे इतनी घृणा इसलिए करता था कि क्योकि वे किसी मात्रामें विचारकी स्वतंत्रताके प्रतिनिधि थे।

मेरे पास क्वेकरोकी चर्चाके लिए भी समय नहीं है। वे सभी दूसरे सप्रदायोंसे अच्छे हैं और सभीने उनका दुरुपयोग किया है। मै यह भी नहीं भूल सकता कि सन् १६४० में जॉन फॉक्सको लकड़ीके चौखटेमें जकड दिया गया था, एक नगरसे दूसरे नगर चाबुक मारते हुए ले जाया गया था, डराया गया था, कैदमें डाला गया था, पीटा गया था और पॉव तले रोधा गया था। यह सब किसलिए? यह सब केवल इसलिए कि वह यह प्रचार करता था कि बुराईका बदला बुराईसे नहीं दिया जाना चाहिए और तुम्हे अपने शत्रुओसे भी प्यार करना चाहिए। जरा सोचो कि उस समय ईसाइयत

किस हीन अवस्थाको पहुँच गई होगी जब उसने ऐसी प्रेमकी मूर्तिका मांस खरोंचा !

ओह ! लेकिन वे मुझे कहते हैं:—तुम ऐसी चीज़का विरोध कर रहे हो जो मर गई है। अब कोई इन बातोंमें विश्वास नहीं करता। उपदेशक जो कुछ वेदिकासे कहते है उसपर वे विश्वास नहीं करते। श्रोतागण भी जो उपदेश सुनते हैं, उनपर विश्वास नहीं करते और वे मुझसे कहते हैं:—तुम मरी हुई बातोके पीछे पडे हो। यह तो बाह्य शक्ल मात्र है। हम संसारसे दूर भागनेके सिद्धान्तमे विश्वास नहीं करते। हम हस्ताक्षर कर देते है, और शपथ खाकर कहते है कि हम विश्वास नहीं करते और हममेसे कोई विश्वास नहीं करता। और जितने भी पादरी हैं वे सब प्राइवेटमे कहते हैं और स्वीकार करते हैं कि वे पूरा पूरा विश्वास नहीं करते।

मैं नहीं जानता कि यह ऐसा ही है अथवा नही। मै तो यह मानकर चलता हूँ कि जिन बातोका ये लोग उपदेश देते हैं उन्हें मानते भी हैं। मैं यह मानता हूँ कि जब ये लोग इकट्ठे होते हैं और गम्भीरतापूर्वक किसी सिद्धान्तको स्वीकार करते हैं, तो ईमानदारीसे उस सिद्धान्तको वास्तविक तौरपर मानते भी है। लेकिन तो भी हम देखे कि क्या मै मरे हुओके विचारोका ही विरोध कर रहा हूँ ? क्या मै श्मशानभूमिपर ही तो पत्थर नहीं फेंक रहा हूँ ?

तमाम कट्टर मतवादी लोगोका संग्रह—बाइबली सम्प्रदाय—कुछ वर्ष हुए इकट्ठा हुआ। उनके सिद्धान्तोका सार इस प्रकार है:—

"वे इलहाममे विश्वास करते हैं, बाइबलके अन्तिम-वचन होनेमे विश्वास करते हैं, पवित्र धर्म-ग्रन्थोंके पर्य्याप्त होनेमें विश्वास करते हैं, धर्म-ग्रन्थोका अर्थ लगानेके अधिकार और कर्तव्यमे विश्वास करते हैं, किन्तु यदि अर्थ लगानेमे गलती हो जाय तो रसातल जाना पडता है। वे ईश्वरत्वकी एकता और उसके त्रैतवादमें विश्वास करते हैं। वे मानव-प्रकृतिके सर्वथा भ्रष्ट होनेमें विश्वास करते हैं।"

इन सिद्धान्तोसे बढकर भ्रष्ट सिद्धान्तोंकी कल्पना नहीं की जा सकती। वे एक छोटे बच्चेको भ्रष्टाचारकी ढेरी समझते हैं। मै उसे मानवताकी एक

कली सकता हूँ जो प्रेम और आनन्दकी हवा तथा प्रकाश पाकर वैभवपूर्ण शानदार जीवनके रूपमें खिल उठेगी।

यहाँ एक स्त्री है जिसका पति समुद्रकी भेंट चढ़ चुका है। समाचार आता है कि उसे समुद्रकी लहरें निगल गई हैं। वह प्रतीक्षा करती है। उसके दिलमें कोई एक चीज है जो उसे कहती है कि अब भी वह जीवित है। वह प्रतीक्षा करती है और वर्षों बाद जब वह अपने छोटेसे दरवाजेके बाहर झाँकती है, तो वह उसे देखती है। उसे समुद्रने लौटा दिया है। वह उसके आलिंगनके लिये दौड़ती है और उसके चेहरेको आँसुओं तथा चुम्बनोंसे ढक देती है। परन्तु यदि मानव-प्रकृतिकी सम्पूर्ण भ्रष्टताका सिद्धान्त ठीक है तो प्रत्येक आँसू एक अपराध है, प्रत्येक चुम्बन नास्तिकता।

वे और किस बातमें विश्वास करते हैं? भक्ति-मात्रसे पापीके उद्धारकी बातमें कर्म नहीं, केवल श्रद्धा, केवल भक्ति, केवल विश्वास। जिसे तुम समझ नहीं सकते, वैसी किसी बातमें विश्वास करना। निस्सन्देह ईश्वर किसी आदमीको किसी ऐसी बातमें विश्वास करनेके लिये पुरस्कृत नहीं कर सकता जो उसकी समझमें आती हो। ईश्वर किसी ऐसी बातमें विश्वास करनेको ही पुरस्कृत कर सकता है, जो समझमें न आती हो। यदि तुम किसी ऐसी बातमें विश्वास करते हो जो सम्भव प्रतीत नहीं होती, तो तुम ईसाई हो; और यदि किसी ऐसी बातमें विश्वास करते हो, जिसे तुम जानते हो कि एकदम असम्भव है, तो तुम महात्मा हो।

२०—तुम क्या चाहते हो?

तब वे मुझसे कहते हैं :—"तुम क्या चाहते हो? तुमने हमारी बातके तार तार कर दिये, अब तुम इसके स्थानमें क्या चाहते हो?" मैंने किसी भली बातकी चीर-फाड़ नहीं की है। मैंने केवल नरककी अज्ञानतापूर्ण निर्दय आगको पैरोंतले रौंधनेकी कोशिश की है। मैं इस पंक्तिपर हड़ताल नहीं फेर रहा हूँ कि "ईश्वर दयालुओंके प्रति दया दिखायेगा।" मैं इस वचनको नष्ट करने नहीं जा रहा हूँ कि "यदि तुम दूसरोंको क्षमा कर दोगे, तो ईश्वर तुम्हें क्षमा कर देगा।" मानव-निराशाके क्षितिजपर अथवा मानवीय

आशाके आकाशमे चमकनेवाले किसी मदसे मंद तारेको भी मैं गुल न होने दूँगा, लेकिन मै आदमीके हृदयमेंसे उस अनन्त मनहूस छायाको निकालनेके लिये जो कुछ भी कर सकता हूँ, अवश्य करूँगा।

" इसके स्थानमें तुम क्या चाहते हो ? "

" मैं सर्वप्रथम चाहता हूँ अच्छी मैत्री—चारों ओर अच्छे मित्र। हम क्या मानते हैं, क्या विश्वास करते हैं, इसकी कुछ परवाह नहीं, हमे सबके साथ हाथ मिलाने हैं। वह तुम्हारा विचार है, यह मेरा विचार है; आओ हम मित्र बनें। विज्ञान लोगोंको मित्र बनाता है और मजहब, मिथ्या विश्वास, शत्रु। वे कहते हैं कि यह महत्त्वकी बात है कि आदमी क्या मानता है। मैं कहता हूँ कि यह महत्त्वकी बात है कि आदमी क्या करता है। आदमीकी मान्यताओंकी ओर न देखो, उसके कार्योंकी ओर देखो। अच्छी मैत्री—अच्छे मित्र—ईमानदार स्त्री-पुरुष—परस्पर आदरकी भावनासे परस्पर सहनशीलता। हमने इस तरहके गम्भीर मनुष्य बहुत देखे हैं। जब मैं किसी अत्यधिक गम्भीर आदमीको देखता हूँ, तो मै समझ जाता हूँ कि वह एकदम गधा है। जिस आदमीमें कुछ विनोद रहा है, उसने कभी किसी मजहबकी स्थापना नही की—कभी नहीं। तर्क पवित्र प्रकाश है; विनोद लालटैन है; और जिस आदमीमे विनोदकी तीक्ष्ण-मात्रा रहती है वह मिथ्या-विश्वासोंकी मूर्खताओंसे सुरक्षित रहता है। मुझे ऐसा आदमी पसन्द है जिसमे हर किसीके लिये अच्छी भावनायें हैं, अच्छी मैत्री। एक आदमीने दूसरेसे कहा :—

" क्या आप एक शराबका प्याला लेंगे ? "

" मै पीता नहीं। "

" क्या आप एक सिगरेट लेंगे ? "

" मै पीता नही। "

" क्या आप कुछ सुपारी आदि लेंगे ? "

" मै चबाता नहीं। "

" तो हम दोनो कुछ घास खायें। "

" मैं तुम्हे बताता हूँ कि मै घास नहीं खाता । "

" तो नमस्कार, आप न किसी आदमीके साथी बन सकते हैं और न किसी जानवरके । "

मै प्रसन्न रहनेकी बातमे, भली प्रकृतिकी बातमें, अच्छे स्वास्थ्यकी बातमें विश्वास करता हूँ । हम अपने शरीरकी ओर ध्यान दें । यदि हम अपने शरीरकी सुध ले तो हमारी आत्मा अपनी सुध आप ले लेगी । मेरा विश्वास है कि एक समय आयेगा जब सार्वजनिक विचार इतना ऊँचा और महान् हो जायगा कि बीमारीको बढाना पाप माना जाने लगेगा । मेरा विश्वास है कि समय आयेगा जब आदमी भविष्यमे क्षय और पागलपनके रोगियोंके लिये कोई जगह न रहने देगा । मै विश्वास करता हूँ कि समय आयेगा जब हम अपना अध्ययन आप करेंगे और स्वास्थ्यके नियमोंको समझेंगे ।

मैं अच्छी तरह जीनेमे विश्वास करता हूँ । तुम भूखे मरकर किसी देवताको प्रसन्न नहीं कर सकते । हमे अच्छा भोजन मिले, जो अच्छी तरह पका हुआ हो । संसारके किसी भी दार्शनिक सिद्धान्तकी जानकारी रखनेसे यह कहीं बढकर है कि आदमीको भोजन बनाना आए ।

मैं अच्छे कपड़े पहननेमे विश्वास करता हूँ । मैं अच्छे घरोंमें रहनेमे और पानी और साबुनके उपयोगमें विश्वास करता हूँ । मै समझदारीमे, शिक्षामें विश्वास करता हूँ । विद्यालय मेरा मन्दिर है, विश्व मेरी बाइबल है । मै न्यायकी इस बातमे विश्वास करता हूँ कि जो कुछ हम बोयें वह काटे ।

मैं उस क्षमामे विश्वास नहीं करता जिसका ईसाइयत प्रचार करती है । हमें ईश्वरकी क्षमाकी आवश्यकता नही, किन्तु एक दूसरेको क्षमा करनेकी आवश्यकता है और अपने आपको भी क्षमा करनेकी । यदि मै स्मिथको लूट लूँ और ईश्वर मुझे क्षमा कर दे, तो इससे स्मिथको क्या लाभ हुआ ? यदि मै किसी गरीब छोटी लडकीको कलंकित कर दूँ और वह कुम्हलाये हुए फूलकी तरह बिखर जाए; और ईश्वर मुझे क्षमा कर दे, तो इससे उसे क्या लाभ हुआ ? यदि कोई दूसरा ससार है तो हमें उन लोगोंके साथ अपना हिसाब-किताब साफ करना होगा जिन्हे हमने इस संसारमे हानि पहुँचाई है । वहाँ

कोई दिवालिया अदालत नहीं होनी चाहिये। हर पाईका हिसाब चुकता होना चाहिये।

तुम जो भी अपराध करो, तुम्हें अपने प्रति उत्तरदायी होना होगा और उसके प्रति भी जिसके विरुद्ध तुमने वह अपराध किया है। यदि तुमने कभी किसीको किसी प्रकारकी पीड़ा पहुँचाई है, तो तुम कभी उतने प्रसन्न नहीं होगे जितने तब यदि तुमने पीडा न पहुँचाई होती। देवता द्वारा कोई क्षमा नहीं। अनन्त, अपरिवर्तनीय न्याय ही है। जहाँ तक प्रकृतिका सम्बन्ध है तुम्हे अपने कर्मोका फल भुगतना चाहिये। यदि तुमसे किसीको हानि पहुँची हो और उसने तुम्हे क्षमा भी कर दिया हो, तो भी वह बात नहीं होगी जो तब होती यदि तुमने उसे हानि पहुँचाई ही न होती। मैं इसी बातको मानता हूँ। यदि यह बात मेरे अपने लिये थोड़ी कठोर हो, तो भी मैं इसे ही मानूँगा; मैं अपने तर्कके साथ रहूँगा; मैं एक आदमीकी तरह इसे सहन करूँगा।

और मै स्वतन्त्रताकी बातमें भी विश्वास करता हूँ; दूसरोको वही चीज देनेकी बातमे जो हम अपने लिये चाहते हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि विचारके लिये सर्वत्र स्थान है, और जितनी ही स्वतन्त्रता तुम दूसरोको दोगे उतनी ही तुम्हे मिलेगी। स्वतन्त्रतामें फिजूलखर्ची ही मित-व्यय है। हम न्यायी बने। हम परस्पर उदार बने।

मै समझदारीकी बातमें विश्वास करता हूँ। यही वह यन्त्र है जो मानवताको ऊपर उठाता है। समझदारी ही मानवताकी रक्षा कर सकती है। मानवता ही सबसे बडा धर्म है। कोई ईश्वर किसी ऐसे आदमीको दूसरे लोकमे नरकमे नहीं डाल सकता, जिसने इस लोकमे एक छोटा-सा स्वर्ग बसाया हो। ईश्वर किसी ऐसे आदमीको दुखी नहीं बना सकता, जिसने यहाँ किसीको सुखी बनाया हो। ईश्वर किसी ऐसे आदमीसे घृणा नही कर सकता, जो किसी भी दूसरे आदमीसे प्रेम कर सकता है। मानवता—इस एक शब्दमे सब कुछ आ जाता है।

वे कहते हैं, "तुम्हें विश्वास करना होगा।" मेरा कहना है—नहीं। मै जो स्वास्थ्यकी चर्चा करता हूँ वह जीवन लायगी। मेरी समझदारींकी

बात, मेरी अच्छे जीवनकी बात, मेरी अच्छी मैत्रीकी बात संसारको अच्छे घरोंसे ढँक देगी। मेरा सिद्धान्त तुम्हारे फर्शोंपर दरियाँ बिछा देगा। तुम्हारी दीवारोंपर तसवीरें टाँग देगा। मेरा सिद्धान्त तुम्हारी अलमारियोंको किताबोंसे भर देगा और तुम्हारे दिमागोंको विचारोंसे। मेरा सिद्धान्त अज्ञान और मिथ्या-विश्वाससे पैदा हुए भयानक राक्षसोंसे संसारको मुक्ति दिलायेगा। मेरा सिद्धान्त स्वास्थ्य, धन और प्रसन्नता देगा। यही है जो मैं चाहता हूँ। यही है जिसमे मैं विश्वास करता हूँ। हममे समझदारी आने दो। थोड़ी ही देरमे आदमी समझ जायगा कि वह बिना अपने आपको लूटे किसी दूसरेकी चोरी नहीं कर सकता। उसे पता लग जायगा कि वह बिना अपनी प्रसन्नताकी हत्या किये किसी दूसरेका वध नहीं कर सकता। वह जान जायगा कि हर अपराध एक गलती होता है। उसे पता लग जायगा कि गलती करनेवाला आदमी ही कष्ट भोगता है, और जो गलती नही करता वह उत्तरोत्तर उन्नति करता है। वह समझ जायगा कि यदि समझदारीके साथ केवल अपने आपको भी प्यार करना हो, तो उसका भी अर्थ यही होता है कि सारी मानवताका आलिङ्गन किया जाय।

वे कहते हैं, "तुम मानवकी अमरता छीन रहे हो।" पर मै नहीं छीन रहा। यदि हम अमर हैं, तो यह एक प्राकृतिक सचाई है। इसके लिये न हम पादरियोंके ऋणी हैं और न बाइबलके। यह अमरता अविश्वाससे नष्ट नही हो सकती।

जब तक हम एक दूसरेको प्यार करते हैं, हमारी जीवित रहनेकी आशा बनी रहेगी। जब कभी हमारे किसी प्रेम-भाजनकी मृत्यु होगी, हम कहेंगे ही—काश, हम फिर मिल सकते! हम मिलेंगे अथवा नहीं, इसमें धर्म कुछ नहीं कर सकता। यह एक प्राकृतिक सचाई होगी। मैं अपनी प्राण-रक्षाके लिये भी मानवी-आशाके किसी एक भी तारेको नष्ट करना नहीं चाहूँगा। मैं तो चाहता हूँ कि जिस समय एक गरीब औरत अपने बच्चेको लोरी गा गा कर छोटेसे झूलेमे झुला रही हो, उस समय उसे यह विश्वास न करना पड़े कि वह सौमेंसे निन्नानवे हालतोंमे नरककी आगके लिये जलावन तैयार कर रही है।

मेरा सिद्धान्त है—एक समय एक ही संसार।

और थोडी देरके लिये मान लो कि मृत्यु हर चीज़का अन्त है। अनन्त प्रसन्नतासे दूसरे दर्जेपर, जिन्हे हम प्यार करते रहे है अथवा जो हमें प्यार करते रहे हैं उनके साथ सदैव बने रहनेके आनन्दसे दूसरे दर्जेपर, अनन्त शान्तिकी स्वप्नरहित चादरमे लिपट जाना है। अनन्त जीवनके बाद दूसरा दर्जा अनन्त निद्राका ही है। कष्टोका समुद्र मृत्युके छायादार तटपर अपनी लहरे नहीं फेकता। जिन ऑखोपर अनन्त अन्धकारका पर्दा पड़ गया है, उनको अब गर्म-गर्म ऑसू कभी स्पर्श नहीं करेगे। अनन्त मौतने जिन होठोपर मोहर लगा दी है उनसे अब दुःखभरे टूटे फूटे शब्द कभी बाहर न होंगे। मिट्टीके दिल कभी टूटते-फूटते नही। मरे हुए कभी रोते नहीं।

जिन्हे मै प्यार करता रहा हूँ और जो अब मुझसे बिछुड गये है उनके बारेमे जरा भी यह सोचनेकी अपेक्षा कि उनकी नगी आत्मायें किसी ईश्वरके चंगुलमे फँस गई है, मैं यह सोचना पसंद करूँगा कि वे ससारके पृथ्वी, जल, वायु आदि तत्वोंका एक अंश बनकर इसी धरतीपर लौट आये हैं; मै यह सोचना पसन्द करूँगा कि वे अचेतन मिट्टी बन गये हैं; मै यह सोचना पसन्द करूँगा कि वे पानीके स्रोतोमे कल-कल कर रहे हैं, बादलोंमें तैर रहे है, पृथ्वीके चारो कोनोंको प्रकाशित करनेवाले प्रकाशकी झागमें सम्मिलित हैं; मै यह सोचना पसद करूँगा कि वे भूली रातके भूले स्वप्न बन गये हैं। मै अपने मृतोको वहीं छोड दूँगा जहॉ प्रकृति उन्हे छोड देती है। मेरे हृदयमें जो भी आशाकी कली खिलती है, मै उसे खिलने दूँगा; मै उसे ठंडी-सांसकी हवा और ऑसुओकी वर्षासे तर रखूँगा। लेकिन मै यह विश्वास नहीं कर सकता कि इस विश्वमे कोई ऐसा है जिसने अनन्त-वेदनाके लिये किसी मानवीय-आत्माको पैदा किया हो। किसी एक भी आत्माके अनन्त-काल तक कष्ट भोगते रहनेकी अपेक्षा मै यह पसन्द करूँगा कि हर ईश्वर अपनी आत्म-हत्या कर ले; मै यह पसन्द करूँगा कि हम सभी अनन्त गड़बड़ीके शिकार हो जाये—अँधेरी और तारोरहित रात्रिके।

मैंने निश्चय कर लिया है—

कि यदि कोई ईश्वर है, तो वह दयालुओंके प्रति दयावान् होगा।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ:

कि वह क्षमाशीलोंको यातना नहीं देगा।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ:

कि हर आदमीको अपने प्रति ईमानदार रहना चाहिए और कोई ऐसा संसार नहीं है, कोई ऐसा आकाश नहीं है, जहाँ ईमानदार बनना अपराध हो।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ:

ईमानदार पुरुष, सुशील स्त्री और प्रसन्न बच्चेको कहीं कोई भय नहीं है, न इस लोकमें और न किसी दूसरे लोकमें।

मैं इस चट्टानपर खड़ा हूँ।

पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंकी स्वतन्त्रता

मन और स्वतंत्रताका परस्पर वही संबंध है जो भौतिक तत्त्व और आकाशका।

अज्ञान ही एकमात्र गुलामी है। स्वतत्रता बुद्धिकी संतान है।

आदमीका इतिहास केवल गुलामीका इतिहास है, अन्याय और अत्याचार-का; साथ ही उन साधनोंका भी जिनसे वह अतीतमे शनैः शनैः किन्तु बड़े बड़े कष्ट भोगकर आगे बढा है। वह पादरी-पुरोहितो और राजाओंका शिकार रहा है और बना है मिथ्या विश्वास तथा निर्दयताका खाद्य। सिहासनस्थ शक्तिने भयके द्वारा अज्ञानपर शासन किया है। ढोग और अत्याचार—दोनो गीध—आदमीकी स्वतंत्रताको नोच नोच कर खाते रहे हैं। इन सबसे मुक्ति पानेका केवल एक ही मार्ग रहा है और वह है—बुद्धिका विकास। उद्योगकी पीठपर चाबुक पड़ता रहा है। दिमाग मिथ्या-विश्वासकी बेड़ियोसे जकड़ा रहा है। स्वतंत्रताके शत्रुओने कोई कसर बाकी नहीं रखी। आदमीके अधिकारोको नष्ट करनेके लिए सभी प्रकारके अत्याचार किये गये है। इस महान् संघर्षमे हर अपराधको पुरस्कार मिला है और हर शुभ कर्म दंडित किया गया है। पढना, लिखना, विचार करना और खोज करना—यह सभी अपराध माने जाते रहे हैं।

प्रत्येक विज्ञान अछूत बना रहा है।

तमाम वेदिकाये और तमाम सिहासन मानव जातिकी प्रगतिको रोकनेमें एकमत रहे हैं। राजाने कहा कि मानव जातिको अपने लिये काम नहीं करना चाहिये। पादरी-पुरोहित बोले, मानव जातिको अपने लिये सोचना नही चाहिये। एकने हाथोमे हथकड़ियाँ डालीं, दूसरोंने दिमागको बंदिशमे बाँधा। इस दुष्ट शासनमे मानव-बुद्धिका आज एक ढोगका एक कमज़ोर साँप बना रहा।

मानव जाति कारागारमें डाल दी गई थी। जेलखानेके कुछ सीखचोंमेंसे प्रकाशकी चन्द किरणें संघर्ष करती हुई बाहर आईं। इन सीखचोंके पीछेसे विज्ञानने झाँकनेका प्रयत्न किया। एकके बाद दूसरा सीखचा टूटा। कुछ महान् पुरुष निकल भागे। उन्होंने अपना जीवन अपने बन्धुओंकी मुक्तिमें लगा दिया।

कुछ ही वर्ष पूर्व आदमीके दिमागमें एक बड़ी जागृति पैदा हुई। उसने यह पूछना आरम्भ किया कि एक मुकुटधारी डाकूको क्या अधिकार है कि वह उन्हें अपने लिये काम करनेको मजबूर करे? जिस आदमीने यह प्रश्न पूछा उसे राजद्रोही कहा गया। दूसरोंने पूछा कि एक ढोंगी पादरीको क्या अधिकार है कि वह मेरे विचारोंपर शासन करे? ऐसे आदमी नास्तिक कहलाये। पादरी बोला और राजा भी बोला कि आखिर यह खोजकी प्रवृत्ति कहाँ जाकर रुकेगी? उन्होंने तब भी कहा और वे अब भी कहते हैं कि आदमीके लिये स्वतन्त्र होना खतरनाक है। मैं इसे अस्वीकार करता हूँ। बुद्धिके समुद्रमें हर नौकाके लिये काफी स्थान है। बुद्धिरूपी आकाशमें जो चाहे जितनी उड़ान भर सकता है।

जो आदमी अपने लिये नहीं सोचता वह एक गुलाम है और अपने तथा अपने मानव-बन्धुओंके प्रति द्रोह करता है।

हर आदमीको इस नीले-आकाश और तारोंके नीचे खड़ा होना चाहिये, इस प्रकृतिके अनन्त झण्डेके नीचे—अपने आपको हर दूसरे आदमीके बराबर मानते हुए। अज्ञानके सम्मुख खड़े हुए हर व्यक्तिको सोचने-का समान अधिकार है। सभीकी उत्पत्ति और विनाशके प्रश्नोंमें समान रुचि है। मैं जिस बातका दावा करता हूँ, मै जिस बातकी वकालत करता हूँ वह केवल विचारने और अपने विचारोंको प्रकट करनेकी स्वतन्त्रता है। मैं इस बातका दावा नहीं करता कि मैं आपको 'पर सत्य' बात बता रहा हूँ। मै जिसे सत्य समझता हूँ, वही बात कहता हूँ। मै सारेका सारा सत्य बतानेका दावा भी नहीं करता।

मैं यह दावा नहीं करता कि मैं विचारोंके उच्चतम शिखर तक उड़ चुका

हूँ और मैं यह दावा भी नही करता कि मै वस्तुओकी गहराईको छू चुका हूँ। मै इतना ही दावा करता हूँ कि मेरे जो विचार हैं उन्हे प्रकट करनेका मुझे अधिकार है और कोई भी आदमी जो मेरे इस अधिकारको अस्वीकार करता है वह दिमागी चोर है, दिमागी डाकू है।

आत्माकी इन ज़ंजीरोको दूर करो। इन बेड़ियोको काट डालो। यदि मुझे सोचनेका अधिकार नहीं है तो मेरे सिरमे दिमाग ही क्यो है? यदि मुझे यह अधिकार नहीं है, तो क्या उन तीन चार या अधिक आदमियोको है, जो इकट्ठे होकर किन्हीं सिद्धान्तोंपर हस्ताक्षर कर दे, एक घर बना ले, उसमे एक शिखर निकाल दें और अन्दर एक घंटा रख दें? भले मर्द और भली औरते विचारके क्षेत्रमे पडनेवाली कोडोकी मारसे तंग आ गये हैं। ज़ंजीरो और वेडियोकी यादसे उनके रोंगटे खडे हो जाते है। वे स्वयं स्वतन्त्र हैं और दूसरोको स्वतन्त्रता देते हैं। जो कोई अपने लिये किसी ऐसे अधिकारको चाहता है जो वह दूसरोंको देनेके लिये तैयार नही, वह बे-ईमान है, दुष्ट है।

पुराने समयमे हमारे पूर्वज समझते थे कि वे लोगोको जैसे चाहे वैसे विचारोका बना सकते हैं। वे मानते थे कि जोर जबर्दस्तीसे किसीसे कोई भी बात मनवाई जा सकती है। आप अत्याचार अथवा सामाजिक बहिष्कार-द्वारा किसीके दिमागको नहीं बदल सकते। लेकिन मै बताऊंगा कि आप इन उपायोद्वारा क्या कर सकते हैं और आपने क्या किया है। आप लाखो करोडों आदमियोंको ढोंगी बना सकते हैं। एक आदमीसे यह कहलवा सकते हैं कि उसने अपने विचार बदल लिये हैं, किन्तु उसके विचार पूर्व-वत् रहते हैं। उसे वेदियोसे जकड़ दो, उसके पैरोको लोहेके बूटोसे कुचल दो, चाहो तो उसे जला डालो, किन्तु उसकी राख उन्ही विचारोकी रहेगी।

अपने पूर्वजोके बारेमें जो मै सबसे अच्छी बात कह सकता हूँ वह यह है कि वे अब नहीं रहे। उन अच्छे दिनोमे हमारे पूर्वज सोचते थे कि वे जैसा चाहे वैसा सोचनेके लिये लोगोंको मजबूर कर सकते हैं। यह विचार दुनिया-के बहुतसे हिस्सोंमें अब भी प्रचलित है—इस देशमे भी। हमारे जमानेमे भी

कुछ अत्यधिक धार्मिक आदमी कहते हैं: "हम उस आदमीके साथ व्यापार नहीं करेंगे; उसको अपना मत नही देंगे; उसे अपना वकील नहीं बनावेंगे, यदि वह डाकटर है, तो उसकी दवा खानेसे पहले मर जायेंगे; उसे सहभोजमे नहीं बुलायेंगे; उसका सामाजिक बहिष्कार करेंगे; उसे हमारे गिर्जेमें आना चाहिये; हमारे सिद्धान्तोंको मानना चाहिये, हमारे देवताकी पूजा करनी चाहिये; नहीं तो हम किसी भी तरह उसके भरण-पोषणमे सहायक नहीं होंगे।"

पुराने समयमे वे चाहते थे कि सब आदमी एकदम एक तरह सोचें। संसारकी सारी मशीनसम्बन्धी चातुरी दो घड़ियोंको एकदम एक तरहसे नहीं चला सकती। आप करोडो आदमियोंको जिनके दिमाग भिन्न हैं, प्रवृत्तियाँ भिन्न हैं, शिक्षा भिन्न है, आकाक्षाये भिन्न हैं, परिस्थितियॉ भिन्न हैं, जिनमेंसे हरेक जीवित रागात्मक चमड़ीकी वर्दी पहने है—एक तरह सोचने और महसूस करने पर कैसे मजबूर कर सकते हैं? यदि कोई अनन्त ईश्वर है जिसने हमे बनाया है और जो यह चाहता है कि हम एक ही तरह सोचे, तो उसने एक आदमीको तो चम्मच-भर दिमाग और दूसरेको शानदार दिमागी प्रतिभा क्यों दी है? यदि यही उद्देश्य था कि सभी लोग समान रूपसे सोचे और महसूस करें, तो लोगोंकी बुद्धिमे इतना अन्तर क्यो है?—धर्मोंकी कट्टरतासे लेकर प्रतिभा तक।

मै पुस्तकोंमें पढता था कि हमारे पूर्वजोने मानवताको किस प्रकार त्रास दिया। मुझे यह कभी अच्छा नहीं लगा। मैने यह सब पढा, किन्तु इसने कभी मेरे भीतर प्रवेश नही किया। वास्तवमे मज़हबके नामपर किये गये अत्याचारोंको मैंने तब तक गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया जब तक मेरे सामने ईसाइयोद्वारा प्रयुक्त लौह-प्रमाण नहीं आये। मैंने अँगूठोंको दबानेवाले 'स्क्रयू' देखे। जब किसीने या तो बप्तिस्मेके सामर्थ्यसे इनकार किया, अथवा यही कहा कि मै यह नही मानता कि कभी किसी आदमीको डूबनेसे बचानेके लिये, मछली निगल गई, तो वे उसके अँगूठेको इन दोनो लोहेके 'स्क्रयू' के बीचमें रख देते थे और प्रेम तथा सार्वभौम क्षमाके नामपर उन्हे कसना आरम्भ करते थे। जब यह किया जाता

था तो अधिकाश आदमी कह उठते थे—मै पश्चात्ताप करूँगा। शायद मैं भी यही कहता। मै भी कह उठता—"बन्द करो। जो तुम चाहोगे मै उसे स्वीकार कर लूँगा। मै मान लूँगा कि एक ईश्वर है, अथवा दस लाख हैं, एक नरक है अथवा एक अरब नरक। पर इसे बन्द करो।"

लेकिन बीच बीचमे, कभी कभी, कोई एक ऐसा मर्द आ गया है, जो अपनी बातसे एक बाल-भर भी पीछे नहीं हटा। बीच बीचमे कभी कोई ऐसी ऊँची-आत्मा रही है जिसे अपनी मानताके लिये प्राणोका भी मोह नही रहा है। यदि ऐसे आदमी न हुए होते तो आज हम सब जंगली अवस्थामें होते। यदि प्रत्येक युगमे ऐसी कुछ वीर-आत्मायें न हुई होतीं, तो हम अभीतक आदम-खोर अवस्थामें होते, हमारे शरीरपर जगली जानवरोंके चित्र खुदे रहते और हम किसी मृत सर्पके गिर्द नाचते होते।

विरोध, घृणा और मृत्युके बावजूद जो लोग इस शानसे, इस अभिमानसे अपने विश्वासोपर दृढता-पूर्वक अड़े रहे, उनके प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करें।

हमारे उन पूर्वजोके मनमे वीरता किसी प्रकारके आदरकी भावना उत्पन्न नही करती थी। जो आदमी पश्चात्ताप प्रदर्शित नहीं करता था वह क्षमा नहीं किया जाता था। वे वेदनाकी पराकाष्ठा तक उस 'स्क्रयू' को कसते थे; और बादमे उसे किसी अन्धेरे कारागारमे डाल देते थे जहॉ वह दिल दहला देनेवाली शान्तिके बीच तड़प तड़प कर मर जाता। यह प्रेमके नामपर किया जाता, दयाके नामपर किया जाता, दयालु ईसाके नामपर किया जाता।

मैने वह चीज भी देखी है, जिसे यन्त्रणाका कालर कहा जाता है। एक लोहेके चक्रकी कल्पना कीजिये, जिसके अन्दरकी ओर सुईकी नोक जैसी तीखी लगभग एक सौ सुइयॉ लगी हो। यह लोहेका चक्र अभियुक्तके गलेमें बॉध दिया जाता था। तब वह इन सुइयोसे बिना अपनी गर्दन छिदाये न चल सकता था, न बैठा रह सकता था और न हिल-डोल ही सकता था। थोड़ी देरमे गला सूज जाता और दम घुटनेसे उस आदमीकी वेदनाका अन्त हो जाता। इस आदमीने बहुत सम्भव है रोते हुए यह कहनेका अपराध किया हो कि "मै यह नहीं मानता कि हम सबका पिता परमात्मा अपने किसी भी बच्चेको अनन्त कालके लिये रसातल भेज देगा।"

मैंने एक दूसरा चक्र देखा है जिसे 'भंगीकी लड़की' कहा गया है। घास काटनेकी एक बड़ी कैंचीकी कल्पना कीजिये। उसके हत्थे न केवल ठीक जगह बल्कि कैंचीके सिरोंपर भी रहते हैं। जिस जगह कैंचीके दोनों चाकू एक दूसरेपर रहते हैं, उस जगह लोहेका एक चक्कर रहता है। ऊपरके हत्थोंमे हाथ फँसा दिये जायेंगे, नीचेके हत्थेमें पाँव और लोहेके चक्करमें सिर धकेल दिया जायगा। फिर उसे मुँहके बल औंधा जमीनपर गिरा दिया जायगा। उसके स्नायुओंपर इतना अधिक जोर पड़ेगा कि वह पागल हो जायगा।

यह सब उन सज्जनोंद्वारा किया गया जिनका कहना था, "जो तुम्हारे एक गालपर चपत लगाता है, उसके सामने दूसरा भी कर दो।"

मैने एक रैक देखा है। यह एक बक्सेकी तरह होता है। दोनों ओर दो चर्खीयाँ रहती हैं। उन चर्खियोंपर जंजीरें कुछ अपराधीके घुटनोंसे बाँध दी गई, कुछ उसकी कलाइयोंसे। और तब ये पादरी, ये सन्त, इन चर्खियोंको घुमाना आरम्भ करते और घुमाते रहते, घुमाते रहते, तब तक घुमाते रहते जब तक अपराधीके घुटने, घुटनोंके जोड़, कमर, कन्धे, कोहनियाँ और कलाइयाँ—सब टूट टूट न जातीं। और वे अपने पास एक डाक्टरको खड़ा रखते कि वह नब्ज़ देखता रहे। किस लिये? उसका जीवन बचानेके लिये? हाँ। दया करके? नहीं: केवल इस लिये कि वे एक बार फिर उस चर्खीको घुमा सके!

याद रहे, यह सब कुछ सभ्यताके नामपर, कानून और अमनके नामपर, दयाके नामपर, धर्मके नामपर किया गया है और किया गया है अत्यन्त दयालु ईसा-मसीहके नामपर।

कभी कभी जब मैं इन भयानक बातोंके बारेमे पढ़ता और सोचता हूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि मैंने ये सब यन्त्रणाये स्वयं भोगी हैं। मुझे कभी कभी ऐसा लगता है कि मानो मैं जलावतनीके तटपर खड़ा हूँ और आँखोमे आँसू भरकर अपनी जन्म-भूमिकी ओर देख रहा हूँ, मानो मेरी उँगलियोंपरसे नाखून उखाड़े गये हैं और उनमे सुइयाँ चुभोई गई हैं; मानो लोहेके बूटों-द्वारा मेरे पाँवका कचूमर निकाल दिया गया है; मानो मुझे कारागारमे लड

दिया गया है और मै मरते समय अपनेको मुक्त करानेवाले पॉवोंकी आहट सुन रहा हूँ, मानो मैं फॉसीके तख्तेपर खडा हूँ और मेरी गर्दनपर चमकता हुआ कुल्हाडा पड़ने जा रहा है, मानो मुझे चर्खीसे कसा जा रहा है और ढोंगी पादरियोंके चेहरे मुझपर झुके हुए हैं; मानो मुझे अपने बीबी-बच्चोसे दूर ले जाया जा रहा है, मुझे चौरस्तेपर ले जाकर जजीरोंसे जकड दिया गया है; मानो मेरे चारो ओर लकडियॉ चुन दी गई हैं; मानो आगके शोलोंने मेरे अंग-प्रत्यंगपर चढकर मुझे अन्धा बना दिया है, और मानो घृणाके असंख्य हाथोंद्वारा मेरी राख हवामे उड़ा दी गई है। जब जब मुझे ऐसा लगता है, तब तब मै शपथ खाता हूॅ कि जब तक जीवित रहूॅगा तब तक पुरुषों, स्त्रीयो और बच्चोंकी स्वतन्त्रता बनाये रखनेके लिये जो कुछ भी थोडा-बहुत मुझसे हो सकता है, करता रहूॅगा।

यह प्रश्न है न्यायका, दयाका, ईमानदारीका और बौद्धिक-विकासका। यदि संसारमे कोई ऐसा आदमी है जो दूसरोको ठीक वही अधिकार देनेके लिये तैयार नहीं जो वह अपने लिये चाहता है, तो वह उतनी ही मात्रामे मेरी अपेक्षा वर्बरताके अधिक समीप है। यह ईमानदारीका प्रश्न है। जो आदमी दूसरोको वही बौद्धिक अधिकार देनेके लिये तैयार नहीं जो खुद अपने लिये चाहता है बेईमान है, स्वार्थी है, और अत्याचारी है।

जो किसी दूसरेको उसके ईमानदाराना विचारके लिये दोषी ठहराता है, उसका अपना दिमाग विकृत है। यह बौद्धिक-विकासका प्रश्न है।

कुछ समय पूर्व मैने लगभग प्रत्येक मनुष्य-निर्मित चीजके मॉडल देखे। मैंने सारे जल-शिल्पोके मॉडल देखे—उस डोंगीसे लेकर आधुनिक जहाज तक। उस डोंगीमे जो लकडीमें खोद ली गई थी, हमारे पूर्वज—हमारे नंगे पूर्वज—बैठकर तैरते थे। हमारे वे पूर्वज जिनके दॉत दो दो इंचके थे और जिनकी खोपड़ीके पीछेका दिमाग केवल चम्मच-भर। मैने आजके युद्ध-पोतोके नमूने देखे जिनमें सैकडो तोपे और मीलों लम्बी पतवारे हैं। मैने बडे बडे जहाज देखे जो न्यूयार्कके बन्दर-गाहसे सिर उठाते हैं और तीन तीन हजार मील तक प्रत्येक लहरकी गिनती करते हुए आगे बढते हैं।

मैंने मनुष्य-निर्मित आयुधोंके नमूने देखे। एक लाठीसे लेकर आधुनिक तोपोतकके। मैंने एक लाठी देखी जिसका उपयोग हमारा जगली पूर्वज उस समय करता था जब वह गारमेसे निकलकर अपने भोजनके लिये सॉपका शिकार करता था। मैंने उस लाठीसे लेकर क्रुपद्वारा निर्मित तोपोतकके नमूने देखे, जो अट्ठारह इंचके ठोस स्टीलमेसे दो दो हजार पौंडके गोले फेंक सकती हैं।

मैंने कवच भी देखे। एक कछुवेकी खाल देखी जिसे हमारा वीर पूर्वज उस समय छातीपर बॉध लेता था जब अपने देशके लिये लड़ने जाता था। मैंने मध्यकालीन 'कवच' देखे जो तलवारकी नोक और बर्छीकी धारका मजाक उड़ाते थे। मैंने सिरसे पैर तक स्टील ओढे आधुनिक सैनिक देखे।

मैंने उसी समय उनके वाद्य-यन्त्र भी देखे; टॉम-टॉमसे लेकर आजके वाद्य-यन्त्र तक, जो हवाको स्वर-तालकी एकतासे खिला देते हैं।

मैंने उनके चित्र भी देखे, पीले गारेकी पोताईसे लेकर आजकी महान् कला कृतियो तक जो संसारके चित्रागारोको सुशोभित करती है।

मैंने उनकी मूर्तियॉ भी देखी हैं; चार चार टॉगोवाले, आधे-दर्जन हाथोवाले, कई कई नाकोवाले, नाकोकी दो दो तीन तीन पंक्तियोवाले और एक छोटेसे घृणित दिमाग-विहीन सिरवाले भद्दे देवताओंसे लेकर आजकी संग-मरमरकी मूर्तियों तक, जिन्हे प्रतिभाने ऐसा व्यक्तित्व दे दिया है कि वे एकदम प्राणवान् प्रतीत होती है।

मैंने उनकी पुस्तकें देखी, जंगली पशुओकी खालपर लिखी हुई, पत्तोपर लिखी हुई, पेड़ोंकी छालोपर लिखी हुई और आजकी बढ़िया पुस्तके भी, जो हमारे पुस्तकालयोको सजाती हैं। जब मैं पुस्तकालयोकी चर्चा करता हूॅ तो मुझे प्लैटोका कथन याद आता है, "जिस घरमे एक पुस्तकालय है, उसमे आत्माका निवास है।"

मैंने उनके खेतीके औजार देखे, एक टेढी-मेढी लकड़ीसे लेकर जिसमे बॅटे हुए घाससे बैलका सीग बॅधा था आजके खेतीके औजारो तक, जिनसे कोई भी आदमी बिना 'गॅवार' रहे भूमि जोत-बो सकता है।

इन सब चीजोको देख कर मुझे यह मानना पडा कि मानवने उसी मात्रामें प्रगति की है, जिस मात्रामें उसने विचार को श्रमके साथ मिलाया है, जिस मात्रामे प्राकृतिक शक्तियोंके साथ सहयोग किया हैं, जिस मात्रामे अपनी परिस्थितिसे लाभ उठाना सीखा है, जिस मात्रामे अपने आपको भयके बन्धनसे मुक्त किया है, जिस मात्रामे आत्म-निर्भर हुआ है और जिस मात्रामे उसने देवताओपर विश्वास करना छोडा है।

मैंने मानव-खोपडियोकी एक पंक्ति भी देखी—निम्नतम खोपडियों अर्थात् मध्य अफरीकाके, आस्ट्रेलियाके, प्रशान्त महासागरके सुदूर द्वीपोंके जंगली लोगोंकी खोपडियोसे लेकर गत पीढी तककी श्रेष्ठतम खोपडियॉ मैने देखीं। उन खोपड़ियोमें उतना ही अन्तर है जितना उन खोपडियोंसे उत्पन्न पदार्थोंमे। मैंने अपने आपसे कहा—आखिर यह मानसिक-विकासका सीधा सादा प्रश्न है। उन खोपड़ियोमे, उन निम्नतम और श्रेष्ठतम खोपडियोमे वही अन्तर था जो उस डोगी तथा युद्ध-पोतमें, लाठी और क्रुपकी तोपमें, पीले-धब्बो और सुन्दर चित्रोमे, टॉम टॉम और आधुनिक वाद्य-यंत्रोमे।

इस पंक्तिमे पहली और निम्नतक खोपडी वह अन्धेरी गुफा थी जिसमें मानवकी निम्नस्तरकी सहज कमीनी प्रवृत्तियॉ रेंगकर चलती थी, और अन्तिम खोपड़ी वह मन्दिर जिसमें प्रसन्नता, स्वतन्त्रता और प्रेमका निवास था।

यह सारा प्रश्न दिमागका है, मानसिक-विकासका।

यदि हम अपने पूर्वजोंकी अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र हैं, तो इसका कारण यही है कि आज हममेसे हर सामान्य आदमीकी गर्दनपर अच्छा सिर है और उसमे अधिक अच्छा दिमाग है।

अब मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझसे ईमानदारीकी बात करें। मै क्या मानता हूँ अथवा मै क्या सिद्ध करना चाहता हूँ, इससे आपका कुछ आता-जाता नही। आप अपने आपको, कमसे कम इस थोड़ेसे समयके लिये ही सही, धार्मिक पक्ष-पातसे मुक्त कर दें।

थोडी देरके लिए मान लीजिए यदि उस समय कोई राजा रहा होता और कोई पादरी-पुरोहित रहा होता, जिस समय यह महाशय अपनी डोंगीमें इधर उधर तैरते थे और उन्होंने कहा होता --इस डोंगीसे बढकर डोंगी आदमी कभी नहीं बना सकता, इसका नमूना आकाशसे उतरा है, तूफान और बाढ़के ईश्वरके यहाँसे; और कोई भी आदमी, जो कहता है कि वह इसमें एक मस्तूल और एक पाल बाँधकर सुधार कर सकता है, तो वह नास्तिक है और उसे वध-स्थानपर जला दिया जायगा। यदि ऐसा होता तो आपकी आदरणीय सम्मतिमें इसका पृथ्वीके गिर्द घूम सकनेपर क्या प्रभाव पड़ा होता ?

थोड़ी देरके लिये मान लीजिए, यदि उस समय कोई राजा रहा होता और कोई पादरी-पुरोहित भी रहा होता; और मैं मानता हूँ कि रहा होगा क्योंकि वह अन्धकार युग था और इस राजा तथा पुरोहितने कहा होता,— इस टॉम टॉमसे बढकर संगीतकी बात आदमी कभी सोच ही नहीं सकता: स्वर्गमें इसी तरहका संगीत है; स्वर्णिम सूर्यास्तके समय रजत-वर्ण बादलोंमें बैठी हुई एक देवी इस वाद्यको बजा रही थी और वह इसके संगीतमें इतनी अधिक आत्म-विभोर हो गई कि वह उसके हाथसे नीचे गिर पड़ा, और इस प्रकार हमें मिला। यदि कोई आदमी कहता है कि इसमें किसी तरहका सुधार हो सकता है, तो वह नास्तिक है और उसे मृत्यु-दण्ड भुगतना होता। यदि ऐसा होता तो इसका संगीतपर क्या प्रभाव पड़ा होता ? यदि इस मार्गसे चला गया होता, तो आपकी सम्मतिमें, क्या आदमीके कानोंको कभी बीथोवनके दैवी संगीतका परिचय प्राप्त हो सकता ?

थोडी देरके लिये मान लो कि उस राजा तथा पुरोहितने कहा होता:— यह टेडी-मेढी लकडी सर्वश्रेठ हल है। इससे बढकर हलका आविष्कार नहीं हो सकता। इस हलका नमूना एक धार्मिक स्वप्नमे एक भक्त किसानको प्राप्त हुआ था। उसमें जो बँटी हुई घास है, वह बँटी हुई चीजोंमे सर्वश्रेष्ठ है। जो कहता है कि इस हलमें कुछ सुधार किया जा सकता है, वह अनीश्वरवादी है। आपकी सम्मतिमे इसका कृषि-विज्ञानपर क्या प्रभाव पड़ा होता ?

लेकिन लोगोंने कहा और उनके साथ राजा तथा पादरी-पुरोहित बोले— हम अपने ईसाई भाइयोंकी हत्या करनेके लिये श्रेष्ठतर शस्त्र चाहते हैं, श्रेष्ठतर

हल चाहते हैं, श्रेष्ठतर संगीत, श्रेष्ठतर चित्र; और जो कोई भी हमें बढ़िया शस्त्र, बढिया संगीत, रहनेको बढिया घर और बढिया वस्त्र देगा, हम उसे धन और सम्मानसे लाद देंगे। हर आदमीको इन चीजोंमे सुधार करनेके लिये हर तरहसे उत्साहित किया गया। यही कारण है कि लाठी तोप बन गई, डोंगी समुद्री-जहाजमें बदल गई, मिट्टीके धब्बोंके चित्र बन गये; पत्थरके ऊबड़-खाबड़ टूटे-फूटे टुकड़े अन्तमे सुन्दर मूर्तियाँ बन गये।

आपको यह नहीं भूलना चाहिए कि उस डोंगीवाले महाशयका, उस टॉम टॉमके सगीतमें मस्त हो जानेवाले महाशयका और टेढी-मेढी लकडीसे हल जोतनेवाले महाशयका भी अपना एक धर्म था। डोंगीवाला अपने धर्मका कट्टर अनुयायी था। उसे कभी किसी सदेहने हैरान नहीं किया। वह निश्चिन्त जिया और निश्चिन्त ही मर गया। वह नरकमे विश्वास करता था और मानता था कि स्वर्गमे जाकर बहुत प्रसन्न हो सकेगा।

यह बडे खेद और अफ़सोसकी बात है कि इन महाशयने बहुतसे बुद्धिमान् उत्तराधिकारियोंको जन्म दिया। यह भी प्रकृतिका एक बुरा स्वभाव है कि बुद्धिमानोंकी अपेक्षा मूर्खोंकी सख्या अधिक तेजीसे बढती है। यह डोंगीवाले एक शैतानमें विश्वास करते थे और यह शैतान यदि ईश्वरके बराबर शक्तिशाली नहीं तो उससे थोडा चालाक अवश्य था। और आप जानते हैं कि पिछले छः हजार वर्षमे इस शैतानकी शक्लमें कुछ भी तो सुधार नहीं हुआ।

डोंगीवालेका विश्वास था कि ईश्वर अत्याचारी है। यदि कोई किसी आदर्शके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करनेकी कोशिश करेगा, तो वह उसे अनन्त कालके लिये रसातल भेज देगा। उसका विश्वास था कि पृथ्वी चपटी है। वह आग और गधकके दहकते हुए नरकको अक्षरशः सत्य मानता था। राजनीतिके बारेमे भी उसका अपना विचार था। उसका सिद्धान्त था, जिसकी लाठी उसकी भैस। कदाचित् इस सिद्धान्तको उलटकर विश्वास करनेमे और यह माननेमे कि जो उचित है, वही शक्तिमान् हैं, संसारको सहस्रो वर्ष लग जायेगे।

मैं आपसे उन महाशयके धर्म और उनके वाद्य-यंत्रमे भी उसी प्रकार सुधार करनेका अधिकार चाहता हूँ, जैसा कि उनकी राजनीति और उनकी डोंगीमे। मैं चाहता हूँ कि आदमीको सभी दिशाओंमें यह स्वतंत्रता रहे। हम विचार करे, अपने विचारोंको प्रकट करे, खोज करनेवाले बने, अनुयायी नहीं, रेकनेवाले नहीं। यदि स्वर्गमें कोई अनन्त ईश्वर है, तो वह कायरों और ढोंगियोंकी पूजासे कभी प्रसन्न नहीं होगा। ईमानदाराना अविश्वास, ईमानदारीकी नास्तिकता, और ईमानदारीका अनीश्वरवाद स्वर्गको सुगंधिसे भर देगा जब कि पवित्र ढोंगसे—चाहे वह बाहरसे कितना ही धार्मिक क्यो न प्रतीत हो—सड़ाँध पैदा होगी।

जो अधिकार तुम अपने लिये चाहते हो वह सबको दो। अपने दिमागपर प्रकृतिका प्रभाव पड़ने दो। नये विचारोका स्वागत करो। आओ, हम प्रगति करे।

आजका धार्मिक आदमी चाहता है कि उसके जीवनका जहाज कट्टरताके किनारेपर पड़ा रहे और धूपमें सूखता रहे। उसे पुराने मतोके मस्तूलोपर, पुरानी सम्मतियोकी, पालोंके थपेडोंकी आवाज सुनते रहना अच्छा लगता है। उसे बार बार यह दोहराना अच्छा लगता है:—"मेरी सम्मतियोंको मत गडबडाओ, मेरे दिमागको स्थिर रहने दो, यह अब बन चुका है। मैं नहीं चाहता कि इसमें किसी प्रकारकी नास्तिकताका प्रवेश हो। मुझे आगे जानेकी अपेक्षा पीछे जाना पसन्द है।"

जहाँतक मेरी बात है, मै खुले समुद्रमे जाना चाहता हूँ। मै वायु, लहरों और तारागणोंके साथ अपने भाग्यकी परीक्षा करना चाहता हूँ। मै कट्टरताके किसी भी बन्दरगाहपर पड़े पड़े सडते रहनेकी अपेक्षा किसी भी तूफानकी शान और महानतामें विलीन हो जाना अधिक पसन्द करूँगा।

आखिर हम प्रत्येक युगमे कुछ न कुछ उन्नति करते ही जाते हैं। इस समयके सबसे अधिक कट्टर लोग २०० वर्ष पहले नास्तिकताके अपराधमें जला दिये जाते। धर्मने भी ऐसा लगता है कि अपने बावजूद कुछ न कुछ उन्नति की ही है। यह विरोध और निंदा करता हुआ भी प्रगतिकी सेनाके पीछे पीछे

चला आ रहा है। यह अपना विरोध और निंदाका फासला बनाये रखनेके लिए मजबूर है। यदि धर्मने इतनी प्रगति न कर ली होती तो मैं आज अपने विचार न प्रकट कर सकता।

जो कुछ हो, आदमीने उसी मात्रामें प्रगति की है, जिस मात्रामें उसने अपने विचार और श्रमका सम्मिश्रण किया है। वायु और लहरोंपर अधिकार न होनेके कारण, समुद्रकी रहस्यमय गतिका न कुछके बराबर ज्ञान होनेके कारण पवित्र मिथ्याविश्वासी हैं। वही हाल खेतिहरका है, क्योंकि उसका वैभव एक ऐसी बातपर निर्भर करता है जो उसके अधिकारसे बाहर है। लेकिन जब मशीनका पहिया नहीं घूमता है तब कोई मिस्त्री अपने घुटने टेककर किसी दैवी शक्तिकी आशाके भरोसे बैठा नहीं रहता। वह जानता है कि इसका कुछ न कुछ कारण है। वह जानता है कि या तो कोई चीज बहुत बढ गई है, अथवा बहुत छोटी पड गई है; जिससे उसकी मशीनमें कुछ खराबी आ गई है। वह काममे जुट जाता है। यहाँ वहाँ किसी चीजको छोटा या बड़ा करता है और तबतक करता रहता है जबतक पहिया घूमने नहीं लगता। जिस मात्रामें मनुष्यने अपने आपको अपनी आसपासकी प्रकृतिकी गुलामीसे मुक्त किया है, जिस मात्रामें प्रकृतिकी बाधाओंपर अधिकार प्राप्त किया है, ठीक उसी मात्रामे उसने शारीरिक और मानसिक उन्नति की है। जब आदमी प्रगति करता है तो वह अपने अधिकारोंको अधिक महत्त्व देने लगता है। स्वतत्रता एक बड़ी शानदार और महान् वस्तु बन जाती है। जब वह अपने अधिकारोंका मूल्य समझने लगता है, तब दूसरेके अधिकारोंका मूल्य समझना भी प्रारंभ करता है और जब सभी आदमी उन अधिकारोंको जिन्हें वह अपने लिए चाहते हैं दूसरोंको भी देने लगेंगे उस दिन यह ससार स्वर्ग हो जायगा।

कुछ वर्ष पहले लोगोंको राजाकी किसी बातपर आपत्ति करते डर लगता था, पादरी-पुरोहितकी किसी बातपर आपत्ति करते डर लगता था, किसी मतकी छान-बीन करते डर लगता था, किसी पुस्तकको अस्वीकार करते डर लगता था, मिथ्या सिद्धान्तकी निन्दा करते भी डर लगता था, तर्क करते डर लगता था, और विचार करते भी डर लगता था। धनके सामने वे जमीनपर रेंगने लग

जाते थे और पदवियोंके सामने एकदम कमीनेपनका व्यवहार करते थे। यह सब धीरे धीरे निश्चयात्मक रूपसे बदल रहा है। हम अब किसी आदमीके सामने केवल धनी होनेके कारण सिर नहीं झुकाते। हमारे पूर्वज सोनेके बछडेको पूजते थे। आजके अमरीका-वासीके बारेमें अधिकसे अधिक बुरी बात आप यह कह सकते हैं कि वह बछडेके सोनेकी पूजा करता है। बच्चा तक इस भेदको देखने लग गया है।

अब किसी बड़े आदमीकी यह महत्त्वाकांक्षा नहीं होती कि वह राजा या महाराजा बने। अन्तिम नेपोलियन फ्रांसका सम्राट् होने मात्रसे सन्तुष्ट नहीं था। उसके सिरके गिर्द जो सोना लिपटा था उससे वह संतुष्ट नहीं था। वह चाहता था कि वह यह सिद्ध कर सके कि उसके सिरके भीतर भी कोई मूल्यवान् वस्तु है। इसलिये उसने ज्यूलियस सीज़रका जीवन-चरित्र लिखा, ताकि वह फ्रेंच एकैडेमीका सदस्य बन सके। सम्राट्, राजा, और पोप अब अन्य लोगोंकी अपेक्षा ऊँचे नहीं प्रतीत होते। जरा सम्राट् विलियमको दार्शनिक हैकलके साथ खड़ा तो करो। राजा बड़े ऊँचे ऊँचे लोगोंद्वारा अभिषिक्त एक व्यक्ति होता है, जिसका सिर अविकारके दैवी पेट्रोलसे अभिसिंचित किया जाता है। इस सम्राटकी हैकलसे तुलना करो जो कि इन मुकुटधारी बौने लोगोंके बीचमें बुद्धिके पर्वतकी तरह खड़ा है।

संसारने बुद्धि, प्रतिभा और हृदयकी पूजा करनी आरम्भ कर दी है।

हमने प्रगति की है। हमने प्रत्येक दिव्य वीरतापूर्ण आत्मत्यागका, प्रत्येक शौर्य-पूर्ण कार्यका फल पाया है। हमें अपनी अगली पीढ़ीके हाथमें मशाल थमा देनेका प्रयत्न करना चाहिये, उसे थोड़ा और अधिक प्रज्वलित करके, उसे थोड़ा और अधिक प्रकाशित करके।

मुझे आश्चर्य होता है जब मैं सोचता हूँ कि हमारे पूर्वजोंने कितना कष्ट उठाया, जब मैं सोचता हूँ कि वे कितने अधिक समय तक गुलाम रहे, वे सिंहासनके सम्मुख और वेदिकाकी धूलमें कैसे रेंगते और लोटते रहे।

यह संसार कोई पिछले पचास वर्षमें ही आदमीके रहने योग्य नहीं बन गया है। १८०८ तक बर्तानियामें गुलामोंका व्यापार चलता रहा है। उस

समय तक न्यायके नामपर उसके न्यायाधीश और विश्वव्यापी प्रेमके नाम पर उसके पादरी-पुरोहित गुलामोंके व्यापारमे हिस्सा लेते रहे है। इसी वर्ष संयुक्तराज्य अमरीका और दूसरे उपनिवेशोंके बीच गुलामोंका व्यापार बन्द किया गया, किन्तु उसे भिन्न-भिन्न राज्योंके बीच सावधानी-पूर्वक चलता रहने दिया गया। १८३३ की २८ अगस्तको कहीं जाकर वर्तानियाने अपने उपनिवेशोंमें गुलामोंके व्यापारको बन्द किया, और १८६३ की पहली जनवरीको कहीं जाकर अब्राहम लिंकनने हमारी पताकाको उस आकाशकी तरह, जिसमे यह लहराती है, स्वच्छ बनाया।

मेरे विचारमे अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमरीकाके सभापतियोंमे सबसे बडा आदमी था। उसकी समाधिपर यह शब्द लिखे जाने चाहिए:—यहाँ मानव इतिहासका एक ऐसा आदमी सोता है जिसके हाथोंमें असीम अधिकार रहने पर भी, करुणाके पक्षके अतिरिक्त अपने अधिकारका जिसने कभी दुरुपयोग नहीं किया।

जरा सोचें कि हम कितने अधिक काल तक आदमियोंको गुलाम बनाकर रखनेकी प्रथामे चिपटे रहे, कितनी देर तक मजदूरको उसके श्रमके बदलेमें, उसकी पीठपर पडनेवाले कोड़ोके अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता रहा। जरा इस बातको भी सोचे कि इस देशकी धार्मिक वेदिका स्वेच्छासे और जान बूझकर लगभग सौ वर्ष तक ईसामसीहके क्रॉसको एक कोडे लगानेका स्थान बनाये रही।

मै अपने रक्तकी प्रत्येक बूँदसे हर प्रकारके अत्याचारको और हर प्रकारकी गुलामीको घृणाकी दृष्टिसे देखता हूँ। मुझे परतन्त्रतासे घृणा है। मै स्वतन्त्रताको प्यार करता हूँ।

शारीरिक स्वतंत्रतासे मेरा मतलब है वह सब कुछ करनेका अधिकार जो किसी दूसरेके सुखमें बाधा नहीं पहुँचाता। मानसिक स्वतंत्रतासे मेरा मतलब है, सही तौरपर सोचनेका अधिकार और गलत तौरपर सोचनेका अधिकार। विचारद्वारा ही हम सत्यको प्राप्त कर सकते है। यदि हमे पहले ही सत्य प्राप्त हो, तो हमे सोचनेकी आवश्यकता नहीं। एक ही चीजकी अपेक्षा की जा सकती

है और वह है ईमानदारी। अगर किसी [illegible] है। मैं ईमानदारीसे उसकी परीक्षा करता हूँ। [illegible] तब मुझे आपको क्या बताना चाहिए? मुझे [illegible] एक किताब दी जाती है। मुझे बताया [illegible] इल्हामद्वारा लिखी गई है। मैं उसे पढ़ता हूँ। [illegible] मेरे दिल और दिमागको यह लगता है कि यह [illegible] मुझसे पूछते हैं कि तुम क्या सोचते हो? [illegible] हूँ और जब तक मैं कुरानका [illegible] सकती, तो मुझे क्या कहना चाहिए? क्या मुझे [illegible] कि मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं उसे नहीं मानता? [illegible] निवासी कहे कि यह आदमी बड़ा [illegible] है, [illegible] बेईमान है, तो आप उनके बारेमें क्या सोचेंगे?

कल्पना कीजिये कि मैं बाइबल पढ़ना आरम्भ करता हूँ। [illegible] समाप्त करता हूँ तो मुझे पता लगता है कि यह आदमियोंकी लिखी हुई है। एक पादरी पूछता है—"क्या तुमने बाइबल पढ़ी?" मैं उत्तर देता हूँ—"हाँ"। "क्या तुम समझते हो कि यह [illegible] है?" मुझे क्या उत्तर देना चाहिये? क्या मुझे अपने मनमें यह सोचना चाहिये कि यदि मैं धर्म-ग्रन्थोंके ईश्वर वचन होनेसे इंकार करूँगा तो लोग मुझे कभी किसी पदपर प्रतिष्ठित न होने देंगे? मुझे क्या उत्तर देना चाहिये? क्या मुझे एक आदमीकी तरह यही नहीं कहना चाहिये कि मैंने इसे पढ़ा है, मैं इसे नहीं मानता। क्या मुझे अपना वास्तविक विचार प्रकट नहीं करना चाहिये? अथवा मुझे एक ढोंगीकी तरह अपना विचार छिपाकर जो बात मुझे ठीक नहीं जँचती वह कहनी चाहिये, और बादमें जमीनपर रेंगनेवाले लोगोंमेसे एककी तरह व्यवहार करनेके कारण सदैव अपने आपसे घृणा करते रहना चाहिये? मैं तो यही चाहूँगा कि आदमी अपना ईमानदाराना विचार प्रकट कर दे और अपनी आदमीयतकी रक्षा करे। मैं एक नामर्द आस्तिक बननेकी अपेक्षा एक मर्द नास्तिक बनना हजार बार पसन्द करूँगा। और यदि कभी कहीं कोई न्याय-दिवस होगा, जिस दिन सभी लोग किसी ईश्वरके सम्मुख खड़े होंगे, तो मेरा विश्वास है कि मैं उन लोगोंसे ऊँचा खड़ा हो सकूँगा

और अधिक सम्भावना यही है कि न्याय मेरे ही पक्षमे होगा, जो जीवन-भर रेंग कर चलते रहे हैं और जो झूठ-मूठ किसी बातमे विश्वास करनेकी बात कहते हैं।

मैने अपना विचार प्रकट करनेका दृढ निश्चय कर लिया है। मै नम्रतासे बोलूँगा, स्पष्टतासे बोलूँगा, किन्तु बोलूँगा अवश्य। मै जानता हूँ कि हजारो ऐसे आदमी हैं जो बहुत कुछ मेरे ही जैसे विचार रखते हैं, किन्तु उनकी परि-स्थिति उन्हें अपने विचार प्रकट करने नहीं देती। वे गरीब हैं, वे अपना पेट भरनेमें लगे है, और वे जानते हैं कि यदि वे अपने विचारोंको जैसाका तैसा प्रकट करेगे तो लोग उन्हें किसी प्रकारका सरक्षण नहीं देगे, उनके साथ किसी प्रकारका व्यापार नहीं करेगे। वे अपने छोटे बच्चोके लिये भोजन चाहते हैं, उन्हे अपनी पत्नियोंकी चिन्ता है, वे अपनी घर-गृहस्थीका और जीवनका सुख चाहते हैं। प्रत्येक ऐसा आदमी जिस समाजमे वह रहता है, उस समाजके कमीनेपनका प्रमाण-पत्र है। यह सब होने पर भी मै इन लोगोंको अपना विचार प्रकट न कर सकनेके लिये दोषी नही ठहराता। मै उन्हें कहता हूँ; अपने विचार अपने मनमें रखो, जिन्हे तुम प्यार करते हो उन्हे खिलाओ, पहनाओ, मैं तुम्हारी ओरसे तुम्हारी बात करूँगा। पादरी-पुरोहित मुझे भूखा नही मार सकते, मुझे पीस नहीं सकते, मुझे रोक नहीं सकते। मै तुम्हारे विचारोको प्रकट करूँगा।

अत्याचारके लिए एक बहानेबाजी कहो, अथवा गुलामीका औचित्य सिद्ध करनेका एक प्रयत्न कहो, पादरी-पुरोहितोंने यह सिखाया है कि आदमी स्वभावसे ही एकदम पापी है। इस सिद्धान्तकी सत्यताका 'एक मात्र प्रमाण शायद वे स्वयं हैं। सच्ची बात यह है कि हम भले भी हैं और बुरे भी हैं। जो हममे सबसे अधिक बुरे हैं वे भी कुछ अच्छे काम कर सकते हैं, और जो सर्वश्रेष्ठ है उनसे भी बुराई हो सकती है। नीच प्राणी भी ऊपर उठ सकता है, और ऊँचेसे ऊँचा नीचे गिर सकता है। यह एक सफेद झूठ है कि मनुष्य जाति दो बड़े वर्गोंमें बँट सकती है—पापियो और पुण्यात्माओमे। भयानक आपत्तियोंके समय निराश स्त्रियोंके आवाहनपर पादरी-पुरोहितो-द्वारा, निन्दनीय घोषित किये गये आदमी मृत्युकी ओर ऐसे अग्रसर हुए हैं

जैसे किसी जीवन-पर्वकी ओर। इस तरहके आदमियोंके द्वारा ऐसे वीरतापूर्ण आत्म-बलिदानके कार्य होते हैं कि लाखों आदमी न केवल 'जय जयकार' करते हैं, किन्तु आँसुओंसे उनकी पूजा करते हैं। अन्तमें सब मतों और सब धर्मोंसे ऊँची वह दिव्य वस्तु है, जिसका नाम है मानवता।

ऐसे मतों, ऐसी पुस्तकों, ऐसे कानूनों और ऐसे धर्मोको दूर फेंक दो. हमेशाके लिए दूर फेंक दो, जो आदमीसे उसकी स्वतंत्रता और बुद्धिका अपहरण करते हैं। विचारोंको खतरनाक समझनेके विचारको पैरोंके नीचे मसल डालो। आदमी आदमीका मालिक बन सकता है, इस दुष्ट सिद्धान्तको जमीनमें गाड़ दो। आओ, हम अपने दिमागोंपर प्रतिबन्ध लगानेके हर प्रयत्नका जोरसे विरोध करें। यदि कोई ईश्वर नहीं है, तो निश्चयसे उसके सामने झुकना और रेंगना नहीं चाहिए और यदि कहीं कोई ईश्वर है, तो कहीं कोई गुलाम नहीं रहना चाहिए।

स्त्रियोंकी स्वतंत्रता

स्त्रियाँ गुलामोंकी गुलाम रही हैं और मेरी सम्मतिमें निपट गुलामीकी अवस्थासे विवाहकी संस्थातक पहुँचनेमें लाखों वर्ष लगे होंगे। मैं विवाहको आदमियोंकी पवित्रतम संस्था मानता हूँ। बिना चूल्हेके मानव-प्रगति हो नहीं सकती, बिना पारिवारिक सम्बन्धोंके कहीं कोई जीवन-सुख नहीं। अच्छे परिवारोंसे ही हर अच्छी सरकार बनती है। अच्छा परिवार ही किसी अच्छी सरकारकी मूल-भूत इकाई है, और कोई भी चीज़ जो परिवार-संस्थाको नष्ट करना चाहती है, वह एकदम शैतानकी कृति है। मैं विवाह-संस्थामें विश्वास करता हूँ, और मैं उन लम्बे बालोंवाले पुरुषों तथा छोटे बालोंवाली स्त्रियोंकी सम्मतियोंको घृणाकी दृष्टिसे देखता हूँ जो विवाहकी निन्दा करती हैं।

मेरी समझमें किसी भी आदमीकी बड़ीसे बड़ी महत्त्वाकांक्षा यही हो सकती है कि वह ऐसे रहे और अपने दिल और दिमागका ऐसा विकास करे कि किसी 'कल्याणी' के प्रेमका पात्र बन सके; और किसी लड़कीकी भी ऊँचीसे ऊँची आकांक्षा यही हो सकती है कि वह अपने आपको किसी शानके आदमीके प्रेम

और पूजाका पात्र बनाये। विवाह और प्रेमके बिना जीवनमें कहीं कुछ सफलता नहीं है। आप किसी एक कोमल हृदयके स्वामी बन जायँ और वह आपके हृदयकी स्वामिनी बन जाय, यह संसार-भरका राजा बननेसे कहीं अच्छा है। यदि एक पुरुषने किसी एक साध्वी स्त्रीके प्रेमको जीत लिया है, तो फिर मुझे इस बातकी चिन्ता नहीं कि वह एक भिखमंगेकी मौत मर जाता है। उसका जीवन सफल है।

मैं कह चुका हूँ कि निपट गुलामीकी अवस्थासे विवाहकी अवस्था तक पहुँचनेमें लाखो वर्ष लगे। देवियो, आप अपने बदनपर जो गहने पहनें हैं वह आपकी माताओंके बन्धनोंकी यादगार हैं। आपकी गर्दनोंमे पड़ी हुई ज़ंजीर और आपके बाजुओंपर बॅन्धे हुए बाजूबन्द वे बन्धन हे जिन्हे सभ्यताकी जादूकी छड़ीने लोहेसे चमकते हुए सोनेमे बदल दिया है।

लेकिन लगभग हर धर्मने दुनियाकी बुराईके लिये स्त्रीको ही दोषी ठहराया है। क्या ज्ञानकी बात है यह! यदि यह सत्य हो, तो मै केवल पुरुषोंके साथ स्वर्गमें रहनेकी अपेक्षा इस दुःख-भरे संसारमे किसी ऐसी स्त्रीके साथ जिसे प्यार करता हूँ रहना अधिक पसन्द करूँगा।

मैं एक किताबमें पढता हूँ—मैं उसके शब्द नहीं दोहरा सकता, किन्तु भावार्थ मुझे याद है—ईश्वरने संसार और एक पुरुष बनानेका विचार किया। उसने 'न कुछ' लिया और उससे संसार तथा एक पुरुष बनाया। इस पुरुषको उसने एक बागमें रखा। थोड़ी ही देरमें देखा गया कि उसे अकेलापन हैरान करने लगा, वह इस प्रकार इधरसे उधर चक्कर काटता था मानो किसी गाड़ीके लिये प्रतीक्षा कर रहा हो। उसके मनोरंजनका वहाँ कुछ सामान न था—समाचारपत्र तक नहीं। इस प्रकार वह उस बागमे भटकता रहा। अन्तमें ईश्वरने उसे एक साथी दिया।

जिस 'कुछ नहीं' से उसने संसार और एक पुरुष बनाया वह तो समाप्त हो चुकी थी, इस लिये उसने स्त्री बनानेके लिये पुरुषमेसे कुछ हिस्सा लिया। उसने उस पुरुषको सुला दिया। जब वह सो गया तो उसने उसकी एक पसली ली और उससे एक स्त्री बनाई। जब मैं इस बातका विचार

करता हूँ कि ईश्वरने कितने थोड़े कच्चे सामानसे उसकी रचना की, तो मुझे यह एक सचमुच अत्यन्त अद्भुत रचना मालूम देती है। जब स्त्री तैयार हो गई, तो वह पुरुषके पास लाई गई। इस लिये नहीं कि वह देखे कि वह पुरुषको पसन्द करती है या नहीं, किन्तु इस लिये कि पुरुष देखे कि वह स्त्रीको पसन्द करता है या नहीं। उसे वह अच्छी लगी। दोनोंने घर बसाया, उन्हे कहा गया कि वे कुछ काम कर सकते है और एक काम करनेसे उन्हें मना किया गया। लेकिन वह उन्होंने किया ही। मै जानता हूँ कि मैं भी उसे पन्द्रह मिनटमे कर सकता था। उन्हें बागसे निकाल दिया गया और चौकीदारोको आज्ञा हुई कि उन्हे फिर बागमें न घुसने दें।

दुःख-दर्दका आरभ हुआ। चेचक, खॉसी और बुखारने आदमी तक पहुँचनेके लिए दौड लगानी शुरू की। लोगोंके दॉतोंमे दर्द होने लगा, गुलाबके फूलोंमे कॉटे उगने लगे, सॉपोके दॉत विषैले हो गये। लोगोमें धर्म और राजनीतिके झगडे होने लगे, और उस दिनसे आजतक संसारमें दुःख ही दुःख चला आ रहा है।

संसारके लगभग सभी धर्म किसी ऐसी ही कथाके द्वारा दुःखकी व्याख्या करते है।

एक दूसरी किताबमे भी मै इसी परिवर्तनका हाल पढ़ता हूँ। यह पहली किताबसे लगभग चार हजार वर्ष पहले लिखी गई थी। जितने टीकाकार हैं सभीका कहना है कि जो किताब पीछे लिखी गई वही मूल है और जो पहले लिखी गई वह पीछे लिखी-गईकी नकल है! लेकिन मैं चाहूँगा कि आप इस चार पॉच हजार वर्षकी मामूली-सी बातसे अपने मतको गड़बड़ न होने दे। इस दूसरी कथाके अनुसार ब्रह्माने ससार, एक पुरुष और एक स्त्री बनानेका निश्चय किया। उसने संसारकी रचना की, और पुरुष और स्त्रीको बनाकर सिहल द्वीपमें रख दिया। इस वर्णनके अनुसार यह द्वीप इतना सुदर था, जितने सुदरसे सुंदर द्वीपकी आदमी कल्पना कर सकता है। ऐसे पक्षी, ऐसे गीत, ऐसे फूल, और ऐसी हरियाली!

उन दोनोको उस द्वीपमें रखकर ब्रह्मा बोला—"उन्हे कुछ समय तक इकट्ठा रहने दो। क्यो कि मै चाहता हूँ कि विवाहसे पहले सच्चा प्रेम स्थापित हो।"

जब मैंने इस कथाको पढा तो मुझे यह दूसरीकी अपेक्षा इतनी अधिक सुंदर और अच्छी लगी कि मैंने अपने आपको कहा कि यदि इन दोनो कहानियोंमेंसे कभी कोई एक सत्य सिद्ध हो, तो मैं चाहूँगा कि यही कथा हो।

वे इकट्ठे रहे—कोकिलके गानके बीच, चमकते हुए तारोंके बीच, और खिले हुए फूलोंके बीच। उनमें परस्पर प्रेम हो गया। उस सहजीवनकी कल्पना करो। वहॉ कोई यह कहनेवाला नही था कि युवक, तू उसका पालन-पोषण कैसे करेगा? इस तरहकी कोई भी बात नहीं। ब्रह्माने उनका विवाह कर दिया और उन्हें हमेशा उसी द्वीपमे रहनेकी आज्ञा दी। कुछ समयके बाद आदमने हौवासे कहा—(यही उन दोनोंके नाम थे) मै सोचता हूँ कि जरा घूम फिरकर आऊँ। वह उत्तरकी ओर गया। वहॉ उसने देखा कि द्वीपकी पतली-सी गर्दन मुख्य भूमिसे जुडी हुई है। शैतानने जो सदा हमे धोखा देता रहा है—ऐसा दृश्य उपस्थित किया कि उसने लौट कर हौवासे कहा "मुख्य-भूमि इससे हजार गुणा अधिक सुन्दर है। आओ, हम वहॉ चलें।" उसने सभी स्त्रियोंकी तरह कहा—"हमे जो कुछ चाहिये, वह हमारे लिये यहॉ पर्याप्त है। हम यहीं रहें।" लेकिन वह बोला—"हम चले।" हौवाने उसका अनुकरण किया। जब वे द्वीपकी पतली गर्दनपर पहुँचे, उसने हौवाको, एक सज्जन आदमीकी तरह अपनी पीठपर उठाया और उस पार ले गया। ज्यों ही वे उधर गये उन्हे एक आवाज सुनाई दी। पीछे मुड़कर देखा तो द्वीपकी पतली गर्दन समुद्रमें गिर पड़ी थी। ब्रह्मा उन दोनोको शाप देनेको तैयार हुआ।

उस समय पुरुष बोला—"उसे मत दो, मुझे शाप दो। यह उसका नहीं, मेरा अपराध था।"

इसी तरहके पुरुषसे संसारका आरम्भ होना चाहिये था।

ब्रह्माने कहा—"मै उसे क्षमा कर दूँगा, किन्तु तुम्हें नहीं।" तब वह प्रेमसे गद्गद् होकर बोली—"यदि तुम उसे क्षमा नहीं कर सकते, तो मै भी क्षमा नहीं चाहती। मै उसके बिना जीना नहीं चाहती। मैं उसे प्रेम करती हूँ।"

तब ब्रह्माने कहा—" मैं तुम दोनोंको अभय-दान देता हूँ। अबसे मैं तुम्हारी और तुम्हारे बच्चोकी रक्षा करूँगा। "

तबसे मुझे यह ब्रह्मा बहुत अच्छा लगता है। क्या यह कथा पहली कथाकी अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ और शानदार नहीं है ?

और उसी पुस्तकसे मै तुम्हें यह दिखाना चाहता हूँ कि इन दयनीय विधर्मियोंमेसे—जिन्हे हम अपने धर्ममें लानेका प्रयत्न करते हैं—कुछके क्या विचार रहे हैं। हम वहाँ उन विधर्मियोके धर्म-परिवर्तनके लिए धर्मप्रचारक भेजते हैं और यहाँके विधर्मियोंको मारनेके लिए सैनिक भेजते हैं। यदि हम विधर्मियोंका धर्म परिवर्तन कर सकते हैं तो उनका धर्म परिवर्तन क्यो न करे जो घरसे समीपतम हैं ? लेकिन मैं तुम्हें उन विधर्मियोंके विचार दिखाने जा रहा था जिनका हम धर्म परिवर्तन करना चाहते हैं। इस पुस्तकमें कहा गया है—" पुरुष शक्ति है, स्त्री सौंदर्य है; पुरुष साहस है, स्त्री प्रेम है। जब पुरुष स्त्रीसे और स्त्री पुरुषसे प्रेम करती है तो देवता स्वर्ग छोडकर उस घरमे आ बैठते हैं और आनन्दके गीत गाने लगते हैं। "

यह वे आदमी हैं जिनका हम धर्म परिवर्तन करना चाहते हैं। आप जरा इसपर विचार करे। मै कहता हूँ कि जब मैं ये बातें पढता हूँ तो मुझे लगता है कि प्रेम किसी देश-विशेषकी बपौती नहीं है; श्रेष्ठता किसी एक ही जातिमें सीमित नही रहती, और सभी युगोंमें प्रेम तथा दयामें खिलनेवाली कुछ महान् आत्मायें हुई हैं।

मेरे विचारमें औरतका दर्जा मर्दके बराबर है। उसके वे सभी अधिकार हैं जो मेरे हैं बल्कि एक अधिक, और वह है सुरक्षाका अधिकार। यही मेरा सिद्धान्त है। यदि तुम विवाहित हो, तो जिस औरतको तुम प्यार करते हो उसे सुखी रखनेका प्रयत्न करो। जो कोई अपने लिये विवाह करता है; और औरतको इतना प्यार करता है कि वह कहता है कि मै उसे सुखी बनाऊँगा, तो कोई गलती नहीं करता। यही बात उस औरतकी है जो यह कहती है कि मैं उसे सुखी बनाऊँगी। सुखी बनानेका केवल एक ही तरीका है, और वह यह कि किसी दूसरेको सुखी बनाया जाय।

यदि मुझे किसी आदमीसे घृणा है तो वह उस आदमीसे जो कहता है कि मैं परिवारका मुखिया हूँ, जो सोचता है कि मैं मालिक हूँ।

एक युवक और एक युवतीकी कल्पना करो। चन्द्रमाके प्रकाशमें साथ साथ चले जा रहे हैं। कोयल प्रेम और पीड़ाके गीत गा रही है, मानो उसके हृदयमें काँटा चुभा हो। कल्पना करो, उन दोनोंके उस चन्द्रमाकी छायामें, उन तारोंकी छायामें, उन गीतोंके बीच रुककर खड़े हो जानेकी और यह कहनेकी कि हम दोनों यहाँ यह फैसला कर लें कि मालिक कौन है। मैं कहता हूँ कि यह एक बदनाम शब्द है और यह एक अत्यन्त बुरी भावना है। मुझे उस आदमीसे घृणा है जो अपनेको मालिक समझता है, जो अपने परिवारपर शासन करना चाहता है, और जिसके बोलते समय सबको साँस रोककर चुपचाप बैठे रहना पड़ता है मानो उसके मुँहसे मोती झरनेवाले हों। मैं तुम्हें कहता हूँ कि मुझे ऐसे आदमीसे अकथनीय घृणा है।

मुझे सबसे अधिक एक मनहूस शकलवाले आदमीसे घृणा है। उसे दिनकी प्रसन्नताकी हत्या करनेका क्या अधिकार है? उसे जीवनके आनन्दको नष्ट करनेका क्या अधिकार है? जब तुम घर जाओ तो तुम्हे एक प्रकाशकी किरणकी तरह जाना चाहिए ताकि वह रात्रिके समय भी दरवाजों और खिड़कियोंसे निकलकर अँधेरेको प्रकाशमें परिणत कर दे। कुछ आदमी सोचते हैं कि वे दिनभर बहुत बड़ी बड़ी बातोंका विचार करते रहे हैं और इसलिए जब वे घर जायें तो हर किसीको उनके आरामकी चिन्ता करनी चाहिये। एक औरत जो पाँच या छह बच्चोंकी देख-भाल लालन-पालन करती रही है जिनमें एक-दो बीमार हैं, गा-गाकर उनका मन बहलाती रही है, एक गज कपड़ेसे दो गज कपड़ेका काम चलाती रही है और प्रसन्न वदन, इन महाशयके स्वागत और सेवा-शुश्रूषाके लिये भी तैयार है—और यह परिवारके मुखिया हैं मालिक हैं!

तुम दूसरी बात जानते हो? मैं एक कंजूस आदमीसे घृणा करता हूँ। यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि एक ऐसे नगरमें जहाँ आदमीके सामने प्रतिदिन भिखारीका सूखा हाथ और अकाल पीड़ितके सफेद ओठ विद्यमान रहते हैं, कोई भी आदमी पाँच या दस करोड़ रुपये छोड़कर कैसे मर सकता

है ? मै सोच नहीं सकता कि कोई भी आदमी यह सब कैसे सहन कर सकता है और अपने लालचकी मुट्ठीमें दो-चार करोड रुपयोंको कैसे बंद रख सकता है ? मेरी समझमें ही नहीं आता है कि वह यह सब कैसे कर सकता है। यह ऐसा ही है कि हजारों आदमी समुद्रमें डूब रहे हों और कोई एक आदमी लकड़ीके तख्तोंका बडा भारी ढेर लिए किनारेपर बैठा रहे।

क्या तुम जानते हो कि मै कुछ ऐसे आदमियोंसे परिचित हूँ जो अपने दिल और सम्मानके बारेमें तो अपनी स्त्रियोंका विश्वास करेंगे किन्तु अपने बटुएके बारेमे नहीं। जब मैं किसी ऐसे आदमीको देखता हूँ तो मैं हमेशा सोचता हूँ कि यह आदमी जानता है कि इन चीजोंमें अधिक मूल्यवान् कौन है। जरा अपनी स्त्रीको एक भिखमंगिन बनानेकी बातपर विचार करो! जरा सोचो कि उसे तुमसे प्रतिदिन एक अठन्नी, एक या दो रुपये, मॉगने पड़ते हैं। "पिछले सप्ताह जो एक रुपया मैंने तुम्हे दिया था उसका क्या किया ?" जरा ऐसी स्त्रीकी बात सोचो जो तुमसे डरती ही रहती है। यदि मॉ ही भिखमंगिन और कायर होगी, तो उससे तुम कैसे बच्चोंकी आशा कर सकते हो? अरे, मैं कहता हूँ यदि तुम्हारे पास केवल एक ही रुपया हो और तुम्हें उसे खर्च करना हो तो उसे एक राजाकी भॉति खर्च करो, मानो वह एक सूखा पत्ता है और तुम असीम जंगलके स्वामी। उसे खर्च करनेका यही तरीका है। एक राजा होकर अपना पैसा एक भिखमगेकी तरह खर्च करनेकी अपेक्षा मैं यह पसद करूँगा कि मै एक भिखमगा होऊँ और अपना पैसा एक राजाकी तरह खर्च करूँ। यदि पैसेको खर्च होना है तो उसे होने दो।

अपने परिवारके लिये जो कुछ तुम अधिकसे अधिक कर सकते हो करो। प्रयत्न करो कि तुम अधिकसे अधिक चुस्त दिखाई दो। जब विवाहसे पहले तुम दोनो मिलते थे तो तुम कितने फुर्तीले थे। तुम्हारी ऑखोमे चमक थी, तुम्हारे पैर फुर्तीसे उठते थे और तुम एक राजकुमार प्रतीत होते थे। क्या तुम जानते तो कि यह अहंमन्यताकी सीमा है कि तुम यह समझते रहो कि कोई औरत तुमसे हमेशा प्यार करती रहेगी, चाहे तुम कैसी ही मनहूस शकल बनाये रहो। जरा इस बातपर विचार करो। यदि तुम अपनी ओरसे कसर नहीं रखोगे तो पृथ्वीकी कोई भी औरत तुम्हारे प्रति सदैव ईमानदार रहेगी।

कुछ आदमी कहते हैं कि औरतो और ऐसी ही सब बातोंके संबंधमें तुम्हारा सिद्धान्त अमीरोंके लिए बहुत अच्छा है किन्तु गरीबोंके कामका नहीं। मै आज आपको बताता हूँ कि अमीरोंके महलोकी अपेक्षा गरीबोंकी झोपडीमें अधिक प्रेम है। प्रेमभरी छोटीसे छोटी कुटिया वह महल है जो देवताओंके निवास करनेके योग्य है और प्रेमरहित महल वह खोह है जिसमे जंगली पशु ही रह सकते हैं। यह है मेरा सिद्धान्त। तुम इतने गरीब हो ही नहीं सकते कि तुम किसीकी भी मदद न कर सको। अच्छे स्वभावसे बढकर संसारमें कोई दूसरा सस्ता पदार्थ नहीं; और प्रेम ही वह वस्तु है जिसके लेनेवालेको भी दस प्रतिशत लाभ होता है और देनेवालेको भी। मुझे यह मत बताओ कि तुम्हे अमीर बनना है। अमरीकामे बड़ाईका गलत मान-दंड स्थापित हो गया है। हम सोचते हैं कि एक आदमीको बडा होना चाहिये, उसे मशहूर होना चाहिये, उसे बहुत धनी होना चाहिये अथवा उसका नाम हर किसीकी जिह्वापर होना चाहिये। यह सब गलत बात है। प्रसन्न रहनेके लिए धनी होना, बड़ा बनना अथवा शक्तिशाली बनना आवश्यक नहीं। प्रसन्न आदमी ही सफल आदमी है।

प्रसन्नता आत्माका सिक्का है। प्रसन्नता धन है।

कुछ समय पूर्व मै नेपोलियनकी कब्रके पास खडा था—किसी मृत देवताके योग्य वह सुनहरी और शानदार कब्र थी। मै संगमरमरकी उस समाधिको देखता रहा जहाँ आखिरकार उस अशात आदमीने मिट्टीमे शाति पाई। मै उसपर झुक गया और आधुनिक युगके सबसे बडे सैनिकके जीवनपर विचार करने लगा। मैंने उसे देखा, वह सीन नदीके तटपर टहल रहा है और आत्महत्या करनेकी बात सोच रहा है। मैंने उसे तुलानमे देखा—मैंने उसे पैरिसके बाजारोंमें लोगोंकी भीडको दबाते देखा—मैंने उसे इटलीकी सेनाके नायकके रूपमे देखा—मैंने उसे हाथमें तिरगा लिये लोदीका पुल पार करते देखा—मैंने उसे पाषाणस्तूप (पिरामिड) की छायामे मिस्रमे देखा, मैंने उसे आल्पसको जीतते हुए देखा। मैंने उसे मारेंगोमे देखा—उल्म और ऑस्टर लिट्जमें। मैंने उसे रशियामें देखा जहाँ बर्फकी पैदल सेनाने और ठण्डी हवाके झोकोंके घुड़सवारोंने उसकी सेनाको शरदके सूखे पत्तोंकी

तरह बखेर दिया। मैंने उसे लिप्समें देखा—विजित और विपद्ग्रस्त—दस लाख बंदूकों द्वारा पेरिसकी ओर खदेड़े जाते हुए—एक जंगली पशुकी तरह घिरे हुए—एल्बामें निर्वासित। मैंने उसे देखा कि वह वहाँसे भाग निकला है और प्रतिभाके बलपर उसने फिर एक साम्राज्यको हथिया लिया है। मैंने उसे वाटरलूकी भयानक युद्धभूमिमें देखा जहाँ अवसर और भाग्यने मिलकर उसके सौभाग्यको चौपट कर दिया। और मैंने उसे सेंट हेलेनामें देखा जहाँ उसके हाथ पीठके पीछे बँधे हैं और वह समुद्रकी ओर हसरत-भरी निगाहोंसे देख रहा है।

मैंने उन अनाथों और विधवाओंका विचार किया जिनका कि वह कारण था। उन आँसुओंका विचार किया, जो उसकी शानकी रक्षाके लिये बहाये गये थे और उस एकमात्र औरतका विचार किया जिसने उसे प्यार किया था, किन्तु जिसे उसने महत्त्वाकांक्षाके ठण्डे हाथसे अपने दिलसे दूर कर दिया था। और मैंने कहा कि मैं एक किसान होना और लकड़ीकी खड़ाऊँ पहनना कहीं अधिक पसन्द करता। मुझे यह अच्छा लगता कि मैं एक गरीब किसान होता, मेरी प्यारी स्त्री मेरे पास बैठकर कुछ बुन रही होती और मेरे बच्चे मेरे गलेमें हाथ डाले हुए मेरे घुटनोंपर झुके होते। मुझे यह अच्छा लगता कि मैं ज़ोर-ज़बर्दस्ती और हत्याका अवतार—'महान् नैपोलियन' होनेकी अपेक्षा फ्रांसका वह सामान्य आदमी हुआ होता और भविष्यकी वाणी-विहीन शान्त धूलिमें एकाकार हो जाता।

प्रसन्न रहनेके लिये बड़ा बनना आवश्यक नहीं: उदाराशय और प्रेम-भरा हृदय रखनेके लिये धनी बनना आवश्यक नहीं। चाहे तुम धनी हो और चाहे गरीब हो, अपनी पत्नीसे ऐसा व्यवहार करो मानो वह एक सुन्दर पुष्प हो; और तब वह तुम्हारे जीवनको सुगंधि और आनन्दसे भर देगी।

और तुम जानते तो कि यह विचार कितना शानदार है कि जिस स्त्रीसे तुम प्रेम करते तो वह कभी बूढ़ी नहीं होगी। समयकी झुर्रियोंके बीच, वर्षोंके पर्दोंके बीच, यदि तुम वास्तवमें उसे प्यार करते हो तो तुम्हें उसका चेहरा हमेशा एक-जैसा ही दिखाई देता रहेगा और जो औरत किसी पुरुषको सच्चे हृदयसे प्यार करती है, उसके लिए भी वह पुरुष कभी बूढ़ा

नही होता, उसके अंग शिथिल नहीं होते, वह कॉपता नहीं। उसे वह हमेशा जैसेका तैसा ही दिखाई देता रहता है। मुझे इस प्रकार विचार करना अच्छा लगता है, मुझे यह सोचना अच्छा लगता है कि प्रेम अविनाशी है। और इस प्रकार प्रेम करते हुए जीवनकी पहाड़ीसे एक साथ नीचे उतरना, और नीचे उतरते हुए, शायद अपने पोतों तथा पोतियोंके अट्टहासको सुनना, और उस समय सुनना जब कि आयुके वृक्षकी पत्तोंरहित शाखाओंपर आनन्द और प्रेमके पक्षी चहचहा रहे हों, अच्छा लगता है।

मै चूल्हेमें विश्वास रखता हूँ। मै घरके तंत्रमें विश्वास रखता हूँ। मैं परिवारके प्रजा-तंत्रमे विश्वास रखता हूँ। मै स्वतंत्रता, समानता, और प्रेममे विश्वास रखता हूँ।

मानव-जातिने हजारों अपराध किये हैं; लेकिन मेरे पास उसके पक्षमे भी कुछ कहनेको है। देखा जाय, तो संसारकी बनावट ही कुछ ऐसी नहीं है कि इसमें बहुत अच्छे आदमी हो सकें। पहली बात तो यह है कि यह सारीकी सारी ही अधिकतर पापी है। अच्छे आदमियोंको जन्म देनेकी अपेक्षा यह मछली-संस्कृतिको जन्म देनेके लिए कहीं अधिक योग्य है। जहाँ जहाँ स्थल है, उसका आठवाँ हिस्सा भी भूमि और जल-वायुकी दृष्टिसे इस योग्य नहीं कि महान् पुरुषो और स्त्रियोको जन्म दे सके। जिस प्रकार तुम आर्कटिक-समुद्रके बर्फके खेतोमें धान और गेहूँ नहीं उगा सकते, उसी प्रकार नावि उचित भूमि और जलवायुके प्रतिभावान् स्त्री-पुरुष भी पैदा नहीं कर सकते। तुम्हारे पास उचित सामग्री और परिस्थिति होनी चाहिये। आदमी एक उपज है; तुम्हारे पास भूमि और भोजन होना ही चाहिये। प्रकृतिद्वारा उपस्थित की गई बाधाये ऐसी नहीं होनी चाहिये कि कोई आदमी सामान्य श्रम और साहससे उन्हें जीत न सके। इस पृथ्वीपर भूमिकी एक तंग-पेटी है, जो साँपकी तरह टेढी मेढ़ी पृथ्वीके चारो ओर चली गई है। बस उतने ही हिस्सेमें आप प्रतिभावान् पुरुष और स्त्रियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। आदमीको जिस जल-वायुकी आवश्यकता रहती है, पृथ्वीके दक्षिण-गोलार्धमे वह नहीं है, वहाँ अधिकतर समुद्र है। परिणाम यह हुआ है कि हमारी पृथ्वीके दक्षिण गोलार्धने कभी कोई प्रतिभावान् स्त्री या पुरुष पैदा नहीं किया। ठेठ उत्तरमें

प्रतिभा नहीं है—यह अत्यधिक ठंडा है। ठेठ दक्षिणमे भी प्रतिभा नहीं है—यह अत्यधिक गर्म है। शीत ऋतु भी होनी चाहिये और ग्रीष्म ऋतु भी।

कुछ वर्ष पूर्व हम लोग सान्तो दोमिंगो प्रदेशको अपने साम्राज्यमें शामिल करनेकी वात कहते थे। उस समय मैं वाशिंगटनमे था, और इस वातका विरोधी था। मुझे बताया गया कि वहाँका जल-वायु सुखकर है और लगभग हर चीज़ पैदा होती है। मेरा उत्तर था—हमें नहीं चाहिये। यह वैसा देश नहीं हैं जहाँ अच्छे अमरीकी नागरिक पैदा हो सके। ऐसा जलवायु हमे पतित बना देगा। आप वहाँ पाँच हजार पादरी-पुरोहितोंको ले जायँ, पाँच हज़ार शासकोंको ले जायँ, पाँच हजार कालेजके प्रोफेसरोंको ले जायँ और अपनी अपनी स्त्रियोंके साथ बोसटनके पाँच हजार ठोस नौजवानोंको ले जायँ; और उन सबको सान्तो दोमिंगोमे बसा दें। आप देखेंगे कि अगली ही पीढ़ीका ह्रास हो जायगा। जल-वायुका ऐसा ही प्रभाव होता है।

हाँ, विज्ञान शनैः शनैः उस क्षेत्रको विस्तृत करता जा रहा है जहाँ प्रतिभावान् आदमी पैदा हो सकते हैं। यदि हम दूसरे लोककी चिन्ता करनेकी बजाय इस लोककी चिन्ता करें, तो समय पाकर हम इस पृथ्वीको प्रतिभावान् स्त्री-पुरुषोंसे भर दे सकते हैं।

थोड़ेमे मैंने अपने ईमानदाराना विचार प्रकट कर दिये। निस्सन्देह अन्ध श्रद्धाकी अपेक्षा खोज करना अच्छा है। निस्सन्देह भयकी अपेक्षा तर्क अच्छा मार्ग-दर्शक है। इस संसारपर जीवितोंका शासन होना चाहिये, मृतोंका नहीं। किसीकी कब्र कोई सिंहासन नहीं है और किसीकी लाश कोई नरेश नहीं है। आदमीको मुर्दोंकी राखपर जीते रहनेकी कोशिश नहीं करनी चाहिये

आजके धर्म-शास्त्री जो कुछ जानते हैं, मरे हुए धर्म-शास्त्री भी उनसे विशेष नहीं जानते थे, इससे अधिक और कुछ नहीं कहा जा सकता। इस संसारके बारेमें जो कुछ ज्ञात है वह बहुत थोड़ा है, दूसरेके बारेमें तो बिलकुल नहीं।

हमारे पूर्वज मानसिक दास थे और उनके पूर्वज गुलाम थे। हमारे सिद्धान्तोंके निर्माता अज्ञ थे और अत्याचारी थे। हर धार्मिक-रूढिपर चाबुकका चिह्न है, जंजीरका जंग है और चिताकी राख है।

मिथ्या विश्वास गुलामीकी सन्तान है। स्वतन्त्र-चिन्तनसे सत्य पैदा होता है। जब हर किसीको अपने विचार प्रकट करनेका अधिकार होगा, तो हर कोई सभीको अपने चिन्तनका सर्वश्रेष्ठ परिणाम भेंट कर सकेगा।

जब तक स्त्री-पुरुष मठो और मन्दिरोंसे डरते रहेंगे, जब तक पादरी-पुरोहितोंसे भय लगता रहेगा, जब तक लोग किसी भी बातको केवल इस लिये मानते रहेंगे क्यों कि वे उसे समझते नहीं, जब तक अपना आत्म-सम्मान गँवाना सम्मानकी बात रहेगी, जब तक लोग एक किताबको पूजते रहेंगे, तब तक संसार दिमागी-दिवालियोंसे भरा रहेगा।

जब तक स्त्री बाइबलको अपने अधिकारोंका अधिकार-पत्र समझती रहेगी, वह पुरुषकी गुलाम रहेगी। बाइबल किसी स्त्रीने नहीं लिखी है। इसके ढक्कनके नीचे स्त्रीके लिये अपमानकी बातोंके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। वह पुरुषकी मिलकियत मानी गई है। उसे माता बननेके अपराधके लिये क्षमा माँगनी पड़ती है। वह अपने पतिसे उतनी ही नीचे है, जितना नीचा उसका पति ईसा मसीहसे है। उसे बोलनेकी आज्ञा है। बाइबल इतनी अधिक पवित्र है कि उसके गदे होठोसे उसका उच्चारण अनुचित है। स्त्रीको चुपचाप सीखना चाहिये।

सारी बाइबलमें एक भी सभ्य घरका वर्णन नहीं है। स्वतन्त्र माता, स्वतन्त्र और प्रेमल बच्चोका घेरा, अपने पति—एक स्वतंत्र पुरुषद्वारा आदृत स्त्री, यह सब बाइबलके ऋषियोको एकदम अज्ञात था। उन्हें प्रजातंत्रमें श्रद्धा नहीं थी, चूल्हेका जनतंत्र नही भाता था। ये ऋषि बच्चोंके अधिकारके बारेमे कुछ नही जानते थे और ज़बर्दस्ती करनेमें, कोड़ेके शासनमे विश्वास करते थे। उन्हे मानव-अधिकारोंका कुछ ज्ञान न था।

पृथ्वी-तलपर स्वतन्त्र पुरुषो और स्त्रियोंकी एक भी पीढी पैदा नही हुई। अभी वह समय नहीं आया जब हम मानवके 'मत' को लिख सके। जंजी-

रोंके टूटने तक प्रतीक्षा कीजिये। जब तक जेलखानोंको मन्दिर माना जाता है तब तक प्रतीक्षा कीजिये।

इस 'मत' में केवल एक ही शब्द लिखा जायगा—स्वतन्त्रता।

हे स्वतन्त्रते! उत्साही साहित्यिकों, परोपकारियों और कवियोंके कल्पना-लोकसे उतरकर मनुष्यके बच्चोंमें अपना घर बना।

मैं नहीं जानता कि भविष्यमे आदमीके दिमागसे कौनसे आविष्कार, कौनसे विचार उत्पन्न होंगे। मैं नहीं जानता कि भविष्य कितना शानदार होगा। मैं विचारके क्षेत्रमें होनेवाली विजयोंकी कल्पना नहीं कर सकता। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि भविष्यके अनन्त समुद्रमे कोई भी चीज इतनी-श्रेठ, इतनी शानदार आकर कालके तटको स्पर्श नहीं करेगी जितनी श्रेठ और जितनी शानदार है पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंकी स्वतन्त्रता।

बच्चोंकी स्वतंत्रता

यदि स्त्रियाँ गुलाम रही हैं, तो मैं बच्चोंके बारेमे क्या कहूँ?—तंग गलियों और अँधेरी कोठड़ियोंमें रहनेवाले बच्चे, पिताके पैरोंकी आवाज सुनकर पीले पड़ जानेवाले बच्चे, माँके द्वारा अपना नाम लिये जानेपर ही भाग जानेवाले बच्चे, दरिद्रताके बच्चे, अपराधोंके बच्चे, अत्याचारोंके बच्चे, जो कुछ भी वे हों, जीवनके समुद्रपर तैरनेवाले जहाजमेंसे फेंक दिये गये बच्चे, मेरा दिल उन सबमेंसे प्रत्येकके लिये तड़पता है।

मैं आपसे कहता हूँ कि बच्चोंके वही अधिकार हैं जो हमारे, और हमें उनके साथ उसी तरहका व्यवहार करना चाहिये। उनका लालन-पालन प्रेमसे होना चाहिये, दयासे होना चाहिये, कोमलतासे होना चाहिये। उनका लालन-पालन निर्दयतासे नहीं होना चाहिये।

जब तुम्हारा बच्चा कोई झूट बोल दे, तो उसपर इस प्रकार मत टूट पड़ो मानो आकाश ही गिर पड़ा हो। उसके साथ ईमानदारीका व्यवहार करो। क्या तुम यह जानते हो कि अत्याचारी पिताके बच्चे हमेशा झूठ बोलनेवाले होंगे? झूठ एक ओर अत्याचारसे पैदा होता है और दूसरी ओर दुर्बलतासे। जब तुम एक गरीब छोटे बच्चेपर लाठी लेकर दौड़ोगे, तो वह झूठ बोलेगा ही।

मै प्रकृति देवीका कृतज्ञ हूँ कि उसने बच्चेको इतना दिमाग दिया है कि यदि उसका अत्याचारी पिता उसपर आक्रमण करे, तो वह कुछ झूठ बोलकर अपनी आत्मारक्षा कर ले।

जब तुम्हारा बच्चा कोई झूठ बोले, तो उसे ईमानदारीसे बता दो कि तुमने स्वयं भी सैकड़ों झूठ बोले हैं। उसे बता दो कि यह ठीक रास्ता नहीं है और तुमने इसपर चलकर देखा है। एक आदमीने घर छोड़ते समय अपने लडकेसे कहाः—"बेटा, ईमानदारी सबसे अच्छी बात है, मैंने बेइमानी भी करके देखी है।" उसके साथ ईमानदार बनो। थोड़ी देरके लिये मान लो कि तुम अपने पाँच सालके बच्चेसे जितने बड़े हो, तुमसे ठीक उतना ही बडा आदमी यदि हाथमे डण्डा लिये आये और गरजकर पूछे, वह प्लेट किसने तोड़ी? तो तुममेंसे एक भी ऐसा नहीं होगा, जो शपथ खाकर यह न कहे कि तुमने देखा नही अथवा तुम्हारे हाथमे आनेसे पहले ही वह टूटी हुई थी। इन बच्चोके साथ ईमानदारीका व्यवहार क्यो न किया जाय? एक ऐसे आदमीकी कल्पना करो जो स्वयं सट्टा खेलता है लेकिन अपने बच्चेको झूठी गप्प उडानेके अपराधमे चाबुकसे पीटता है। एक वकीलकी कल्पना करो, जो अपने बच्चेको सत्य बात न कहनेके लिये पीटता है, जब कि उसकी अपनी आधी जीविका झूठपर चलती है। एक पादरीकी बात सोचो जो अपने बच्चेको अपने सब विचार प्रकट न करनेके लिए दण्ड देता है।

जब तुम्हारे बच्चेसे कुछ गलती हो जाय, तो उसे अपनी गोदमें ले लो, अपने दिलकी धड़कनको उसके दिलकी धड़कनसे मिला दो। बच्चेको यह मालूम होने दो कि तुम उसे वास्तवमे सच्चे हृदयसे और ईमानदारीसे प्यार करते हो। यह सब होनेपर भी कुछ लोग, भले लोग, जब बच्चेसे कोई गलती हो जाती है, तो उसे घरसे बाहर निकाल देते हैं और कहते हैं:—"अब फिर कभी इस घरको गन्दा न करना।" जरा इसपर विचार करो। और, फिर यही लोग परमात्मासे प्रार्थना करते हैं कि वह उस बच्चेकी देखभाल करे जिसे उन्होंने घरसे निकाल दिया है! जबतक अपने बच्चोके लिये जो कुछ मैं कर सकता हूँ नहीं कर लूँगा, तबतक कभी परमात्मासे अपने बच्चोंकी देख-भाल करनेकी प्रार्थना नहीं करूँगा।

लेकिन मैं अपने बच्चोंसे क्या कहता हूँ—"तुम्हारी जहाँ इच्छा हो, जाओ, तुम जो अपराध कर सकते हो करो, तुम पतनके जिस गर्तमें गिर सकते हो गिरो, पर तुम कभी कोई ऐसा अपराध नहीं कर सकते कि मेरा द्वार, मेरे हाथ, अथवा मेरा हृदय तुम्हारे लिए बंद हो जाय। जबतक जीवित हूँ, तुम्हारा एक सच्चा मित्र बना रहूँगा।"

मैं चाबुकके शासनमें विश्वास नहीं करता। यदि तुम कभी अपने बच्चेको पीटनेके तैयार होते हो, तो मैं चाहूँगा कि पीटते समयका अपना एक फोटो ले लो, जब तुम्हारा चेहरा क्रोधसे लाल हो और छोटे बच्चेका चेहरा आँसुओंसे भीगा हुआ हो। यदि कहीं वह बच्चा मर जाय, तो मुझे इससे अच्छी कोई दूसरी बात नहीं मालूम देती कि उस बच्चेकी कब्रपर जाकर उस फोटोको देखा जाय। मैं कहता हूँ कि यह गलत है, यह बच्चोंके लालन-पालनका तरीका नहीं है। अपने घरको सुखी बनाओ। उनके साथ ईमान-दारीका व्यवहार करो, हरएक चीजमें उन्हें उचित हिस्सा दो।

आप उन्हें थोड़ी स्वतंत्रता दें, उनसे थोड़ा प्रेम करें और तब आप उन्हें घरसे नहीं निकाल सकेंगे। वे वहाँ रहना चाहेंगे। घरको सुखी बनाओ। बच्चे जो खेल खेलना चाहें, उन्हें खेलने दो।

यदि आप बच्चोंको घरमें रखना चाहते हैं तो उन्हें खुले वातावरणमें रहने दें। बच्चे जब पालनेमें झूलते हैं, उसी समयसे यह मत करो, वह मत करो, चिल्लाना आरम्भ न करें। बचपनसे २१ वर्षकी आयु होनेतक बच्चेको हर कदमपर 'यह मत करो, यह मत करो' ही सुनना पड़ता है। जब वह बड़ा होता है तब उसे दूसरे लोग भी 'यह मत करो' कहना आरम्भ करते हैं। उसका संप्रदाय उसे कहता है 'यह मत करो,' उसकी पार्टी उसे कहती है कि 'यह मत करो।'

मुझे इस प्रकारके जीवनसे घृणा है। आप मुझे नास्तिक कहें, अनीश्वर-वादी कहें, जो इच्छा हो कहें, मैं अपने बच्चोंके साथ इस प्रकार व्यवहार करना चाहता हूँ कि वे मेरी कब्रपर आकर सचाईके साथ यह कह सकें—"यहाँ सोनेवालेने कभी हमें एक क्षणके लिये भी कष्ट नहीं दिया। उसके

होठोंसे, जो अब मिट्टी हो गये हैं, कभी एक भी निर्दयतापूर्ण शब्द नहीं निकला।"

लोग यह कहकर कि बच्चे स्वभावसे ही विकृत होते हैं उनपर हर तरहके अत्याचारका औचित्य सिद्ध करते हैं। युगोंसे चले आये अत्याचारके मूलमें यह बच्चोंके स्वभावसे ही विकृत होनेका दुष्ट सिद्धान्त काम करता है। मजहबकी दृष्टिमें बच्चा अपराधकी जीवित मूर्ति है, अनन्त शापका उत्तराधिकारी।

प्राचीन समयमें यह माना जाता था कि कुछ दिन इतने अधिक पवित्र होते हैं कि उन दिनोंमें बच्चे आनन्द मना ही नहीं सकते। जब मैं छोटा था तो इतवारका दिन ऐसा ही पवित्र माना जाता था। शनिवारकी संध्याको जब सूर्यास्त होता, तभीसे, उन दिनों रविवारका आरभ हो जाता। शनिवारकी संध्याको सूर्यास्तकी संध्याके साथ ही साथ रातके अँधेरेसे दस हजार गुना अंधकार घरपर छा जाता। किसीके मुँहसे एक सुखद वचन न निकलता, न कोई हँसता, न कोई मुसकराता। जो बच्चा जितना ही अधिक रोगी दिखाई देता वह उतना ही अधिक पवित्र समझा जाता। यदि तुम कहीं सुपारी जैसी कोई चीज चबाते हुए पकड लिये जाते, तो यह मानव-हृदयकी संपूर्ण विकृतिका दूसरा प्रमाण होता। यह अत्यंत गंभीर रात्रि होती। हर आदमी रोनी शक्ल लिये हुए रहता। मैंने जीवन-भर देखा है कि बहुतसे आदमियोंको जब अजीर्ण होता है तो उस समय वे समझते हैं कि उनका धर्म ज़ोरपर है। यदि अजीर्णकी कोई अचूक ओषधि हाथ लग जाय तो वह धर्मपर की गई कडी चोट सिद्ध हो सकती है।

रविवारके दिन प्रातःकाल गंभीरता अपनी सीमापर पहुँची रहती। उन दिनों चाहे कितनी ही सर्दी पड़ती हो किसी गिरजेमें आग न रहती। यह समझा जाता था कि परमात्माकी प्रार्थना करनेके समय शरीरको किसी भी तरहका आराम मिलना पाप है।

अन्तमें रविवारका दिन समाप्तिपर आता। सूर्यास्त होते ही हम पुनः स्वतंत्र हो जाते। तीन या चार बजेके बीच हम यह देखनेके लिये बाहर निकलते कि सूर्य किस प्रकार नीचे जा रहा है। कभी कभी मुझे ऐसा लगता कि यह

अपने कमीनेपनके कारण जहाँका तहाँ रुका हुआ है। अन्तमें सूर्यास्त होता ही। ज्यों ही सूर्यकी अंतिम किरण क्षितिजके नीचे जाती हमारी टोपियाँ ऊपर उछलतीं और हम एक वार पुनः स्वतंत्र हो जानेकी खुशीमें तालियाँ पीटते।

रविवारके पवित्र दिनमें एक बच्चेकी मुसकराहट पाप मानी जाती थी, जरा इसपर विचार तो करो!

एक बच्चेकी हँसी किसी भी पवित्रतम दिनको और भी अधिक पवित्र बना देगी। इतना सब होनेपर भी अनन्त दण्डके इस दुष्ट सिद्धान्तद्वारा बच्चोंके दिमाग खराब किये गये हैं। कोई भी भाषा इस सिद्धान्तकी दुष्टताकी पर्याप्त निन्दा नहीं कर सकती।

पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंके लिये यह अनन्त-दंडका सिद्धान्त कहाँसे आया? यह किसी दुष्ट पशुकी खोपड़ीकी उपज है। मैं इसे अपने रक्तकी प्रत्येक बूँदके साथ घृणा करता हूँ। क्या तुम यह कहना चाहते हो कि स्वर्गमें कोई ऐसा ईश्वर है जो अपने बच्चोंको ईमानदाराना विचार प्रकट करनेके लिये रसातल भेजेगा? संसारके तमाम जंगलोंमें जितने पत्ते हैं, उनसे दस हजार गुना आदमी तुम्हारे सिद्धान्तके हिसाबसे पापी भरे हैं। क्या तुम यह कहते हो कि यह सब आदमी नरकमें हैं? यह सब आदमी तड़प रहे हैं? यह सब बच्चे अनन्त पीड़ासे पीड़ित हैं? और यह सब इसी प्रकार सदैवके लिये दंडित होते रहेंगे? मैं इस सिद्धान्तको सबसे अधिक दुष्टतापूर्ण झूठ कहता हूँ। यदि कोई आदमी इस सिद्धान्तमें विश्वास करता है और पागल नहीं हो जाता, तो यह समझ लेना चाहिये कि उसका दिल एक साँपका है और उसकी अन्तरात्मा किसी दुष्ट पशुकी।

धर्मके नामपर, क्षमाके नामपर और असीम प्रेमके नामपर इस प्रकारके सिद्धान्त सिखाये और पढाये गये हैं। मेरी प्रार्थना है कि आप ऐसी बातोंसे अपने बच्चोंके दिमाग खराब न करें। उन्हें अपने लिये स्वयं पढ़ने दें, उन्हें अपने लिये स्वयं सोचने दें।

अपने बच्चोंके साथ ऐसा व्यवहार न करें मानो वे सूखे बाँस हों और एक सीधी कतारमें गाड़ दिये जा सकते हैं। उन्हें ऐसे पौधे मानें जिन्हे प्रकाश

और हवाकी आवश्यकता है। उनके साथ ईमानदारीका व्यवहार करें। उन्हे एक मौका दें। यह समझें कि उनके और हमारे अधिकार बराबर हैं। अपने दिमागसे यह बात निकाल दें कि आपको उनपर शासन करना है और उन्हे आपकी आज्ञा माननी है। इस मालिक और गुलामके ख्यालको हमेशाके लिये दूर फेक दें।

पुराने समयमें जब बच्चोको नींद नहीं लगती थी तब उन्हे सोनेपर मजबूर किया जाता था और जब वे सोते रहना चाहते थे तब जागनेपर। मै कहता हूँ कि जब बच्चोंको नींद आये तब उन्हे सोने दो और जब उन्हें नीद न लगे तब उठ जाने दो।

आप कहते है कि ये सिद्धान्त अमीरोंके लिये तो ठीक हैं, किन्तु गरीबोंके लिये नहीं। मै कहता हूँ यदि गरीबोंको अपने बच्चोको एकदम प्रातःकाल उठाना पड़ता हो तो उन्हे एक चपत मारकर उठानेकी बजाय वे एक चुंबनके साथ उतनी ही आसानीसे जगा सकते हैं। अपने बच्चोको स्वतत्रता दो। उन्हें अपने व्यक्तित्वकी रक्षा करने दो। अपने बच्चे जो अच्छी चीज खाना चाहें, खाने दो। यह उनका अपना काम है, तुम्हारा नही। वे जानते हैं कि वे क्या खाना चाहते हैं। यदि उन्हें आरभसे ही स्वतंत्रता दी जाय, तो वे किसी भी डाक्टरकी अपेक्षा अपनी इच्छाको अधिक अच्छी तरह जान लेगे। क्या आप जानते हैं कि चिकित्सा-शास्त्रमे जितनी उन्नति हुई है वह डाक्टरोंके कारण नहीं, किन्तु रोगियोके दुस्साहसके कारण हुई है। हजारों वर्षतक डाक्टर किसी ज्वरग्रस्त आदमीको पानीकी एक बूँद नही पीने देते थे। पानीको वे रोगीके लिये विष समझते थे। लेकिन बीच-बीचमें जब कोई रोगी दुस्साहसी होकर कह उठा है कि मै प्यासा रहनेकी अपेक्षा मर जाना पसन्द करूँगा, तब उसने एक साथ काफी पानी पी लिया है और वह अच्छा हो गया है। जब डाक्टरोंको यह बताया गया, तब उन्होंने उसकी काठीकी तारीफ की है। दुस्साहसी आदमीने पानी पीना जारी रखा है, वह एकदम अच्छा हो गया है और अन्तमे डाक्टर भी कहने लगे हैं कि ज्वरमें पानीसे बढ़कर कोई चीज नहीं। इसीलिये, इस प्रकारकी बातोंमें मै डाक्टरी स्कूलोंके उपदेशोंपर विश्वास करनेकी अपेक्षा प्रकृतिकी आवाजपर विश्वास करना

अधिक पंसद करता हूँ। अपने बच्चोको स्वतंत्रता दो, वे तुम्हारा अनुकरण करेगे। वे बहुत कुछ वही करेगे जो तुम करते हो। किन्तु यदि तुम जोर-जबरदस्ती करोगे, तो समझ लो कि मानव-हृदयमे कुछ ऐसी शानदार चीज है जो विद्रोह करती ही है। क्या तुम जानते हो कि यह संसारका सबसे बडा सौभाग्य है कि लोग इस प्रकार बने हैं। यदि आजसे पाँच सौ वर्ष पूर्व लोग अक्षरशः डाक्टरोकी बात मानते, तो उनका क्या होता ? वे सब मर गये होते। यदि किसी भी समय लोग ईसाई मतके उपदेशोंके अनुसार अक्षरशः चलना स्वीकार करते. तो उनका क्या होता ? उनके दिमागोंमें गोबर भरा रहता। यह बहुत बड़ी बात है कि हमेशा कोई न कोई महान् आदमी पैदा होता रहता है जो किसीकी परवाह नहीं करता, और अपने लिये स्वतंत्रतापूर्वक सोचता है।

मैं बच्चोंको अपने लिये सोचने देनेमें विश्वास करता हूँ। मैं परिवारके जनतंत्रमे विश्वास करता हूँ। यदि इस संसारमें कोई बहुत ही अच्छी चीज है, तो वह घर है जिसमें सभी बराबर हैं।

पुरुष पेड हैं स्त्रियाँ लताये हैं, और बच्चे फूल है।

कला और सदाचार

उच्चतम आत्माभिव्यक्तिका नाम कला है और उसका उद्देश्य भी आत्माभिव्यक्ति ही है। कलाके द्वारा ही विचार दृश्यरूप ग्रहण करते हैं। इन रूपोंकी पृष्ठभूमिमे हैं, इच्छाएँ, कामनाये, विचारमग्न रहनेवाली सहज प्रवृत्ति, मनकी कर्तृत्वशक्ति, वह राग जो रूपोंको रग देता है और उन्हें रगीन वनाता है।

यह कहना अनावश्यक है कि निरपेक्ष सौन्दर्य अथवा निरपेक्ष सदाचार जैसी कोई चीज नहीं। हम यह स्पष्ट रूपसे देखते हैं कि सौन्दर्य और सदाचार दोनों सापेक्ष हैं। हम इस सीमित ज्ञानसे बहुत आगे बढ़ गये हैं कि वस्तुका मूलाधार विचार है और प्लेटोके इस बेहूदा सिद्धान्तसे भी कि वस्तुओंसे बहुत पहलेसे विचारका अस्तित्व है। कमसे कम जहाँ तक आदमीका सम्बन्ध है, उसकी चारों ओरकी परिस्थितिने ही उसके विचारोको जन्म दिया है, उसके दिमागपर चारो ओरकी चीजोकी जो क्रिया और प्रतिक्रिया हुई है उसीसे उसके विचार बने हैं; और जहाँतक आदमीका सम्बन्ध है विचारोंसे पहले वस्तुओका अस्तित्व रहा है। इन वस्तुओका हमपर जो संस्कार पड़ता है, वही हमारा उन वस्तुओका ज्ञान है। वस्तु-सामीग्र (जिसे हम विश्व कहते हैं) और उसका हमपर जो प्रभाव पड़ता है, उन दोनोंके आपसी सम्बन्धसे हमारा ज्ञान सीमित है।

हम किसी भी कार्यको अच्छा या बुरा अपने अनुभव और तर्कके परिणामके अनुसार कहते है। कुछ आकारोका, उनके रंगोंका और प्रकटीकरणके ढंगका हमारे साथ जो सम्बन्ध है उसीके अनुसार चीजें सुन्दर कह-

लाती हैं। सुन्दरका जहाँ स्रोत-स्थान है वहाँ प्रसन्नता है, इन्द्रियोंकी सतुष्टि है, दिमागी खोजका आनन्द है, प्रशंसाका आश्चर्य और रोमाच है।

कला कल्पना-शक्तिको जाग्रत करती है और अन्तरतमको स्फूर्ति देती है। हम कल्पनाद्वारा ही अपने आपको किसी दूसरेके स्थानमें देखते हैं। जब कल्पना शक्तिके पर सिकुड जाते हैं, तो फिर मालिक अपने आपको गुलामकी जगह रखकर विचार नहीं कर सकता, अत्याचारी अपने अत्याचारके शिकार कैदीके हाथ जंजीरसे नहीं बाँध सकता। कल्पनाप्रधान मनुष्य जब भिखमंगेको कुछ देता है तो अपने आपको देता है। जिनके मनमे अत्याचारके विरुद्ध रोष जाग्रत होता है, वे कमसे-कम उस समय ऐसा अनुभव करते हैं, मानों उन्हींपर अत्याचार हो रहा है, और जब वे अत्याचारीपर आक्रमण करते हैं तो उन्हे ऐसा लगता है कि वे आत्म-रक्षा ही कर रहे हैं। प्रेम और करुणा दोनों ही कल्पना-शक्तिके मानस-पुत्र हैं।

हमारे पूर्वज मिल्टन आदिकी धार्मिक कवितायें बड़े ही संतोष और चावके, साथ पढ़ते थे। इन धार्मिक कवियोंके लिखनेका यही उद्देश्य था कि आदमीका दिमाग रोगी है, दुर्बलताओंका घर है, और इसलिए मानव-जातिके नैतिक स्तरको स्वच्छ और सुदृढ बनानेके लिए यह आवश्यक है कि उसपर कवितारूपी पुल्टिस और प्लास्टर बाँधा जाय। सच्चे कलाकारके लिए। वास्तविक प्रतिभावान् व्यक्तिके लिए इस चिकित्सक दृष्टिकोणसे बढकर घृणित कुछ नहीं।

ऐसी कवितायें इस बातको सिद्ध करनेके लिए लिखी जाती थीं कि सदाचारी बनना परलोकके खातेमें पूँजी जमा करना है, और जो कोई भी इन गम्भीर, मनहूस तुकबन्दियोंके अनुसार अपना जीवन यापन करेगा, वह इस संसारमें चाहे कितना ही अधिक दुखी क्यों न रहे, दूसरे संसारमें निस्सन्देह पुरस्कृत होगा। इन कवियोंने यह मान लिया था कि तुकबन्दीका धर्मसे अनिवाय सम्बन्ध है और यह उनका कर्तव्य है कि वह संसारके सभी लोगोको सुखभोगके ‘ जाल ’ में पड़नेसे बचानेका प्रयत्न करे। उन्होने सोद्देश्य लिखा है उनकी नजर स्पष्ट रूपसे सदाचारपर थी। उनकी अपनी योजना थी। वे धर्मोपदेशक थे। उनका उद्देश्य था कि वे संसारको बतायें कि ससार कितन खराब है और वे स्वयं कितने अच्छे हैं।

उन्हे यह कल्पना नहीं हो सकती थी कि कोई भी आदमी इतना प्रसन्न हो सकता है कि प्रकृतिकी प्रत्येक वस्तु उसकी प्रसन्नतामे हिस्सा बॅटाने लगे, उसके लिए पक्षी चहचहाने लगें, उसके आनन्दके कारण गाने लगें, उसके हृदयके आनन्दके प्रकाशमें प्रत्येक वस्तु चमकने लगे। वे इस भावको समझ नहीं सकते थे, वे यह सोच नहीं सकते थे कि हृदयका यह आनन्द कलाकारकी तूलिका और छैनीकी प्रेरक शक्ति है।

उन्हें यह नही लगता था कि ये कवितायें, ये चित्र, ये मूर्तियॉ उस दिमागकी उपज हैं जिसे समुद्र और आकाशने, फूलो और तारोंने, प्रेम और प्रकाशने जन्म दिया है। वे आनन्दसे आन्दोलित नहीं होते थे। वे निरन्तर कर्तव्यके भारसे दवे जाते थे। उन्हें दूसरोको उपदेश देनेकी, दूसरोंके अपराध दिखाने और उन्हे बढा चढाकर बतानेकी इच्छा थी। वे अपने सद्गुणोंका बखान भी करना चाहते थे।

ये धार्मिक कवि अप्रिय सत्य सिखाते थे। ये जीवन-मार्गके हर खभेपर दिशा-निर्देशक हाथद्वारा यह बताते थे कि यह रास्ता कब्रस्तानकी ओर जाता है। उन्हें रक्तवर्ण तरुणोकी अपेक्षा पीतवर्ण तरुण अच्छे लगते थे। वे गम्भीर मुद्रामें उनसे बुढापे और मृत्युकी ही चर्चा करते रहना चाहते थे।

उन्होंने प्रेमकी ऑखोके सम्मुख मृत्युकी खोपड़ी ला रखी। उन्होने फूलोको अपने पैरो तले रौंध डाला और हर मस्तकके लिये कॉटोका ताज तैयार कर दिया।

इन कवियोके अनुसार आनन्दका सदाचारसे विरोध है। इनके मतके अनुसार आदमीको अनन्त कृतज्ञताके भारसे सदा दबा रहना चाहिये। वे जमीनसे थोडा ऊपर उठकर चलते थे। वे पाठकको दबाते थे और उसे लाछित करते थे। उन्हें मानव-जीवनकी निस्सारता, मानव-जातिकी क्षुद्रता और किसी अज्ञात लोकके सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाना अच्छा लगता था। उन्हें हृदयकी कुछ समझ न थी। वे नहीं जानते थे कि बिना अनुरागके सदाचार नहीं होता और वास्तविक अनुरागी ही सदाचारी होता है।

कलाको सदाचार अथवा दुराचारसे कुछ लेना-देना नही। यह अपने अस्तित्वका स्वयं अपनेमे पर्याप्त कारण है। यह अपने ही लिये है।

जो कलाकार उपदेश देनेका प्रयत्न करता है, वह उपदेशक बन जाता है, और जो कलाकार व्यञ्जना अथवा इशारेसे लोगोंको दुश्शीलताकी ओर बढ़ावा देता है वह लुच्चा बन जाता है।

'नग्न' और 'नंगे' में, प्रकृतिस्थ और वस्त्रविहीनमें जमीन-आसमानका अन्तर है। बालककी तरह पवित्र, सहज नग्नकी उपस्थितिमें उन शक्लोंसे बढकर घृणित कोई दूसरी चीज़ हो नहीं सकती जो निम्न-स्तरके सुझाव देती हैं और जो छिपानेकी असमर्थताके कारण प्रकट करनेका बहाना बनाती हैं। वस्त्र-विहीन गँवार है, भद्दा है; नग्न सभ्य है, पवित्र है।

पुरानी यूनानी मूर्तियाँ खुले तौरपर नग्न हैं। उनके स्वतन्त्र सम्पूर्ण अंगों-पर कभी कपडा नहीं पड़ा है। वे निर्दोष हैं। वे पवित्र हैं। वे ओसकी बूँदमें पड़ी हुई प्रातःकालीन तारेकी प्रतिच्छायाकी तरह स्वच्छ हैं।

कार्य और परिस्थितिमे समन्वय स्थापित करनेका नाम ही सदाचार है। यह आचरणका संगीत है। एक सुन्दर मूर्ति अंगोंके आपसी सम्बन्धका संगीत है। हर असाधारण चित्र आकार और रंगका समन्वय है। किसी भी असाधारण मूर्तिको देखनेसे ऐसा नहीं लगता कि वह श्रमका परिणाम है, वह आनन्दकी कृति ही प्रतीत होती है। एक सुन्दर चित्रसे भी कभी श्रमका भास नहीं होता। जितना ही चित्र महान् होता है उतनी ही उसकी रचना सहज-स्वभावसे हुई प्रतीत होती है। उसमें मजबूरीकी भावना नहीं होती, कर्तृत्वकी भावना नहीं होती, जिम्मेवारीकी भावना नहीं होती। जो बात एक स्वस्थ आदमीके लिए आनन्दका विषय होनी चाहिये उसे यह कर्तव्यका विचार भार-रूप बना देता है।

जो कलाकार केवल दूसरोंको नैतिक बनानेके उद्देश्यसे श्रम करता है वह कलाकार न रहकर मजदूर बन जाता है। प्रतिभाकी स्वतन्त्रता समाप्त हो जाती है और कलाकार नागरिकमे विलीन हो जाता है। कोई भी यह कल्पना नहीं कर सकता कि जिन कलाकारोंने प्राचीन मूर्तियोका निर्माण किया है वे यूनानके तरुणोंको माता-पिताका आज्ञाकारी बनाना चाहते थे।

जो उपन्यासकार लोगोंके गले ज़बर्दस्ती नीतिकी बातें उतारना चाहता

है, वह कलाकार नहीं रहता। उपन्यासकारोंके पात्र प्रायः दो तरहके होते हैं—विशेष प्रकारके लोग (टाइप) और उपहासके पात्र (कैरिकेचर)। पहली तरहके लोग कभी हुए नहीं, दूसरी तरहके होगे नहीं। सच्चा कलाकार इनमेंसे किसी भी तरहके पात्रकी रचना नहीं करता। उसके उपन्यासोमे आपको सामान्य लोग, स्वाभाविक लोग, मिलेंगे, जिनके जीवनमें पारस्परिक विरोध और बेमेल बातें दिखाई देगी—वे बाते जो मानवताका अविभाज्य अंग हैं। महान् कलाकार प्रकृतिके सम्मुख दर्पण उपस्थित करता है और उस दर्पणमे सब कुछ ठीक-ठीक दिखाई देता है। क्षुद्र उपन्यासकार और क्षुद्र कलाकार या तो असम्भव विषयोंको लेता है या अत्यन्त असाधारणको। प्रतिभावान् सर्वव्यापक विषयोंको लेकर आगे बढ़ता है। उसके शब्द और उसकी कृतियाँ वस्तुओंकी लहरों और बहावके साथ-साथ आन्दोलित होती हैं। वह सदैवके लिये और सभी जातियोके लिये लिखता और काम करता है।

हजारो सुधारकोंका यह उद्देश्य रहा है कि रागका समूल नाश हो जाय, इच्छाएँ विलीन हो जाएँ। यदि यह सम्भव हो जाय, तो जीवन एक भार हो जायगा और आदमीकी एक मात्र इच्छा रह जायगी—आत्मविनाशकी।

कला अपने उत्कृष्ट रूपमे अनुरागको बढाती है, जीवनको उत्साह प्रदान करती है। अनुरागको बढानेके साथ-साथ यह उसे स्वच्छ और बढिया बनाती जाती है। यह मानवके क्षितिजको बढाती है। जीवनकी केवल भौतिक आवश्यकताये जीवनको कालकोठरी बनाती हैं, एक कारागार बनाती हैं। कलाके प्रभावमें दीवारें बढ़ती हैं, छत ऊपर उठती है और जीवन एक मन्दिर बन जाता है।

कला कोई प्रवचन नहीं है और कलाकार कोई उपदेशक नहीं है। कला किसीको बिना कोई आदेश दिये अपना काम करती है। जो सुन्दर है, वह स्वच्छ बनता है। कलाकी सम्पूर्णता चरित्रकी सम्पूर्णताकी ओर निर्देश करती है।

संगीतमें स्वरोंका मेल जीवनमे मात्राके औचित्यकी शिक्षा देता है। पक्षीके गीतका कोई नैतिक उद्देश्य नहीं रहता, तो भी उसका मनपर प्रभाव पडता है। प्रकृतिमें जो सुन्दर है वह सौंदर्य और सहानुभूतिकी भावना जगाकर हमे

प्रभावित करता है। वह यदि सुन्दर है तो सुन्दर है। उसे तुम्हारी कोई परवाह नहीं। यदि गुलावके लाल रंग और सुगन्धिके भीतर इस प्रकारके वाक्य लिखे रहे कि खराब लड़कोंको भालू खा जाते हैं और ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है, तो गुलावके फूल असहनीय हो जायेंगे।

कलाका काम है इस तरहका वायुमंडल पैदा कर देना जिसमें गुण अपने आप फले फूले। वर्षा बीजोंको कभी व्याख्यान नहीं देती। प्रकाश लताओं और फूलोंके लिये कभी नियम नहीं बनाता।

यह संसार मानव-मस्तिष्कका कोश है। जो प्रतिभावान् हैं वे वस्तुओंके इस कोशमेंसे उपमायें, समानतायें, विरोधोंमें अनुकूलतायें तथा भेदमें समान-रूपता खोज लेते हैं। भाषा केवल चित्रोंके समूहका नाम है। लगभग हर शब्द एक कलाकृति है, चित्र-विशेषका उच्चारण-विशेषद्वारा किया जानेवाला प्रतिनिधित्व है। यह चित्र हमारे सामने न केवल उच्चारण-विशेषको ला उपस्थित करता है, वरन् बाह्य संसारकी किसी वस्तुका चित्र और उसके साथ मनके भीतरकी चीजका चित्र भी। इन्हीं शब्दोंसे जो कि स्वयं किसी समय चित्र थे, दूसरे चित्र बनाये जाते हैं।

महानतम चित्र और महानतम मूर्तियोंकी रचना शब्दोंद्वारा ही हुई है। वे आज भी उतने ही ताजे हैं जितने कि मानवी ओठोंसे निकालनेके समय थे। सत्यके अतिरिक्त और सब चीजोंका ह्रास होता है और उन सबको आवरणकी आवश्यकता रहती है। क्षुद्र आत्माओंको प्रकृतिके सामने लज्जा लगती है। अतिसदाचारी लोग केवल उन भावनाओंको रखनेका झूठा नाटक करते हैं जिनकी किसीको अनुभूति भी न हो। नीतिपूर्ण कविता उस बँधी लहरकी तरह है जिसका पानी हमेशा अपने किनारोंके बाँधसे बँधा रहता है। इसमें कुछ ऐसे रास्ते रहते हैं जिनमेंसे भावनाओंकी तीव्रता चुपके-चुपके बहती रहती है। नीतिपूर्ण कला, चित्र अथवा मूर्तिके निर्माणमें पैरों, चेहरों और चीथड़ोंको ही बनाती है। शरीरके शेष अंग इसे अश्लील प्रतीत होते हैं जिसे यह पवित्रताके साथ प्रकट नहीं कर सकती, उसे ढँकनेका प्रयत्न करती है। आवश्यकताके कारण कलाका यह बौनापन सदाचार बन जाता है, जिसे निर्लज्जतापूर्वक एक गुण कहा जाता है। यह अज्ञानको

पवित्रताका आधार मानती है । इसका आग्रह है कि जो अन्धा है वही सदाचारी हो सकता है ।

कलाका काम है उत्पन्न करना, मिलाना और प्रकट करना । यह विचार, अनुराग, प्रेम और सहज ज्ञानकी उच्चतम अभिव्यक्ति है । यह हमे आवरण-रहित अन्तर्तमका दर्शन करने देती है—अनुरागकी तहतक पहुँचने देती है और प्रेमकी ऊँचाई तथा गहराईको समझनेका अवसर देती है ।

ज्ञानप्रदाता होनेसे, विकासकी कारण होनेसे, शक्तिवर्धक होनेसे और उदाराशयताकी प्रेरक होनेसे कला सभ्य बनानेवाली है । इसका सम्बन्ध सौन्दर्यसे है, अनुरागसे है और आदर्शसे है । यह हृदय-प्रसून है । महान् होनेके लिये उसे मानवकी ओर देखना होगा । उसे अनुभवके अनुरूप, आशाओंके अनुरूप, भयके अनुरूप और मानवकी सम्भावनाओंके अनुरूप बनना होगा । कोई कभी महलका चित्र बनानेकी चिन्ता नहीं करता, क्योंकि उसमें हृदयको स्पर्श करनेवाली कोई चीज नही रहती । महल जिम्मेदारीका प्रतीक है, कारागारका प्रतीक है और है रूढियोका प्रतीक ।

एक झोपड़ीका चित्र, जिसपर एक लता झूल रही है, जिसपर सतोषकी छत है, जहाँ स्वाभाविक धूप-छाँव है, जहाँके पेड़ फलोसे लदे हैं, जहाँके बच्चे प्रसन्न-वदन हैं और जहाँ शहदकी मक्खियाँ भिन-भिना रही हैं—एक कविता है, ससारके रेगिस्तानमें एक मुस्कराहट है ।

मखमली कपडो और गहनोंसे लदी हुई श्रीमतीका चित्र बहुत ही दरिद्र होता है । उसके जीवनमे पर्याप्त स्वतत्रता नहीं है । वह चारो ओरसे घिरी हुई है । वह सुखकी सरलतासे अत्यधिक दूर है । उसके विचारोंमें हिसाब-किताबकी अत्यधिकता है । कला-मात्रमे स्वच्छदता अथवा स्वतन्त्रताका स्पर्श रहता है और हर कलाकारमे कुछ आवारापन रहता है अर्थात् प्रतिभा ।

कलाके नग्नत्वने स्त्रीके सौन्दर्यको पवित्रता दी है । हर यूनानी मूर्ति माताओ और बहनोकी वकालत करती है । इन्ही संगमरमरकी मूर्तियोसे संगीतकी धारा बहती है । उन्होने मानव-हृदयको कोमलता और पूजाकी भावनासे भर दिया है । उन्होने भक्ति, पूजा और प्रेमकी अग्नि प्रज्वलित की है । पंडितमानी

व्यक्ति कवि नहीं है; वह हिसाबी-किताबी है। प्रतिभा आत्म-त्यागमेंसे पैदा होती है, आनन्दमेंसे पैदा होती है, स्वातन्त्र्यमेंसे पैदा होती है। एक क्षणके लिए कार्य-कारणका सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया प्रतीत होता है, मानव सर्वथा मुक्त है। वह अपने प्रति भी ज़िम्मेदार नहीं रहा। सीमाएँ समाप्तप्राय हैं। प्रकृति इच्छाके अधीन हो गई प्रतीत होती है। एकमात्र आदर्श अवशिष्ट है। विश्व संगीतरूप है।

हर मस्तिष्क एक कला-भवन है और हर व्यक्ति कम या अधिक मात्रामें एक कलाकार है। संसारकी दीवारों और ताकोंको सुशोभित करनेवाले चित्र और मूर्तियाँ; और संसारके वाङ्मयके पृष्ठोंको सुशोभित करनेवाले शब्द—सबके सब आरम्भमें मस्तिष्कके निजी कला-भवनको ही सुशोभित करते रहे हैं।

कलाकार अपने मस्तिष्कके चित्रोंसे, जिन्होंने अब दृश्यरूप धारण कर लिया है, तुलना करता है। यह चित्रोंके उन अंशोंको जो सम्पूर्णताके समीपतम हैं, चुनता है, उन्हें इकट्ठा करता है और उनसे फिर नये चित्र, नयी मूर्तियाँ बनाता है; और इस प्रकार वह आदर्शकी रचना करता है।

रूप और रंगके सहारेसे इच्छाओं, कामनाओं और आकांक्षाओंको व्यक्त करना संगमर्मरके माध्यमसे प्रेम, आशा और वीरताको व्यक्त करना, शब्दोंका आधार लेकर स्वप्नों और संस्मरणोंके चित्र बनाना, गानके सहारे उषाकी पवित्रता, मध्याह्नकी कोमलता और रात्रिकी नीरवताको व्यक्त करना; अदृश्य-को दृश्य और स्पर्श करने योग्य बना देना और संसारकी सर्वसामान्य चीजोंको मस्तिष्कके हीरे-मोतियोंसे सजा देना, यही कला है।

वॉल्तेयर

१ भूमिका

एक युगके नास्तिक दूसरे युगके दिव्य सन्त-पुरुष हुए हैं।

पुरातनके नष्टकर्ता नवीनके जन्म-दाता हुए हैं!

जैसे जैसे समय गुज़रता है, पुरातन भी खिसकता जाता है, और उसका स्थान ग्रहण करनेवाला नवीन भी पुराना हो जाता है।

शरीरकी तरह मानसिक संसारमे भी ह्रास और विकास होता है और वृद्धावस्थाकी क़ब्रपर ही तरुणाई खड़ी दिखाई देती है।

नास्तिकोंका जीवन-चरित ही बुद्धिकी प्रगतिका इतिहास है।

राजद्रोहियोंने राजनीतिक अधिकारोंकी रक्षा की है और नास्तिकोने मानसिक स्वतन्त्रताकी।

राज्याधिकारोंपर आक्रमण करना षड्यन्त्र कहा जाता रहा है और पुरोहितोके अधिकारोंपर आक्रमण करना नास्तिकता।

शताब्दियोंतक खड्ग और क्रॉस परस्पर सहायक रहे हैं। दोनोंने मिलकर मानवके अधिकारोपर आक्रमण किया है। दोनो परस्पर एक दूसरेका बचाव करते रहे हैं।

सिंहासन और वेदिका—दोनो जुडवे बच्चे थे; एक ही अण्डेसे पैदा हुए दो गीध।

जेम्ज़ प्रथमने कहा: "यदि बिशप नहीं, तो राजा भी नहीं।" वह यह भी कह सकता था: "यदि क्रॉस नहीं, तो ताज भी नही।" राजाका लोगोंके शरीरपर अधिकार था और पादरी-पुरोहितका आत्माओंपर। एक जोर-जबर्दस्ती उगाहे गये करपर जीवित रहता था, दूसरा भयभीत बनाकर प्राप्त किये गये दानपर। दोनो डाकू, दोनों भिखमंगे।

ये डाकू और ये भिखमंगे दोनो लोकोपर शासन करते थे। राजा कानूनोंकी रचना करता था, और पादरी-पुरोहित धार्मिक-मतोंकी। दोनों ईश्वरसे अधिकार प्राप्त करनेका दावा करते थे; दोनो अनन्तके एजेण्ट थे, भू-भारसे झुकी हुई कमरपर लोग एकका बोझा ढोते थे और आश्चर्यसे फूले हुए मुँहसे दूसरेके धार्मिक सिद्धान्त सुनते थे।

यदि लोग स्वतंत्र होनेकी आकांक्षा करते, तो वे राजाद्वारा कुचल दिये जाते और हर पादरी पुरोहित एक कंस है जो दिमागी संतानकी हत्या करता रहता है।

राजा बलसे शासन करता था, पादरी-पुरोहित भयसे, और दोनोंसे।

राजाने लोगोंसे कहा:—"ईश्वरने तुम्हे किसान बनाया है और मुझे नरेश; उसने तुम्हे श्रम करनेके लिए पैदा किया है और मुझे मौज उड़ानेके लिए। उसने तुम्हारे लिए चीथड़े पैदा किये हैं और मेरे लिए शानदार कपड़े तथा महल। उसने तुम्हे आज्ञा माननेके लिए पैदा किया है और मुझे आज्ञा देनेके लिए। यही ईश्वरीय न्याय है।

और पुरोहितने कहा—"ईश्वरने तुम्हे अज्ञानी और अपवित्र पैदा किया और मुझे बुद्धिमान् तथा पवित्र; तुम यहाँ मेरी आज्ञाका पालन नहीं करोगे तो ईश्वर तुम्हें यहाँ दंड देगा और बादमे दूसरे लोकमे हमेशाके लिए यंत्रणा देता रहेगा। यही ईश्वरीय करुणा है।"

"तुम्हें तर्क नहीं करना चाहिये। तर्क विद्रोह है। तुम्हे विरोध नहीं करना चाहिए—विरोधका जनक अहंकार है; तुम्हे विश्वास करना चाहिए। जिसे सुननेके लिए कान मिले हैं वह सुने।" स्वर्ग श्रवणेन्द्रियका विषय था।

यह हमारा सौभाग्य है कि दुनियाने अनेक धर्मद्रोही हुए, नास्तिक हुए, खोजी हुए, स्वतन्त्रताके प्रेमी हुए और ऐसे प्रतिभावान् मनीषी हुए, जिन्होने अपने मानव-बंधुओकी जीवन-परिस्थितिको सुधारनेके लिये अपने जीवनका बलिदान कर दिया।

यहाँ यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि वास्तवमे बड़ा कौन है?

महान् आदमी मानवीय ज्ञानकी पूँजीमे वृद्धि करता है, विचारके क्षितिज

विशालतर बनाता है, अज्ञात और रहस्यपूर्ण समुद्रको लाँघता है। महान् आदमी
यशके पीछे नहीं भागता, सत्य खोजता है। वह प्रसन्नताके मार्गकी
तलाशमे रहता है; और वह जिन निश्चयोपर पहुँचता है उन्हे दूसरोमे वितरित
करता है। महान् आदमी सुअरोके सामने मोती बखेर देता है और वे सुअर
कभी कभी आदमी बन जाते हैं। यदि महान् आदमियोने अपने मोती अपने ही
पास रहने दिये होते, तो सारी जनता आज भी बर्बर अवस्थामें होती।

महान् आदमी अधकारमे प्रकाश है, मिथ्या-विश्वासकी अँधेरी रात्रिमें एक
मशाल है, एक प्रेरणा है और एक भविष्य-वाणी है।

महानता बहुमतका दान नही है, यह किसीपर लादी नही जा सकती,
आदमी इसे एक दूसरेको दे नही सकते; वे पद और शक्ति दे सकते है,
किन्तु महानता नही।

स्थान किसीको आदमी नही बनाता और न राजदण्ड राजा। महानता
अंदरकी चीज है।

जिन वीरोने आदमियोको बधनमुक्त किया, वे महान् हैं। जिन दार्शनिकोने
और चितकोने आदमीके अध्यात्मको मुक्त किया वे महान् हैं। जिन कवियोने
साधारणको असाधारण रूप दे लाखो करोड़ो आदमियोके जीवनको प्रेम और
संगीतसे भर दिया, वे महान् है।

वीरोकी इस सेनाके सेनापतिके रूपमे वॉल्तेयर हमारे सामने आ
उपस्थित होता है। आज हम उसीकी स्मृतिमे श्रद्धाजलि अर्पण करने
जा रहे हैं।

वॉल्तेयरका नाम सुनकर लोग प्रशसा करते हैं और पादरी-पुरोहित निदा।
किसी पादरीकी उपस्थितिमे आप इस नामका उच्चारण कीजिये तो लगेगा कि
आपने युद्धकी घोषणा कर दी है। यह नाम लीजिये और पादरी अपनी सारी
शालीनताको भूलकर अपशब्दोकी बौछार आरभ कर देगा। यह सब होनेपर
भी वॉल्तेयर अपनी शताब्दीका महान्तम व्यक्ति था। उसने मानव-जातिकी
स्वतंत्रताके लिए सभी मानव-पुत्रोंसे अधिक कार्य किया।

रविवारके दिन, सन् १६९४ के नवम्बर मासकी २१ तारीखको, एक शिशुने
जन्म लिया—एक शिशुने जो इतना कमजोर था कि साँस अटकी रहनेमें

झिझकती थी। माता-पिताका प्रयत्न था कि बच्चेका बपतिस्मा यथा-संभव शीघ्र हो जाय। वे बच्चेकी आत्माकी सुरक्षा चाहते थे। वे जानते थे कि यदि कहीं बपतिस्मा होनेके पहले ही मृत्यु आ गई तो बच्चेको अनन्त कालतक यंत्रणाकी पीड़ा सहनी होगी।

जब वॉल्तेयर मूर्खोंके इस महान् रंगमंचपर आया, उसका देश चौदह सौ वर्षतक ईसाई रह चुका था।—सभ्य नहीं। एक हजार वर्षतक इस शान्ति और सद्भावनाके धर्मकी प्रधानता रही। ईसाई राजाओंने बुद्धिमान् और पवित्र आदमियोंद्वारा अनुमोदित कानून चालू किये थे।

ईमानदारीसे अपनी बात कहना, अपने मानव-बंधुओंको शिक्षित बनाना, स्वयं खोज करना तथा सत्यका अन्वेषण करना—ये सब अपराध थे।

ईश्वरके विश्वासियोंने—प्रेमरूप ईश्वरके विश्वासियोंने—इस प्रकारके अपराधियोंको यत्रणा और मृत्युसे दंडित किया। संदिग्ध व्यक्तियोंसे अपराध स्वीकार करानेके लिये उन्हे तरह तरहसे पीड़ित किया।

१६९४ मे सभी लेखकोंका जीवन राजा और पुरोहितोंकी दयापर निर्भर करता था। उनमेंसे अधिकांश या तो जेलोंमें थे, या जुर्माने करके दरिद्र बना दिये गये, या जलावतन कर दिये गये और मृत्युके घाट उतार दिये गये।

जल्लादोंको जब कभी अपने कामसे कुछ छुट्टी मिलती तो उनके समयका सदुपयोग पुस्तके जलानेमें होता।

न्यायालय वे फदे थे जिनमे भोले भाले लोग सरलतासे फँस जाते थे। न्यायाधीश उतने ही दुष्ट और निर्दय थे जितने कि बिशप।

क्यों कि गवाहोको यंत्रणा दी जा सकती थी, इसलिए वे प्रायः वैसी ही गवाही देते थे जैसी न्यायाधिश चाहते थे।

संसारमे पराप्राकृतिक और करिश्मोका राज्य था। यद्यपि कोई बात समझमें नहीं आती थी, तो भी हर चीजकी व्याख्या की जाती थी। ईसाइयत सर्वोपरि थी। रोगी पादरियोंसे कागजके तावीज खरीदते थे। लोग बीमार पडनेपर डॉक्टरको न बुलाकर पादरी-पुरोहित बुलाते थे और ये लोग इन मरणशील रोगियोंके हाथ कागजके टुकड़े बेचते थे। इन कागजके टुकड़ोंको सभी बातोंके लिये अचूक कहा जाता था। यदि बच्चेके पालनेमे एक टुकड़ा

रख दिया जाय तो वह बच्चेको जादू टोनेसे बचाये रखे। यदि अनाजके ढोलमें डाल दिया जाय तो अनाजको चूहे न खायँ। यदि घरमें रख लिया जाय तो घर भूत-प्रेतोंसे सुरक्षित रहे। यदि खेतमें दफना दिया जाय, तो समयपर वर्षा हो और फसल खूब ही अच्छी हो।

उस समय न कहीं वास्तविक स्वतंत्रता थी, न वास्तविक शिक्षा, न वास्तविक दर्शनशास्त्र, न वास्तविक विज्ञान—अंधविश्वास और मिथ्याविश्वासके अतिरिक्त कुछ नहीं। संसार शैतान और ईसाइयतके अधिकारमें था।

जब वॉल्तेयरका जन्म हुआ, फ्रांसपर पादरियोंका राज्य था। यह लगभग सर्वव्यापी अनाचारका युग था। पादरी-पुरोहित प्रायः स्वच्छन्द थे, और न्यायाधीश निर्दय तथा रिश्वतखोर। राजाका महल वैश्या-गृह बना हुआ था। जनसाधारणके साथ पशुओंका-सा बर्ताव होता था। ईसाई पादरियोंको यह सुखद स्थिति लानेमें एक हजार वर्ष लगे।

अजानेमें ही हर राजपुरुष और पुरोहित द्वारा क्रांतिके बीज बोये जा रहे थे। लोगोंके दिलमें रक्तकी इच्छा पैदा हो गई थी। वे मजदूर—जो धूपसे काले पड़ गये थे; जिनकी कमरें परिश्रमसे झुक गई थीं, जिन्हें अभावने कुरूप बना दिया था—जब श्वेत-ग्रीवा स्त्रियोंको देखते थे तो उनकी इच्छा होती थी कि उनके सिर काट डाले।

किसी महान् आदमीका मूल्यांकन करनेके लिए हमें उसकी परिस्थितिका यथार्थ ज्ञान होना चाहिये। हमें उस नाटककी सीमाका ज्ञान होना चाहिये जिसमें वह पात्र बना और हमें उसके दर्शकोंका भी ज्ञान होना चाहिये।

इंग्लैंडमें लोगोंको देशभक्त बनानेके लिये राज्यकी ओरसे चाबुक बाँधनेकी रस्सी और कुल्हाडीका उपयोग होता था।

स्पेनमें धार्मिक अत्याचार अपने पूरे जोरपर था और यंत्रणाके सभी साधनोंका उपयोग कर दिमागके विकासको रोका जा रहा था।

पुर्तगालमें 'पवित्र दिन' पर मास खानेके अपराधपर स्त्रियाँ और बच्चे जलाये जा रहे थे और यह होता था करुणामय भगवानकी प्रसन्नताके लिये।

इटलीमें सारी जाति पादरियोंके पैरोंतले रौंधी जा रही थी। प्रार्थनाके लिये

परस्पर जुडनेवाले हाथ, उसी उत्साहसे चिताओके लिये लकड़ियाँ इकट्ठी करते थे।

जर्मनीमे आदमीके शत्रुके साथ समझाता करनेका दोप लगाकर पुरुपों और स्त्रियोंको जलाया जा रहा था।

और हमारी अपनी सुरम्य भूमिमे दूसरे तटसे पुरुषो और स्त्रियोको चुराया जाता था, बच्चोको उनकी माताओकी छातियोंसे छीन लिया जाता था और दासोके श्रमकी कोडोंसे पूजा होती थी।

मिथ्या-विश्वास ही संसारका शासक था।

फ्रांसमें जनता राजाकी स्वच्छन्दताकी शिकार थी। हर कहीं वेस्टाइलकी मनहूस छाया थी। उससे न कहीं कोई खेत बचा था और न कोई घर।

२ तरुणाई

वॉल्तेयर सामान्य-परिवारमे पैदा हुआ था। उस समयकी भापाके अनुसार उसके कोई 'पूर्वज' न थे। उसका वास्तविक नाम फ्रासुवा मॅरी अरुत (Francois Marie Arouet) था। उसकी माँ मार ग्यूरिते दौमर्द (Mar Guerite D'aumaid) थी। जब उसकी आयु सात वर्षकी थी, तभी इस माताका देहात हो गया। उसका एक बड़ा भाई था। नाम आर्मन (Arman) बड़ा भक्त, बड़ा धार्मिक, और एकदम बेमेल। यह भाई अपने भाईकी नास्तिकताके प्रायश्चित्तस्वरूप ईसाई पादरियोको पूजा भेट चढाता रहता था। जहाँतक हम जानते हैं उसका कोई भी पूर्वज साहित्यिक नहीं था।

वॉल्तेयरका पिता चाहता था कि वॉल्तेयर एक वकील बने, किन्तु उसकी कानूनमे एकदम रुचि न थी। दस वर्षकी आयु होनेपर वह लुई ल ग्रा (Louis le grand) विद्यालयमे भरती हुआ। यहाँ वह १७ वर्पकी आयुतक अर्थात् ७ वर्ष पढा। इसके अतिरिक्त वह और किसी विद्यालयमे नहीं गया। वॉल्तेयरने लिखा है कि उसने उस विद्यालयमे थोडी ग्रीक, पर्याप्त लैटिन और बहुत-सी बेहूदगियोके अतिरिक्त और कुछ नहीं सीखा।

लुई ल ग्रा के विद्यालयमे भूगोल, इतिहास, गणित अथवा कोई दूसरा विज्ञान नही पढाया जाता था। उन दिनो राज्य धर्मकी ही ढाल बनता था,

रक्षा करता था और उसे पोसता था। समस्त धर्मकी ओटमें बंदूकें थीं, कुल्हाड़ियॉ थी, चितायें थीं, और यंत्रणा-गृह थे।

जिस समय वॉल्तेयर विद्यालयमे पढ रहा था, उस समय राजाके सिपाही प्रोटेस्टंट लोगोंको खोज खोजकर मैजिस्ट्रेटोंके सामने ला रहे थे ताकि वे उन्हे यन्त्रणा दें, फॉसीपर चढाये अथवा जीते जी जला दें।

१० वर्षकी आयु होनेपर वॉल्तेयरने अपना जीवन साहित्यको समर्पित करनेका निश्चय किया। अपने दोनों पुत्रोंकी चर्चा करते हुए उनके पिताने कहा—"मेरे दोनों पुत्र मूर्ख हैं, एक पद्यमे, दूसरा गद्यमें।"

१७१३ में वॉल्तेयर एक-छोटा-मोटा कूटनीतिज्ञ बन गया। फ्रांसके मंत्रीके साथ लगकर वह हेग (Hague) गया। वहॉ वह प्रेमके चक्करमें पड़ गया। लड़कीकी मॉने आपत्ति की। वॉल्तेयरने अपनी प्रेयसीके पास अपने कपडे भेजे, ताकि वह उससे भेंट कर सके। सब कुछ पता लग गया। वह नौकरीसे हटा दिया गया। इस लड़कीकीको उसने एक पत्र लिखा, उससे वॉल्तेयरका जीवन-सूत्र समझमें आता है। उसने लिखा "अपनी मॉके गुस्सेसे अपनी रक्षा करो। तुम जानती हो कि वह क्या कुछ कर सकती है। तुम्हे इसका पूरा अनुभव है। तुम्हारे लिये एक ही रास्ता है, ढोंग या ठगी। उसे कहो कि तुम मुझे भूल गई हो और मुझसे घृणा करती हो। उसे यह सब कहकर तुम मुझसे और भी अधिक प्रेम करो।"

इस घटनाके परिणामस्वरूप वॉल्तेयरके पिताने उसे अपनी संपत्तिके उत्तराधिकारसे वंचित कर दिया। पिता उसके लिये एक सरकारी आज्ञा ले आया, जिसके अनुसार वह जेल भी जा सकता था और समुद्रपार जलावतन भी हो सकता था। वॉल्तेयरने वकील बनना स्वीकार किया।

१४ वे लुईकी मृत्यु होनेपर राजकुमार अधिकाररूढ हुआ। उस समय कारागारोंके दरवाजे खोले गये। उसने सब कैदियोंकी सूची मॅगवाई। उसे पता लगा कि अधिकांश कैदियोंके बारेमे कोई यह भी नही जानता कि वह क्यो जेलमें डाले गये थे। उन्हें जेलमें डालकर भुला दिया गया था। बहुतसे कैदी अपने आपको पहचानते नही थे, और वह इस बातका अनुमान भी नहीं लगा सकते थे कि वे क्यो पकड़े गये। एक इटली-निवासी कैदी बिना

यह जाने कि वह क्यों पकड़ा गया ३२ वर्षतक जेलमें रहा। वह बूढा हो गया था। जब उसे मुक्त करनेकी बात कही गई, तो उसने प्रार्थना की कि शेष जीवन भी उसे वहीं बिताने दिया जाय जहाँ वह अबतक रहा है। कैदियोंको क्षमा कर दिया गया। किन्तु शीघ्र ही उनका स्थान दूसरोंने ले लिया।

इस समय वॉल्तेयरको धर्म अथवा शासनका विशेष ज्ञान न था। वह कविता लिखनेमें लगा था।

उसपर कुछ चुभती हुई चीजें लिखनेका आरोप लगाया गया। उसे २०० मील दूर तुले (Tulle) में निर्वासित कर दिया गया। यहाँसे उसने अपने निजी ढंगसे लिखा—" मैं यहाँ एक ग्राम-गृहमें हूँ। यदि मुझे यहाँ निर्वासित न किया होता तो यह स्थान मेरे लिए सबसे अधिक अनुकूल होता। यहाँ किसी भी चीजकी कमी नहीं है। यदि कमी है तो केवल इस स्थानको छोड़कर चले जानेकी स्वतंत्रताकी। यदि मुझे यहाँसे चले जानेकी छुट्टी होती, तो यहाँ रहनेमें बड़ा आनन्द था। "

उसका निर्वासन-काल समाप्त हुआ। उसे फिर पकड़ लिया गया। इस बार उसे बेस्टाइल भेजा गया जहाँ वह एक वर्ष रहा। जेलमें ही उसने अपना नाम फ्रांसुवा मॅरी अरुत बदलकर वॉल्तेयर कर लिया। तबसे वह इसी नामसे प्रसिद्ध हुआ।

वॉल्तेयर उसी प्रकार जीवन-शक्तिसे ओतप्रोत था, जैसे वसंत फूलोंसे। उसने राजकुमारों और राजाओंको चोट पहुँचाकर लगभग सभी विषयोंपर अपने विचार प्रकट किये हैं। उसे इंग्लैंड जलावतन कर दिया गया। वह ब्रिटेनके ऊँचेसे ऊँचे और श्रेष्ठसे श्रेष्ठ व्यक्तियोंसे परिचित रहा।

२ जीवनका उषाकाल

वॉल्तेयरने विचार करना, संदेह करना तथा खोज करना आरंभ किया। उसने ईसाई धर्म तथा मतके इतिहासका अध्ययन किया। उसे पता लगा कि उसके समयका धर्म धार्मिक ग्रन्थोंके इलहामी माने जानेपर निर्भर करता है, ईसाई मतके दोषमुक्त माने जानेपर निर्भर करता है, पागल तपस्वियोंके

स्वप्नोंपर निर्भर करता है, संतोंकी गलतियों और मिथ्या बातोंपर निर्भर करता है, पादरी पुरोहितोंकी ठग-विद्यापर निर्भर करता है, और निर्भर करता है लोगोंकी मूर्खतापर।

वॉल्तेयरको पता लगा कि पागलपनसे भरे इस मतने संसारको अत्याचार और भयसे भर दिया है। उसने देखा कि सदाचारकी अपेक्षा स्वार्थ अधिक पवित्र माना जाता है। आदमियोंके अधिकारों और जीवनकी अपेक्षा मूर्तियाँ और क्रॉस—पुरानी हड्डियाँ और लकडीके छोटे छोटे टुकड़े—अधिक मूल्यवान् माने जाते हैं; और इन अवशेषोंके रखवाले मानव-जातिके शत्रु हैं।

अपने व्यक्तित्वकी समस्त शक्तिसे और अपने दिमागके हर गुणसे उसने इस विजयी पशुपर आक्रमण किया।

वॉल्तेयर सहज-बुद्धिका अवतार था। वह जानता था कि कोई भाषा प्रारम्भिक अथवा प्रथम भाषा नहीं हो सकती, जिससे तमाम दूसरी भाषाएँ बनी हों। वह जानता था कि हर भाषा लोगोंकी परिस्थितिसे प्रभावित हुई है। वह यह भी जानता था कि भाषाके विषयमें कभी कोई करिश्मा नहीं हुआ। वह जानता था कि बाइबलके मीनारकी कथाका सत्य होना असंभव है। वह जानता था कि सारे संसारमें हर चीज प्राकृतिक है। वह भाषामें ही नहीं किन्तु विज्ञानमें भी कीमियागिरीका शत्रु था। उसकी एक पक्ति इस विषयमें उसके दार्शनिक मतको व्यक्त करनेके लिये काफी है। वह कहता है :—
"लोहेको सोना बनानेके लिये दो बातें आवश्यक हैं—पहली, लोहेको नष्ट करना; दूसरी, सोनेको पैदा करना।"

वॉल्तेयरने हमें इतिहासका दर्शन दिया।

वॉल्तेयर एक हँसमुख आदमी था, प्रसन्न वदन, मस्त रहनेवाला। जो लोग ईमानदार और प्रसन्न रहनेके लिये धर्मकी आवश्यकता समझते थे, वॉल्तेयरकी दृष्टिमें वे सब लोग दयाके पात्र थे। उसमें वर्तमानमें सुखी रहनेका साहस था और भविष्यको सहन कर लेनेकी शक्ति देनेवाला दर्शन। यह सब होनेपर भी सारा ईसाई संसार डेढ सौ वर्षतक इस आदमीसे लडता रहा और उसकी स्मृतिको कलंकित करता रहा।

वॉल्तेयरने अपने समयके मिथ्या विश्वासोंको नष्ट करनेका संकल्प कर लिया था।

जिस किसी भी शस्त्रको प्रतिभा आविष्कार कर सकती, अथवा उपयोगमे ला सकती थी, वॉल्तेयरने उन सभी शस्त्रोंसे युद्ध किया। वॉल्तेयर महानतम् विरूपक था और उसने निर्दय होकर इस शस्त्रसे प्रहार किया है। उस जैसी सूझ-बूझ और किसीकी न थी।

यह कहनेका एक फैशन हो गया है कि वॉल्तेयर गंभीर नहीं था। यह इसलिए है कि वह मूर्ख नहीं था। जहाँ कहीं उसे बेहूदगी दिखाई देती वह हँस पड़ता। लोग उसमे गभीरताकी कमी बताते। उसने कहा है कि भगवान एक पादरीको भी हमेशाके लिए रसातल नहीं भेजेगा। इसे नास्तिकता कहा जाता था। उसने ईसाइयोंको परस्पर एक दूसरेकी मारकाट करनेसे रोका और ईसाके शिष्योंको सभ्य बनानेके लिए जो कुछ भी वह कर सकता था, किया।

यदि उसने केवल अपने समयके मतको स्वीकार कर लिया होता; यदि उसने यह प्रतिपादन किया होता कि एक अनन्त शक्ति और असीम करुणा-वाले ईश्वरने अरबों-खरबों आदमियोंको अनन्तकालतक यातना सहन करनेके लिए पैदा किया है, और उसने एक चालाक और अत्याचारी पोपको अपना प्रतिनिधि बनाया है, तो आज ईसाई-जगत् उसे भी संत वॉल्तेयर कहकर याद करता।

अनेक वर्षतक उस अनथक आदमीने यूरोपको अपने दिमागकी उपजसे भरे रखा—निबन्धोंसे, चुभती हुई छोटी छोटी कविताओंसे, महाकाव्योंसे, सुखान्त तथा दुःखान्त नाटकोंसे, इतिहासोंसे, काव्योंसे और उपन्यासोंसे अर्थात् मानवी मस्तिष्कका प्रतिनिधित्व करनेवाले हर पहलू और हर गुणसे। उसी समय वह अपने कारोबारमे भी बझा रहा। उसने लखपति-करोड़पतिकी तरह अपने रुपया कमाया। राज-दरबारकी गप्पोंमे और पादरी पुरोहितोंकी निन्दनीय कथाओंमें पूरी दिलचस्पी ली। साथ साथ वह अपने समयके वैज्ञानिक आवि-ष्कारों और दार्शनिक मतोंकी पूरी जानकारी भी रखता था। हाँ, यह सब करते हुए मिथ्या-विश्वासके किलेपर आक्रमण करना वह एक क्षणके लिए भी न

भूला। सोते-जागते हर समय वह ईसाई-पादरियोंसे घृणा व्यक्त करता था। साठ वर्ष तक उसने लगातार लड़ाई जारी रखी—कभी खुले मैदान आक्रम' किया, कभी मौकेकी झाड़ीकी ओटसे। वह हर समय सावधान था कि हर आदमी स्वतन्त्र रहे। वह 'सफल' शब्दके ऊँचेसे ऊँचे अर्थमें सफल आदमी था। वह एक राजाकी तरह रहा—यूरोपमें एक शक्ति बनकर। वॉल्तेयरके रूपमें प्रथम बार साहित्यके सिरपर ताज रखा गया।

ईसाई आलोचकोंका कहना है कि वॉल्तेयर विनम्र नहीं था। उसने पवित्रतम चीज़ोंकी परीक्षा करते समय तनिक गाम्भीर्यसे काम नहीं लिया। इस संसारमें कोई भी चीज ऐसी नहीं है जो इतनी अधिक पवित्र हो कि उसकी परीक्षा न की जा सके, उसे समझा न जा सके। दार्शनिक कभी किसी बातको छिपाता नहीं है। 'रहस्य' सत्यका मित्र नहीं है। किसी भी आदमीको अपनी बुद्धिका बलिदान कर विनम्र बननेकी आवश्यकता नहीं है। किसी भी चीजकी पूजा तब तक नहीं होनी जाहिये जब तक तर्कको यह विश्वास न हो जाय कि वह पूजनीय है।

तमाम करिश्मोंके विरुद्ध, तमाम पवित्र मिथ्याविश्वासोंके विरुद्ध, तमाम धार्मिक गलतियोंके विरुद्ध उसने उपहासके तीर चलाये।

कुछ लोगोंका कहना है कि श्रेष्ठतम तथा पवित्रम वस्तुका उपहास किया जा सकता है। वास्तविक बात यह है कि जो सत्यका उपहास करता है, वह स्वयं अपनेको उपहासका भाजन बनाता है। वह अपने उपहाससे स्वयं अपनी मूर्खता सिद्ध करता है।

आदमीके दिमागके अनेक पहलू हैं। सत्यको सभी ओरसे, सभी इंद्रियोंकी परीक्षामें उत्तीर्ण होना होगा।

लेकिन बहुत-सी बेहूदा बातोंका उपहासके अतिरिक्त और दूसरा उत्तर भी क्या हो सकता है? जिस धार्मिक आदमीका यह विश्वास है कि असीम करुणामय ईश्वरने दो भालू इस लिये भेजे ताकि वह उन तीस-चालीस बच्चोंको फाड़ खाये जो एक गजे पैगम्बरको देखकर हँस पड़े थे, उसका उपहास ही तो किया जा सकता है।

वॉल्तेयरको मज़ाक़ उडानेवाला कहा गया है।

उसने किसका मजाक उड़ाया ? उसने मज़ाक उड़ाया उन राजाओंका जो अन्यायी थे, उन राजाओंका जो अपनी प्रजाके कष्टोंकी कुछ परवाह न करते थे। उसने अपने समयके पदवीधारी मूर्खोंका मज़ाक उड़ाया। उसने न्यायालयोंके भ्रष्टाचार तथा न्यायाधीशोंकी नीचता और अत्याचारका मज़ाक उडाया। उसने वेहूदा तथा अन्यायपूर्ण कानूनों और बर्बरता-पूर्ण रीति-रिवाजोंका मज़ाक उडाया। उसने उन इतिहास-लेखकोंका मज़ाक उड़ाया जिन्होंने अपनी पुस्तकोंको असत्योंसे भर दिया और उन दार्शनिकोंका जिन्होंने मिथ्या-विश्वासका समर्थन किया। उसने स्वतन्त्रतासे घृणा करनेवालोंका और अपने-बन्धुओंपर अत्याचार करनेवालोंका मज़ाक उडाया।

वॉल्तेयरको लोगोंने दोष दिया है कि उसने उपहासके शस्त्रका उपयोग किया।

ढोंगको हँसना बड़ा बुरा लगाता है और लगता रहेगा। वॉल्तेयर उपहासका आचार्य्य था। उसने धार्मिक अनुश्रुतियों और करिश्मोंका उपहास किया है। उसने सन्तोंकी मूर्खतापूर्ण जीवनियों और उनके असत्योंका उपहास किया है।

वॉल्तेयरमे एक तरहकी ऐसी सहज-बुद्धि थी कि वह सम्भव-असम्भवमें भेद कर सकता था। अरिस्टाटलने कहा कि स्त्रियोंके मुँहमे पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक दाँत होते हैं। अठारहवीं शताब्दीतकके सभी ईसाई वैज्ञानिक इसे दोहराते रहे। वॉल्तेयरने स्त्रियोंके दाँत गिन कर देखे। शेष लोग ' वे कहते हैं ' से ही संतुष्ट रहे।

चारों ओरसे आक्रान्त होनेपर भी वह हर ऐसे शस्त्रका उपयोग करता था, जिसे उसकी बुद्धि, तर्क, घृणा अथवा उपहास काममें ला सके। कभी कभी वह क्षमा भी माँग लेता था, किन्तु वह अपमानसे भी बुरी होती थी। उसने अनेक वार पश्चात्ताप भी व्यक्त किया है, किन्तु वह पश्चात्ताप उस कर्मसे भयानक रहा है, जिसके लिये पश्चात्ताप व्यक्त किया गया। उसने और अधिक चोट पहुँचा कर अपनी बातको वापिस लिया है। उसकी तारीफमें भी कभी कभी विष रहता था।

वह पादरी-पुरोहितोंको यह अवसर नहीं देना चाहता था कि वे उसे जलता हुआ अथवा कष्ट पाता हुआ देखकर प्रसन्न हो। इसी पश्चात्ताप करनेके बारेमें उसने लिखा है :—" वे कहते हैं कि मुझे अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिये। प्रसन्नतापूर्वक। मैं कहूँगा कि पैसकलका हर कथन ठीक है; और सन्त ल्यूक और सन्त मार्क जब परस्परविरोधी बाते कहते हैं तो यह ऐसी बातोंको समझनेका सामर्थ्य रखनेवाले लोगोंके लिये धर्मकी सचाईका एक और प्रमाण है; और धर्मकी सचाईका दूसरा सुन्दर प्रमाण यह है कि धर्म किसीकी समझमें नहीं आता। मै यह भी स्वीकार कर लूँगा कि जितने पादरी पुरोहित हैं वे सब सज्जन और निःस्वार्थी हैं; जीसूइट ईमानदार है; ईसाई पादरी न तो अभिमानी हैं और न षडयन्त्री हैं; उनकी सुगन्धि मनको प्रसन्न करनेवाली होती है; और लोगोको जो पवित्र यातनायें दी गईं हैं वे मानवता और सहनशीलताकी विजय-घोषणा हैं। एक शब्दमें वे जो कुछ मुझसे कहलाना चाहते हैं, मैं सब कह दूंगा; शर्त यही है कि वह मुझे शान्तिसे रहने दे और एक ऐसे आदमीको जिसने कभी किसीको कोई कष्ट नही दिया, यन्त्रणा न दें।"

उसने अपने जीवनका श्रेष्ठतम अंश दलितोंके उद्धारमें लगा दिया। वह असहायोंकी ढाल बना। उसने निर्दोष लोगोंको दण्डसे मुक्त कराया। उसने फ्रान्सके कानून बदलवाये। उसने यन्त्रणाओका अन्त किया। उसने पादरी पुरोहितोंके दिलोंको कोमल बनाया। उसने न्यायाधीशोंको ज्ञान और राजाओंको शिक्षा दी। उसने लोगोंको सभ्य बनाया और उनके दिलसे लडने-झगडनेकी कामनाको दूर किया।

हो सकता है, तुम यह सोचो कि मैंने बहुत अधिक कह दिया, और इस आदमीको बहुत ऊँचा चढा दिया। ज़रा सुनो कि गैटे नामक महान् जर्मन दार्शनिक इसी आदमीके बारेमे क्या कहता है:—" यदि तुम्हे गहराई चाहिये, प्रतिभा चाहिये, कल्पना-शक्ति चाहिये, सुरुचि चाहिये, तर्क चाहिये, भावना चाहिये, दर्शन चाहिये, ऊँची उड़ान चाहिये, प्रकृति-प्रेम चाहिये, पैनी बुद्धि चाहिये, सूझ-बूझ चाहिये, चरित्रकी दृढता चाहिये, सहज-भाव चाहिये, मृदुता चाहिये, नाप-तोल चाहिये, कला चाहिये, बाहुल्य चाहिये,

विविधता चाहिये, उपजाऊपन चाहिये, गर्मी चाहिये, जादू चाहिये, मोहनी चाहिये, सजावट चाहिये, ज़ोर चाहिये, कल्पनाकी बाज़ जैसी उड़ान चाहिये, व्यापक समझ चाहिये, शिक्षण-बहुलता चाहिये, श्रेष्ठ कथन-शैली चाहिये, शहरीपन चाहिये, सौष्ठव चाहिये, नज़ाकत चाहिये, यथार्थता चाहिये, पवित्रता चाहिये, निर्मलता चाहिये, प्रवाह चाहिये, समन्वयकी भावना चाहिये, शीघ्र-गामिता चाहिये, प्रसन्नवदनता चाहिये, हृदयस्पर्शी भावना चाहिये, ऊँचाई चाहिये और सर्व-व्यापकता चाहिये अर्थात् सम्पूर्णता चाहिये, तो वॉल्तेयरकी ओर देखो।"

प्रत्येक आदमीका यह कर्तव्य है कि वह अपने समयके मिथ्या-विश्वासोंकी जड़ उखाड़नेका प्रयत्न करे। हजारों स्त्रीपुरुष और माता पिता ऐसे हैं जो अपने हृदयकी समस्त गहराईसे मिथ्या-विश्वासी मतोंको अस्वीकार करते हैं, तो भी वे अपनी सन्तानोंकी इन मिथ्या-विश्वासोंसे रक्षा नहीं करते।

एक अमरणशील गुलामकी अपेक्षा एक मरणशील स्वतन्त्र आदमी होना कहीं अधिक अच्छा है।

४—प्राकृतिक योजना

उस समयके ईश्वर-विश्वासी यह माननेका ढोंग करते थे कि ईश्वर अथवा प्रकृतिकी योजना निर्दयता-पूर्ण नहीं है। श्रेष्ठके लिये निम्नका बलिदान होता है। जीव जीवका भोजन है, एक प्राणी दूसरेको खाकर जीता है, किन्तु क्योंकि आदमी सब प्राणियोंमें श्रेष्ठ है, इसीलिये जो श्रेष्ठ है उसीके लिये निम्नका बलिदान होता है। निचले स्तरके प्राणियोंका बलिदान इसीलिये होता है कि ऊँचे स्तरके प्राणी जीवित रह सकें। यह तर्क बहुतसे लोगोंके लिये संतोषजनक था। तो भी हज़ारों आदमी ऐसे थे जो यह नहीं समझ सकते थे कि निम्नका बलिदान किस लिये अनिवार्य है और समस्त सुखकी उत्पत्ति दुःखमेंसे ही क्यों होती बताई जाती है? लेकिन जबसे अनुवीक्षण-यन्त्रका निर्माण हुआ जबसे आदमी अत्यन्त छोटी और बड़ीसे बड़ी चीज़ोंको देखनेमें समर्थ हुआ उसे पता लग गया कि हमारे पूर्वजोंकी यह मान्यता सर्वथा गलत थी कि श्रेष्ठके लिये ही निम्नका बलिदान होता है।

अब हम देखते हैं कि समस्त दृश्य प्राणियोंके जीवन अति निम्नस्तरके प्राणियों द्वारा नष्ट किये जा सकते हैं और संख्यातीत गणनामें नष्ट किये जाते हैं। हम देखते हैं कि लाखों आदमी पीले ज्वरके कीटाणुओंको सुरक्षित बनाये रखनेके लिये मर गये, और उस 'छोटे-पशु' के लिये जो हमें हैज़ा देता है, जातियोंकी जातियाँ विलीन हो गई। हमें यह भी पता लगा है कि ऐसे प्राणी हैं—उन्हें जो चाहो नाम दो—जो केवल हृत्-पिण्ड ही खाकर जीवित रहते हैं, कुछको फेफड़े ही अच्छे लगते हैं; कुछ ऐसे नखरे-बाज़ हैं कि उन्हे आँखके अन्दरका तन्तु ही चाहिये और उनमे इतनी समझ भी है कि जब वे आँखपर हाथ साफ कर चुकते हैं तो नाककी दीवारको पार कर दूसरी आँखपर आक्रमण करने भी पहुँच जाते हैं। इस प्रकार हमें प्रकृतिकी योजनाका यह दूसरा पहलू भी दिखाई देता है।

पहले ऐसा लगता था कि श्रेष्ठके लिये निम्नका ही बलिदान होता है, किन्तु बारीकीसे देखनेपर निम्न-स्तरके लिये उच्चतमका बलिदान होता दिखाई देता है।

काफी समय तक वॉल्तेयर पोपके इस आशावादका विश्वासी था कि "बुराई कहीं कहीं, भलाई सब जगह।" भाग्यशालियोंके लिये यह बहुत ही सुन्दर दर्शन शास्त्र है। धनियोंके यह सर्वथा अनुकूल है। राजाओं और पुरोहितोंको यह विशेष रूपसे रुचिकर है। यह सुननेमें भी अच्छा लगता है। किसी भिख-मंगेका सिर फोड़नेके लिये यह बढ़िया पत्थर है। इसके सहारे तुम दूसरोंके दुःखको बड़ी शान्तिसे सहन कर सकते हो।

यह दुखियोका दर्शन-शास्त्र नहीं, यह दरिद्र मजदूरोंका दर्शन-शास्त्र नहीं, यह अभाव-ग्रस्त ईमानदार आदमियोका दर्शन-शास्त्र नहीं और यह समाजके घूरेपर फेंक दिये गये सदाचारियोका भी दर्शन-शास्त्र नहीं।

यह धर्म-विशेषका दर्शन-शास्त्र है, यह चन्द सौभाग्यशालियोंका दर्शन-शास्त्र है; और यदि कभी उन्हें दुर्भाग्य आ घेरता है, तो उनका सारा दर्शन-शास्त्र काफूर हो जाता है।

१७५५ मे लिज़बनमें भूकम्प आया। यह भयानक विपत्ति एक बड़ा प्रश्न चिह्न बन गई। ईश्वर-विश्वासीको मजबूर होकर पूछना पड़ा—"मेरा परमात्मा

बैठा क्या करता रहा है ? उसने अपने हज़ारों लाखों पुत्रोंको उस समय अंग-विहीन और विनष्ट क्यो हो जाने दिया जिस समय वे उसीकी प्रार्थनामे तल्लीन थे ? ”

इस भयानक विपत्तिका क्या हो सकता था ? यदि भूकम्प होना ही था तो यह किसी जनविहीन प्रदेश अथवा खुले समुद्रमें ही क्यों नहीं हुआ ? इस भयानक घटनाने वॉल्तेयरके धार्मिक विश्वासको हिला दिया। उसका यह विश्वास हो गया कि हमारा संसार ही सर्वश्रेष्ठ संसार नहीं है। उसका विश्वास हो गया कि बुराई बुराई है; यहॉ, वहाँ, अब और सदैव।

ईश्वर-विश्वासी चुप था। भूकम्पने ईश्वरके अस्तित्वको असिद्ध कर दिया।

५—मानवता

तुलुस (Toulouse) एक विशेष नगर था, धार्मिक अवशेषोसे परिपूर्ण। वहॉके लोग उतने ही जड थे जितनी जड़ लकड़ीकी मूर्तियॉ। उनके पास ईसाके सात प्रधान शिष्योंकी सूखी हड्डियॉ थीं, हेरोद् द्वारा मारे गये बहुतसे छोटे बच्चोंकी हड्डियाँ थीं, कुँवारी मेरीके वस्त्रका एक टुकडा था और ‘ सन्त ’ कहलाने-वाले बहुतसे जड़-भरतोंकी खोपड़ियाँ थीं।

इस नगरके अधिवासी प्रति वर्ष दो उत्सव बड़े उत्साहसे मनाते थे—एक ह्यूजनाटोंका देशनिकाला; दूसरे सन्त बारथोलोमियोकी पवित्र हत्या। तुलुसके अधिवासियोंको ईसाइयतने ही शिक्षित किया था और उसीने सभ्य बनाया था।

कुछ प्रोटैस्टैण्ट थे, अल्पमतमे होनेके कारण शान्त और विनम्र। उन्हें इन गीदडों और चीतोंके बीच रहना पडता था।

इन प्रोटैस्टैण्ट लोगोंमेंसे एक था—जीन कैले। एक छोटा मोटा व्यापारी। चालीस वर्ष तक वह अपना कारोबार करता रहा। उसके चरित्रपर कहीं कोई धब्बा न था। वह ईमानदार, दयालु और मिलनसार था। उसकी पत्नी और छह बच्चे थे—चार लड़के और दो लड़कियॉ। लड़कोंमेंसे एकने कैथॉलिक मत अपना लिया। सबसे बडे लड़के, मार्क एण्टोनीको पिताका कारोबार अच्छा नहीं लगता था; उसने क़ानूनका अध्ययन किया। वह तब तक वकालत नहीं कर सकता

था, जब तक कि अपने आपको कैथॉलिक न घोषित करे। उसने अपने प्रोटैस्टेण्ट होनेकी बात छिपा कर लाइसैंस प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। इसका पता लग गया। वह खिन्न हुआ। अन्तमें वह इतना अधिक हतोत्साह हुआ कि उसने एक दिन शामको अपने पिताके ही भण्डार-गृहमें अपने गलेमे फाँसी लगाकर आत्म-हत्या कर ली।

तुलुसके धर्म-ध्वजियोंने कथा गढी कि उसके माता-पिताने कैथॉलिक होनेसे बचानेके लिये उसकी हत्या कर डाली है!

इस भयानक दोषारोपणके परिणामस्वरूप पिता, माता, पुत्र, नौकरानी और घरपर आया हुआ एक अतिथि भी पकड़ लिया गया।

मृत-पुत्र शहीद माना गया। उसकी देह पादरियोंके अधिकारमे दे दी गई।

यह १७६१ में हुआ।

इसके बाद वह चीज भी हुई जिसे मुकदमेका नाम दिया गया। कोई गवाही नहीं, किञ्चित् मात्र नहीं। सभी बाते अभियुक्तके पक्षमें थीं।

ज़ीन कैलेको चर्खीपरकी यातना और मृत्यु बदी थी। यह ९ मार्च, सन् १७६२ की बात है। अगले ही दिन उसे मृत्यु-दण्ड मिलनेको था।

१० मार्चको पिताको यन्त्रणा-गृहमे ले जाया गया। जल्लाद और उसके सहकारीको कसम दिलाई गई कि वह अदालतके निर्णयके अनुसार अपराधीको दण्ड देंगे।

उन्होंने पत्थरकी दीवारमें चार फुट ऊँचे जडे हुए लोहेके एक छल्लेसे उसकी कलाई बाँध दी और जमीनमें गड़े हुए एक दूसरे लोहेके छल्लेसे उसके पैर। तब उन्होंने रस्सियों और जंजीरोंको खींचना आरम्भ किया। परिणामस्वरूप उसके हाथों और पैरोंका जोड़ जोड उखड गया। तब उससे प्रश्न पूछा गया। उसका उत्तर था—मै निरपराध हूँ। तब रस्सियोंको और छोटा किया गया, यहाँ तक कि उसके चीथडे चीथडे हुए शरीरमे जीवन तडफडाने लगा।

तब भी वह दृढ ही रहा। यह सामान्य प्रश्न पूछना था।

मजिस्ट्रेटोंने उसपर फिर अपराध स्वीकार करनेके लिये दबाव डाला। उसका वही उत्तर था कि स्वीकार करनेके लिये कुछ है ही नहीं।

तब असाधारण प्रश्न पूछनेकी बारी आई।

अभियुक्तके मुँहमें एक नलकी द्वारा लगभग चार गैलन पानी डाला गया। वेदनाकी कोई सीमा न थी। इतना होनेपर भी जीन दृढ रहा।

तब उसे एक मैलेकी गाडीमे फाँसीके तख्तेतक ले जाया गया। वहाँ उसके हाथ पैर बाँध दिये गये। जल्लादने लोहेकी मोटी शलाख लेकर उसके हाथ और पैर दो दो जगह तोड डाले। उसके बाद यदि वह मर सके तो उसे मरनेके लिए छोड दिया गया। वह दो घण्टे तक जिया। उन दो घण्टोंमें भी उसने अपनी निर्दोषिताकी ही घोषणा की। वह जल्दी नहीं मर रहा था, इसलिए जल्लादको उसका गला घोट देना पडा। इसके बाद उसकी रक्तसे लथपथ देहको एक लकड़ीके खंभेसे बाँधकर जला दिया गया।

यह सब एक दृश्य था—एक त्यौहार—तुलुसके हब्शियोंके लिए।

लेकिन यहीं अन्त नहीं हुआ। घरकी सारी सम्पत्ति ज़ब्त कर ली गई। पुत्रको इस शर्तपर छोडा गया कि वह कैथॉलिक बने। नौकरानीको इस शर्त पर कि वह ईसाई-उपाश्रयमें भर्ती हो। दोनों लड़कियोंको भी एक ईसाई उपाश्रयमें ले लिया गया और उस अभागी विधवाको वह जहाँ चाहे वहाँ भटकनेके लिये छोड़ दिया गया।

वॉल्तेयरने इस मुक़दमेका हाल सुना। उसके तन-बदनमें आग लग गई। उसने एक लडकेको अपने घरमे रखा। उसने सारे मुक़द्मेका इतिहास लिखा, उसने राजाओसे, पत्रव्यवहार किया। जहाँ रुपया खर्च करनेकी ज़रूरत थी, वहाँ रुपया खर्च किया। समस्त यूरोपमें बरसोतक जीन कैलेकी दर्दभरी आवाज गूँजती रही। वह सफल हुआ। भयानक निर्णय बदला गया। जीन निरपराध सिद्ध हुआ। माँ और उस परिवारके पालन पोषणके लिये हजारों डालर इकट्ठे हुए।

यह वॉल्तेयरका ही काम था। इस प्रकारकी अनेक कथाये हैं, लेकिन मैं आपको एक ही और सुनाऊँगा।

१७६५ में एबैविल् नामक नगरमें एक पुलपर लगा हुआ पुराना क्रॉस

ज़ख्मी कर दिया गया, चाकूसे छील दिया गया—एक भयानक अपराध किया गया। एक दूसरेपर जड़े हुए दो लकड़ीके टुकड़ोंकी पवित्रता मानवी रक्त और माससे कहीं बढकर थी। दो तरुणोंपर सन्देह किया गया। एकका नाम था शेवालियर द ल बारे और दूसरेका देतालोद। देतालोंद प्रशिया भाग गया और वहाँ जाकर एक सामान्य सैनिक बन गया।

ल बारे वहीं रहा और उसपर मुकदमा चला।

बिना किसी प्रमाणके वह दोषी ठहराया गया और दोनोंको निम्नलिखित दण्ड दिये गये—

पहला—सामान्य तथा असामान्य यन्त्रणा सहन करना।

दूसरा—लोहेकी संडासीसे जबान खींच लेना।

तीसरा—गिर्जेके द्वारपर खड़ा करके दाहिने हाथ काट डालना।

चौथा—लकड़ीके खम्भोंके साथ बाँध कर धीमी आगसे जलाकर मारना।

"जिस प्रकार हम दूसरोंके अपराध क्षमा करते हैं, उसी प्रकार तू हमारे अपराधको क्षमा कर।" इस उपदेशको याद करके न्यायाधीशने दण्डमें कुछ कमी कर दी। उसका आदेश था—जलानेसे पहले सिर काट लिया जाय।

पैरिसमें इस मुकद्दमेकी अपील की गई। पच्चीस विद्वान् न्यायाधीशोंके 'न्याय-मण्डल' ने विचार किया। पहले फैसलाका ही समर्थन किया गया। १७६६ की जुलाईकी पहली तारीखको अपराधीको दण्ड दिया गया।

वॉल्तेयरने न्यायके इस प्रकारके भ्रष्टाचारकी कथा सुनी, तो उसने फ्रांस छोड देनेका निश्चय किया। वह ऐसे देशको सदाके लिये नमस्कार कर लेना चाहता था, जहाँ ऐसे अत्याचार सम्भव हो।

उसने सारे मुकदमेका इतिहास देते हुए एक पुस्तिका लिखी।

उसने देतालोदका पता लगाया। उसकी ओरसे प्रशियाके राजाको लिखा। उसे सेनासे मुक्त कराकर डेढ वर्ष तक अपने घरमें रखा। वाल्तेयरने देता-

लोंदको ड्रॉइंग, गणित और इंजीनियरीकी शिक्षा दिलवाई। उसे बड़ी प्रसन्नता हुई जब उसने एक दिन देतालोंदको 'फैड्रिक महान'की सेनामें इंजीनियरोंके कप्तानके रूपमें देखा।

वॉल्तेयर ऐसा आदमी था।

वह दलितों और असहायोंका पक्ष लेकर लड़नेवाला था। वह कैसर था जिसके दरबारमें ईसाई-धर्म तथा राज्यसे त्रस्त लोग अपील कर सकते थे। वह अपने युगमें दिमागकी श्रेष्ठता और दिलकी उदारताका अवतार था।

एक बड़ी ऊँची सतहसे उसने संसारका पर्यवेक्षण किया। उसका मानसिक क्षितिज बहुत विस्तृत था। उसमें कुछ दोष भी थे—प्रायः वे ही जो पादरी-पुरोहितोंमें भी होते हैं। उसके गुण अपने थे।

वह सर्वसामान्यको शिक्षित करने और दिमागको विकसित करनेका पक्षपाती था। ईसाई पादरी उससे घृणा करते थे।

वह चाहता था कि संसारका ज्ञान हर किसीके लिये सुलभ कर दिया जाय। प्रत्येक ईसाई पादरी उसका शत्रु था।

जहाँ तक सिद्धान्तोंकी बात है वॉल्तेयर अपने समयका सबसे बड़ा कानूनदाँ था। मेरे कहनेका यह मतलब नहीं कि उसे सब मुकद्दमोंके निर्णयोंका ज्ञान था. लेकिन वह न केवल यही साफ साफ समझता था कि कानून किस प्रकार लागू किया जाना चाहिये, बल्कि 'गवाहीकी फिलासफी' को भी समझता था और सन्देह तथा प्रमाणके भेदको पहचानता था। वह जानता था कि विश्वास किसे कहते हैं और ज्ञान किसे ? उसने अपने समयके कानूनों और न्यायालयोंकी बुराइयोंको दूर करनेके लिये अकेले जितना कार्य्य किया उतना उसके समयके दूसरे सब वकीलों और राजनीतिज्ञोंने मिलकर भी नहीं किया।

उसका सिद्धान्त था—

"आदमी बराबर पैदा हुए हैं।"

"हमें गुणोंका आदर करना चाहिये।"

"हमें इस बातको अपने दिलमें अच्छी तरह बिठा लेना चाहिये कि सब आदमी एक बराबर पैदा हुए हैं।"

यह वॉल्तेयर ही था जिसने फ्रैंकलिन, जैफरसन और थामस पेनके दिल और दिमागमें स्वतन्त्रताके बीज बोये।

पुफैन्दार्फका पक्ष था कि गुलामीकी प्रथा आंशिक तौरपर दो पक्षोंके आपसी समझौतेपर निर्भर करती है।

वाल्तेयर बोला—" मुझे वह शर्त-नामा दिखाओ जिसपर गुलाम बननेवालेने अपने हस्ताक्षर किये हों। मैं तुम्हारी बात मान लूँगा। "

वॉल्तेयर कोई सन्त नही था। उसे जीसूइट लोगोंके यहाँ शिक्षा मिली थी। वह अपनी आत्माकी मुक्तिके लिये कभी चिन्तित नही होता था। धार्मिक सिद्धान्तोंके तमाम झगड़ोंपर वह हँसता था। वह एक सतसे बहुत अच्छा था।

उसके समयके अधिकांश ईसाई धर्मको नित्य-प्रति काममे लानेकी नहीं किन्तु आपत्तिके समय काममें आनेकी चीज मानते थे, वैसे ही जैसे कि तूफान आने पर प्राणोंकी रक्षाके लिये जहाज़ोंपर जीवन-नौकायें रहती हैं।

वॉल्तेयर मानवताके धर्ममें विश्वास करता था, भले और उदारता-पूर्ण कर्म करनेमें।

ईसाई पादरियोंने शताब्दियों तक सदाचारको ऐसे कुरूप, खट्टे और ठंडे रूपमें चित्रित किया कि उसकी तुलनामें दुराचार सुन्दर प्रतीत होने लगा। वॉल्तेयरने उपयोगी वस्तुओंके सौन्दर्य्यका तथा मिथ्या विश्वासोंके घृणित स्वरूपका प्रतिपादन किया।

वह अपने समयका सबसे बड़ा कवि अथवा नाटककार नहीं किन्तु सबसे बड़ा आदमी था, स्वतन्त्रताका सबसे बड़ा मित्र और मिथ्या विश्वासोंका सबसे बडा शत्रु।

धार्मिक शब्दके ऊँचेसे ऊँचे श्रेष्ठतम अर्थोंमे वह अपने समयका अति गम्भीर धार्मिक आदमी था।

६—वापिसी

पूरे २७ वर्ष तक बाहर रहनेके बाद वॉल्तेयर पैरिस वापिस आया। इस सारे समयमें वह सभ्य संसारमे प्रथम स्थानपर रहा। उसकी यात्रा विजय-

यात्रा थी। उसका एक विजयीकी तरह स्वागत हुआ। विद्वत्परिषद् (एका-डेमी) के लोग उसका स्वागत करनेके लिये आये। यह सौभाग्य कभी किसी राजाको भी नसीब नहीं हुआ था। उसका इरीन नामक नाटक खेला गया। थियेटरमें उसकी पूजा की गई—पत्तोंसे, फूलोंसे, सुगन्धिसे। वॉल्तेयर पूजाकी सुगन्धसे मस्त हो गया। अब वह फ्रांसके कवियोंमें अग्रणी था। संसारके साहित्यिकोंमें उसका पहला दर्जा था—प्रतिभाके दैवी-अधिकारसे बना हुआ राजा। उस समय फ्रांसमें तीन महान् शक्तियाँ थीं—राज्य, वेदिका और वॉल्तेयर। राजा वॉल्तेयरका शत्रु था। राजदरबार उससे किसी तरहका सरोकार न रख सकता था। दुखित और परेशान ईसाई-पादरी वॉल्तेयरसे बदला लेनेकी ताकमें लगे रहते थे। यह सब होनेपर भी इस आदमीकी इतनी ख्याति थी, इसका जनतापर इतना अधिकार था, कि वह राज्यासनके विरोधके बावजूद, धर्मासनके विरोधके बावजूद लोगोंके हृदयासनपर आसीन था।

उस समय वह चौरासी वर्षका बूढ़ा आदमी था। वह जीवनकी सुख-समृद्धिसे, आरामतलबीसे घिरा था—संसारका सबसे धनी लेखक। उसके अन्तिम वर्ष खुशामदकी—पूजाकी—शराब पीकर मस्तीके वर्ष थे। वह अपनी आयुके शिखरपर था।

पादरी-पुरोहित चिन्तित हुए। उन्हे डर लगा कि कार्य-बहुलतामें ईश्वर कहीं वॉल्तेयरको कड़ा दण्ड देना न भूल जाय।

१७७८ के मई महीनेमें यह काना-फूसी शुरू हुई कि वॉल्तेयरका अन्तिम समय समीप आ पहुँचा है। आशाकी चहार-दीवारीपर मिथ्याविश्वासके गीध आ बैठे कि कब उन्हें उनका शिकार हाथ लगता है।

“ उसका भतीजा कुछ पादरी-पुरोहितोंको ले आया, जिन्होने पूछा कि क्या तुम ईसामसीहके ईश्वरके बेटा होनेमें विश्वास करते हो? वॉल्तेयरने दूसरी ओर मुँह फेर लिया और कहा—“ मुझे शान्तिसे मरने दो। ”

१७७८ के मई महीनेकी ३० तारीखको रातके सवा ग्यारह बजे वह पूर्ण शान्तिके साथ इस संसारसे विदा हुआ। अन्तिम साँस आनेसे कुछ ही क्षण पहले उसने मोरॉका हाथ अपने हाथमें लिया और उसे दबाकर कहा, “ मोराँ, विदा। मैं चला। ” यही वॉल्तेयरके अन्तिम शब्द थे।

एक ऐसी नदीकी तरह, जिसके दोनों तटोंपर हरियाली और छाया थी, वह विना किसी भी प्रकारकी हलचलके उस समुद्रमें जा विलीन हुआ, जहाँ जाकर जीवन विश्रांति पाता है।

उन दिनों दार्शनिकों—विचारकोंको—पवित्र भूमिमे नहीं दफनाया जाता था। लोग डरते थे कि उनके सिद्धान्तोसे कहीं वह भूमि अपवित्र न हो जाय। दूसरा डर यह भो था कि पुनर्जीवनके भीड़–भडक्केमे कहीं वह चुपकेसे स्वर्ग-की ओर न बढ़ जायँ। इस लिये कुछको जला दिया जाता था और उनकी राख बखेर दी जाती थी, कुछकी नग्न-देह गीधो आदिके लिये छोड दी जाती थी और कुछको अपवित्र-भूमिमें गाड़ दिया जाता था।

जो हो, मरनेके बाद हमारी देहका क्या होनेवाला है, इसमें हम सबकी दिलचस्पी रहती ही है। मृत्युके साथ एक विशेष प्रकारकी विनम्रता भी जुडी हुई है। इस विषयमे वॉल्तेयर वेहिसाब भावुक था। पवित्र-भूमिमे दफनाये जानेके लिये उसने पाप-स्वीकृति, शुद्धि और अन्तिम-पवित्रताका नाटक करना स्वीकार कर लिया। पादरी जानते थे कि वह यह सब गम्भीरता-पूर्वक कर रहा है और वह भी जानता था कि पादरी उसे पेरिसकी किसी भी श्मशान-भूमिमे दफनाने नहीं देगे।

उसकी मृत्यु एक रहस्य बनाकर रखी गई। १७७८ के मईके अन्तिम दिन सन्ध्याके समय वॉल्तेयरके शरीरको गाऊन पहनाकार एक गाड़ीमे रखा गया। उसका रंग-ढग ऐसा बनाया गया मानों वह कोई हिल-डुल न सकनेवाला रोगी हो। उसके पास एक नौकर बैठा था, जिसका काम था कि वह वॉल्तेयरके शरीरको यथोचित पोजीशनमें रखे रहे। उस गाडीको छह घोडे जोते गये जिससे लोग समझें कि कोई बड़ा जमींदार अपनी जमीदारीमें जा रहा है। एक दूसरी गाड़ीमे वॉल्तेयरके दो सम्बन्धी थे। वे सारी रात चलते रहे और अगले दिन एक गिरजेके ऑगनमें पहुँचे। आवश्यक कागज-पत्र दिखाये गये। वॉल्तेयरके शरीरकी उपस्थितिमे अन्तिम धार्मिक संस्कार हुआ। वॉल्तेयरको दो गज जगह मिली।

इसके बाद तुरन्त ही उस पादरीको जिसने दया करके थोडी-सी जगह दे दी थी, उसके विशपका कठोर पत्र मिला, जिसमे वाल्तेयरके वहाँ दफनाये जानेका निषेध था।

यात्रा थी। उसका एक विजयीकी तरह स्वागत हुआ। विद्वत्परिषद् (एकाडेमी) के लोग उसका स्वागत करनेके लिये आये। यह सौभाग्य कभी किसी राजाको भी नसीब नहीं हुआ था। उसका इरीन नामक नाटक खेला गया। थियेटरमें उसकी पूजा की गई—पत्तोंसे, फूलोंसे, सुगन्धिसे। वॉल्तेयर पूजाकी सुगन्धसे मस्त हो गया। अब वह फ्रांसके कवियोंमें अग्रणी था। संसारके साहित्यिकोंमें उसका पहला दर्जा था—प्रतिभाके दैवी-अधिकारसे बना हुआ राजा। उस समय फ्रांसमें तीन महान् शक्तियाँ थीं—राज्य, वेदिका और वॉल्तेयर। राजा वॉल्तेयरका शत्रु था। राजदरबार उससे किसी तरहका सरोकार न रख सकता था। दुखित और परेशान ईसाई-पादरी वॉल्तेयरसे बदला लेनेकी ताकमें लगे रहते थे। यह सब होनेपर भी इस आदमीकी इतनी ख्याति थी, इसका जनतापर इतना अधिकार था, कि वह राज्यासनके विरोधके बावजूद, धर्मासनके विरोधके बावजूद लोगोंके हृदयासनपर आसीन था।

उस समय वह चौरासी वर्षका बूढ़ा आदमी था। वह जीवनकी सुख-समृद्धिसे, आरामतलबीसे घिरा था—संसारका सबसे धनी लेखक। उसके अन्तिम वर्ष खुशामदकी—पूजाकी—शराब पीकर मस्तीके वर्ष थे। वह अपनी आयुके शिखरपर था।

पादरी-पुरोहित चिन्तित हुए। उन्हें डर लगा कि कार्य-बहुलतामें ईश्वर कहीं वॉल्तेयरको कड़ा दण्ड देना न भूल जाय।

१७७८ के मई महीनेमें यह काना-फूसी शुरू हुई कि वॉल्तेयरका अन्तिम समय समीप आ पहुँचा है। आशाकी चहार-दीवारीपर मिथ्याविश्वासके गीध आ बैठे कि कब उन्हें उनका शिकार हाथ लगता है।

"उसका भतीजा कुछ पादरी-पुरोहितोंको ले आया, जिन्होंने पूछा कि क्या तुम ईसामसीहके ईश्वरके बेटा होनेमें विश्वास करते हो? वॉल्तेयरने दूसरी ओर मुँह फेर लिया और कहा—" मुझे शान्तिसे मरने दो।"

१७७८ के मई महीनेकी ३० तारीखको रातके सवा ग्यारह बजे वह पूर्ण शान्तिके साथ इस संसारसे विदा हुआ। अन्तिम साँस आनेसे कुछ ही क्षण पहले उसने मोराँका हाथ अपने हाथमें लिया और उसे दबाकर कहा, "मोराँ, विदा। मैं चला।" यही वॉल्तेयरके अन्तिम शब्द थे।

एक ऐसी नदीकी तरह, जिसके दोनों तटोपर हरियाली और छाया थी, वह विना किसी भी प्रकारकी हलचलके उस समुद्रमें जा विलीन हुआ, जहाँ जाकर जीवन विश्रांति पाता है।

उन दिनों दार्शनिकों—विचारकोंको—पवित्र भूमिमे नहीं दफनाया जाता था। लोग डरते थे कि उनके सिद्धान्तोसे कहीं वह भूमि अपवित्र न हो जाय। दूसरा डर यह भो था कि पुनर्जीवनके भीड-भड़क्केमे कहीं वह चुपकेसे स्वर्गकी ओर न बढ़ जायँ। इस लिये कुछको जला दिया जाता था और उनकी राख वखेर दी जाती थी, कुछकी नग्न-देह गीधो आदिके लिये छोड दी जाती थी और कुछको अपवित्र-भूमिमें गाड़ दिया जाता था।

जो हो, मरनेके बाद हमारी देहका क्या होनेवाला है, इसमें हम सबकी दिलचस्पी रहती ही है। मृत्युके साथ एक विशेष प्रकारकी विनम्रता भी जुड़ी हुई है। इस विषयमे वॉल्तेयर बेहिसाब भावुक था। पवित्र-भूमिमें दफनाये जानेके लिये उसने पाप-स्वीकृति, शुद्धि और अन्तिम-पवित्रताका नाटक करना स्वीकार कर लिया। पादरी जानते थे कि वह यह सब गम्भीरता-पूर्वक कर रहा है और वह भी जानता था कि पादरी उसे पेरिसकी किसी भी श्मशान-भूमिमे दफनाने नहीं देंगे।

उसकी मृत्यु एक रहस्य बनाकर रखी गई। १७७८ के मईके अन्तिम दिन सन्ध्याके समय वॉल्तेयरके शरीरको गाऊन पहनाकार एक गाड़ीमे रखा गया। उसका रग-ढग ऐसा बनाया गया मानों वह कोई हिल-डुल न सकनेवाला रोगी हो। उसके पास एक नौकर बैठा था, जिसका काम था कि वह वॉल्तेयरके शरीरको यथोचित पोजीशनमें रखे रहे। उस गाड़ीको छह घोडे जोते गये जिससे लोग समझें कि कोई बडा जमीदार अपनी जमीदारीमें जा रहा है। एक दूसरी गाडीमे वॉल्तेयरके दो सम्बन्धी थे। वे सारी रात चलते रहे और अगले दिन एक गिरजेके आँगनमें पहुँचे। आवश्यक कागज-पत्र दिखाये गये। वॉल्तेयरके शरीरकी उपस्थितिमे अन्तिम धार्मिक संस्कार हुआ। वॉल्तेयरको दो गज जगह मिली।

इसके बाद तुरन्त ही उस पादरीको जिसने दया करके थोडी-सी जगह दे दी थी, उसके बिशपका कठोर पत्र मिला, जिसमे वाल्तेयरके वहाँ दफनाये जानेका निषेध था।

किन्तु, अब देर हो चुकी थी।

दूसरी बार फिर पेरिस।

पूरे चार सौ वर्ष तक बेस्टाइलका कारागार अत्याचारका बाह्य प्रतीक था। इसकी चार दीवारीके भीतर श्रेष्ठतम विभूतियोंका बलिदान हुआ। यह स्थायी आतंक था। यह राजा और पुरोहितोंका बहुधा पहला, नहीं तो अन्तिम तर्क था। इसके गीले और अन्धेरे तहखानोंसे, इसके बड़े मीनारोंसे, इसकी रहस्य-पूर्ण कोठड़ियोंसे और इसके नाना प्रकारके यन्त्रणाके साधनोंसे ईश्वरका निषेध होता था।

१७८९ की १४ जुलाईको जब अत्याचारसे पागल बने हुए लोगोंने तूफानकी तरह आक्रमण करके बैस्टाइलपर अपना अधिकार कर लिया, तो उस समय उनका युद्धका नारा था—वॉल्तेयर ज़िदाबाद।

१७९१ मे वॉल्तेयरकी राखको उस भवनमे रखे जानेकी अनुज्ञा मिली, जहाँ फ्राँसके सब महापुरुषोकी राखने स्थान पाया है। उसे पैरिससे ११० मीलकी दूरीपर चोरीसे दफनाया गया था। आज उसे एक जातिकी जाति वहाँसे हटाने जा रही थी। एक सौ मीलकी श्मशान-यात्राका जुलूस, हर गाँवमे बन्दनवार और झण्डियाँ, सभी लोग फ्रान्सके दार्शनिकके प्रति, मिथ्याविश्वासोके विनाशकके प्रति, सम्मान प्रदर्शित करनेके लिये उत्सुक थे।

पॅरिस पहुँचकर यह महान् जुलूस सन्त अन्तोनीकी गलीकी ओर मुड़ा. और वहाँ पहुँचकर रुक गया। रातभर वॉल्तेयरके अवशेषने बैस्टाइलाके भग्नावशेषोंपर विश्राम किया।

विशाल जनता श्रद्धा और प्रेमसे सिर झुकाये खड़ी थी। उसके कानमें किसी पादरीके यह शब्द सुनाई दिये—ईश्वरकी ओरसे बदला लिया जायगा।

ईसाई-पादरीका कथन भविष्यवाणी सिद्ध हुआ। लोग वॉल्तेयरकी समाधिमेंसे उसकी राख निकाल ले गये।

" समाधि खाली पडी रह गई। "

" ईश्वरकी ओरसे बदला ले लिया गया। "

" संसार वॉल्तेयरकी ख्यातिसे गूँज उठा। "

" आदमीकी विजय हुई। "

क्या समस्त फ्रांसमें किसी पादरीकी कोई ऐसी क़ब्र है जिसपर कोई भी स्वतन्त्रताका प्रेमी एक फूल या एक आँसू चढ़ायेगा ? क्या कोई भी ऐसी क़ब्र है जिसमें किसी ईसाई सतकी राख हो और उससे एक भी प्रकाशकी किरण निकलनेकी आशा की जा सके ?

सत्रह वर्षकी आयुमें वाल्तेयरने ओएडिपस् (Oedipus) लिखी और तिरासी वर्षकी आयुमें इरिन (Irene) । इन दो दुःखान्त कृतियोंके बीचमें हज़ारों जीवनोंकी सफलताओंका सार था ।

उसका सिंहासन आल्पसके दामनमें था । उस सिंहासनपर बैठकर वॉल्तेयरने यूरोपके प्रत्येक ढोंगीकी ओर अपनी घृणाकी अँगुली उठाई ।

आधी शताब्दी तक, वह राज्यासन और धर्मासनके समस्त विरोधोंके बावजूद तर्ककी मशालको अपने वीरता पूर्ण हाथोंमें पकड़े रहा, उस मशालको जिसके प्रकाशसे एक दिन संसार प्रकाशित होगा ।

एक गृहस्थका प्रवचन *

इसलिये हमे अपने बच्चोंको सिखाना चाहिये कि अधिक धन एक महान् अभिशाप है। अधिक धन पापोंका जनक है। दूसरे सिरेपर है अतिदरिद्रता। आज रात आपसे जानना चाहता हूँ कि क्या जैसा अब है, वैसा ही सदैव रहेगा? मैं आशा करता हूँ कि नही। क्या करोड़ों आदमियोंके ओठ अकालके कारण सदैव सफेद ही बने रहेंगे? क्या सम्माननीय लोगोंके पाषाण-हृदयोंके सम्मुख गरीबोंका हाथ सदा फैला ही रहेगा? क्या हर आदमीको जो अच्छा भोजन करने बैठता है, हमेशा भूखोंकी याद आती ही रहेगी? क्या हर आदमीको जो अपने चूल्हेके पास बैठा आग ताप रहा है, सर्दीमे ठिठुरती हुई, अपने बच्चेको गले लगाये, किसी गरीब माताकी याद आती ही रहेगी? मैं आशा करता हूँ कि नहीं। क्या धनी और निर्धनका भेद—केवल भौतिक ही नहीं भावनाओंका भी भेद—सदैव बना रहेगा?—और यह भेद दिनप्रतिदिन बढता ही रहेगा?

और एक चीज है जो धनी तथा निर्धनके बीचकी इस दरारको बढाती ही जाती है। संयुक्त राज्यके प्रायः हर नगरमे तुम देखोगे कि एक हिस्सा धनियोंका है और दूसरा निर्धनोका। निर्धन बाहरी ठाट-बाटके अतिरिक्त धनी वर्गका और कुछ नहीं देख पाते। जिस समय वे उनके महलोंके पाससे गुजरते है उस समय बेचारोंके हृदयोंमे ईर्ष्या नामका विषैला पौधा उग आता है। धनी-वर्ग भी गरीबोंके झोंपड़ो, चीथड़ों और उनकी दरिद्रताके अतिरिक्त किसी चीजसे परिचित नहीं। वे कहते हैं कि ईश्वरको हजार धन्यवाद है कि हम वैसे नहीं हैं। उनके हृदय जुगुप्सा और घृणासे भरे हैं, और दूसरोके हृदय ईर्ष्या और घृणासे। कोई ऐसा रास्ता निकलना चाहिये, जिससे धनी और गरीब दोनों परिचित हो सकें। गरीब नहीं जानते कि उनसे कितने सफेदपोश सहानुभूति

---

* 'एक गृहस्थका प्रवचन' शीर्षक लेखका आगेका भाग—जो पृ० ६२-६४ में छपा है। ६४ वे पेजके बाद यह अंश छपना चाहिए था, जो भूलसे छूट गया।

रखते हैं और अमीर नही जानते कि इन चीथडोके पीछे कैसे हृदय छिपे रहते हैं। यदि हम कभी प्रेमपूर्ण गरीबोंको सहानुभूतिपूर्ण अमीरोसे परिचित करा दें, तो यह समस्या हल हो जायगी।

और भी सैकडो तरहसे वे आपसमे विभक्त हैं। यदि कोई चीज उनको एक दूसरेके पास ला सकती है तो वह है विश्वासकी समानता। रोमन कैथॉलिक देशोमे धनी और निर्धनपर इस बातका अच्छा असर पडता है। उनका विश्वास एक ही है। इसी प्रकार इस्लामी देशोमें वे एक ही मसजिदमे और एक ही खुदाके सामने नमाज पढ सकते हे। लेकिन हमारा क्या हाल है? यहाँ गरीब आदमी आश्वस्ति अनुभव नहीं करता। इसका परिणाम यह होता है कि मजहब भी अमीरों गरीबोंको एक नहीं होने देता। मैं मजहबके विरुद्ध कुछ नहीं बोलता हूँ। वह मेरा विषय नही है; किन्तु मैं उस धर्मका आदर करूँगा जो सप्ताहमे एक ही दिन सही, और वर्षमे एक घण्टा ही सही, गरीबीसे हाथ मिलाये और एक क्षणके लिये भी वास्तविक मैत्रीका दृश्य उपस्थित कर दे।

पुराने समयमे, जब मानव सभ्य नहीं बना था, जीविका एक सरल काम था। थोडा शिकार कर लेना, थोडी मछली मार लेना, थोडे फल गिरा लेना, थोड़े कन्द-मूल खोद लेना, सभी कुछ सरल था। सभी धन्धे लगभग समान स्तरके थे। उनमें असफलताके अवसर भी बहुत ही कम आते थे। शनैः शनैः जीविकार्जन एक बडा जटिल विषय बन गया। लगभग सभी गलियोमे ऐसे आदमियोंकी भरमार हो गई जो एक ही चीज़की प्राप्तिके लिये संघर्ष कर रहे है।

यह जीवन-संघर्ष बहुत ही कठिन हो चला है। जिस मात्रामें हमारी जन-संख्यामें वृद्धि हुई है, ठीक उसी मात्रामें हमारी असफलताओंके प्रतिशतमे भी वृद्धि हुई है। अब ऐसा हो गया है कि जीविकोपार्जन हर आदमीके वशकी बात नहीं रही। कोई पर्य्याप्त चालाक नही, कोई पर्य्याप्त बुद्धिमान् नही, कोई पर्य्याप्त मजबूत नहीं, कोई अत्यधिक उदार है, कोई अत्यधिक लापरवाह है। कुछ आदमी अभागे होते हैं; अर्थात् कहीं कुछ भी गिरे उनके सिरपर गिरेगा, कहीं किसीका भी बुरा हो, उनका होगा।

एक और कठिनाई है। ज्यो ज्यों जीवन अधिक जटिल होता जा

रहा है, और जब कि हर कोई किसी न किसी उद्देश्य-विशेषको सिद्ध करना चाहता है, तो सारी दिमागी-शक्ति उस उद्देश्य तक छोटेसे छोटे रास्तेसे पहुँचनेमे खर्च हो रही है। परिणाम यह हुआ है कि वर्तमान युग आविष्कारोंका युग हो गया है। लाखों मशीनोंका आविष्कार हो चुका है। हर किसीका उद्देश है श्रमकी बचत करना। यदि ये मशीनें श्रमिकोंकी सहायक होतीं, तो यह कितना बडा वरदान बनतीं ? लेकिन श्रम करनेवाला मशीनका मालिक नही है, मशीन ही उसकी मालिक है। यही बडी कठिनाई है।

पुराने समयमे, जब मैं छोटा था, छोटे छोटे नगरोंमें क्या होता था ? एक या दो चमार होते, एकाध दर्ज़ी होता, एकाध लोहार। उन दिनों मानवताका अंश एक पर्य्याप्त मात्रामे रहता था। हर कोई एक दूसरेका परिचित था। यदि बुरे दिन आते, तो बेचारे चमार पुराने जूतोंकी मरम्मत करके, उनमें एड़ी बिठाकर, उन्हें सीधा करके अपना पेट पाल लेते। दर्ज़ी और लोहारका भी यही हाल था। उन्हें उधार मिल जाता था। यदि वह वर्ष-भर भी कर्ज़ा न अदा कर सकते, तो उन्हें अगले वर्ष भी तंग नहीं किया जाता था। वे पर्य्याप्त सुखी थे।

अब कोई भी आदमी चमार नही है। एक बडी इमारत है। कई लाख डालरकी मशीने और तीन या चार हज़ार आदमी। सारी इमारतमे एक भी मिस्त्री नहीं। एक फीते सीता है, दूसरा मशीनोंको तेल देता है, तीसरा जूतोंके तल्ले काटता है, चौथा धागोंमे मोम लगाता है। परिणाम क्या होता है ? ज्यों ही मशीनें रुकती हैं, तीन हजार आदमी बेकार हो जाते हैं। तब अभाव और अकाल दर्शन देते हैं। और इस बीच यदि उनका एक बच्चा भी मर जाय, तो उसकी मिट्टीको ठिकाने लगानेके लिये उन्हें जितने पैसोंकी आवश्यकता होगी—उतने कमानेमें उन्हे न जाने कितना समय लगेगा!...इतना सब होनेपर भी हम इन मशीनोंद्वारा इतनी चीजें पैदा कर सकते हैं कि सारे बाजारोंको पाट दे। खेतीके औज़ारोंके आविष्कारद्वारा संसार-भरके प्राणियोंको अन्न पहुँचाया जा सकता है। कोई एक भी चीज़ ऐसी नहीं है जिसका आदमी इस्तेमाल करता हो और वह तुरन्त इतनी अधिक मात्रामें पैदा न की जा सकती हो कि उसकी कुछ कीमत ही न रहे। उत्पादनका इतना अधिक सामर्थ्य रहने पर भी, पैदा करनेकी इतनी अधिक ताकत रहने पर भी,

लाखो-करोड़ो आदमी नितान्त अभावकी अवस्थामे है। अनाजके गोदाम फटे जा रहे है और गरीबोंके दरवाजोपर अकाल मुँह बाये खडा है। प्रत्येक वस्तु लाखों-करोड़ोंकी सख्यामें और फिर भी लाखों-करोडो आदमियोंको लगभग प्रत्येक वस्तुका अभाव और उनके पास एक प्रकारसे कुछ भी नही।

यह एक बडी भारी गडबड़ी है। हम मशीन और मानवके संघर्पके मध्यमे आ खडे हुए हैं। मैं आपसे कहता हूॅ कि यह विपय विचारणीय है। कोई भी बात जिसका मानवके भविष्यपर असर पडनेवाला हो, कोई भी बात जिसका हमारे और हमारे बच्चोंके सुखसे सम्बन्ध हो, हमारे विचार करनेकी ही है।

मेरी सहानुभूति गरीबों और मजदूरोके साथ है। मुझे अच्छी तरह समझ लीजिये। मैं अराजकवादी नही हूॅ। अराजकवादिता अत्याचारकी प्रतिक्रिया है। मै समाजवादी भी नहीं हूॅ। मैं साम्यवादी भी नहीं हूॅ। मैं व्यक्तिवादी हूॅ। मैं सरकारके अत्याचारमें विश्वास नही करता; लेकिन मैं मानव और मानवके वीच न्याय किये जानेमें विश्वास करता हूॅ।

इलाज क्या है? हम इस विषयमें विचार कर सकते है।

किसी भी आदमीको जमीनके किसी ऐसे टुकडेपर अधिकार नहीं करने देना चाहिये जिसे वह स्वयं जोतता-बोता न हो। हर कोई इस बातको जानता है। मेरे पास बहुत-सी जमीन रही है, किन्तु जैसे मैं इस बातको जानता हूॅ कि मैं जीवित हूॅ, उसी तरह इस बातको भी जानता हूँ कि किसी भी आदमीके पास कोई जमीन नही होनी चाहिये, जब तक वह उसे स्वयं जोतता-बोता न हो। ऐसा क्यों? क्या तुम नहीं जानते कि यदि लोग हवाको बोतलोंमें बन्द करके रख सके, तो वह उसे भी अवश्य रखेंगे? क्या तुम नहीं जानते कि तुरन्त एक अमरीकन 'हवा-बन्द एसोसिएशन' स्थापित हो जायगी? और क्या तुम यह नहीं जानते कि वे लोग लाखो करोड़ों आदमियोंको साँस लेनेकी हवाके अभावमें इस लिये मर जाने देंगे क्योंकि वेचारे उसका मूल्य नहीं चुका सकते? मैं किसीको दोप नहीं दे रहा हूँ। मैं केवल वस्तु-स्थितिका वर्णन कर रहा हूॅ। भूमि प्रकृति-पुत्रोकी है। प्रकृति हर उत्पन्न होनेवाले बच्चेको इस ससारमे आनेका निमत्रण देती है। और तुम मेरे वारेमें क्या सोचोगे! यदि तुममेंसे किसीने कभी कोई टिकट न लिया होता और तुम्हें यहाॅ आनेका केवल निमन्त्रण मिला होता और यहाॅ आनेपर तुम देखते कि

एक आदमी सौ कुर्सियोंको अपनी कहता है, दूसरा पचहत्तरको और तीसरा पचासको और इस कारण तुम्हें खड़े रहना पड रहा है, तो तुम मेरे निमंत्रणके बारेमे क्या सोचते ? मुझे ऐसा लगता है कि प्रकृतिके हर बच्चेका अपने हिस्सेकी भूमिपर अधिकार है। यदि कोई बच्चा उससे पहले पैदा हो गया है तो उसे कोई अधिकार नहीं कि वह दूसरेके हिस्सेकी भूमिको हथिया ले। मैं ऐसा क्यो कहता हूँ ? क्योंकि यह हमारे हितमें नही है कि थोडेसे जमीन्दार हों और लाखो-करोडों किसान हो।

किरायेका घर विनम्रताका शत्रु है, सदाचारका शत्रु है, और देशभक्तिका शत्रु है। सद्गुणोंका विकास अपने घरमें होता है। मैं चाहूँगा कि एक ऐसा कानून हो जिसके अनुसार कोई भी घर कर्जेके कारण बेचा न जा सके और एक सीमातक किसी घरपर किसी प्रकारका टैक्स न लगे। ऐसा होनेसे ही हर आदमीका अपना घर हो सकता है और तभी हमारी जाति देश-भक्तोंकी जाति हो सकती हैं।

मैं धनी आदमियोंको धनी होनेके लिए दोष नहीं देता। मैं अधिकांशपर दया करता हूँ। मै यह पसंद करूँगा कि मैं गरीब आदमी होऊँ और मेरे दिलमे थोड़ी-सी सहानुभूति रहे। मैं पृथ्वी-भरकी उन सोनेकी खानोंकी तरहका जिनमे कोई फूल नहीं उगता ऐसा धनी आदमी होना पसद नहीं करूँगा, जिसके हृदयमें कहीं कुछ भी सहानुभूति न हो। मेरी समझमें नही आता कि एक आदमी किस प्रकार लाखो करोड़ों रखकर प्रतिदिन ऐसे लोगोके पाससे गुजर सकता है जिनके पास खानेतकको पर्याप्त नहीं। मैं यह बात समझ ही नहीं सकता। मैं स्वयं भी ऐसा हो सकता हूँ। रुपयेमें कुछ ऐसी विशेषता है कि वह स्नेहस्रोतों-को सुखा डालती है। सम्भवतः यह इस तरह होता है,—ज्यो ही एक आदमीके पास रुपया आता है, त्यों ही इतने अधिक आदमी उससे रुपया लेनेके लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं कि वह सारी मानव-जातिको अपना शत्रु समझने लगता है। प्रायः वह सोचता है कि दूसरे लोग भी उसकी तरह धनो हो सकते हैं, यदि वे उसीकी तरह अपने व्यापारकी ओर ध्यान दें। अच्छी तरह समझ लीजिए। मैं इन लोगोंको दोषी नही ठहरा रहा हूँ। हम सबमें पर्याप्त मानवता है। तुम्हे उस आदमीकी कथा याद होगी जिसने समाज-वादियोकी एक सभामें अपने भाषणके अन्तमे कहा—'ईश्वरको धन्यवाद है कि

मेरे पास किसी चीजका एकाधिकार नहीं है,' किन्तु जब वह अपनी जगहपर बैठने लगा तो उसके मुहसे निकला—' हे भगवन्, यदि मेरे पास एकाधिकार होता ! ' हमे याद रखना चाहिये कि लोग धनी स्वाभाविक ढंगसे बनते हैं। उन्हें दोष देनेकी आवश्यकता नहीं। वास्तवमें दोपी सामाजिक व्यवस्था है।

चंद लोगोंको सरकारद्वारा जो विशेषाधिकार दिये गये हें, उनका उद्देश्य अधिकाश लोगोंकी भलाई ही है। पर जब उनसे अधिकाश लोगोंका भला न होता हो, तो उनसे वह अधिकार ले लेना चाहिये—जोर-जबरदस्तीसे नहीं किन्तु कानूनद्वारा मुआवजा देकर।

इसका उपाय क्या है? इस देशमें सबसे बडा शस्त्र मतपत्र है। प्रत्येक मतदाता एक स्वतंत्र जनतंत्र है। यहॉ निर्धनतम व्यक्ति भी सबसे बड़े धनीके बराबर है। उसके मतका ठीक वही मूल्य होगा, जो उस हाथद्वारा डाले गये मतका जिसके अधिकारमें लाखो करोंडों हैं। देशमें गरीब लोगोंका ही बहुमत है। यदि कोई ऐसा कानून है जो उन्हें त्रास देता है, तो यह उनका अपना अपराध है। वे किसी न किसी पार्टीके पीछे चले हे। उन्हे दूसरोंने पथ-भ्रष्ट किया है। किसी आदमीको कभी किसी भी पार्टीके पीछे नहीं चलना चाहिये चाहे उसमें आधा ससार हो, और चाहे उसमें सबसे अधिक बुद्धि-मान् हों। उसे किसी पार्टीका साथ तभी देना चाहिये जब वह पार्टी उसके रास्तेपर चले। किसी ईमानदार आदमीको किसी दल विशेषमें सम्मिलत होनेके लिए अपना मत नहीं बदलना चाहिए।

मत-पत्र एक शक्ति है। पूँजी और श्रमके ये बहुतसे झगडे कानूनद्वारा तय होने चाहिए। लेकिन मैं सोचता हूँ कि सबसे अधिक भलाई ' संस्कृति ' द्वारा हो सकती है, एक प्रकारकी न्यायकी भावनाके विकासद्वारा। मै आज आपसे कहता हूँ कि एक वास्तविक संस्कृत आदमी किसी भी चीज़को कभी उसके वास्तविक मूल्यसे कमपर लेनेकी कोशिश नही करेगा; एक संस्कृत आदमी किसी भी चीज़को कभी उसके वास्तविक मूल्यसे अधिकपर बेचनेकी कोशिश नहीं करेगा। एक वास्तविक संस्कृत आदमी किसीको ठगनेकी अपेक्षा ठगा जाना अधिक पसन्द करेगा। यह सब होने पर भी, अमरीकामें, हम सब लोग भले तो हैं, किन्तु जब कोई चीज़ खरीदनी होती है तो हम उसके

वास्तविक मूल्यसे कुछ कम देना चाहते हैं और जब कोई चीज़ बेचनी होती है तो उसके वास्तविक मूल्यसे कुछ अधिक लेना चाहते हैं। इससे दोनों ओर सडाँघ पैदा होती है। इसका खात्मा होना चाहिए।

इस दिशामे हम एक क़दम उठायेंगे। हम कहेंगे कि मानव-परिश्रम, मात्र उत्पत्ति और माँगके नियमके अधीन नहीं होगा। यह निर्दयताकी पराकाष्ठा है। हर आदमीको दूसरेको अपने सामर्थ्यके अनुसार देना चाहिये, और इतना पर्याप्त देना चाहिये कि वह खा-पीकर कुछ बचा भी सके।

लंदन जाओ। वह संसारका सबसे बड़ा नगर है और सबसे अधिक धनिक। यह सब होनेपर भी वहाँ प्रति छह आदमियोंमेंसे एक आदमी या तो अस्पतालमें मरता है, या कार्य-गृहमें, या जेलखानेमें। क्या इससे अधिक श्रेष्ठ बात हमें कभी जाननेको नहीं मिलेगी? क्या सभ्यताकी यही पराकाष्ठा है? इसी नगरमे कपड़े सीकर गुजारा करनेवाली औरतोंकी ओर देखो। जो चोगा पैंतालीस डालरमें बिकता है, उसकी सिलाईके उन्हें पैंतालीस सेण्ट मिलते हैं!

मैं इसे 'सभ्यता' नहीं कह सकता। संसारमें कुछ इससे अधिक न्यायपूर्ण विभागी-करण होना चाहिये।

तुम हड़तालोंद्वारा इसे प्राप्त नहीं कर सकते। पहली हड़ताल, जो बहुत सफल होगी, वही आख़िरी हड़ताल होगी। न्याय और शांतिमें विश्वास रखनेवाले लोग उसे दबा देंगे। हड़ताल करना कोई इलाज नहीं। बायकाट करना भी कोई इलाज नहीं। पशु-बल भी कोई इलाज नहीं। इन प्रश्नोंको तर्कसे, बुद्धिसे, विचारसे और सहानुभूतिसे हल करना होगा। जिस निर्णयकी नींवमे न्याय नहीं और जो मानव-बुद्धिके सम्पूर्ण विश्वासद्वारा सुरक्षित नहीं, वह कभी स्थायी निर्णय नहीं हो सकता।

इस देशमें अराजकताके लिये जगह नहीं, साम्यवादके लिये जगह नहीं समाजवादके लिये जगह नहीं। क्यों कि इस देशमें राजनीतिक शक्ति समान रूपसे बँटी हुई है। और दूसरा क्या कारण है? वाणी स्वतन्त्र है। और क्या कारण है? प्रेस बन्धन-मुक्त है। और यही सब है जो हमें 'अधिकार' रूपसे

प्राप्त होना चाहिये—प्रेसकी स्वतन्त्रता, वाणीकी स्वतन्त्रता और व्यक्तिकी सुरक्षा। यह पर्य्याप्त है। इतना ही मैं चाहता हूँ। रूस जैसे देशमें जहाँ हर मुँह खोलनेवाला दण्डित होता है, कुछ दूसरे तरीकोका समर्थन किया जा सकता है। जहाँ श्रेष्ठतम लोगोको साइबेरिया भेजा जाता है, अराजकवादिता-का किसी हद तक समर्थन हो सकता है। ऐसे देशमे जहाँ कोई आदमी किसी तरहकी दरख्वास्त नहीं दे सकता, कुछ गुंजायश स्वीकार की जा सकती है, किन्तु यहाँ नहीं।

कुछ वर्ष पहले, जब हमने 'दासप्रथा' का विनाश नहीं किया था, नैतिक दृष्टिसे हम बडे ही नीचे स्तरपर थे। लेकिन अब जब कि रिवाजके अतिरिक्त हम और किसी भी बेड़ीसे जकडे नहीं हे, यही संसारकी महानतम सरकार है। आज अमरीकामें शायद ही कोई ऐसा महत्त्वपूर्ण आदमी होगा, जो दरिद्रताकी गोदमे नहीं पला और जिसकी बात कोई सुनना पसन्द करता है। धनियोंके बच्चोंकी ओर देखो। हे भगवान्, धनी होनेका कितना बडा दण्ड है!

कुछ लोगोंका कहना है, कि ये श्रम करनेवाले लोग बडे खतरनाक हैं। मैं इससे इंकार करता हूँ। हम सब उनके हाथमें हैं। वे ही हमारी मोटर-गाडि-योंके चलानेवाले हें। लगभग रोज ही हमारा जीवन उनके हाथका खिलौना बनता है। वे ही हम सबके घरोंमे काम करते हैं। वे ही संसार-भरका परिश्रम करते हैं। हम सबका जीवन उन्हींकी दयापर निर्भर है। तो भी अपनी संख्याके हिसाबसे वे धनियोकी अपेक्षा अधिक अपराध नही करते। याद रखिये, मैं उनसे भयभीत नहीं हूँ। मैं एकाधिकार रखनेवालोंसे भी नहीं डरता। क्यों कि ज्यों ही ये लोग सार्वजनिक हितके प्रतिकूल पड़ते हैं, त्यों ही जनता एक सीमातक सह लेनेके बाद उनका खात्मा कर देती है—क्रोधके कारण नही, घृणाके कारण नहीं, किन्तु स्वतंत्रता और न्यायसे प्रेम करनेके कारण।

इस देशमे एक और भी वर्ग है, हम जिसे 'जरायम-पेशा' कहते हैं।

जरा उस बातको याद करो जो मैने आरभमें ही कही थी, अर्थात् हर आदमी वही कुछ होता है, जो उसे होना चाहिये। हर अपराध एक आवश्यक परिणाम है। बीज बोया गया है, हल जोता गया है, पौधे अच्छी तरहसे सींचे गये हैं और पैदावार विधिवत् काटी गई है। हर अपराध मजबूरीमेंसे

पैदा होता है। यदि तुम चाहते हो कि अपराध कम हों, तो तुम्हें परिस्थितिमें परिवर्तन करना होगा। गरीबी अपराधोंकी जननी है। अभाव, चिथड़े, सूखी रोटीके टुकड़े, असफलतायें, दुर्भाग्य—ये सभी आदमीके अन्दरके पशुको जगा देते हैं और तब आदमी कानूनको अपने हाथमें लेकर अपराधी बन जाता है। और तुम उसके साथ क्या व्यवहार करते हो? तुम उसे दण्ड देते हो। पर तुम किसी ऐसे आदमीको जिसे तपेदिक हो गया हो दण्ड क्यों नहीं देते? समय आयेगा जब तुम इस बातको देख सकोगे कि किसी अपराधीको दण्ड देना भी वैसा ही असंगत है। तुम अपराधीका क्या करते हो? तुम उसे जेल-खाने भेज देते हो। क्या उसका सुधार होता है? नहीं, वह और भी बिगड़ जाता है। पहली बात जो तुम करते हो वह यह है कि उसका अपमान करके उसके मनुष्यत्वको पैरोंतले रोंधते हो। तुम उसे दाग़ी बना देते हो। तुम उसे बंधनोंमें जकड देते हो। रातको तुम उसे अँधेरी कोठडीमें डाल देते हो। उसकी बदला लेनेकी भावनामें वृद्धि होती है। तुम उसे जंगली पशु बना देते हो। जब वह जेलसे बाहर आता है तो उसका शरीर और आत्मा दोनों कलङ्कित होते हैं। यदि वह सुधरना भी चाहता है, तो भी तुम उसे सुधरने नहीं देते! तुम उसे नीची नजरसे देखते हो, क्यों कि वह जेलमे रह आया है!—दूसरी बार जब आप किसी भी दण्डित व्यक्तिको घृणाकी दृष्टिसे देखने लगें, तो मेरी प्रार्थना है कि उस समय एक काम करें: आप उन सब अपराधोंकी याद करें जो आपने स्वयं करने चाहे हैं, आप उन सब अपराधोंकी याद करें जो आप कर बैठते यदि आपको कही अवसर मिल जाता; और तब अपनी छातीपर हाथ रखकर कहें कि क्या आप सचमुच एक दंडित प्राणीकी ओर भी घृणाकी दृष्टिसे देख सकते हैं?

नीचतम प्राणीको भी दण्डित करनेका अधिकार केवल श्रेष्ठतम प्राणीको होना चाहिये।

समाजको कोई अधिकार नहीं कि वह बदला लेनेकी भावनासे किसी भी आदमीको दण्ड दे। उसके दण्ड देनेके मात्र दो उद्देश्य हो सकते हैं—एक तो अपराधकी रोक-थाम; दूसरे अपराधीका सुधार। तुम उसका सुधार कैसे कर सकते हो? करुणा ही वह सूर्य्य-किरण है, जिसके प्रकाशमे शीलका पौधा उगता है। इन आदमियोंको यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिये कि बदला लेनेकी कहीं कोई भावना नहीं है। उन्हे यह भी समझमे आ जाना चाहिये कि उनका सुधार हो सकता है।

कुछ ही समय हुआ मैंने एक तरुणकी करुण-कहानी पढ़ी है। वह जेलमें रहकर बाहर आया। उसने इस बातको छिपाकर रखा और एक किसानके यहाँ काम करने गया। उसका उस किसानकी लड़कीसे प्रेम हो गया और उसने उससे शादी करनी चाही। वह इतना नेक था कि उसने लड़कीके पिताको सच सच बता दिया कि वह जेलमें रह चुका है। पिता बोलाः—"मैं तुम्हे अपनी लड़की नहीं दे सकता, क्योंकि इससे वह कलङ्कित हो जायगी।" लड़केका उत्तर थाः—"अच्छा। वह कलङ्कित हो जायगी, तो मैं उससे शादी नहीं करूँगा।" वह बाहर चला गया। कुछ ही क्षणोंके बाद पिस्तौलकी आवाज सुनाई दी। लड़का मर चुका था। वह यह लिखकर छोड़ गया था: "मैं उस पार जा रहा हूँ। मेरे और अधिक जीते रहनेका कोई प्रयोजन नहीं, जब मैं अपने प्रेम-पात्रको ही कलङ्कित करता हूँ।"

फिर भी हम अपने समाजको 'सभ्य' समाज कहते हैं!

मैं चाहता हूँ कि इस प्रश्नपर विचार हो। मैं चाहता हूँ कि मेरे सभी नागरिक बन्धु इस प्रश्नपर विचार करे। मैं चाहता हूँ कि आप इस निर्दयताको समाप्त करने अथवा कम करनेके लिये जो कुछ भी कर सकें, करे।

सबसे पहले हमें परस्पर परिचित होना चाहिये। हर आदमी अपने पुत्रको, अपनी पुत्रीको, शिक्षा दे कि श्रम करना सम्मानकी बात है। हमें अपने बच्चोंको सिखाना चाहिये कि देखो, तुम कभी किसीपर भार न बनो। तुम्हारा पहला कर्तव्य है कि तुम अपनी सार-सँभाल आप रखो और यदि तुम्हारे पास कुछ अतिरिक्त सामर्थ्य हो तो अपने मानव-बन्धुओंकी सहायता करो। सर्व प्रथम अपने बच्चोंको सिखाओ कि यह कर्तव्य है कि तुम किसीपर भार न बनो। अपने बच्चोको सिखाओ कि यह न केवल उनका कर्तव्य है किन्तु बड़े ही आनन्दका विषय है। वे एक गृह-निर्माता बनें, गृह स्वामी बनें। बच्चोंको सिखाओ कि संसारमें चूल्हा ही सबसे अधिक सुखका स्थान है। उन्हे सिखाओ कि जो कोई भी दूसरोंके परिश्रमपर जीता है, चाहे वह डाकू हो और चाहे राजा, वह एक असम्मानित व्यक्ति है। उन्हें सिखाओ कि कोई सभ्य आदमी बिना कुछ किये, कभी कुछ नहीं चाहता और कभी किसी भी चीज़का कम मूल्य नहीं चुकाना चाहता। हमें दूसरोंको अपनी मदद आप करनेमें मददगार होना चाहिये।

हम यह भी सिखा दे कि धनकी अधिकताका मतलब प्रसन्नताकी

अधिकता नहीं है । रुपयेसे कभी प्रेम नहीं खरीदा जा सकता । रुपयेने न कभी सम्मान खरीदा है और न वह खरीद सकेगा । रुपयेने न कभी सच्चा सुख खरीदा है और न वह खरीद सकेगा ।

एक बात और है । प्रत्येक व्यक्तिको अपने प्रति ईमानदार होना चाहिये । उसकी जाति कुछ भी हो, उसकी परिस्थिति कुछ भी हो; उसे अपने विचार प्रकट करने चाहिये । उसकी जाति अथवा उसका वर्ग उसे रिश्वत न दे सके । यदि वह एक बैंकर है तो उसे बैंकरकी तरह ही नहीं बोलना चाहिये । यदि वह एक व्यापारी है तो उसे शेष व्यापारियोंकी तरह ही नहीं बोलना चाहिये । अपने छोटे व्यापारके प्रति वफादार होनेकी बजाय उसे सारी मानवताके प्रति ईमानदार होना चाहिये । अपने तात्कालिक ऊपरी स्वार्थके प्रति वफादार होनेकी बजाय अपने दिल और दिमागके आदर्शके प्रति ईमानदार होना चाहिये ।

जहाँ तक मेरी बात है मैंने तय कर लिया है कि कोई भी संगठन—चाहे धार्मिक हो चाहे लौकिक हो—मेरा मालिक नहीं बन पायेगा । मैंने तय कर लिया है कि भोजन, घर अथवा अन्य किसी भी चीज़की आवश्यकता मेरे मुँहपर ताला नहीं लगा पायेगी । मैंने तय कर लिया है कि किसी प्रकारका यश, किसी प्रकारका सम्मान, किसी प्रकारका लाभ मुझे उस बातसे एक इंच न हटा सकेगा, जिसे मैं सत्य समझता हूँ; भले ही वैसा करनेसे मेरा तात्कालिक स्वार्थ सिद्ध होता हो । और जब तक मैं जीवित हूँ तब तक मैं अपने कम-सौभाग्यशाली मानव-बन्धुओंकी सहायताके लिये जो कुछ मुझसे बन पड़ता है, करूँगा ही ।

मैं उनकी ओरसे बोलूँगा और उन्हें अपना मत दूँगा ।

मैं यथासामर्थ्य इस बातका प्रयत्न करूँगा कि लोगोंको यह बात समझा सकूँ कि सुख बहुत-सा धन संग्रह करनेमें नहीं है, किन्तु अपने और दूसरोंके कल्याणके लिये प्रयत्नशील रहनेमें है ।

मैं यथासामर्थ्य इस बातका प्रयत्न करूँगा कि वह दिन जल्दीसे जल्दी आये जब पृथ्वीपर अनन्त घर हों और जब संसार-भरके परिवारोंके लोग अपने उन घरोंमें सुख और प्रसन्नतापूर्वक रहने लगें ।